* ओ३म् *

भाग ६ · अङ्क १, २.

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर का
मासिकपत्र.

॥ अनाथरक्षक ॥

कार्तिक, मार्गशीर्ष १९६७ वि०

नवम्बर, दिसम्बर १९१० ई०

जिसको—
अनाथालय सभा ने पं० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय
अजमेर से छपाया,
और
पं० मुन्नीलालमिश्र प्रकाशक द्वारा अजमेर से प्रकाशित किया।

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा बान्धवः।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं वारि, वातश्च कः॥
जानीमो न दयानिधे! सुरपते त्वन्नाम जानीमहे।
हा हा नाथ! अनाथरक्षक! सदा नः पाहि पाहि प्रभो!!!

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकबार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकबार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा।

वार्षिक मू० १)

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर के आयव्यय का मासिक नक़्शा बाबत मास सितम्बर १९१० ई०.

आय.

दान	४८२।≡)॥
मासिक चन्दा स्थानिक	१६।)
,, बाहर का	२)
अनाथरक्षक पत्र	५।)
किराया	२५॥=)
अमानत	१५)।
फुटकर	२॥।≡)।
गोशाला	७)
कारख़ाना	२७०।-)॥।
दवाख़ाना	१।)
गवर्नमेण्ट यूनाईटेड प्राविन्सेज	६)
योग	८३३=)॥।
पिछला शेष	१५२॥-)१½
योग	९८५॥≡)१०½

व्यय.

भोजन	१२१॥।≡)॥।
शिक्षा विभाग	५५-)।
वेतन कर्म्मचारी	८३॥≈)।
अनाथरक्षक	४६=)॥
पोस्टेज व स्टेशनरी	६।-)
फुटकर	३४॥-)॥।
सफ़ाई	१७॥)॥
रोशनी	७॥)।
गोशाला	११।-)॥।
वस्त्र	६≡)॥
वर्त्तन	७≡)॥
पानी	४॥।)॥
नये मकान	१२)
उपदेशक	२॥।=)।
औषधालय	४॥।-)॥।
कमीशन	=)
योग	४३६॥)॥
पीपल्स बैंक में जमा कराये	८९॥=)
शेष रहे	४५६।-)४½
योग	९८५॥≡)१०½

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर के आयव्यय का मासिक नक्शा बाबत मास अक्टूबर सन् १९०९ ई०

आय.

दान	५३९॥)।।।
मासिक चन्दा स्थानिक	१७)
मासिक चन्दा बाहर का	२)
अनाथरक्षक	७।-)
किराया मकानात	१०॥=)
अमानत	४४)
फुटकर	१)
गोशाला *	४३)
कारखाना	॥≡)॥
सूद	५०)
औषधालय	१०)
योग	७२५≡)।
फिक्स डिपाजिट पीपल्स बैंक अजमेर से निकलवाये १०००) वास्ते नूतन ज़मीन खरीदने के	१०००)
पिछला शेष	४५९।-)४$\frac{२}{३}$
सर्व योग	२१८४॥)७

* दो बछड़े ४३) को बेचे गये..

व्यय.

भोजन	११३।=)।
शिक्षा	२७॥=)।।।
वेतन कर्म्मचारी	८६)
अनाथरक्षक	१०)
पोस्टेज स्टेशनरी	४।।।-)
फुटकर	२७॥)॥
किराया	१३।≡)॥
सफाई	७-)
रोशनी	६=)॥
गोशाला	६॥=)
वर्त्तन	४८॥≡)।।।
धुलाई	४।।।-)।।।
पानी	१॥)
नूतन मकान गोशाला	१४३।-)
नूतन ज़मीन खरीदी रिद्धकरनजी से जिसके मध्ये दिये	१०३१)
उपदेशक	७॥=)।
औषधालय	५॥-)॥
ग्राउण्डरेण्ट	४॥)
मरम्मत मकानात	१६॥-)।।।
अमानत	३१)
योग	१६०८।≡)॥
पीपल्स बैंक अजमेर चल्लू हिसाब	५०)
शेष नकद रहे	५२५-)१$\frac{१}{२}$
सर्व योग	२१८४॥)७$\frac{१}{२}$

मासिक आयव्यय बाबत मास नवम्बर १९१० ई० द० अना० अजमेर ।

आय.

४०५।=)	दान
३२≡)	मासिक चंदा स्थानिक
२)	,, बाहर
४।)	अनाथरक्षक
३२८॥=)	किराया
८॥≡)॥	अमानत
४॥=)॥	कारख़ाना
२००)	चिरस्थायी फंड
१८६।-)	योग
६११)	पीपल्सबैंक चल्लू हिसाब
२००)	उदरत
५२५-)१½	पिछला शेष
२३२२।=)१½	कुल योग

व्यय.

१९७॥=)	भोजन
३४=)॥।	शिक्षा
६९॥≡)॥	वेतन कर्म्मचारी
१२३॥-)	अनाथरक्षक
८॥।)	पोस्टेज स्टेशनरी
२॥-)॥।	फुटकर
१२॥)	सफ़ाई
६।)	रोशनी
१२॥)॥	गोशाला
१)	दवाख़ाना
८=)	अनाथरक्षा
६।)	धुलाई
३)	पानी
६१६)	नूतन ज़मीन ख़रीदी
३॥=)	नूतन मकानात
१५॥।)॥	अमानत
११।≡)	उपदेशक
१०)	सूद बा० प्रभुदयालजी को
३१≡)॥	वस्त्र
८।≡)	नया सामान
२००)	भार्गव बैंक आगरा को भेजे
११६४।-)॥	योग
४००)	पीपल्स बैंक चल्लू
३००)	उदरत
२०६४।-)॥	योग
२२८)७½	शेष रहे नक़द
२३२२।=)१½	कुल योग

॥ ओ३म् ॥

अनाथरक्षक ॥

कार्तिक, मार्गशीर्ष १९६७ वि० ॥

नवम्बर, दिसम्बर १९१० ई० ॥

पद्य अनाथ-सम्बन्धी ॥

परमपिता के विश्वास वालो,
ऐ जातिभक्ती दिखानेवालो ।
ख़बर नहीं क्या तुम्हें हमारी,
गिरी दशा है इसे संभालो ॥
गये हैं मा बाप मर जिन्हों के,
सिवा तुम्हारे है कौन उनका ।
बमिस्ल औलाद अपनी उनको,
उठा के अपने गले लगालो ॥
हुवे हैं ईसाई और मुसलमां,
हज़ारों में है शुमार उनका ।
जो थे तुम्हारे हि लालो गौहर,
निगाह अपनी इधर तो डालो ॥
तुम्हारे बच्चों को छीनते हैं,
विदेशी दे दे के धन का लालच ।
न पीछे पछतावा आए भाइयो !,
यही है बिहतर कि धर्म पालो ॥
यतीम बच्चों की हाय ने बस,
किया है भारत को तीन तेरह ।
लगाओ छाती बंधाओ धीरज,
गिरी दशा है इसे उठालो ॥
मिटी जो दुनियां से क़ौम हिन्दू,
मिटी जो मर्य्याद वेद भाइयो ! ।
बताओ किस काम की ये दौलत ?,
कमर कसो और इन्हें बचालो ॥
विनय शरानन्द की ये सुनलो,
यतीम बच्चों के जो हितैषी ।
यह देश और जाति जो तुम्हारी,
बिगड़ रही है इसे बनालो ॥

कारुणिक दृश्य ॥

पं० माधोराय ब्रह्मण सारस्वत के सुपुत्र बा० गणपतरायजी रेलवे डिपार्टमेण्ट में नौकरी करते थे । आपकी पैत्रिक

सम्पत्ति में कुछ भूमि तथा एक बृहत् मकान कानपुर के मोची मुहल्ले में डाक्टर महेन्द्र बाबू के निकट उपस्थित है, परन्तु बा० गणपतराय अपनी सहधर्म्मिणी श्रीमती यशोदा देवी तथा बालबच्चों सहित सदा बाहर रहे। बी० बी० एण्ड सी० आई० के विविध स्थानों पर उन्होंने सबडिवीजनल क्लर्क की जगह काम किया।

तीन वर्ष के लगभग व्यतीत होते हैं बा० गणपतरायजी महसाना जंक्शन पर नियुक्त थे उस समय उनके परिवार में जो उनके साथ था—तीन कन्याएं, एक बालक उनकी अर्द्धाङ्गिनी और वे स्वयं कुल छः मनुष्य सम्मिलित थे। यह छोटा-सा परिवार आनन्दपूर्वक गृहस्थ सुख भोग करता और सांसारिक दुःखों से बिलकुल अछूता था।

परन्तु जगत् परिवर्त्तनशील है इसकी विकरालगति कभी एक मार्ग से नहीं चलती। शान्तिमय पर्वत शिखर, गम्भीर समुद्र प्रवाह, काल के साथ २ परिवर्तित होरहे हैं। ऐश्वर्य, भाग्य तथा सौंदर्य्य सूर्य्य की छाया के तुल्य स्थिर नहीं, गरज़ प्रत्येक आनेवाली सुबह और शाम प्रकृति तथा मानवी विभेदों की एक ऐसी शृङ्खला अपने साथ लेकर आती है कि जिसके पहिचानने की शक्ति मनुष्य में नहीं। भला कब सम्भव था कि बा० गणपतराय का शान्तिप्रिय परिवार इस कालचक्र से रक्षित रहता। समय आया कि श्रीमती यशोदा देवीका चित्त खेदित हुआ, व्याधि शनैः २ प्रबल होती चली गई और "मरज़ बढ़ता गया ज्यूं २ दवा की" जनश्रुति के अनुसार यशोदा देवी शय्याश्रयी होगई। उस समय बड़ी कन्या सरस्वती की अवस्था लगभग १० वर्षकी थी, दूसरी ७ और तीसरी महालक्ष्मी ४ वर्ष की थी। विश्वनाथ उस समय केवल १ वर्षका बालक था जो अभीतक केवल मा मा बा बा इत्यादि सामान्य शब्दों के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता था और जो अपनी सादी मुस्कुराहट द्वारा माता पिता के मनमोद का कारण बनता था।

पाठकवृंद! देवी यशोदा मृतशय्या पर पड़ी हैं और छोटे २ चारों बच्चे अनमने मन, मुखमलीन प्यारी माता के मुर्झाए हुए चेहरे पर टकटकी लगाये देखरहे हैं। माता यद्यपि अङ्ग प्रत्यङ्गों द्वारा मन के विचार प्रकट नहीं कर सकती, किन्तु उनके चेहरे का उतार चढ़ाव साफ़ प्रकट कररहा था कि वह अपने पूज्यपाद श्रद्धास्पद, सौभाग्यशिरोमणि बा० गणपतराय से अपील कररही हैं कि अब संसार में मेरे कोई दम शेष हैं इन अबोध बालकों की रक्षा और शिक्षा का भार आप पर है। देखिये इनकी ओर बेपरवाई का बर्ताव रहा तो मेरा आत्मा अशान्त होगा। यशोदा देवी ने एक नैराश्यपूर्ण लम्बा श्वास

लेकर आंखें बंद करलीं, यही उनके जीवन का अन्तिम श्वास था इधर उनके आत्मा ने गमन किया और उधर बा० गणपतराय की जिम्मेवरी द्विगुण होगई। अब बा० गणपतरायजी को माता और पिता दोनों की ड्यूटी पूर्ण करनी पड़ी। मृतदेह की अन्तिम क्रिया (दाहसंस्कार) किया गया और ज्यूं त्यूं करके अपनी लड़की और बच्चों के रक्षण शिक्षण का उचित प्रबन्ध किया।

माताविहीन विश्वनाथ ईश्वरकृपा से ४ वर्ष का होगया। सरस्वती देवी बड़ी कन्या की अवस्था १३ वर्ष पर पहुंच गई, अब वह घर के काम काज में हाथ बटाने लगी। इधर विश्वनाथ की भी उतनी रक्षा की आवश्यकता नहीं रही और कार्य साधारणतया ठीक चलने लगा, किन्तु समय ने फिर पलटा खाया और बच्चों के एकमात्र रक्षक बा० गणपतराय रोगी होकर इस संसार से चल बसे, आह !!! बा० गणपतराय को अपने अन्तकाल में अपने उत्तराधिकारी प्राणप्रिय बालकों से मिलकर कुछ कहने सुनने और सन्तोष देने का समय भी प्राप्त न हुआ और मन की अभिलाषाओं को मन ही में लेकर चलदिये।

अब सरस्वती आदि चारों बालक अनाथ हैं। संसार उसकी दृष्टि में अंधेरा है। उन्हें अपने चारों ओर सुनसान दीखता है। उनके जो कृत्य कल तक मन बहलाव का कारण समझे जाते थे आज उन पर घृणा की दृष्टि डाली जाती और उन्हीं के लिये दण्डनीय माने जाते हैं। उनकी नज़र में संसार के स्वार्थ का पूरा चित्र खिंच गया है। वे जानते हैं कि उनके ज़मीन जायदाद है उनसे अप्रकट नहीं कि उनके कई सम्बन्धी कई स्थानों पर अच्छी स्थिति के आदमी हैं, परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी अब वे अनाथ हैं कोई उनका हाथ पकड़ने वाला नज़र नहीं आता।

वाचकवृन्द! उनकी स्थिति पर तनिक गहरा विचार करें तो कठोर से कठोर हृदय एक दम से भर आवेगा, शरीर कांपने लगेगा और एक स्वर से उनकी सहायता के लिये उत्कण्ठित हो उठेंगे।

सद्गृहस्थो! ऐसे समय में श्रीमद्दयानन्द अनाथालय की आवश्यकता का अनुभव हो सकता है। बच्चे तत्काल कई महाशयों की सहायता से यहां आ पहुंचे कन्यायें तथा बालक प्रसन्नचित्त रक्षण और शिक्षण लाभ कर रहे हैं। उनके लिये विशेष प्रबन्ध की कई अनाथालय की शुभचिन्तकों ने व्यवस्था किये जाने की अनुमति दी है जो अभी विचाराधीन है! पूर्ण आशा है कि बालक श्रीमद्दयान-

नन्द अनाथालय में निवास करते हुए कम योग्यता प्राप्त नहीं करेंगे।

हम इस स्थान पर कोई ऐसे शब्द व्यवहार नहीं करना चाहते जो आप के दिलों को ठेंस लगावें परन्तु यह प्रश्न आप के सन्मुख रखना उचित समझते हैं कि जिस देश में इस प्रकार के लोग उपस्थित हैं कि सर्वरीत्या सम्पन्न होते हुए भी अपने निकटस्थ अनाश्रितों को आश्रय देने से आंख चुराजाएं वहां श्रीमद्दयानन्द अनाथालय जैसी संस्थाओं की कितनी आवश्यता है और उनकी स्थिति के निमित्त देश और जाति के प्रत्येक मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है।

श्री० पं० शमानन्दजी उपदेशक दयानन्द अनाथालय का भ्रमण-वृत्तान्त ॥

मैं श्रीमद्दयानन्द अनाथालय की मंडली सहित प्रचार करता हुआ ता० १८-८-१० को संडीला (जिला हरदोई) में पहुंचा और भजन व उपदेश द्वारा प्रचार करना आरम्भ किया यहां धार्मिक और सामाजिक चर्चा कम होने के कारण विशेष दिवस और परिश्रम की आवश्यकता हुई कुछ समय यहां काम करने के पश्चात् लूमामऊ नामक स्थान में ठाकुर कालिकाबख्शसिंहजी के यहां जाना हुआ और यद्यपि एक शोचनीय मृत्यु होजाने के कारण यहां प्रचार न होसका पर ठाकुर साहब के सुयोग्य पुत्र ने अनाथालय की सहायतार्थ ३०) देने की प्रतिज्ञा की इसी दर्म्यान में संडीले के प्रसिद्ध फार्सी ज्ञाता और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट राजा दुर्गाप्रसादजी से मुलाक़ात हुई उक्त श्रीमान् ने अनाथालय से हमदर्दी प्रगट करते हुवे कुछ आर्थिक सहायता दी। संडीले से चलकर ता० २८-८-१० को सिटी आर्य्यसमाज लखनऊ में पहुंचा और करीब पौन महीना यहां ठहरकर भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया लखनऊ निवासियों में श्रीमान् बाबू रामाधीनसिंहजी मंत्री कुर्मी सदर सभा व राय ज्वालाप्रसादजी रईस ने अनाथालय को अच्छी सहायता दी और दिलाई। ता० १५-९-१० को रिफ़ाह आम नामक प्रसिद्ध स्थान में पं० गोकर्णनाथ मिश्र एम० ए० एल० एल० बी० वकील के सभापतित्व में एक सभा हुई जिसमें अनाथों के भजन और श्रीमती पण्डिता गायत्रीदेवी का प्रभावोत्पादक व्याख्यान हुआ और अनाथालय को सहायता मिली, इसके अतिरिक्त अन्यान्य सज्जनों ने भी सहायता दी इस प्रकार लखनऊ से क़रीब पौने दोसौ रु० की सहायता प्राप्त हुई। यहां से चलकर ता० २३-९-१० को बाबू रामनारायणजी प्रधान आर्य्यसमाज बारह-

बंकी की प्रेरणा से उक्त नगर में आये और ४ दिन ठहर कर भजन व उपदेश द्वारा प्रचार कर सहायता प्राप्त की वहां से चलकर सिधौली में प्रचार करते हुए ता० २-१०-१० को आर्य्यसमाज सीतापुर के वार्षिकोत्सव में जाकर सम्मिलित हुए, यहां के सज्जनों ने उत्सव का कार्य बड़े उत्साह से किया और अनाथों का उचित सन्मान किया, श्रीमान् बाबू रामानन्दजी प्रधान आर्य्यसमाज ने एक अन्तिम भजन (जिसको मैंने बनाया और कन्हैयालाल अनाथ ने गाया था) सुन प्रसन्न हो अनाथालय की सहायतार्थ १०) दान किये और उसी समय एक पंजाबी महाशय ने भी १०) दान किये सीतापुर से चलकर मल्लावां होते हुए ता० ९-१०-१० को हरदोई के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए यहां के सज्जनों ने इस अवसर पर भी सहायता दी वहां से चलकर ता० १७-१०-१० को थमिरवा नामक ग्राम में श्रीमान् राय केदारनाथजी प्रधान आर्य्यसमाज हरदोई के स्थान पर पहुंचे रायसाहब एक प्रसिद्ध उत्साही धार्मिक पुरुष हैं जिन्होंने थमिरवा व आस पास के ग्रामों में प्रचार करा सौ रु० की सहायता अनाथालय को दी और दिलाई। यहां से चलकर ता० २९-१०-१० को माधौगंज पहुंचे यहां के स्टेशनमास्टर ने प्रशंसा योग्य सहायता दिलाई वहां से ता० ४-११-१० को बिल ग्राम पहुंचे और श्रीमान् पं० शिवरामजी वकील के स्थान पर ठहरे उक्त पं० जी अनाथालय से विशेष हित रखते हैं आप अनाथों से पहले भोजन भी नहीं किया करते थे पं० शिवधनमिश्रजी ने भी उद्योग किया यहां से छप्पन रु० की सहायता प्राप्त हुई यहां से चलकर माधौगंज होते हुए श्रीमान् कुंवर मुनीश्वरवीरेन्द्रसिंहजी के स्थान पर उत्तरधैया पहुंचे उक्त श्रीमान्ने कुछ सहायता अनाथालय को दी और १२) वार्षिक देने की प्रतिज्ञा की वहां से चलकर लखनऊ, रायबरेली, कानपुर, कन्नौज में प्रचार व सहायता प्राप्त करते हुए ता० १४-१२-१० को फ़र्रुखाबाद पहुंचे यहां के सज्जनों ने अनाथालय से सहानुभूति प्रगट करते हुए समयानुसार सहायता दी वहां से चलकर ता० १९-१२-१० को मैनपुरी पहुंचे अनेक कारणों से यहां इस समय विशेष कार्य नहीं होसका पर धर्म्मपत्नी मास्टर छोटेलाल भार्गव बी० ए० द्वारा अनाथालय को अच्छी सहायता प्राप्त हुई वहां से चलकर ता० २२-१२-१० को करहल में श्रीमान् चौबे दौलतरामजी के स्थान पर आये यहां के निवासी सज्जनों ने २०) की सहायता का वादा किया वहां से चलकर जिला इटावा के औरैया आदि

ग्रामों में प्रचार कर सहायता प्राप्त की इसी दर्मियान में ता० ३०—१—२१० को श्रीमान् लाला ज्वालाप्रसादजी बी० ए० एक्जेक्टूयू इंजीनियर नहर गंगशाख भोगिनीपुर से मिलना हुआ उक्त श्रीमान् ने भी अनाथालय की सहायतार्थ वचन दिया। इस प्रकार सन् १९१० का दिसम्बर मास भी समाप्त होगया। इति ॥

निवेदक—शमानन्द उपदेशक,
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर.

अनाथालय समाचार ॥

अक्टूबर के अन्त में ७३ बालक और २९ बालिकाएं अनाथालय में उपस्थित थीं। नवम्बर तथा दिसम्बर में ५ बालक और ४ बालिकाएं नवीन प्रविष्ट हुईं और ३ बालक, ३ बालिकाएं पृथक् हुईं। दिसम्बर १९१० के अन्त या जनवरी १९११ के प्रारम्भ में ७५ बालक और ३० बालिकाएं अनाथालय में सम्मिलित रहीं।

विवाह।

भरतपुर विक्टोरिया अनाथालय से आई सुभद्रा कन्या का विवाहसंस्कार बा० गोधराजजी क्लर्क लोकोआफ़िस अजमेर के साथ ६ दिसम्बर १९१० ई० को बड़े समारोह के साथ हुआ। कन्या देवनागरी भाषा भलीभान्ति लिख पढ़ सकती हैं और गृहकार्य में कुशल है। उक्त बाबू गोधराजजी ने इस शुभ अवसर पर अन्य स्थापनाओं के दान के अतिरिक्त समस्त बालक बालिकाओं को एक वक्त उत्तम भोजन कराया और इसी तिथि पर सदैव भोजन कराते रहने की प्रतिज्ञा की।

आप प्रसन्न होंगे यह जानकर कि उक्त बा० गोधराजजी भी इसी अनाथालय द्वारा पालित युवक हैं जो अब अनाथालय के सहायक हैं।

गोशाला।

इस समय छोटे बड़े ३७ जानवर गोशाला में उपस्थित हैं, ६ गायें दूध देती हैं, १ गाय ने दो बच्चे दिये हैं। ।ऽ दूध प्रतिदिन छोटे २ बालकों तथा रोगियों के लिये मिल जाता है। यदि दानीजन अधिक दूध की गायें दान दें तो सब बच्चों को सात्विकी भोजन मिल सकने में आसानी है। गोशालासम्बन्ध में जितनी सहायता छातड़ी के नम्बरदार म० भारमलजी से प्राप्त हुई है वह अवश्य धन्यवाद के योग्य है आशा है कि अन्य ज़िमींदार महाशय भी इस ओर ध्यान देंगे।

हमारे गतमास के नोटपर कुछ महाशयों ने शीत निवारणार्थ वस्त्र तथा रुपया भेजकर सहायता की है, आशा है कि अन्य धनसम्पन्न महाशय भी इनकी दुःखनिवृत्ति का प्रयत्न करेंगे।

बालविवाह दुःखों का मूल है ॥

(बंगाल के प्रसिद्ध डाक्टर मलिक का व्याख्यानः)

डाक्टर मलिक बंगाल के प्रसिद्ध डाक्टरों में से हैं। थोड़े दिन हुए आपने हिंदू विवाह संशोधकमंडल के प्रबंध में एक व्याख्यान यूनीवर्सिटी इन्स्टीटयूट हाल कलकत्ते में दिया। जिसमें आपने मेजिग लेण्टर्न के चित्रों की सहायता से बालविवाह की हानियों को प्रकट किया। हम अनाथरक्षक के पाठकों के लाभार्थ व्याख्यान का मर्म नीचे लिखदेते हैं।

यतः व्याख्याता महोदय उच्चकक्षा के डाक्टर हैं अतः आपका व्याख्यान केवल शब्दसमूह ही नहीं वरन् उसकी तह में गूढ़ मर्म विद्यमान है। हम चाहते हैं कि पाठक स्वयं विचारपूर्वक पढ़ें और दूसरों को पढ़ावें। कहीं २ आपने बङ्गाल सम्बन्धी अङ्क दिये हैं किन्तु यही नियम सर्वत्र भारतवर्ष के लिये ठीक होगा। आपने कहा:—

बालविवाह से अनेक हानियां हैं जो मोटे रूप में इस प्रकार विभक्त की जासकती हैं।

(अ) स्वास्थ्य सम्बन्धी.

(आ) धनसम्पत्ती या जनसंख्यासम्बन्धी.

(इ) व्यक्तिगत या समूह के अखलाक और बुद्धिसम्बन्धी.

आरोग्यता के विचार से

निम्नलिखित बातें विचारणीय हैं:—

(१) पशुओं में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां पूर्ण युवा होने से पूर्व ही सन्तानोत्पत्ति का कार्य्य आरम्भ कर दिया जावे। मनुष्य २५ वर्ष में या इससे भी पीछे युवा होता है, यह ईश्वरीय नियम बताता है इसलिये कम से कम २५ वर्ष की आयु से पूर्व सन्तान उत्पन्न करना ऐसे नियम को तोड़ना है जिसको समस्त पशुवों के जीवन में वर्त्तमान पाते हैं।

(२) जब पशुओं में किसी कार्य्य के करने की योग्यता प्रथम ही प्रथम प्रकट होती है तो उस के यह अर्थ नहीं कि इसके अंदर पूर्ण बढ़ती हो चुकी। जब बच्चे का दांत पहिले पहिल काटता है तो उससे यह नहीं समझना चाहिये कि बच्चा हर प्रकार के गरिष्ठ पदार्थों को पचासकता है।

(३) लड़कियों को बालविवाह तथा समागम के कारण समय से पूर्व ही मासिक धर्म्म आरम्भ हो जाता है। यदि ऐसा अनियम न हो तो रक्त अपने समय पर आरम्भ होगा।

(४) यदि बाल्यावस्था में सन्तान

उत्पन्न होजावे तो इससे सन्तान तथा माता पिता को बहुत हानि पहुंचती है।

इनके अतिरिक्त माता को विशेष कष्ट होता है, जैसेः—

(अ) कभी २ बच्चा नियत समय से पूर्व ही उत्पन्न होजाता है।

(आ) बच्चा उत्पन्न होते समय माता को असह्य वेदना होती है, जो पशुओं में बिलकुल नहीं होती, उनके बच्चे दूसरों की सहायता और तकलीफ़ के विना होते रहते हैं। मनुष्यों को दुःख इसलिये होता है कि वह ईश्वरीय नियम का उल्लङ्घन करते हैं।

(इ) इसके पश्चात् भी माता के स्वाथ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि जो वेदना उसे सहनी पड़ी है वह उसे सहने के योग्य न थी।

(ई) यदि वह एक वार बच भी निकले तो दूसरी या तीसरी वार तो बचना दुर्लभ ही हो जाता है।

(उ) उसका समस्त जीवन रोग का जीवन होता है। कई प्रकार के रोग उसे ग्रसित कर लेते हैं। तपेदिक के रोगी प्रायः इसी बालविवाह के कारण इस पिशाच रोग के फन्दे में फँस जाते हैं।

डाक्टर शोम की साक्षी ॥

डाक्टर शोम हमारे देश के एक बड़े योग्य डाक्टर हो चुके हैं। आपने २५ कन्याओं के विषय में सविस्तर वर्णन किया है, यह कन्याएं बाल्यावस्था में गर्भवती हुई थीं और सन्तान उत्पन्न होगई थी। इन २५ में सेः–

५ कन्याओं को नियत समय से पूर्व प्रसव हुआ।

३ कन्याएं प्रसवकाल में मृत्यु को प्राप्त हुईं।

९ कन्याओं के अन्दर से डाक्टरी यंत्रों द्वारा बच्चा निकालने की आवश्यकता पड़ी।

५ कन्याओं के पीछे पुत्रादि रोगी होगये।

५ पहिले बच्चे के उत्पन्न होने के पश्चात् कुछ काल रोगी रहकर मृत्यु का ग्रास हुईं।

५ दूसरी सन्तान उत्पन्न होने के पश्चात् रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हुईं।

२ तीसरी सन्तान उत्पन्न होने के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हुईं।

शेष का स्वास्थ्य बिलकुल ख़राब रहा।

कलकत्ते में जो पिछले दिनों वैद्यक-महासभा (मेडिकल कांग्रेस) हुई थी। "जिसमें पाश्चात्य तथा भारतीय वैद्यों ने उत्तम २ निबन्ध पढ़े थे, उनसे भी डा० शोम की साक्षी सिद्ध होती है।

बच्चे को क्या हानि होती है।

बाल्यावस्था में उत्पन्न हुई सन्तान भी दुःखों में अपना भाग लेती है। जैसे:—

(अ) प्रायः बच्चा पूर्ति से पूर्व ही पैदा हो जाता है।

(आ) प्रसव अतिकष्ट से होता है।

(इ) बच्चा पैदा ही मरा होता है।

(ई) या पैदा होने के पश्चात् शीघ्र ही मर जाता है।

(उ) कभी २ बच्चा इतना दुर्बलेन्द्रिय होता है कि दूध भी नहीं चूस सकता।

(ऊ) थोड़े समय चंगा रहकर पीछे निर्बल होना आरम्भ होजाता है और मर जाता है।

बहुतसे हालात एकत्र करके देखा-गया है कि बाल्यावस्था म उत्पन्न हुई सन्तान यदि मृत ही पैदा नहीं हुई और पैदा होते ही मर भी नहीं गई तो आजन्म अतिदुर्बल बल्कि मरियल रहती है।

पिछली मनुष्यगणना के अनुसार प्रतिवर्ष एक सहस्र में ३७ मनुष्य मरते हैं और छोटे बालक ३३३ अर्थात् कुल संख्या का तीसरा भाग मर जाता है।

इङ्गलिशस्थान के ऐसे नगरों में जहां सरदी अधिक है, जहां कलों और कारखानों के कारण हवा बहुत खराब है, जहां माता पिता दिनभर बच्चों को अकेला या भृत्यों के अधीन छोड़कर कारखानों में काम करने चले जाते हैं, बच्चों की मृत्युसंख्या इतनी अधिक नहीं, जितनी हमारे देश में है, जहां सरदी कम है, वायु शुद्ध है और माता पिता स्वयं बच्चों की रक्षा करते हैं। जैसे—

मांचेष्टरमें	हजार में	१६०	बच्चे मरते हैं।
आडम्बरमें	,,	१५०	,,
वर्गह्वमें	,,	१३०	,,

अर्थात् मांचेष्टर की मृत्युसंख्या "जो वहां सब से अधिक है" हमारे देश की संख्या से आधे से कम है, यह अत्यन्त खेद और लज्जा की बात है।

सामुदायक शक्तिपर क्या असर होता है।

बालविवाह का खराब असर माता पिता या उनकी सन्तान तक ही नहीं रहता वरन समष्टीरूप से समुदाय (क़ौम) पर भी पड़ता है, जनसंख्या की वृद्धि में न्यूनता होती है और मृत्युसंख्या वेग के साथ बढ़ रही है। परिणाम यह है कि हिन्दुओं की सामुदायिक शक्ति दिनों दिन क्षीण हो रही है अर्थात् संख्या के ख्याल से हिन्दू घट रहे हैं। जब कि यूरोप और एमेरिका के समस्त सभ्य देशों में मृत्यु-

संख्या न्यून होने से जनसमूह बढ़रहा है। इंगलिस्तान में सन् १८९१ में मृत्युसंख्या हज़ार में १९ थी जो १० वर्ष में घटकर १५ रहगई। जनसंख्या की कमी के और भी कई कारण हैं परन्तु बालविवाह भी अपना भाग लेता है।

बंगाल में हिंदू मुसलमानों की संख्या का मिलान बड़ा आश्चर्यप्रद और दुःखमय है। दोनों एक ही राज्य के आधीन एक ही प्रान्त में एक ही अवस्था में रहते हैं परन्तु गत मनुष्यगणना के विवरण से प्रकट होता है कि अब से ३० वर्ष पूर्व हिंदू, मुसलमानों से ४ लाख अधिक थे लेकिन ज्यूं २ वर्ष व्यतीत होते गए हिंदुओं में अद्भुत परिवर्त्तन होता गया। १० वर्ष में मुसलमान हिंदुओं से बढ़गए। सन् १९०१ ई० में मुसलमान हिंदुओं से २६ लाख अधिक थे।

इससे प्रकट होता है कि हिंदुओं की अपेक्षा मुसलमान द्विगुण वेग के साथ बढ़ रहे हैं। यदि हिंदुओं में एक की बढ़ती होती है तो मुसलमानों में दो की। परिणाम यह है कि यद्यपि बालिकेल ख़याल से हिन्दू मुसलमान बराबर हैं तो भी सोशियलजीवन में भेद के कारण मुसलमान हिन्दुओं से अधिक होगये हैं **अर्थात् बंगाल में सौ में से चालीस हिन्दू रहगये हैं और साठ मुसलमान हैं और पूर्वी बंगाल में मुसलमान हिन्दुओं से तीन गुणा हैं।**

यह मिलान अत्यन्त भयानकरूप धारण करलेता है जब हम देखते हैं कि पहिले हिन्दू मुसलमानों से दशलाख से ऊपर अधिक थे और यह सब परिवर्तन तीस वर्ष के थोड़े समय में हुआ और अभीतक बराबर जारी है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि हिन्दुओं की गिरावट और निर्बलता का बड़ा कारण इनकी सामाजिक अवस्था है।

सामुदायिक स्वास्थ्य अख़लाकी और ज़हनी हालत पर असर।

अब हम देखेंगे कि बालविवाह का प्रभाव सामुदायिक स्वास्थ्य अख़लाकी और ज़हनी अवस्था पर कैसा बुरा हुआ है। यह बात विशेष वर्णनीय है कि बंगाल में मझले दर्जे के पठित युवक प्रायः कुपच, मूत्ररोग तथा तपैदिक में ग्रसित रहते हैं और यह रोग उन्हें बाल्यावस्था से ही आरम्भ होजाता है।

डाक्टर आलबिट मूत्ररोग का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि बंगाल में मझली कक्षा के पठित समूह में सैकड़ा पीछे पन्द्रह युवक इस रोग से मरते हैं **और संसार में किसी और स्थान में यह संख्या इतनी बड़ी नहीं।**

इस रोग का बाहुल्य यहां तीस चालीस

वर्ष की अवस्था के बीच में होजाता है। ऐसे मनुष्य बहुत कम होते हैं जो कुपचादि रोगों से निवृत्त हों और जिन्हें वह मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है जो इन रोगों से निरोग रहकर ही हो सकती है।

तपेदिक बढ़रहा है। मध्यम कक्षा का पठित समुदाय सब से अधिक इसका शिकार होता है क्योंकि जीवनयात्रा में इनके लिये बहुत कठिनाइयां सहनी पड़-ती हैं। वह परीक्षाओं के लिये कठोर परिश्रम करते हुए ही ब्याहे जाते हैं जिससे उनकी शक्ति नाश हो जाती है।

मानसिक जीवन पर जो प्रभाव होता है वह भी अप्रकट नहीं, मनोवेग, पुरुषार्थ तथा स्वात्माभिमान सब नष्ट होजाते हैं, शरीर दुर्बल होजाता है, शिक्षा समाप्त होने से पूर्व ही कुटुम्बपालना का प्रश्न सामने उपस्थित होजाता है। ऐसी अवस्था में नए २ कार्य्य करके जीवन व्यतीत करने का ख़याल भी नहीं आसकता, जो काम सब से आसान दिखाई देता है वह किया जाता है और वह भी बेदिली से।

निदान हर सूरत से बालविवाह त्याग देने के योग्य है जिसके लिये प्रत्येक शिक्षाधारी को पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये आ० गज़ट.

राममूर्ति से शिक्षालो—इस भीमसेनी। मनुष्य ने अपने अद्भुत कर्तव्यों द्वारा आजकल भारतवर्ष ही क्या प्रत्येक सभ्य देश को अचम्भित कर रक्खा है। जिन भीम और अर्जुन के महाभारत में वर्णित व्याख्यानों को हम केवल गप्प समझते थे गर्दन पकड़ कर उनको क़ायल बनादिया है। आबाल वृद्ध हरएक की जुबान पर आज इस अद्वितीय बली का नाम उपस्थित है किन्तु ऐसे कम मनुष्य हैं जिन्होंने उनकी इस शहज़ूरी के कारणों पर विचार किया हो। आपने अनेक स्थानों पर व्याख्यान देकर ३ बातों पर बल दिया है।

१—ब्रह्मचर्य्य धारण करो हर प्रकार का बल इसी से प्राप्त होगा।

२—मांस मत खाओ, यह बल वृद्धि में सहायक नहीं वरन् बाधक है।

३—प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन नियमि-त रीतिपर व्यायाम करे।

वास्तव में आपके तीनों उपदेश मनु-ष्यमात्र को ग्रहण करने योग्य हैं।

श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान अजमेर के संक्षिप्त वृत्तान्त ॥

श्रीविरजानन्द विद्यालय में वर्तमान ९ विद्यार्थी शिक्षा पारहे हैं बहुत से प्रार्थनापत्र

आये पड़े हैं परन्तु स्थान और धनाभाव के कारण प्रबन्ध में असमर्थ हैं, इसकारण सर्व प्रान्तों की आर्यसमाजों तथा भद्रपुरुषों की सेवामें अपील के कार्ड छपे हुए भेजे गये हैं। आशा है कि सम्पूर्ण आर्य्यसमाजें और सज्जनपुरुष इस शुभ संस्था के लिये यथाशक्ति सहायता प्रदान कर सभा का हाथ बटावेंगे।

आर्यसमाज भरतपुर का वार्षिकोत्सव २६—३० अक्टूबर तथा १ नवम्बर १० को सानन्द होगया। श्रीमान् स्वा० दर्शनानन्दजी श्री स्वा० अच्युतानन्दजी तथा श्री स्वा० विद्यानन्दजी और पं० परमानन्द जी पं० आर्यव्रतजी पधारे थे तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पं० वासुदेवजी शर्मा पं० विनायकरामजी और आगरा व मथुरा की भजनमंडलियां भी आई थीं, उत्सव बड़ी सफलता से हुआ। लगभग २२५)रु० वेदप्रचार को अपील में प्राप्त हुए।

आर्य्यसमाज लश्कर (ग्वालियर) का प्रथम वार्षिकोत्सव श्री पं० लक्ष्मणरावजी मंत्री आर्य्यसमाज के उद्योग से ता० १६—१७—१८ दिसम्बर १० को सानन्द होगया। श्री पं० वंशीधरजी पाठक देहरादून से तथा श्री पं० वासुदेव शर्म्मा तथा पं० विनायकरावजी और पं० गणेशीलालजी सभा की ओर से भेजे गये थे नगरनिवासियों पर उत्तम प्रभाव रहा ३०) रुपये समाज ने सभा की सहायतार्थ भी प्रदान किये।

श्रीमती प्रबन्धकर्तृ आर्य्यप्रतिनिधिसभा राजस्थान का अधिवेशन आर्य्यसमाज भरतपुर के उत्सव के साथ पर्याप्त उपस्थिति न होने से न होसका था इसलिये ता० २७ नवम्बर १० को आर्य्यसमाज भवन अजमेर में अधिवेशन किया गया था, उक्त अधिवेशन के प्रस्ताव सं० ६ में श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधिसभा राजस्थान का २३ वां वार्षिक अधिवेशन आर्य्यसमाज अजमेर के उत्सव के साथ होना निश्चित हुआ है, अतः सम्पूर्ण राजस्थान प्रान्तीय समाजों को अपनी २ समाज का दशांश निश्चित धन शीघ्र ही कार्यालय में भेज देना चाहिये और जो सज्जन सभा के अधिवेशनों में पधारकर सभा का हाथ बटवाया करें ऐसे सज्जनों को प्रतिनिधि निर्वाचन करके भेज श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से श्रीमान् स्वा० विद्यानन्दजी सरस्वती तथा श्री पं० ज्वालाप्रसादजी ने वैदिकधर्म प्रचार का कार्य करना आरम्भ कर दिया है। राजस्थान प्रान्तीय बहुतसी समाजें योग्य विद्वान सभा में उपदेशक न होने से असन्तुष्ट थीं अतएव ऐसी समाजों को अब शीघ्र ही अपने २ वार्षिकोत्सव नियत करके सूचना देनी चाहिये।

(शेष आगे)

श्री० पं० गंगासहायजी उ० द्वारा प्राप्त ॥

(गताङ्क पृष्ठ २४ से आगे)

१) गुप्तदानी गुरुदासपुर
१) ला० नागरमलजी महाजन बहरामपुर
१) पं० प्रभुदयालजी मैनेजर अमृतसर बैंक गुरुदासपुर
१) पं किशोरीलालजी ,,
१) ला० जगन्नाथजी ,,
।) सरदार देवीसिंहजी कलखाहसो ,,
१) जवाहरसिंहजी ,,
॥) ला० ज्ञानचन्दजी ,,
१) बा० गुरुदत्तसिंहजी वकील ,,
१) बा० जगन्नाथजी वकील ,,
॥) ला० छज्जूरामजी ,,
॥) रूपचन्दजी ठेकेदार अफीम ,,
१) वद्रीप्रसादजी क्लर्क म्यूनीसिपल कमेटी गुरुदासपुर
॥) रामजसजी गुरुबाज़ार अमृतसर
१) नन्दलालजी ,,
१) सीतारामजी द्वारा नारायनदासजी बाज़ार कृष्ण-पुस्तकालय अमृतसर
।) हजारीलालजी मोतीरामजी जैनी ,,
॥) देशराजजी बाजार गुरुमहल्ला ,,
१) व्रजलालजी छज्जूमिश्र की गली द्वारा कालारामजी चपड़ासी आ० स० ,,
॥) हरिश्चन्द्रजी मोतीगंज ,,
॥) शंभूरामजी स्वर्णकार ,,
॥) बा० वसन्तसिंहजी वकील ,,
२) सरदार मोहनसिंहजी कर्माड्योढ़ी ,,
१) सम्भूमलजी गुलजारीमलजी अमृतसर
१) ताराचन्दजी पूरणचन्दजी ,,
१) कान्हचन्दजी मुन्नीलालजी ,,
१) बालमुकन्दजी रामजीदासजी ,,
।) मल्लामलजी संडारामजी ,,
१) युगलकिशोरजी ,,
=) कर्मचन्दजी टोकरियों वाली गली ,,
॥) बा० आशारामजी असिस्टेन्ट मैनेजर पंजाब नेशलबैंक ,,
१) माधोरामजी मैनेजर ,, ,,
१) ला० हुक्मचन्दजी दलाल ,,
५) ला० भक्तरामजी किशनचन्दजी स्वदेशी कोठी केसरीबाग़ ,,
।-) सरदार गुप्तदानी ,,
२) कुलजसमलजी गिरधारीलालजी सर्राफ़ गुरुबाज़ार ,,
१) राजमलजी सर्राफ़ बत्तीहट्टा ,,
२) मोतीरामजी कटड़ा सफेद ,,
१) काशीरामजी बकूसीनेटर कूंचा अरदासी ,,
।) किशनदासजी बत्तीहट्टा ,,
१) ठाकुरदासजी कटड़ा हरिसिंह ,,
॥) ला० दौलतरामजी ,,
१) संतरामजी विल्लूमलजी ,,
।) मा० भक्तरामजी द्वारा कालाराम चपड़ासी आ० स०
।) ला० जगन्नाथजी नरायनदासजी ,, बाजार टकसाल ,,

१) बालमुकन्दजी सराफ़ बाजार अमृतसर छोटारस्ता ,,
१) ईश्वरदास खजांनचीमल गुरुबाज़ार ,,
१) बिल्लूमलजी माणकचन्दजी गुरुबाज़ार ,,
१) बालकिशनजी ,, ,,
१) चरणदासजी रेशमवाले ,, ,,
१) घासीरामजी बाज़ार साबुन ,,
॥) रामरत्नजी अजुध्याप्रसादजी कटड़ा जयमल ,,
१) जयरामसिंह कटड़ा जयमल ,,
१) हुक्मचन्दजी कटड़ा कन्हैया ,,
१) सीतारामजी मंत्री शुद्धिसभा ,,
१) द्वारकादासजी गुरूबाज़ार ,,
५) ला० गंगाराम जी दुकान कटड़ा आलूवाला ,,
१०) सेठ प्रहलादरायजी दुकान ला० ईश्वरदासजी धर्मचन्दजी कटड़ावाला ,,
१) मोहनलालजी गुरुबाज़ार ,,
२) सुन्दरदासजी दलाल बत्तीहट्टा ,,
१) बा० ऋषिरामजी स्वदेशीवेङ्क कम्पनी ,,
२) रामरक्खामलजी बाज़ार साडन ,,
२) ला० नरायनदासजी मालिक दुकान गंगामलजी तीर्थरामजी कटड़ा आलूवाला ,,
१) श्यामलालजी बजाज़ा द्वारा ,,
२) निक्कामलजी मा० ला० भिक्खनमलजी फकीरचन्दजी क० आ० अमृतसर

२) हरनामदासजी कटड़ा आलूवाला अमृ०
२) सर्वदयालजी मंत्री आ० स० गुरुमहल्ल ,,
१) घनश्यामदासजी ,,
११) दामोदरदासजी द्वारा नरसिंहदासजी बलदेवदासजी सुस्लिल घन्टाघर अमृतसर
५) बिशनदासजी बन्शीधरजी द्वारा भूगामलजी ,,
३) किशोरचन्द जी बत्तीहट्टा ,,
१) कान्हचन्द जी कटड़ा सफ़ेद ,,
१) नरसिंहदासजी ,,
१) लोकूम जी कटड़ा हरिसिंह ,,
१) संतरामजी ऋषिरामजी कटड़ा आलूवाला ,,
१) राममलजी बाज़ार बत्तीहट्टा ,,

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने पं० शमानन्दजी द्वारा दान दिया ॥

८) गुप्तदान द्वारा बा० बलदेवप्रसादजी लखनऊ
२) रघुवरदयालजी ,,
।) गंगाप्रसादजी ,,
।) सूर्यबलीजी ,,
।) विश्वेश्वरनाथजी ,,
।) मार्फत कृष्णानन्दजी स्टूडेंट ,,
॥) बा० रामनिधीवनजी स्टेशनमास्टर बिंदौरा
२५) राय ज्वालाप्रसादजी लखनऊ

।) जे. आर. भंडाई स्टूडेंट लखनऊ
।) दुर्गाप्रसादजी ,,
।) रामेश्वरसहायजी ,,
।) अमृतनाथ उपाध्याय ,,
=) बी० डी० घोषाल स्टूडेंट ,,
।) घोषल नं० २ ,, ,,
।) कृष्णानन्दजी ,,
।) गिजादियालजी ,,
।) विश्वनाथजी स्टूडेंट ,,
=) सर्दारीलालजी ,,
=) गुप्तदान ,,
=)॥ गुप्तदान ,,
।) राधेप्रसादजी महरोत्र ,,
शिवरत्न पाडे वस्त्र दिये ,,
१) राय ज्वालाप्रसादजी ,,
-) गजाधरप्रसादजी ,,
॥) बा० बलदेवप्रसादजी ,,
॥) चन्द्रिकाप्रसादजी ,,
५) मार्फत मंत्रीजी आ०स० सिटी लखनऊ कई एक महाशयों का दान
१) महाशय रामाधीनजी लखनऊ
१) बा० कालिकाप्रसादजी ,,
१) बा० विश्वेश्वरदयालजी ,,
॥) महाशय गरुडसिंहजी ,,
२) बा० रघुनाथसिंहजी वकील बारहबंकी
।) बजरंगसिंहजी कुर्मी जमींदार बिलीपुर
२) डाक्टर बहादुरसिंहजी बारहबंकी
१०) बा० रामनारायणजी ,,
५) बा० पन्नालालजी वकील बारहबंकी
१) माधोदयालजी मुख्त्यार ,,
४) बा० रामचन्द्रजी वकील ,,
५) बा० रामेश्वरप्रसादजी यादगार मृतधर्मपत्नी ,,
१) बा० बृजलालजी वकील ,,
१) बा० नवाबबहादुरजी ,,
१) बा० नर्बदाप्रसादजी ,,
२) मुन्शी प्यारेलालजी ,,
२) बा० गंगाप्रसादजी ,,
३) बा० मथुराप्रसादजी ,,
१) बा० नानकप्रसादजी ,,
१) बा० गौरीशंकरजी वकील ,,
१) बा० महेश्वरसहायजी ,,
१) गुप्तदान ,,
॥) गुप्तदान ,,
।) गुप्तदान ,,
१) गुप्तदान ,,
१) लाला शंकरदासजी ,,
१) नक़द मार्फत बा० हरनारायनजी सिंधोली जि० सीतापुर ८) के वस्त्र
१) बा० शम्भूदयालजी बारहबंकी
२) के वस्त्र बा० जगन्नाथप्रसादजी ,,
४॥।-)॥ नक़द पबलिक सिंधोली
२) के वस्त्र पबलिक सिंधोली
८॥।) भैकूलालजी स्टेशनमास्टर बारहबंकी
६) मंत्रीजी आर्य्यसमाज सीतापुर अवध
४) मंत्रीजी आर्य्यसमाज मल्लावां अवध

२) पण्डित रामाधीनजी अवस्थी मल्लावां
१।)॥ पबलिक मल्लावां अवध
१॥) गुप्तदान माधोगंज
।) स्टेशनमास्टर माधोगंज
५) बा० मोहनलालजी वकील हरदोई
५) पं० खूबचन्दजी मन्नीलालजी ,,
५) ला० बद्रीप्रसाद जयदयालजी ,,
५) ला० जयचन्द रामनरायनदासजी ,,
५) ला० चन्द्रसेन दुलीचन्दजी ,,
१) पं० ललताप्रसादजी ,,
१) ला० कुन्दनलालजी ,,
३२।=) मार्फत मुन्शी ललताप्रसादजी ,,
।) बा० प्रयागदत्तजी ,,
मित्रकम्पनी हरदोई मोजा ३
४) बा० बलरामसिंहजी सिधौली जि० सीतापुर
१॥) मार्फत मंत्रीजी आ० स० हरदोई
आर्य्यसमाज हरदोई पुस्तकें और टोपियें दीं
२) ला० अशरफीलालजी सिहौना जि० हरदोई
१) ला० ज्ञानीलालजी हरदोई
१) भज्जू हलवाई ,,
१) जगन्नाथजी अग्निहोत्री ,,
१) भगन गडरिया ,,
१) पेगन मुर्जी ,,
१) गज्जा पांडे ,,
१) बद्री अवस्थी सिहोना जि० हरदोई
१) तुलसी सिहोने ,,

१) देवीदीनजी केवट हरदोई
।) पुरन ,,
॥) फुटकर ,,
॥) सिवली हलवाई ,,
।) डल्ला बनिया ,,
१) खिमन गडरिया नौरंगपुर
।) मोहन लोहार सिहौना
।) नन्हे गडरिया ,,
।) भूधर ,, ,,
॥) ज्वाला दीक्षित ,,
।) मिहर्वान गडरिया ,,
।) नन्दा कहार ,,
॥) छिद्दू साह ,,
।) नरपति दुब्बे ,,
१) बैजू दीक्षित ,,
।) भवानीदीन बनिया ,,
।) बलदेव अहीर ,,
।) मुन्ना ,,
।) जवाहर ,,
।) दुर्गजकवां ,,
।) दुर्गनखुर्द ,,
।) रोहन अहीर ,,
।) बलदेव मुर्जी ,,
७) राय विशम्भरनाथजी थमिरवां सिंहौना
५) मुं० अवधविहारीलालजी दीवान सिंहौना
१) हकीम गंगादीनजी थमिरवां
१) ला० वंशीधरजी ,,
१) ला० कालताप्रसादजी ,,

१) दारोगा मूलचन्दजी थमिरवां
१) ला० कन्हैय्यालालजी ,,
१) बलदेवप्रसादजी त्रिवेदी ,,
१) काशीप्रसादजी ,,
१) ला० मैकूलालजी ,,
॥) रामदयालजी ,,
।) फकीरे भुर्जी ,,
।) केहरी वैश्य ,,
॥) रामचरणजी हलवाई ,,
≈) तनकू बनियां ,,
।) रामलालजी हलवाई ,,
॥) फक्के बक्काल ,,
१) गुलाब गर्द मुसलमान ,,
१) धुर्गई कुम्हार ,,
।≈) डल्ला वगैरह ,,
१) घसीटे साह ,,
॥≈) मार्फत फत्ते ,,
१) बैनी गडरिया ,,
१) बिहारी साह ,,
॥) गुलाब साह ,,
१) मुरली साह ,,
१) मार्फत बजू ,,
≈) पंचम साह ,,
।) नन्दू साह ,,
१) दुर्गा कलवार ,,
१) द्वारिका ब्राह्मण ,,
१) लछमण हलवाई ,,

७) मार्फत नम्बरदार कृष्णसिंहजी वगैरह मंझिया जि० हरदोई
ठाकुर अयोध्यासिंहजी मंझिया पोस्ट पिहानी जि० हरदोई वाम्कर्टे मूल्य १।) की
२) ठा० छत्तसिंहजी बखरिया जि० हरदोई
१८) श्रीमान् राय केदारनाथजी रईस थमिरवां
१५) श्रीमती माता केदारनाथजी थमिरवां
२) श्रीमती बड़ी बहिन ,,
२) श्रीमती छोटी बहिन ,,
१) महाशय कैलाशचन्द्रजी ,,
१) मुं० बांकेलालजी गोपामऊ ,,
१) पं० शंकरप्रसादजी मिश्र माधोगंज जि० हरदोई
१) ठाकुर माधोसिंहजी हरदोई
१) ला० बद्रीदासजी हरदोई
२) श्रीमान् राय केदारनाथजी रईस थमिरवां
२) बस्तीसिंह दगपालसिंहजी माधोगंज
१) जानकीप्रसादजी रामचन्द्रजी ,,
१०) गुप्तदान ,,
१) द्वारिकाप्रसाद रामदयालजी ,,
॥) सीतारामजी ,,
।) गोकुलप्रसाद रामशरणजी ,,
१) स्टेशनमास्टर ,,
४) भवानीप्रसाद परागीलालजी ,,
१) हरीबख्श झब्बूलालजी ,,

२) रामप्रसाद रामदयालजी माधोगंज
१) भजनलाल मथुराप्रसादजी ,,
१) बा० दसौंधीरामजी ,,
१) बलदेवसहाय हरदयालजी ,,
॥) पं० रामसागर ,,
॥) अजुद्धी साह ,,
१) ला० मुन्नीलालजी ,,
१) जेठमल भीखमचन्दजी ,,
।) हीरालाल रामचरणजी ,,
१) राधाकृष्णजी ,,
१) मूलनरायणजी शुक्ल ,,
॥) रामदयाल अंगनलालजी ,,
॥) पं० रामनरायणजी ,,
१) पं० मातादीनजी पाठक ,,
१) मुन्शी जोधारामली मास्टर ,,
१) पं० शंकरप्रसादजी मिश्र माधोगंज जि० हरदोई
१) ठा० माधोसिंहजी
१) ला० वद्रीनाथजी
२) श्रीमान् राय केदारनाथजी रईस भमिरवां
२) वस्तीसिंह दयालसिंहजी माधोगंज
१) जानकीप्रसाद रामचन्द्रजी ,,
१०) गुप्तदान ,,
१) हरीप्रसाद रामदयालजी ,,
॥) सीतारामजी ,,
।) गोकुलप्रसाद रामशरणजी ,,
१) स्टेशनमास्टर ,,
५६) पबलिक बिलग्राम मार्फत शिवधनमिश्र ,,

७) ला० राधाकृष्ण हरिकृष्णजी माधोगंज
१) मूलनरायनजी ,,
५) बा० चुन्नीचन्दजी ,,
३॥) गुप्तदान ,,
२) गुप्तदान ,,
१) कुंवर मुनीश्वर वीरेन्द्रसिंहजी रईस उत्तरधौंया
२) चक्रपाणि सुदर्शनलालजी
१) कुंवर महावीरदत्तसिंहजी भारद्वाज
१) धर्म्मपत्नी ,, ,,
।) ठाकुर टीकमसिंहजी बिलग्राम
५) बा० उमरावबहादुर लखनऊ
१) बा० राधाकृष्णजी लखनऊ
१) ठाकुर कामतासिंहजी मलिहाबाद
॥।=) कुछ स्टूडेण्ट मार्फत महाराजसिंह सोमवंशी लखनऊ
१) डाक्टर इन्द्रमणिजी लखनऊ

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्हों का दान श्रीमान् पं० केशवदेजी भार्गव डिस्ट्रिक्ट मेनेजर्स आफ़िस जोधपुर (मारवाड़) के द्वारा आया

१) बा० विशम्भरनाथजी
॥≡) बा० रामचन्द्रजी
।=) बा० गिरवरलालजी
=) बा० घासीलालजी
॥-) बा० केशवदेवजी
॥-) बा० केशवचन्द्रजी

।=)॥ बा० मोहम्मदरजाजी
॥-) बा० श्रीबल्लभजी
=) बा० चुन्नीलालजी
।) बा० नन्दलालजी
=) बा० बृजमोहनस्वरूपजी
।) बा० शिवदयालजी

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने पण्डित गंगासहायजी उपदेशक द० अ० द्वारा सहायता दी

१) पं० पालारामजी एजेण्ट डिस्टनरी अमृतसर लुधियाना
१) पं० नोरङ्गरायजी मा० पं० लक्ष्मणदासजी अध्यापक पुत्री पाठशाला लुधियाना
।) बीबी राधे अध्यापिका आर्य्यकन्यापाठशाला लुधियाना
॥) पं० धनीरामजी शास्त्री मुख्याध्यापक गणेशीलालजी आर्य्यपुत्रीपाठशाला लुधियाना
=) पं० लक्ष्मणदासजी अध्यापकपुत्री पाठशाला लुधियाना
११) ला० मंगतसैनजी खजानची आ० स० द्वारा लुधियाना
-) ला० किशोरीलालजी नत्थूरामजी ,,
।) ला० रूपलालजी ,,
।) रामजीदासजी ,,
२) हीरालालजी सौदागर ,,
१०) राधाकृष्ण जी दुकान कटड़ा आलूवालिया अमृतसर
१) रूपलालजी कटड़ा आलूवालिया अमृतसर
१) रूपचन्दजी मा० हरनामदास रलारामजी दुकान कटड़ा अहलुवालिया अमृतसर अनाथरक्षक
२) बा० श्यामदासजी वकील अमृसर
१) ला० धनीराम जी कटड़ा अहलुवालिया अमृतसर
१) पं० रामनाथजी मैनेजर बैजनाथ हाईस्कूल अमृतसर
१) ला० मोहनलालजी दलाल अमृतसर
।) प० जसराजजी एजेण्ट कृष्णामिल ,,
१) ला० सीतारामजी दलाल ,,
१) ला० लक्ष्मण सुनार ,,
॥) ला० केशोरामजी ,,
।) रणसिंहजी अतरफरोश ,,
।) पं० रामचन्द्रजी शर्मा पानवाले ,,
=) सच्चसिंहजी ,,
।) गोविन्दसिंहजी ,,
१) ला० किशोरचन्जी ,,
१) मा० मुंशीरामजी ,,
।) ला० शम्भूरामजी ,,
।) पं० मलकसीरामजी अमृतसर
१) ला० खुशीरामजी ,,
॥) सुलतानमल गूजरमलजी ,,
१) श्यामलालजी बजाज ,,
१) खुशीरामजी ,,
१) डा० फतचन्दजी सम्पादक सूर्य्यप्रकाश अमृतसर

५) ला० गंगारामजी दुकान कटड़ा आलूवाला अमृतसर

१०) सेठ प्रहलादरामजी दूकान ला० ईश्वरचन्दजी धर्म्मचन्दजी कटड़ा आलूवाला अमृतसर

१) मोहनलालजी गुरुबाजार ,,

२) सुन्दरदासजी दलाल बाजार बतीहट्टा अमृतसर

१) बा० ऋषीरामजी स्वदेशी बीत्रिङ्क कम्पनी अमृतसर

२) डा० रामरक्खामलजी बाजार साबुन,,

२) ला० नारायणदासजी मालिक दूकान ला० गंडामलजी तीर्थरामजी कटड़ा आलूवाला अमृतसर

१) ला० श्यामलालजी बजाज द्वारा ,,

२) निक्कामलजी मार्फत ला० भिक्खनमल जी फकीरचन्दजी कटड़ा आलुवाला ,,

२) हरनामदासजी ,, ,,

२) सर्वदयालजी मंत्री आ० स० गुरुहमल,,

१) ला० घनश्यामदासजी ,,

११) ला० दामोदरदासजी नरसिंहदास बलदेवदासजी मुसिल घंटाघर ,,

५) विशनदास बन्शीधरजी द्वारा लम्भूरामजी अमृतसर

३) ला० किशोरचन्दजी बतीहट्टा ,,

१) कान्हचन्दजी कटड़ा सफेद ,,

१) नरसिंहदासजी ,,

१) लोकूमकजी कटड़ा हरिसिंह ,,

१) संतरामजी ऋषीरामजी कटड़ा आलूवाला अमृतसर

१) रामामलजी बाजार बत्तीहट्टा ,,

।~) सरदार गुप्तदानी ,,

२) ला० कुलजसमल गिरधारीमलजी सर्राफ गुरुबाज़ार ,,

१) राममलजी सर्राफ बतीहट्टा ,,

२) मोतीरामजी कटड़ा सफ़ेद ,,

१) काशीनाथजी वेक्सीनेटर कूंचाअरदासी अमृतसर

।) किशनदास जी बत्तीहट्टा ,,

१) बा० ठाकुरदास जी कटड़ा हरिसिंह ,,

॥) ला० दौलतरामजी ,,

१) ला० सन्तराम बिट्ठूमलजी ,,

।) मार्फत भक्तरामजी द्वारा बालाराम चपरासी आ० स० ,,

।) ला० जगन्नाथ नरायनदासजी बजार टकसाल ,,

१) बालमुकन्दजी सर्राफ़ बाज़ार चोरस्ता ,,

१) ईश्वरदासजी खज़ानचीमल गुरू बज़ार ,,

१) बिल्लूमलमाणकचन्दजी गुरूबाजार ,,

१) बालकिशनजी ,, ,,

१) चरणदासजी रेशमवाले ,, ,,

१) घसीटारामजी बाज़ार साबुन ,,

॥) रामरतन अजुध्याप्रसाद कटड़ा जयमल का ,,

१) ला० अवरामसिंहजी कटड़ाजयमल अमृ०
१) हुक्मचन्द कटड़ा कन्हैय्या ,,
१) सीतारामजी मंत्री शुद्धिसभा ,,
१) द्वारकादासजी गुरुबाज़ार ,,
॥) रामजसजी गुरुबाज़ार ,,
१) नन्दलालजी ,, ,,
१) सीतारामजी द्वारा नारायणदासजी
बाज़ार कृष्ण—पुस्तकालय ,,
।) हज़ारीलाल मोतीरामजी जैनी ,,
॥) देशराजजी गुरुबाज़ार ,,
१) ब्रजलालजी छज्जूमिश्र की गली
द्वारा कालाराम चपरासी आ० स० ,,
॥) हरिश्चन्द्रजी मोरीगंज ,,
॥) शम्भूरामजी स्वर्णकार ,,
॥) बा० बसन्तसिंहजी वकील ,,
१) सर्दार मोहनसिंहजी कर्मोड्योढ़ी ,,
१) ला० शम्भूमलजी गुलजारीमलजी ,,
१) ताराचन्द पूर्णचन्दजी गुरुबाज़ार ,,
१) कान्हचन्द मुरलीलालजी ,, ,,
१) बालमुकन्द रामजीदासजी ,, ,,
।) मन्हामल सन्डारामजी ,, ,,
१) जुगलकिशोरजी ,, ,,
२) कर्म्मचन्दजी टोकारियों वालीगली ,,
॥) बा० आशारामजी असिस्टेन्ट
मैनेजर नेशनल बेंक ,,
१) माधोरामजी मैनेजर नेशनल बेंक ,,
१) ला० हुक्मचन्दजी दलाल ,,
५) भक्तरामजी किशनचन्दजी स्वदेशी वस्त्र

कार्य्यालय केसरीबाग़ अमृतसर
१) ला० गुलाबमल कृपारामजी सर्राफ़
गुरुबाज़ार ,,
१) शंभूनाथजी मोरीगंज ,,
१) ला० मुलकराज गुरुबाज़ार ,,
१) बा० ठाकुरदासजी मेलसर्विस ,,
॥) ला० प्रेमदास द्वारा ला० केशोरामजी
गुरुमहल ,,
२) गुप्तदानी गुरुदासपुर
१) ला० कर्मनरायणजी ,,
१) ला० द्वारिकादासजी ,,
१) ला० बालमुकुन्दजी ,,
१) ला० धनपतरामजी ,,
१) ला० राजबहादुरजी देहलवी ,,
१) मुं० शरीफ़हुसैनजी ,,
२) ला० राजबहादुरजी द्वारा ,,
१) गुप्तदानी ,,
१) ला० नागरमलजी महाजन बहरामपुर
१) पं० प्रभुदयालजी मैनेजर
अमृतसर बेंक गुरुदासपुर
१) पं० किशोरीलालजी ,,
१) ला० जगन्नाथजी ,,
।) सरदार देवासिंहजी तलखालसर ,,
१) ,, जवाहरसिंहजी ,,
॥) ला० ज्ञानचन्दजी ,,
१) बा० गुरुदत्तसिंहजी वकील ,,
१) बा० जगन्नाथजी ,,
॥) बा० छज्जूरामजी ,,

॥) ला० रूपचन्दजी ठे० अफीम गुरुदासपुर
१) पं० बद्रीप्रसादजी लखनऊ वाले
क्लर्क म्यूनीसिपल कमेटी ,,
॥) सरदारीलालजी ,,
।) किशनचन्दजी घड़ीसाज ,,
।) रामलालजी सोडावाटर वाले ,,
१) किरकिट क्लब ,,
१) ला० लम्भूरामजी वकील ,,
॥) ,, पंसारी ,,
१) महन्त सहजनाथजी ,,
॥) ला० भक्तरामजी बजाज ,,
⇀) पं० नन्दलालजी कानूगो ,,
।) ला० मेलारामजी मिसलखार ,,
॥) ला० भागमलजी साहू कलेरकलां ,,
।) डा० नत्थूजी सब एसिस्टेण्ट सर्जन ,,
।) ला० रोशनलालजी गिरदावर बंदोबस्त ,,
।) ला० मिट्ठालालजी ,, कानूगो ,,
१) देवीदयालजी आनरेरी मजिस्ट्रेट ,,
⇀) चौ० मोहम्मदखांजी अलहमद
अफसर माल ,,
१॥) बा० नन्दगोपालजी सुप्रिण्टेण्डेण्ट
दफ्तर फ़ारसी ,,
१॥) दीवान मोहनलालजी हेडक्लर्क ,,
=) मुंशी अबदुलअज़ीज ,,
=) मुं० अबुलमालिक ,,
॥) बा० हुकमचन्दजी नाजरदफ्तर
बन्दोस्त ,,
।) बा० केशवदेवजी क्लर्क ,,

१।) ला० रोशनलालजी गिरदावर
गुरुदासपुर
।) गुलदानी ला० देवीदयालजी ,,
॥।) बक्शीनन्दलालजी गिरदावर कानूगो ,,
१≡) ला० मिट्ठालालजी ,, ,,
५) बा० सन्तरामजी बैरिस्टर ,,
१) ला० बक्शीरामजी प्रधान व
जेठूमलजी मंत्री आ० स० दीनानगर
३) बक्शीरामजी द्वारा ,,
१) मुलकराज केसरा ,,
१) शिवदयालजी ,,
२) अमीचन्दजी ओवरसियर ,,
१) ला० गंगाविशनजी साहूकार ,,
१) ला० गौरीशंकरजी अग्रवाल ,,
१) ला० दास्तमल महताजी ,,
४॥।−) फकीरचन्दजी सहायक आ.स. द्वारा
॥) निहालचन्दजी ,,
१) ला० शंकरदासजी साहूकार ,,
१) पं० चन्दनसिंहजी ज़िलेदार नहर
बाराद्वारी ,,
२) बा० जयमलसिंहजी हेडक्लर्क
रेलवे गोदाम द्वारा ला० लछम-
णदासजी उपमंत्री आ० स० ,,
२१॥≡) ला० फकीरचन्दजी
उपमंत्री आ०स० द्वारा ,,
१) ला० बूड़ामलजी कटड़ा हरिसिंह
अमृतसर
⇀) ला० दीनानाथजी कर्मोड्योढ़ी ,,

॥) ला० किसनचन्दजी कटड़ा
बाघसिंह अमृतसर
।) ला धनीरामजी नोशहरा ,,
१।॥=) ला० लक्ष्मणदासजी
दीनानगर द्वारा ,,
२) बलसिंहजी ,, ,,
५) पं० रामचन्द्रजी प्रबन्धकर्त्ता
शुद्धिसभा ,,
१०) ला० कोटूमल हरगोविन्दजी लाहौर
१) ठा० सुखरामदासजी मैनेजर
राजपूत गजट ,,
१) गुप्तदानी ,,
२) दीनानाथजी की धर्मपत्नी द्वारा ला०
मुन्नीलाल की धर्मपत्नी ,,
१५) राय अमोलकरामजी वकील
लायलपुर
२।) गुप्तदानी हिन्दूसभा मंडल मुलतान
ला० लक्ष्मीचन्दजी गंगोह ५ वस्त्र पैजामा
१, कुरता १, अंगा १, कोट १, मोजेजोड़ी १
२) ला० चन्दूलालजी गौड़ आश्रम लाहौर
१) ला० गोपालकृष्णजी गौड़ आश्रम ,,
॥) पं रामसिंहजी ,, ,,
॥) ,, हरिवारापनजी ,, ,,
१) ला० सन्तरामजी ,, ,,
।) सूर्यभानजी ,, ,,
।) ला० परमानन्दजी ,, ,,
।) हरध्यानजी ,, ,,
।=) ला० श्रीरामजी ,, ,,
।=) विश्वम्भरदासजी ,, ,,

।) सीतारामजी गौड़आश्रम लाहौर
१) ला० लक्ष्मणदासजी ,, ,,
॥) पं० शादीरामजी ,, ,,
॥) कृष्णदत्तजी ,, ,,
।) ला० रामजसपालजी ,, ,,
१) चौधरी कालचन्दजी ,, ,,
।) पं० कृष्णकुमारजी ,, ,,
।) पं० रजनीकान्तजी ,, ,,
१) ला० फूलासिंहजी ,, ,,
॥) ,, मक्खनलालजी ,, ,,
।) चौधरी वंशगोपालजी ,, ,,
॥) सरदार देवासिंहजी ,, ,,
१) ला० शिवनारायणजी ,, ,,
।) पं० कल्याणदासजी सभासद्
आर्यसमाज भटिंडा
॥) अमृत औषधालय गुमटी बाज़ार ,,
।) म० रामचन्द्रजी प्रबन्धक
अमृतऔषधालय गुमटी बाज़ार ,,
।) कविराज ठाकुरदत्तजी वैद्य की
धर्मपत्नी गुमटी बाज़ार ,,
२) ला० रामचन्द्रजी चावलवाले
सुआबाजार ,,
१) ला० रामशरण शिवदासजी सर्राफ़
सुआ बाज़ार लाहौर
१) ला० मोहनलालजी मुरलीधर ,, ,,
१) रामजीदासजी बाजार हट्टा ,,
१) दीनानाथ फकीरचन्दजी सराफ़ ,,

५) प्रिय जगज्योतिनरायनजी कूंचा ठाकरां लाहौर
।।) ला० वासुदेवजी ,, ,,
१) तुलसीरामजी चावलवाले सुआबाजार,,
१) ला० देवीदासजी निवाहूमलजी ,, ,,
१) सुखरामदासजी सुनार ,, ,,
।।) ला० गंडामलजी ,, ,,
१) ला० नरायनदासजी सर्राफ ,, ,,
।) ला० भगवानदासजी ,, ,,
१) आयारामजी ,, ,,
१) मुकुन्दलालजी सुनार ,, ,,
१) महेशदासजी ,, ,,
१) रक्खारामजी बजाज ,, ,,
१) भूरामलजी सुनार ,, ,,
१) दयालदासजी दीनानाथजी सर्राफ ,, ,,
।।) दोलतरामजी ,, ,,
मंत्रीजी आ०स० बच्छोवाली द्वारा एक लोटा एक आसन ,,
१) ला० आयारामजी सुनार सुआबाजार,,
।।) ला० रलारामजी रेल्वे नयादफ्तर ,,
।।) पं० जानकीनाथजी ,, ,,
१) बा० लक्ष्मीनरायणजी ,, ,,
।।=) बा० रलारामजी द्वारा ,, ,,
ला० काशीरामजी वैद्य मंत्री आ० स० बच्छोवाली लाहौर ६१ पुराने वस्त्र, १ ट्रेक्ट एक नमस्ते का चित्र
१) बा० ज्ञानप्रकाशजी सुनार द्वारा
ला० दयालदासजी बच्छोवाली लाहौर
१) ला० कर्म्मचन्दजी ,, ,,
१) ला० रामजीदासजी गोटेवाले ,,
१) ला० देवीदासजी साहब सबइन्स्पेक्टर पुलिस गंडावाला ,,
१) लभूरामजी द्वारा गुरुदयालजी सुनार ,,
१) पं० चुन्नीलालजी शर्म्मा वैद्य आयुर्वैदिक औषधालय ,,
ला० काशीरामजी वैद्य मंत्री आ० स० बच्छोवाली लाहौर १ ओढ़नी गोटेदार
१) ला० जमैयतरामजी इञ्जीनियर अहमदाबाद
।) अशरफीलालजी कबाड़ी अम्बाला छावनी
२) मोहम्मद इस्माइलजी टीनवाले ,,
।।) ला० कालीदीनजी महल्ला पल्लेदार ,,
१) ला० प्रभुदयालजी सौदागर ,,
२) बा० प्रभुदयालजी मेल एजेण्ट देहली रेलवे स्टेशन
।।) बा० जयलालजी सार्टर रेल्वे स्टेशन देहली
।) भगवानदासजी सार्टर ,, ,,
६) ला० मुरलीधर शंकरदासजी कसेरे चावड़ी बाज़ार देहली मा० चन्दा
१) बा० रामसिंहजी ठिठौली देहली
१) बा० सूर्य्यभानजी मेरठ
१) ला० मेहरचन्दजी शाहपुर देहली
१) मोहनसिंहजी राजपूत पलवाड़ा
१।=) धर्मोवती चितौली
१) ला० रामशरणजी बराहद्दा मेरठ

१) चौबे लेखरामजी पहासू
२) प्रधान हीरासिंहजी ससारणा अमरोहा
१) चौबे शेरसिंहजी बादलपुर
।) चौबे शीशरामजी खेड़ी
।) चौबे चन्दनसिंहजी ठकोली
१) बख्तावर राजपूत भांगरी
१) ला० मूलराजजी ,,
१) रामनरायन महादेवजी ,,
॥) नानकचन्दजी भोंवाले ,,
१) श्योलालजी दादरी
१) चौ० जगतसिंहजी खड़खड़ी
१) पं० कालीचरणजी मडौला
१) जयकुंवारजी प्रधान कुंडली
१) बंशीधरजी हिरनवारा
१) चेतरामजी जानी
॥) मूलसिंहजी सलावा
॥=) पं० भोजराजजी बुलन्दशहर
॥) हरज्ञानजी जोगणाणा
=) ला० श्यामलालजी मेरठ
१) चौ० मागराजसिंहजी मुंसिफ जाट क्षत्रिय सभा किरठल
१॥ ~) गुप्तदानियों से मेले में
१) ला० केशवशरणजी मवानाकलां
ला० मोहनलालजी प्रबन्धकर्त्ता मेला प्रचार हापुड़ द्वारा १ डोरियेका पुराना दुपट्टा
८।~) चितौली और बेगमवादियोंके डेरों में से प्राप्त
गुप्तदानियों से मेलागढ़ ८ टके गंसूरी धोती १ पुरानी
१) चौ० श्यामसिंहजी उचेती
२) बा० विश्वम्भरनाथजी वकील अमरोहा
ला० रामप्रसादजी उपप्रधान आ० स० अमरोहा १ कुरता १ पजामा १ अचकन १ बासकट पुरानी
।) पं० दौलतरामजी सबपोस्टमास्टर ,,
१८॥~) ला० बाबूरामजी मंत्री आ० स० अमरोहा द्वारा एकत्रित किये

नामावली उन दाताओंकी जिन्हों ने मास नवम्बर १९१० में सहायता की ॥

=) रामभरोसेलालजी द्वारा सु० द० अ०
~) बा० चोखामलजी अजमेर
२) बलदेवजी कण्ट्रेक्टर अजमेर
२) धर्मपत्नी पं० मुन्नीलालजी अजमेर
१) फकीरचन्दजी टीचर गवर्नमेण्ट हाई-स्कूल बरेली
५) केशवदेवजी डिस्ट्रिक्ट मैनेजर्स आफिस जोधपुर
२००) बा० रामजीवनजी भार्गव भूतपूर्व दीवान शाहपुरा चिरस्थायी फंडमध्ये
२५) मन्नालालजी चान्दौर रेलवे स्टेशन अमरावती
५) घासीरामजी सब डिवीजनल ओफीसर उज्जैन
१) गुलाबरायजी वर्म्मा पोस्टमास्टर महू मा० कच्छा

२) बा० गोबरधनदासजी फोर्थमास्टर हाई-
स्कूल झालरापाटन
४) पं० छज्जूरामजी प्रधान आर्य्यसमाज
झालरापाटन
१) गोपीकृष्णजी कथाव्यास बीकानेर
१) प्यारेलालजी टंडन सबडिवीजनल
इन्स्पेक्टर हमीरपुर
१०) ठाकुर सुगमसिंहजी रिसालदार
इस्लामनगर
।-)॥ महाशय शमानन्दजी द्वारा मुरली-
धर भजनीक
१) बा० हरिशंकरजी अजमेर
-)बा० हरस्वरूपजी कायस्थमहल्ला अजमेर
-) ला० अंगनलालजी हलवाई ,,
)॥ द्वारा अधिष्ठाता द० अ० ,,
२५) पं शमानन्दजी उपदेशक द्वारा
द० अ० माधोगंज से
१) बा० जगदीशसहायजी माथुर ज्युडी-
शियल अफसर प्रतापगढ़ मालवा मा० चन्दा
१०) चौधरी उदयसिंहजी नदबई पो०
आ० मांडलगढ़ मेवाड़
२) धर्मपत्नी बा० भट्टूलालजी मन्दिरआफ
महल्लाकल्लू पोखर मुंगेर
२=)॥ द्वारा मुरलीधरजीके पं० शमानन्दजी
उपदेशक द० अ० के हिसाब मध्ये
१०) विहारीलालजी बुकसेलर बुलन्दशहर
1) बा० मुकुटविहारीलालजी अजमेर
-) बा० हरस्वरूपजी कायस्थमहल्ला ,,
५०) बा० चिम्मनलालजी क्लर्क आफिस
आफ पी० एम० ओ० इण्डिया
शिमला मार्फत कोषाध्यक्ष आ० स० शिमला
।।।) बा० चोखामलजी अजमेर
-) बा० रविशंकरजी हरिशंकरजी भार्गव
अजमेर
५०) द्वारा पं० शमानन्दजी उपदेशक द०
अ० लखनऊ से
४) बैजनाथजी भार्गव मार्फत कान्नी एण्ड को
अलाहाबाद
२) धन्नालालजी सिग्नेलर कैसरपुरा डा०
खा० नीमाहेड़ा
।।।=) शम्भूदयालजी प्रधान आ० स०
इन्दौर
११) नवलसिंहजी पटवारी कोलबुनयादी
सोलन जि० शिमला
=) मुं० मोतीलालजी महल्ला रामगढ़
रतलाम
=) पण्डिता राधिका देवी रामगढ़ रतलाम
-) पं० मनोरमा देवीजी ,,
।) बा० मुकटबिहारीलालजी ,,
-) बा० रविशङ्करजी अजमेर
१) बा० सुखदेवजी
=) बा० सूरजकरणजी
१) ला० कुन्दनमलजी
१।) नरायन बारी खरवा जि० अजमेर
१) कूपन का पता नहीं नोटबुक के अनुसार

२५) श्रीयुत राजश्री ठाकरां साहब श्री देवलिया मेओकालेज द्वारा जगदम्बालालजी अजमेर

१) मुकुन्दलालजी बुकिङ्गक्लर्क ओ० एण्ड आर० बाराबंकी

५) कुंवर सुघरसिंहजी

५) रामस्वरूपजी प्रधान आ० स० बुर्हानपुर जि० मुज़फ्फर नगर

२५) बा० लूनकरणजी सबडिवीजनल क्लर्क रेजीडेन्ट इञ्जीनियर डी. एच. आर. हिसार द्वारा सेठ लादूरामजी

१) भंडारी मोतीलालजी किशनगढ़

२) आसारामजी सन आफ़ भगत किशनदासजी महल्ला वेसोई सराय नगीना जि० बिजनौर

१०) रतनलालजी इंजीनियर लाहौर

५) हरबंसलालजी जिलेदार नवाबगंज बरेली

१४-॥) क्लर्क्स आफ दी स्टोर सेकशन एक्जामीनर आफ़िस एन० डब्ल्यू० रेलवे लाहौर

१००) द्वारा पं० गङ्गासहायजी उपदेशक द० अ०

१) चौधरी रामचन्द्रजी उपप्रधान आ० स० कैराना जि० मुजफ्फ़रनगर

५॥=)॥ द्वारा शमानन्दजी उपदेशक दयानन्द अनाथालय अजमेर

२) गङ्गाप्रसादजी सेक्रेटरी आर्य्यसमाज अलीगढ़

≡) द्वारा मु० द० अ० अजमेर पौन रत्तीसोने का मूल्य जो दान में आया

नामावली उन महाशयों की जिन्होंने मास नवम्बर १९१० में चन्दा देकर सहायता की।

१) मि० शोरावजी दादाभाई वकील अजमेर

१) मुं० देवीदयालजी भार्गव ,,

१) बा० जवाहिरलालजी जेलर ,,

≡) ला० कजोड़ीमलजी सुनार ,,

४) बा० विशम्भरनाथजी वकील ,,

१) पं० वंशीधरजी वकील ,,

१) पं० जी. आर. खांडेकरजी ,,

१) बा० मूलचन्दजी गार्ड ,,

१) मि० धनपतप्रसादजी ,,

=) बालकरामजी ,,

१) बा० मिट्ठनलालजी वकील ,,

=) बाबूलालजी मदारगेट ,,

॥) डा० ओ० एम० खांडवाला ,,

॥) गा० विभूतीभूषणजी ,,

१=) द्वारा बा० रघुवीरसिंहजी ,,

।) रणजीतसिंहजी ,,

।) रघुबरसिंहजी ,,

=) बा० नवलकिशोरजी ,,

-) बा० जगन्नाथजी ,,

-) बा० माधौप्रसादजी ,,

-) बा० कन्हैयालालजी ,,

-) बा० हरदेवलालजी ,,

=) मिस्तरी हुल्ली अजमेर
=) बा० रामसहायजी ,,
१) रायं सेठ चांदमलजी वेङ्कर अजमेर
=) बा० प्यारेलालजी ब्रेंच स्कूल ,,
।) बा० लक्ष्मीनरायणजी म्यूनीसिपल दफ्तर ,,
१) मुं० लाडलीलालजी मुख्तार ,,
।) मा० छोगालालजी गर्वनमेण्ट कालेज ,,
।) बा० रामसिंहजी म्यूनीसिपल दफ्तर ,,
।) बा० गोवरधनजी मदारगेट ,,
१) बा० बनवारीलालजी बुकिङ्गक्लर्क ,,
१०) बा० प्रभुदयालजी वकील ,,
२) मुं० फूलचंदजी जज्ज ,,
१) बा० पुरुषोत्तमदासजी ,,
।) चैनसुखजी मुनीम ,,
=) अंगनलालजी हलवाई ,,
=) धर्म्मपत्नी विलासरायजी ,,

नामावली उन दातओं की जिन्हों ने मास सितम्बर १९१० में दान द्वारा सहायता की ॥

८।।।=) भगूरामजी सब डिवीजनल आ-फ़ीसर चितराल
२) महादेवजी स्वर्णकार द्वारा सेठ मांगी-लालजी आ० सा० नीमच १) दान १) गोशाला
२।।) द्वारा बा० बिहारीलालजी ठेकेदार अजमेर
।।) शिवलालजी अजमेर
।।) दूदा ,,
।।) रामलालजी ,,
१) बिहारीलालजी ठेकेदार ,
१) नन्दलालजी द्वारा मंत्री आ० स० गाज़ियाबाद
१०) मंगलावतीजी द्वारा कुंवर उदयसिंह जी आवागढ़ आगरा
५) ठाकुर अनोपसिंहजी
६।।।=) द्वारा पं० गंगासहायजी अमृतसर
५) गुप्तदान द्वारा मु० द० अनाथालय
२।।।≡) गणेशीलालजी प्लीडर अम्बाला सिटी
१) गुलाबरायजी वर्मा कोटा राजपूताना
२) सेठ भोपतरामजी बद्रीलालजी c/o छगन लालजी शर्मा इन्दौर
१०) कांचीशर्मा नम्बर १६ कालाकर बाजार कलकत्ता
।।।=) भगवानदासजी नायब कानूगो सं-डीला ज़ि० हरदोई
५) द्वारा शमानन्दजी उपदेशक द० अ०
५) बनारसीदासजी वैद्य कल्यारी बजार मेरठ
१) प्रभुलालजी उपमंत्री आ० स० इटावा
१) विजयरामजी पुस्तकाध्यक्ष आर्य्य-समाज इटावा

२) जसराजजी महता धामणगांव (बराड़) द्वारा सेठ मांगीलालजी नीमच
दान १) गौशाला १)

१) मि० गौरीशंकरजी बैरिस्टर एटला अजमेर

५) भगवानदासजी असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर आदमबाहन जि० मथुरा

१) बा० जगदीशसहायजी माथुर मजिस्ट्रेट प्रतापगढ़ मालवा मा० चन्दा

१।।।) जिलेदार साहब नहर कागारोल द्वारा चिरंजीलालजी

३।) सुमेरचन्दजी गुप्त सबओवरसियर नहर कागारोल द्वारा चिरंजीलालजी

।।) बा० रामजीवनजी तोसनीवाल अजमेर

४) रहसविहारीलालजी टांडा जि० फैजाबाद

२) रामभजनदासजी उपमंत्री आ० स० मुज़फ्फ़रनगर द्वारा हरिश्चन्द्रजी वर्मा

२५) द्वारा शमानन्दजी उपदेशक द० अनाथालय, स्थान लखनऊ से

२) नानकचन्दजी मोहर्रिर देहली दर्वाज़ा देहली

१) भग्गूलालजी वैश्य धामपुर जि० बिजनौर

१) अमृतलालजी आर्य्य अकोला

१) मुन्नीलालजी आकोट

१) जयनरायनजी वैदक बरेली पोस्ट आकोट

=) मंगनलालजी हलवाई अजमेर

=) बा० हरस्वरूपजी कायस्थमहल्ला अजमेर

१।) हीरालालजी पूना निवासी पूना अस्पताल

५) मंत्रीजी आ० स० अबोहर

२) हरद्वारीलालजी औक मुजफ्फ़रनगर

१।।।≈) झमइपतसिंहजी मंत्री आ० स० झड़ीहवल मुजफ्फ़रनगर

।।।≡) करमचन्दजी मंत्री आ० स० मुकेरवाल जि० होशियारपुर

२९) द्वारा शमानन्दजी उपदेशक द० अ० अजमेर, लखनऊ से

२) ला० विहारीलालजी प्रधान आ० स० महरोली पो. खास जि० देहली

१) चन्द्रिकाप्रसादजी कचहरी कलेक्टरी कानपुर

४०) पं० गङ्गासहायजी उपदेशक दया० अना० द्वारा

२) जसकरनजी फारेस्ट डिपो क्लर्क जोधपुर

७८।=) द्वारा गङ्गासहायजी उपदेशक दया० अना० स्थान गुरुदासपुर से

५) मुकुन्दलालजी गुप्त अमीरपुर डा० खा० खुर्जा जि० बुलन्दशहर

१) कुंवर जयदेवसिंहजी दर्जा ८

१) भीमसिंहजी सभासद् आ० स० पुरैनी (बिजनौर)

≈) धर्म्मपाल पूर्व अनाथ

।।) सूर्य्यमलजी नम्बरदार बिड़गच्याबास

।।) रामचन्द्रजी स्कूलमास्टर ,,

॥) छगनलालजी इनांणी बिड़गच्छ्यावास
॥) जवाहरलालजी पटेल ,,
॥) सदालालजी गूजर ,,
॥=) अमरचन्दजी इनांणी ,,
॥) बच्छा खटांणा ,,
।) सद्दा खटांणा ,,
।) खियां नेकाडी ,,
।=) भूरालालजी ,,
=) शङ्करलाल पुजारी ,,
=) गोपाल गूजर ,,
=) गोदा कुराच ,,
=) कज्जा पटेल ,,
=) सोराम पटेल ,,
=)। जोरा कुराच ,,
=) रामकृष्ण बैश्य ,,
=) छीतर गूजर ,,
४८।) मैनेजर भारत ब्यौपार कम्पनी अजमेर
१) ठा० केसरसिंहजी सन आफ् श्योदानसिंहजी तिलौरा डा० खा० पुष्कर
४) हेमपुरीजी गोसांई सब आसिस्टेण्ट सर्जन सामोद जयपुर स्टेट
५) कांची शर्म्मा नियर बड़ाबाजार कलकत्ता
१) नन्दलालजी c/o मुंशी प्रसादीलालजी खुर्जा
६॥) द्वारा जयरामदासजी स्टेशनमास्टर अठेली
१) जयरामदासजी स्टेशनमास्टर अठेली
१) बिशम्भरनाथ जी ,, ,, ,,
१) बा० ज्वालाप्रसादजी टाइमकीपर ,,
१॥) बा० रामबिलासजी
१) ला० चुन्नीलालजी
१) ला० रामलालजी
२) मूलचन्दजी कागजी द्वारा बा० बिहारीलालजी भार्गव वकील ब्यावर

नामावली स्थानिक मासिक-चन्दा देनेवाले सहायकों की मास सितम्बर १९१० की ई०

२) बा० विशम्भरनाथजी वकील अजमेर
१) बा० मिट्ठनलालजी ,, ,,
=) तनसुखरामजी ,,
।) पं० लक्ष्मीनारायनजी म्यूनीसिपल दफ्तर ,,
=) फूलचन्दजी सुनार ,,
।) ला० चैनसुखजी मुनीम ,,
।) ला० गोरधनजी ,,
१) बा० जवाहिरलालजी जेलर ,,
१) मि० शोरावजी दादाभाई वकील ,,
१) पं० वंशीधरजी शर्म्मा ,, ,,
॥) मि० धनपतप्रसादजी ,,
।) डा० ओ० एम० खांडवाला ,,
=) अंगनलालजी हलवाई ,,
=) प्यारेलालजी अैंचस्कूल ,,
१) पं० जी० आर० खांडेकरजी ,,

१) बा० मूलचन्दजी गार्ड अजमेर
१) मुं० देवीदयालजी भार्गव ,,
१) बा० बनवारीलालजी बुकिङ्ग क्लर्क ,,
=) रामसिंहजी म्यूनीसिपल आफ़िस ,,
१) मुं० फूलचन्दजी जज्ज ,,
॥) रणजीतसिंहजी लोको आफ़िस ,,
।=) नवलकिशोरजी ,, ,,
॥=) घनश्यामदासजी ,, ,,
=) जगन्नाथजी ,, ,,
=) बा० माधोप्रसादजी ,,
=) कन्हैयालालजी ,,
=) हरदेवलालजी ,,
=) मनीलालजी गोकलजी ,,
।) बूलेजी मिस्तरी ,,
=) बा० सोहनलालजी ,,
=) बाबूलालजी मदारगेट ,,
।) मा० छोगालालजी गवर्नमेण्ट कालेज ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने मास अक्टूबर १९१० में सहायता की।

२) दुर्गाप्रसादजी मार्फ़त प्रधान आ० स० बघेरा जि० मुजफ्फ़रनगर
२) दीवानसिंहजी मोहर्रिर ज्युडीशियल जानसठ जि० मुजफ्फ़रनगर
१।–) द्वारा अमरदत्तजी सोढा लाखनको-टड़ी अजमेर
)। रामसिंहजी म्यूनीसिपल आफ़िस अजमेर
२) नेत्रवैद्य ला० रूपचन्दजी परमसुखजी सोजत
२) गुप्तदान द्वारा जयदेवजी
।) हरविलासकी माता कैसरगंज अजमेर
१) तनसुखरामजी मदारगेट अजमेर
–) अंमनलालजी हलवाई ,,
३॥) किशनलालजी लोधे हिन्दी हेड व पोस्टमास्टर पीपलसवा जि० उज्जैन
५) सूरजसहायजी मुख्तार कलेक्टरी एटा
१) बा० गुलाबरायजी वर्मा पोस्टमास्टर महू
२॥) जञ्जीमल मनोहरलालजी देहली
२॥) भगवानदासजी जोहरीमलजी देहली
१) अग्रणी धर्मपत्नी मोहनलालजी दोला-णी पीपलीगली नागौर
१०) सुन्दरलालजी बी० ए० एल०एल० बी० प्लीडर
१) बा० हजारीलालजी भजोई पो० आ० मुरादाबाद
५५॥–) प्रेसीडेण्ट आ० स० पठानकोट पंजाब द्वारा
३) ला० बैजनाथजी द्वारा मु० द० अ०
–) ला० अमनलालजी हलवाई अजमेर
=) ला० हरस्वरूपजी कायस्थमहल्ला ,,
१) गौरीलालजी आचार्य्य हेडमास्टर वर्नाक्यूलर मिडल महम्मदपुर होलकर स्टेट
२५) शमानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा

५) धर्मपालजी बजाज बनारस
१०) चिरंजीलालजी फतहपुर सीकरी जि० आगरा
५) गोपीलालजी हैदराबाद दक्षिण
१) सेठ देवकिशनजी पीती गोदानागली अजमेर द्वारा पं० नथमलजी तिवाड़ी
१) महाराजसिंहजी आफिस कानूगो गोरखपुर द्वारा मि० गौरीशंकरजी बैरिस्टर अजमेर
१) बा० जगदीशसहायजी माथुर जुडीशियल आफीसर प्रतापगढ़ मालवा मा० चं०
१) मंगूमलजी मार्फत मंत्रीजी आ० स० जोधपुर
१७) ला० भवानीदासजी साहब बाज़ार नैनीताल
५) पटेल चातुरभाई रतनाभाई तम्बाकू वाला मारकेट भड़ौंच
१) बा० ईश्वरदयालजी देसाई मा० सु० द० अ०
१) बा० शिवकरणजी द्वारा सु० द० अ०
१) बा० रेलवे आ० शिवकरणजी द्वारा सु० द० अ०
१०) राधारमणजी भार्गव द्वारा मि० मुकन्दलालजी भार्गव औषधालय
७॥।=) ठा० बहादुरसिंहजी नीदासर (बीकानेर) द्वारा महेशस्वरूपजी वर्म्मा भरतपुर
५) ठा० विश्वनाथसिंहजी मौजा काकादेव पो० मसवानपुर जि० कानपुर
१५) श्यामनरायणजी एस० ए० एस० सर्दार शहर (बीकानेर)
५) श्यामसुन्दरजी क्लर्क पी० डबल्यू० डी० विंटरफील्ड शिमला
२) ठाकुर कुन्दनसिंहजी मोहर्रिर चुंगी रुड़की
५१) ठाकुरदासजी गुप्त हलदौर जि० बिजनौर
५०) द्वारा रामानन्दजी उपदेशक द. अना.
२) छोटेलालजी असिस्टेन्ट स्टेशनमास्टर पीपलिया हेडआफिस नीमच
१) बा० गौरीशंकरजी बी० ए० बैरिस्टर एटला अजमेर
९) मुरलीधरजी आर्य्यसमाज सिरसा (पंजाब) द्वारा सु० द० अना०
–) बा. हरस्वरूपजी कायस्थ महल्ला अजमेर
–) मगनलालजी हलवाई अजमेर
१) पं० रघुनाथजी अजमेर
२०) मिसेज महता द्वारा धनभसदत्त केसरगंज अजमेर
१०) कोषाध्यक्ष आर्य्यसमाज सीतापुर
२) लक्ष्मणसिंहजी स्कूलमास्टर खरवा जि० अजमेर
१) पं० देवदत्तजी नागर द्वारा के० बी० सेक्रेटरी आ० स० लखनऊ द्वारा सु० द० अ०
३=) बा० बनारसीदासजी द्वारा पं० जयदेवजी सु० द० अ०
१००) द्वारा रामानन्दजी उपदेशक द० अ० स्थान माधोगंज से

१२।) कविरत्न अखिलानन्दजी शर्म्मा बीमा पालिसी महीगंज अलाहाबाद
५) पं० नाथूलालजी मजिस्ट्रेट किशनगढ़
२) मुकन्दीलालजी हसनपुर बिजनोर
१।=) मंत्रीजी आर्य्यसमाज मजीठा अमृतसर
१) पं० सुन्दरलालजी राजवैद्य मु० बुधवा बजार पो० शाहाबाद जि० हरदोई
१५) द्वारा शमानन्दजी उपदेशक द० अ० माधोगंज से
५) सेक्रेटरी आर्य्यसमाज शिकारपुर
१०) प्यारेलालजी नाज़िम नीम का थाना नियर जयपुर
२) बहुलालजी रईस संडीला
=)। रविवार का दान द्वारा अनाथों के आया

नामावली मासिक चन्दा देने वाले महाशयों की मास अक्टूबर १६१० ई०—॥

१) पं० बंशीधरजी शर्म्मा वकील अजमेर
॥) मुं० रामधनजी डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स ज़िला अजमेर
१) बा० बनवारीलालजी बुकिङ्ग क्लर्क ,,
४) राय सेठ चांदमलजी बेङ्कर मोतीकटला अजमेर
१) पंडित जी० आर० खांडकर साहब अजमेर
=) प्यारेलालजी ब्रेंचस्कूल ,,
१) मुं० देवीदयालजी भार्गव आनरेरी मजिस्ट्रेट ,,
।) फूलचन्दजी सुनार ,,
१) मि० शोरावजी दादाभाई वकील ,,
≡) पं० रामचन्द्रजी ओवरसियर ,,
२) बा० जवाहिरलालजी जेलर ,,
१) मिट्ठनलालजी वकील ,,
।) मा० छोगालालजी गवर्नमेण्टकालेज ,,
।) बा० रामसिंहजी म्यूनीसिपल दफ्तर ,,
=) बा० तनसुखरामजी केसरगंज ,,
।) बा० रणजीतसिंहजी लोकोशोप ,,
=) बा० नवलकिशोरजी ,, ,,
।≡) बा० जगन्नाथजी ,, ,,
–) बा० माधवप्रसादजी ,, ,, ,,
≡) हरदेवजी ,, ,,
=) मनीलाल गोपालजी ,, ,,
=) दुन्नी गिरधारी ,, ,,
।) बा० रघुवीरसिंहजी ,, ,,
=) बा० रामसहायजी ,, ,,
।=) आनन्दीलालजी ,, ,,
।) बैजनाथजी ,, ,,
१) मा० बिभूतीभूषणजी ,, ,, ,,

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास अक्टूबर सन् १६१० में वस्तुदान दे सहायता की ॥

धर्म्मादा रविवार अजमेर आटा मिश्रित ।ऽ२ अन्न ऽ५॥। भूसी ऽ८ रोटी ऽ३
„ „ „ आटा मिश्रित ऽ५॥ गेहूं चणे ऽ॥।
पं० नथमलजी तिवाड़ी अजमेर जो ।ऽ६ मूंग ऽ३॥
धर्म्मादा रविवार अजमेर आटा मिश्रित ।ऽ५ गेहूं चणे ऽ८ दाल ऽ१॥ भूसी ।ऽ७॥ रोटी ऽ६॥
ला० छन्नामलजी टोपीवाले मदारदरवाज़ा अजमेर लड्डू ऽ७॥ जलेबी ऽ७॥
बा० गप्पूरामजी गार्ड मकान सेठ लादूरामजी केसरगंज अजमेर सब बच्चों को एक वक्त भोजन
हरविलासजी की माता अजमेर जौ ऽ३ मकान से लाये
सेठ लादूरामजी. केसरगंज अजमेर. केलेकी फली ७५ बच्चों को
श्रीमती अणची देवी धर्म्मपत्नी मा. मोहनलालजी महेश्वरी पीपली गली नागोर पापड़ ऽ६ बड़ी ऽ१= थाली १ बाटकी १ भर्त्या १ चमचा १ गड़ुली १
बा० ईश्वरीप्रसादजी केसरगंज. अजमेर. जलेबी ऽ३ सेर
ला० कन्हैयालालजी अत्तार मदारदरवाज़ा अजमेर चावल ऽ८॥ पान नागरवेल ७५
धर्मादा रविवार अजमेर आटा जौ गेहूं ।ऽ४॥ घृत ऽ॥≡ गेहूं जौ ऽ३॥ भूसीरोटी ऽ६॥
तहसीलदारजी साहब द्वारा अजमेर लहँगे ३० टोपे ३४ चोली १७
बा० ईश्वरीप्रसादजी केसरगंज अजमेर जलेबी १) की
द्वारा मु० द० बोर्डिंगहाउस अजमेर गद्दा १
पं० जयदेवजी शर्मा केसरगंज अजमेर मावा ऽ॥≁
पं० हरिश्चन्द्रजी त्रिवेदी अजमेर कटोरी १५ छोटी जर्मनसिलवर की
हरिप्रियजी पूर्वअनाथ अजमेर दो छोटे बालकों को भोजन एक वक्त
पं० हमीरमलजी अजमेर ६ बालक और ६ बालिकाओं को भोजन एकवक्त
बा० ग्यासीलालजी लाखनकोठरी अजमेर केले की फली ३६
ला० शिवलालजी उपदेशक वैश्यमहासभा मेरठ जलेबी ।ऽ२॥
धर्मपत्नी स्वर्गवासी ला० रामस्वरूपजी अजमेर ७ बालकों को भोजन कराया एकवक्त
बा० कन्हैयालाल शोभारामजी केसरगंज अजमेर ४० लड़कों को भोजन कराया एकवक्त

बा० मदनमोहनलालजी पोस्टमास्टर रेलवे अजमेर चने ।ऽ
धर्मपत्नी स्वर्गवासी डा० महताप्रसादजी अजमेर सब अनाथों को भोजन दिया एकवक्त
चिम्मनलालजी मन्त्री आ० स० जैपुर कपड़ा रेशमी सुर्ख गज़ ४॥।
बा० छोटेलालजी नसीराबाद मिठाई ऽ२॥।
धर्मादा रविवार अजमेर गेहूं का मिलवां आटा ऽ७॥ उर्द की दाल ऽ≈॥ बड़ी ऽ८॥।
अन्न गेहूं जो ऽ१ भूसी ऽ७॥ नमक ऽ८
चांदमलजी पहरेदार अजमेर मिठाई ऽ२ खील ऽ।≈
ला० बसन्तीलालजी ला० अमृतलालजी पुलिस सुपरिंटेण्डेन्ट उदयपुर कोट ८ ओवर-
कोट १ कुर्ता १ अंगरखा ५ पजामे ५ वास्कट १ टोपी जरीन १ टोपी काबुली १
टोपा १ पगड़ी ६ साफा १ मफर ऊनी १ गुलूबन्द १ मोजा जोड़ी १ गद्दे २ दरी १
बस्ता किताबें १ सलेट १ तख्ती १ तमंचा १ बच्चों का कच्छा १ रजाई १ तकिया २
बा० जोतीप्रसादजी मूंदड़ी मोहल्ला अजमेर कोट ४ वास्कट १
धर्मादा रविवार अजमेर मिलाहुआ आटा ।ऽ मिलाहुआ अन्न ऽ५ मूंग की दाल ऽ≈ भूसी ।ऽ१॥

मास नवम्बर सन् १९१० में जो दान आया ॥

बा० बलदेवप्रसादजी ठेकेदार डिग्गी बाजार अजमेर अनाथों को मिठाई ऽ४ दो रुपये की
मुन्नीलालजी मिश्र की धर्मपत्नी केसरगंज अजमेर अनाथों को मिठाई ऽ४ दो रुपये की
बा० चोखामलजी अजमेर जौ ।ऽ गिलास १ कटोरी १ पीतल की ≠) नक़द
बा० हीरालालजी अजमेर भोजन १० अनाथों को एक वक्त
कानाजी श्री द० अनाथालय अजमेर खील ऽ२ ॥) आने की
बा० मिट्ठनलालजी ओवरसियर डिग्गीबाजार अजमेर मिठाई ऽ६ दो रुपये की
ला० गेगराजजी केसरगंज अजमेर जौ ।ऽ१
धर्मादा रविवार अजमेर आटा मिलाहुआ ।ऽ४ दाल मूंग चने की ऽ≈ गेहूं ऽ। भूसी
रोटी मिलीहुई
बा० हीरालालजी अजमेर जौ ॥ऽ५ सेर
पं० हमीरमलजी अजमेर लड्डू जौ के गायों के लिये ४०
श्रीमान् ठाकुरसाहब रूपाहेली ज्वार पुरनी २० मन
रूपवतीदेवी अध्यापिका पुत्रीपाठशाला अजमेर ऽ५॥ सिंगाड़े
महाशय धर्मवीरजी अजमेर छोटे बच्चों को मिठाई ऽ॥।

फूलचन्दजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर चार अनाथों को एक वक्त भोजन कोट ऊनी १
कमीज़ ऊनी १ टोपी १ गुलूबन्द १ सब पुराने हैं

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिलाहुआ आटा ।ऽ४ जौ मिलेहुए ऽ४॥ भूसी ऽ५॥
मूंग की दाल ऽ≈

गणेशीलालजी आगरेवाले अजमेर केसरगंज ८ अनाथों को भोजन एक वक्त

बा० मुकटविहारीलालजी क्लर्क कैरिज आफ़िस पन्नीगरों का चौक अजमेर ११ अनाथों को भोजन एक वक्त

बा० बिशनदयालजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर ८ अनाथों को भोजन एक वक्त

बा० चोखामलजी अजमेर गेहूं ऽ४॥ कलाकन्द ऽ।– नक़द ॥|)

रविशंकर हरिशंकरजी मदारदरवाज़ा अजमेर घी ऽ। चांवल ऽ२॥ नमक ऽ– पूड़ी ऽ१≈
जलेबी ऽ–॥ बूरा ऽ।≈ नक़द –)

रायबहादुर मुन्शी हरनामदासजी जूडीशियल एसिस्टेण्ट कमिश्नर अजमेर ऽ८ जलेबी
श्रीमान् के पिता लाला निहाल सिंहजी महोदय तथा लक्ष्मणदासजी सुपुत्र द्वारा
वितीर्ण

पं० मुरलीधरजी भजनीक द० अ० अजमेर मिठाई ऽ॥≈ ॥) की पुष्कर में अनाथों को

डाक्टर टुयांलालजी ब्यावर परात बड़ी १ तांबे की वज़न ॥ऽ२

मुन्नालालजी तोषनीवाल केसरगंज अजमेर ११ छोटे बच्चों को भोजन और कुर्ते ४
गोटा लगाहुआ. अंगरखी १ टोपी ३ कोट २ टोपा १ बच्चों को

पं० नथमलजी तिवाड़ी अजमेर जौ ऽ७॥

धर्म्मपत्नी पं० रघुनाथ शर्मा अजमेर ऽ५ सिंगाड़े लड़कियों को

धर्म्मपत्नी पं० कल्याणदत्तजी शर्मा अनाथालय अजमेर चने भुने हुए ऽ। लड़कियों को

बा० मुकटविहारीलालजी क्लर्क कैरिज आफिस पन्नीगरों का चौक अजमेर मिठाई ऽ१।
और नक़द ।)

धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं का आटा ।ऽ४ गेहूं जौ मिले हुए ऽ५≈ बाजरा ऽ॥≈
उड़द की दाल ऽ। भूसी रोटी ऽ३

बा० छीतरमलजी लाखनकोठड़ी अजमेर द्वारा रामसिंहजी म्यूनीसिपल खज़ानची जौ
ऽ४॥। गेहूं ऽ४॥

(शेष आगे)

Register No. J. 19.

* ओ३म् *

भाग ८ — श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर का मासिकपत्र. — अङ्क ३, ४.

अनाथरक्षक ॥

पौष, माघ १९६७ वि०

जनवरी, फरवरी १९१०ई०

जिसको—

अनाथालय सभा ने पं० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा।
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय
अजमेर से छपाया.
और
पं० मुन्नीलालमिश्र प्रकाशक द्वारा अजमेर से प्रकाशित किया।

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा बान्धवः ।
किं वास[illegible]कं, किमशनं, किं वारि, वातश्च कः ॥
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते त्वन्नाम जानीमहे ।
हा हा नाथ ! अनाथरक्षक ! सदा नः पाहि पाहि प्रभो !!!

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा।

वार्षिक मूल्य १)

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर के मासिक आयव्यय का नक्शा दिसम्बर १९१० ।

आय.

११९२॥=)॥।	दान
२६।)	मासिकचन्दा स्थानिक
८७)	,, बाहर
१६॥=)	किराया मकानात
१)	अनाथरक्षक
३१॥≡)॥।	अमानत
५६।-)॥	कारखाना
१४१)	पोलीटिकल एजेंट हाड़ौती एंड टोंक
८०॥=)	फुटकर
२९॥-)२	सूद
१६४९-)२	योग
१३६=)॥	उदरत
२२८)७½	पिछला शेष
२०१३।)३½	योग

व्यय.

१७५।≡)॥	खुराक
२९।-)॥।	शिक्षा
८९।-)॥	वेतन
३॥)।	पोस्टेज स्टेशनरी
२३॥-)।	अनाथरक्षक
१७।≡)।	फुटकर
१२।)।	सफ़ाई
१६=)	रोशनी
७५॥=)	गोशाला
१७॥≡)॥।	औषधालय
१॥)	पानी
१०३≡)॥।	अमानत
६०३॥≡)।	उपदेशक
५८॥=)	वस्त्र
७॥-)।	छपाई
१॥=)॥	वर्त्तन
५।≡)।	मृतकसंस्कार
१५४३≡)॥	योग
९८≡)॥।	उदयसिंह अनाथालय
१२॥)	शिमला एलाउंसबेंक
५९-)२	पीपल्सबेंक चल्लू हिसाब
४०)	उदरत
२७३॥≡)१०½	शेष रहे
२०१३।)।३½	योग

॥ ओ३म ॥

अनाथरक्षक ॥

पौष तथा माघ १९६७ वि० ॥

जनवरी तथा फेब्रुअरी १९११ ई० ॥

प्रार्थना ॥

अच्युत ! अनेकबार की हैं ज्यों दया की दृष्टि,
त्यूंही आज नेक उसी दृष्टि से निहारलो ।
कौन है सहायक हमारा और दीनानाथ !
शरण तुम्हारे ही सदा से हैं निहारलो॥
हा,हा,हा ! अनाथों को सनाथ करने के लिये,
शीघ्रता के साथ नाथ हाथ को सहारलो।
डूबते हैं दीन दीनबन्धु ! अंध सिंधु मध्य,
चाहो जो उबारना तो वेग ही उबारलो ॥

अनाथ-पुकार ॥

माता पिता विहीन हम,
रुदन करें दिन रात ।
करुणा कर गहि लीजिये,
अनाथ जनको हाथ ॥
अधिक लाड़ अरु प्यार से,
पाले थे पितु मात ।
आप सोय के गोल में,
रक्षक थे बहु भांत ॥
हाय काल ने डस लिये,
रहा न एकहु नात ।
हम बिलखें भूखन मरें,
सूखे तन अरु गात ॥
ऐसी विपता बीच में,
सुधि लीन्हीं इक साथ ।
करुणा हिय में धारिके,
दयानन्द गुरु तात ॥
तब तो मन ढाढस बंधी,
चिन्ता गई बिलाय ।
माता पिता वियोग का,
ध्यान जरा नहिं आय ॥
कारण वो तो एक थे,
अब है बहु परिवार ।
दयावान अरु दानि जन,
हमरे पालनहार ॥

करुणाकर कर देहु अब,
अन्न वस्त्र उपकार ।
ता ते जाड़ न लगि सकै,
उदर न करे गुहार ॥
पौष मार्गशिर मास है,
भूल न जायहु नाथ ।
नाथ शीत के ताप सें,
दुःख न पाएं अनाथ ॥
भेजो दान अनाथहित,
इनको करो न देर ।

बाबू प्रभूदयालजी,
मंत्रीवर अजमेर ॥

अनाथ-विजय ॥

जो सचराचर विश्व को पालन करत विचार ।
सो जगदीश्वर मोहि पर कीजो कृपा अपार ॥
जग तापन से दुखित हुइ आये शरण तुम्हारि ।
दूर कीजिये क्लेश अब हमरी दशा निहारि ॥
दुःखके मोचनहार हौ तुम प्रभु सर्वाधार ।
दीन जानिके मोहि अब लीजै वेगि उबार ॥
होय सुखी नर नारि सब करैं परस्पर प्यार ।
यही विनय तुमसे करैं हम प्रभु बारहिं बार ॥
मातु पिता अरु भ्रातृवर हो तुमहीं मम ईश ।
दायक विद्या सुमति के कृपासिन्धु जगदीश ॥
छोड़िगये हैं मातु पितु हमको नेह बिसारि ।
पीड़ित किये अकाल ने दुखमय दशा हमारि ॥
मूरख संड मुसंड अरु दम्भी सन्त कहाहिं ।
बहु धन दै सनमान कै तिनको सीस नवाहिं ॥
भूख प्यास के दुःख सों दुखित भये हम दीन ।
धन मद मतवारे नरन कछु सहाय नहिं कीन ॥
दीनन पालक जगत में को तुम सम प्रभु आन ।
जो लखिके मम दीनगति करै अभय कछु दान ॥
यही विनय प्रभु आप से दीन अनाथ कराहिं ।
जो जग के नर नारि सब करैं दया हम पाहिं ॥

रामानन्द

एक और यात्रा ।

जनवरी १९११ के आरम्भ में ही श्री० मु० कृष्णरावजी बी० ए० बी० एल० प्रधान आर्य्यसमाज हैदराबाद दक्षिण का एक कार्ड मन्त्रीजी दयानन्दअनाथालय अजमेर को प्राप्त हुआ जिसका आशय यह था कि " २ बालकों को अनाथालय भेजने की स्वीकृति दीजिये जिनके माता पिता दरिद्रता के कारण उनकी पालना नहीं कर सकते और उनके ईसाई होजाने का भय है तथा बालकों का मार्गव्यय हैदराबाद आ० समाज देगा किन्तु पहुंचाने वाले मनुष्य का किराया आदि अनाथालय दे इत्यादि " उसी समय में एक पत्र श्री० ठाकुर देवीसिंहजी सभासद् आर्य्य-समाज मुम्बई तथा दूसरा म० विक्रमसिंह जी भड़ौंच निवासी का लगभग इसी आशय का प्राप्त हुआ ।

अनाथालयने अपनी स्थापना तिथि से ही ऐसे अवसरों का सदुपयोग किया है । उसने जब और जिस स्थान पर

अपनी उचित सेवा की आवश्यकता को अनुभव किया है तत्काल अपने एजेंटों द्वारा सेवा का कार्य्य आरम्भ करता रहा है बंगाल और बुंदेलखंड में जब अत्यन्त दुर्भिक्ष उपस्थित थे उसके प्रतिनिधि बराबर रक्षा का कार्य्य करते रहे।

मुझे इस समय भी अनाथालय सभा की ओर से आज्ञा मिली कि शीघ्रता से उक्त स्थानों पर पहुंचकर बालकों को यहां लेआओ, अतः २३ जनवरी सन् १९११ ई० को मध्याह्न की गाड़ी से मैंने १ बालक द्वारा अजमेर से प्रस्थान किया।

मनवाड़ जङ्कशन पर पहुंचकर बी० बी० एण्ड सी० आई० ने हमें एन० जी० आर० के हवाले करदिया और अब हम निजाम स्टेट में प्रविष्ट होगए, हमें पहिले ही से ज्ञात था कि निजाम स्टेट में प्रवेश करने वाले प्रत्येक यात्री के लिये प्लेग सर्टीफिकेट की आवश्यकता है इसलिये हम अजमेर ही से प्लेग सर्टीफिकेट सिविल-सर्जन साहिब अजमेर का अपने साथ लेगए थे।

"प्लेग की देखभाल अजमेर भी मुद्दत तक होती रही है किन्तु जिस कड़ाई से वहां इसका व्यवहार किया जाता है उसका अनुभव वही मनुष्य भली प्रकार कर सकता है जो कभी (ईश्वर न करे) इस दैवी आपत्ति में पड़ चुका है।९"

ज्यूं त्यूं २७-१-११ की सायंकाल के ५॥ बजे हैदराबाद स्टेशन पर पहुंच गए परन्तु समाजभवन में ७॥ बजे से पूर्व न पहुंचसके, ये २ घंटे पुलिस कर्म्मचारियों के भेट हुए पड़ाव दर पड़ाव हम लोग रेजीडेंसी पुलिस स्टेशन पर पहुंचाए गए जहां से चीफ पुलिस ने मिहरबानी से समाजभवन पहुंचवा दिया। आर्य्यसामाजिक पुरुषों की निजाम स्टेट में खासी देखभाल की जाती है हर रोज़ कोई न कोई पुलिस कर्म्मचारी मुझे सम्भाल जाता था।

मुझे हैदराबाद तथा सिकंदराबाद में कई व्याख्यान देने का अवसर मिला जिनमें मुझे अनुभव हुआ कि वहां की प्रजा सांसारिक ऐश्वर्य्य के अन्तिम परिणाम पर पहुंची हुई है, खाना, पीना और सुख भोग करना यही उनका जीवनोद्देश होगया है धर्म्म कर्म्म तथा संशोधन एक अनावश्यक बात समझी जाती है, अस्तु! जिन बालकों को लेने के लिये मैं गया था उनके माता पिता ने उन्हें देने में बड़ी लम्बी चौड़ी शर्तें लगाईं जिनका पूरा करना अनाथालय के उद्देश्यों से बाहर था अतएव वे न आसके। २२ फरवरी १९११ ई० तक हैदराबाद तथा सिकंदराबाद में कई स्थानों पर पब्लिक और प्राइवेट व्याख्यान दिये, अनेक व्य-

स्त्रियों से बात चीत की और एक मद्रासी स्त्री को (जिसके पतिने उसे निकाल दिया था और वह चकराती हुई हैदराबाद पहुंच कर ईसाई बनजाने को तय्यार थी और आ० समाज सिकंदराबाद के प्रधान मि० वाजी कृष्णराव बी. ए. एल. एल. बी. द्वारा विधवा आश्रम अजमेर के लिये प्राप्त हुई थी) लेकर २२-२-०११ को हैदराबाद से रवाना हुआ। २३ को मुम्बई पहुंचकर ठा० देवीसिंहजी द्वारा उन बालकों की तलाश की जिनके लिये उन्होंने लिखा था मालूम हुआ कि उन्हों ने भी भड़ौंच वाले बालकों के लिये ही लिखा था, खैर! वहां से २५-२-११ को रात्रि में चलकर २६-२-११ को प्रातःकाल रणोली स्टेशन पर पहुंचा जहां मुम्बई प्रान्त की आर्य धर्म्मपरिषद् का उत्सव मनाया जा रहा था।

रणोली आर्य्यधर्म्म परिषद्।

सब से पहिली परिषद् थी जिसको किसी श्री० गायकवाड़ महाराज सदृशविद्वान् तथा दूरदर्शी तत्वविद् महाराज का आधिपत्य प्राप्त हुआ हो। प्रबंध सब कुछ उक्त श्रीमानों की ओर से उत्तम था। और २६-२७ को ४ ईसाई कृषक लोग शुद्ध किये गये, २६-२-११ को श्री० गायकवाड़ महाराज का आगमन क्या हुआ मानों दर्शकों का दल टूट पड़ा, एक बृहत् पिंडाल उपस्थित होने पर भी दर्शकों का सन्तोष न होसका श्री० प्रधान महोदय (गायकवाड़ महाराज) की वक्तृता के सिवाय समस्त कार्य्यवाही दर्शकजनों की हा, हू में ही समाप्त हुई। प्रधान महाशय की स्पीच गम्भीर विचारों से परिपूर्ण थी आपने आर्य्यसमाज के कार्य्यों की बहुत प्रशंसा की गुरुकुल के लिये आपके दिलमें अगाध प्रेम है आपने बतलाया कि उन राजकुमारों को गुरुकुल की शैलीपर ही घर से पृथक् रखकर शिक्षा दिलाई जाती है। मंडप कर्तलध्वनि से गूंज उठा जबकि आपने गम्भीर स्वर से फरमाया कि "मत समझो कि विलायत यात्रा से मेरे विचार वैदिकधर्म्म से विपरीत होगए होंगे मेरे दिल में वेदों की जितनी प्रतिष्ठा है उतनी आप में से बहुत कम सज्जनों के हृदयों में होगी" परिषद् में श्री पं० रामभजदत्तजी रायबहादुर मा० आत्मारामजी, पं० मणिशङ्करजी इत्यादि अनेक सज्जनों के व्याख्यान हुए, स्त्रियां भी खासी संख्या में उपस्थित थीं और उनमें भी अच्छा प्रचार होता रहा। गुरुकुल मुम्बई के लिये चार सहस्र छः सौ उनासी रुपया एकत्रित हुआ।

आर्य्यपुरुषो! परिषद् के साथ जहांतक श्री गायकवाड़ महाराज का सम्बन्ध था वहांतक उत्सव पूरी सज, धज और

आन, बान से समाप्त हुआ, व्याख्यानों की भी खूब धूम रही किन्तु गुरुकुल और वेदप्रचार हम आर्य्यों के व्यवहार से कहां-तक फल फूल कर देशी और विदेशियों का श्रद्धाभाजन बनेगा इसका स्पष्ट उत्तर हमारे कर्त्तव्यों द्वारा मिलेगा ॥

२८—२—११ को बड़ौदा होकर भड़ौंच गया और विक्रमसिंह हलवाई के ३ बच्चों को लेकर फिर बड़ौदा आया और वहां से प्रभुराम भाट का १ बालक साथ लेकर अजमेर चला आया ।

यात्रा की मुख्य बातें ॥

हैदराबाद ।

१—मुगलई दौर दौरा मौजूद है प्रजा नवीन प्रकाश की कम इच्छा रखती है, अनेक नव्वाबी वंशज अमीर बिलकुल बेकारी की अवस्था में ऐश्वर्य्य भोग कर रहे हैं ।

२—श्री० हुजूर निजाम साहिब बहादुर स्वभावतः बड़े दयालु न्यायप्रिय और प्रजावत्सल हैं प्रजा के दुःख की निवृत्यर्थ सदैव ध्यान रखते हैं, किन्तु कठिनता केवल श्रीमानों के कानों तक पहुंचाने में होती है ।

३—हिन्दू मुसल्मानी का प्रश्न वहां बिलकुल सरल देखा जब कि दिन धाड़े कलकत्ता, मुम्बई, ब्रह्मदेश, रंगून आदि में विकट पहरे होते हुए लोथ पर लोथ पड़गई हैदराबाद के हिन्दू मुसल्मान मिलता पूर्वक मुहर्रम और होली आदि मनाते रहे । परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह इस हालत को स्थिर रक्खे और देश भर में उलझते हुए इस (हिन्दू मुसल्मानी के) कुत्सित प्रभाव को वहां तक न पहुंचने दे ।

४—वैदिक आश्रम बेगमपीठ प० कामताप्रसादजी भूतपूर्व मन्त्री आ०समाज हैदराबाद दक्षिण के पुरुषार्थ का फल है १४ ब्रह्मचारी गुरुकूल के ढंग पर हुसैन सागर तालाब के किनारे नगर से दूर रमणीय स्थान पर रहते हैं, आप के पुरुषार्थ और रसूख से कार्य चलने की पूर्ण आशा है । स्टेट से भी कुछ सहायता मिलगई है । हम उक्त महाशयजी से सानुरोध निवेदन करेंगे कि आप उसके अधिष्ठातृत्व का चार्ज किसी अन्य आश्रम हितैषी दृढ़ाग्र्य सज्जन को जो रात्रिदिवस वहीं रहे सौंप कर आप सपरिवार पृथक् रहें जैसा कि आपने गृह निर्माण करही लिया है, नहीं तो कम से कम आपका पुत्र गुरुकुल के विभेद रहित शिक्षा और संस्कारों से अवश्य वञ्चित रह जायगा ।

५—हजूर निज़ाम साहिब जैसे निष्पक्ष न्यायशील नरपति की अध्यक्षता में रहते हुए आर्य्य पुरुषों का हतउत्साह रहना हलतलब मुइम्मा है।

मुम्बई।

१—गांधर्वमहाविद्यालय श्री पण्डित विष्णु दिगम्बरजी महाशय ने मृतप्राय: गानविद्या को पुनर्जिवित करने का जो पुरुषार्थ किया उसका फलरूप उपरोक्त महाविद्यालय उपस्थित है। जिस गान, वादन और नृत्य को सभ्य समुदाय ने त्यागन कर असभ्य मण्डली के सुपुर्द कर दिया था, वही इन महाशय की शुभ इच्छा और प्रयत्न द्वारा फिर उच्चवर्ग के स्त्री पुरुषों का परमप्रिय श्रृंगार बनरहा है, मैंने स्त्री पुरुषों के क्लासेज पृथक् २ देखे कई ऐसे बाजे दिखाए गए जिनको कभी नहीं देखा था और कम से कम इस देश में उनका बिलकुल रिवाज नहीं, वहां की रिपोर्ट अन्यत्र दीजायगी।

२—कुसंस्कारी बालकों का स्कूल—एक यहूदी सज्जन ने इस शिक्षणालय के स्थापन से कितनी आवश्यकता को पूर्ण किया है। समयाभाव से मैं उसे देख न सका किन्तु उसकी व्यवस्था ऐसी बतलाई गई कि वहां कोई भी सभ्य बालक प्रविष्ट नहीं होसकता, बड़े से बड़ा उपद्रवी, चोर और खराब बालक वहां स्थान पाकर सभ्य और सुशिक्षित बनाया जाता है। वहां के सविस्तर वृत्तान्त फिर पाठकों के भेट करेंगे।

बड़ौदा।

१—श्री फतहसिंहजी राव आर्य्य अनाथाश्रम—युवराज श्री फतहसिंहराव की दु:खद मृत्युपर उनके स्मारकस्वरूप आर्यसमाज बड़ौदा की ओर से इस अनाथालय की बुनियाद रक्खी गई है। इस समय १७ बालक उपस्थित हैं, ३५८२।=)५॥ पाई कमेटी के हाथ में है। अनाथरक्षा का काम और भी बड़े पैमाने पर आरम्भ होने की आवश्यक्ता है।

२—अन्त्यज बोर्डिङ्गहाउस—श्री महाराजासाहिब गायकवाड़ की दिव्यदृष्टि पतितोद्धार के आवश्यक कार्य की ओर से बंद रहती यह कब होसकता था? आपने अनेक अन्त्यज पाठशालाओं के अतिरिक्त एक अन्त्यज बोर्डिङ्गहाउस भी स्थापन किया है, सौभाग्यवश इन सब कार्यों को चलाने के लिये श्रीमहाराजासाहिब को रायबहादुर

ला० आत्मारामजी अमृतसरी भी ऐसे ही महाशय प्राप्त हुए हैं। बोर्डिङ्गहाउस में ३८ बालक, १५ बालिकाएं उपस्थित हैं, उनकी व्यवस्था को देखकर "यह अन्त्यज है" ऐसा भाव दिल से दूर होजाता है, वहां प्रतीत होता है कि पतित से पतित भी उठ सकता है, यदि उसे अवसर और सहारा दिया जावे ॥

इस यात्रा में १ मास से अधिक समय लग गया और अनाथालय के लिये १२३॥=) सहायता प्राप्त हुई।

विविध ॥

पं० जगत्प्रसाद को मुबारिकबाद ॥

पं० जगत्प्रसाद आप धन्य हो। आप का बुद्धि कौशल अवश्य सराहनीय है, आप जो कार्य्य कर दिखलाते हो वह सचमुच असाधारण है, आपको अधिकार प्राप्त है कि अपने बुद्धिबल से तोड़े हुए आर्य्यसमाजों की सूची में अजमेर आर्य्यसमाज का नाम और लिखलें, क्योंकि आप तो अपनी ओर से उसे विध्वंस कर ही चुके यदि फिर भी मर मरकर जी उठता है तो उस की बेगैरती है। अच्छा अजमेर विजयप्राप्ति मुबारिक, सविस्तर मुबारिकबाद अगलीवार। बोल सनातन धर्म्म की जय ॥

॥ ओ३म् ॥

संक्षिप्त वृत्तान्त श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान अजमेर ॥

श्रीविरजानन्द विद्यालय का कार्य्य पूर्ववत् चला जाता है श्रीमान् स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज विद्यालय की सहायतार्थ प्रेरणा करने के लिये अजमेर पधारे थे और आर्य्यसमाजभवन में तीन व्याख्यान बड़े प्रभावशाली हुए, अजमेर से श्रीमान् पं० बंशीधर शर्म्माजी तथा श्रीमान् बाबू मिट्ठनलालजी और बा० गौरीशंकरजी ने एक २ छात्रवृत्ति छः २ रुपये मासिक की विद्यालय के लिये देनी स्वीकार की तथा आर्य्यसमाज अजमेर ने भी एक छात्रवृत्ति दी है इस प्रकार ४ छात्रवृत्तियां अजमेर से होगई हैं और आर्य्यसमाज बरेली ने भी एक छात्रवृत्ति का धन भेज दिया है, हम राजस्थान प्रान्तीय आर्य्यसमाजों तथा सम्पूर्ण आर्य्यपुरुषों का ध्यान इस विद्यालय की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि यदि आप धार्मिक साधु उपदेशक तय्यार करके वैदिक धर्म्म का सन्देश सम्पूर्ण देश देशान्तरों में पहुंचाना चाहते हैं तो इस विद्यालय को तन मन धन से सहायता प्रदान कर यश और पुण्य के भागी बनें।

विद्यालय की सहायतार्थ धन एकत्रिक करने का कार्य्य पं० ज्वालादत्तजी शर्म्मा उपदेशक को सौंपा गया है और उक्त पण्डितजी ने जयपुर, रामगढ़, कृष्णगढ़, कोटा, झालावाड़ इत्यादि स्थानों में भ्रमण करके ५४) रुपये भेजे हैं इसके अतिरिक्त श्रीमान् डा० सुखदेवजी वर्म्मा भरतपुर निवासी के साथ डीग, कुम्हेर, भरतपुर में भी चन्दा एकत्रित किया और ८०) रुपये प्राप्त करके कोष में भिजवाये हम श्रीमान् डा० सुखदेवजी वर्म्माजी को अत्यन्त धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे श्रीमती सभा का ध्यान हमेशा रक्खा करेंगे।

नोट—आयव्यय का हिसाब टाइटिल के पृष्ठपर दिया गया है वहां देखलें।

※ वार्षिकोत्सव ※

आर्य्यसमाज रामगढ़ का वार्षिकोत्सव सानन्द समाप्त होगया सभा की ओर से श्रीमान् स्वा० सर्वदानन्दजी, स्वा० विद्यानन्दजी तथा पं० ज्वालादत्तजी भेजे गये थे उत्सव का प्रभाव नगरनिवासियों पर अत्युत्तम रहा, यह समाज श्रीमान् पं० कालूरामजी ने २६ वर्ष हुए स्थापित की थी, शेखावाटी प्रान्त की सब समाजों से यह समाज बड़ी है इस समाज के प्रधान श्रीमान् स्वामी नृसिंहानन्दजी सरस्वती बड़े धार्मिक और सच्चे साधु हैं आपने बड़े हर्ष के साथ रामगढ़ समाज को प्रतिनिधिसभा में सम्मिलित करके शेखावाटी प्रान्तीय समाजों में सभा का गौरव बढ़ाया है और हर्ष है कि आपकी प्रेरणा से सुजानगढ़, कुसुम्भी, टमकोर इन समाजोंने भी प्रतिनिधि सभामें सम्मिलित होना स्वीकार किया और प्रतिनिधि निर्वाचित कर सभा में नियमानुसार सम्मिलित होगई, रामगढ़ के उत्सव में वेद प्रचारकी अपील तो नहीं होसकी परन्तु समाज के कोष से ४४) वेदप्रचारादि के लिये प्राप्त हुवे, हम सभा की ओर से श्रीमान् स्वा० नृसिंदानन्दजी को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि आप से सभा को बहुत कुछ सहायता प्राप्त होगी।

आर्य्यसमाज कुसुम्भी का उत्सव भी बड़े समारोह के साथ हुआ श्रीमान् स्वा० विद्यानन्दजी तथा पं० नृसिंहनारायणजी उपदेशक सभा की ओर से भेजे गये थे स्वा० विद्यानन्दजी की अपील करने पर २१) वेद प्रचारनिधि को भी प्राप्त हुए।

आर्य्यसमाज कोटा का वार्षिकोत्सव २५–२६–२७ दिशम्बर १० को सानन्द समाप्त होगया, सभा की ओर से स्वा० विद्यानन्दजी, पं० ज्वालादत्तजी तथा ब्यावर की भजनमण्डली भेजी गई थी, ५२) रुपये विरजानन्द–विद्यालय के लिये प्राप्त हुए।

विपरीत फल क्यों है ? ॥

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय का जन्म सन् १८९५ ई० में हुआ। उससे भी कुछ समय पूर्व से कई अनाथालय कई स्थानों पर कार्य्य कर रहे हैं, किन्तु आज तक उनसे यथोचित शुद्ध संस्कृत, धर्म्मप्रिय और देश तथा जाति के लिये मान्यप्रद कोई आत्मा उत्पन्न न होसकी। जिन अनाथों के लिये देशनिवासियों के हृदय में प्रेम उत्पन्न होचला है, जिनके पालन, पोषण और शिक्षण के लिये लक्षों रुपया व्यय हो रहा है, खेद है कि परिणाम सन्तोषजनक नहीं दीखता। ऐसी अवस्था में हम सिवाय इसके कुछ नहीं कह सकते कि ऐसे आश्रमों और आलयों की संचालनविधि संशोधनीय है। इसका बहुत कुछ उत्तर इस लेख से मिलेगा जो सम्पादक "पाञ्चालपण्डिता" ने अपने बड़े अनुभव के आधार पर अपने फेब्रुअरी के अङ्क में प्रकाशित किया है। हम उसे प्रकाशित करके आशा रक्खेंगे कि अनाथरक्षा के अत्युपयोगी और अत्यन्त आवश्यक कार्य्य से सम्बन्ध रखनेवाले महाशय अपनी २ संस्थाओं की कमियों की पूर्त्ति का प्रयत्न करेंगे।

"अनाथ, अनाथाओं की रक्षा करना मनुष्य का परमधर्म्म है, जो जाति अपने अनाथ अनाथाओं को परित्याग करती है और उनकी यथार्थ पालना से बेसुध रहती है वह जाति निर्दयी, पतित और धर्म्मशून्य है।

इनकी रक्षा, शिक्षादि के लिये अनाथालय स्थापन करना परम आवश्यक है, किन्तु रक्षा रक्षा में भेद है। क्या उनके प्राण बचाना ही हमारा धर्म्म है? क्या उन्हें वस्त्र देकर गर्मी तथा शरदी से रक्षा करना ही हमारा कर्तव्य है?, या इससे कुछ अधिक हमें करना योग्य है।

प्राणरक्षा, शरीररक्षा के साथ और इससे भी बढ़कर हमारा कर्तव्य है कि हम इन्हें:—

१—निज सन्तानवत् हित करें जिससे वे भूल जायँ कि वे अनाथ हैं, इसका सामाजिक फल यह होता है कि वे अपने को अनाथ नहीं समझते और इसलिये उनके रक्षकों की लज्जा उनकी लज्जा होजाती है। जिस प्रकार हमारी सन्तान हमारी अपकीर्ति के भय से कई प्रकार के निन्दित कामों से रुकजाती है ऐसे ही सन्तानवत् व्यवहार होने से उनके मनमें भी उत्तम प्रभाव जमा रहता है।

२—उन्हें कोई ऐसा कार्य्य सिखलादेना चाहिये जिससे वह अपने पाओं पर बिना आपके सहारे के खड़े होसकें। अर्थात् अपने गुज़ारे के लिये किसी के आगे हाथ पसारना न पड़े।

३—उनमें उच्चभाव पैदा करने चाहियें। उनका जीवन इस प्रकार ढालना चाहिये कि वे जनसमाज के लिये लाभकारी और सुखप्रद हों उनके चित्त में "दूसरों को सुखी बनाने के लिये कष्ट उठाना उत्तम है" इस भाव के महत्त्व को अंकित कर देना चाहिये और प्रेम तथा त्याग के गुणों पर उनकी श्रद्धा पैदा करने से उनको तथा जनसमाज को बहुत लाभ होगा।

मैंने एक बार एक कन्या-अनाथालय देखा, प्रबन्धकर्त्ता भी नियत थे, चौकीदार और द्वारपाल भी उपस्थित थे। डाक्टर ही नहीं प्रत्युत औषधालय भी था, स्थान भी खुला था। आंगन में तथा बाहर भी बाग़ लगा हुआ था। नाज के मटके भरे पड़े थे कभी कभी दूध भी दिया जाता था और कन्याओं की पढ़ाई के लिये पांच श्रेणी तक की एक पाठशाला भी थी। यह सब कुछ था, किन्तु था क्या नहीं? तथा कन्याओं से ऐसा वर्ताव न था कि वे भूल जाएँ कि हम अनाथाएँ हैं। उनके लिये प्रबन्धकर्त्ता तथा अन्य अधिकारी बाबूजी, लालाजी, मुंशीजी ही थे, तायाजी, चाचाजी और पिताजी न थे। जो स्त्रियां अनाथालय में सालभर में एक आध बार आती थीं, उन्हें वे मुंशीजी की घरवाली, बाबूजी की पत्नी, लालाजी की बहिन इन नामों से ही पुकारती थीं, न कि माताजी, ताईजी, बड़ी चाची, छोटी चाची इत्यादि, वहां मैंने माता, पिता, चाची तथा चाचा, ताई के प्रिय नामों का अभाव ही देखा। वहां कन्याएं प्रबन्धकर्त्ताओं को अपना रक्षक तो समझती थीं, किन्तु पिता माता के प्रेमभाव के अभाव से उनके रक्त में सन्तान के हित का जोश न था। प्रबन्धकर्त्ता यद्यपि अनाथ अनाथाओं के पालन और रक्षण के लिये पैसा मांगते थे और पर याचना किया करते थे किन्तु उनमें से किसी ने कभी भी उनके साथ मिलकर तो क्या उनके हाथ का भी भोजन न खाया था। परिणाम यह था कि कन्याओं के मन में उनके लिये यह हित न था जो सन्तान के चित्त में पिता माता के लिये गरमी पहुंचाता हुआ सन्तान की रक्षा का कारण बनता है।

मुझे प्रसन्नता है कि "कन्या अनाथालय जालंधर के स्थापन काल से ही इन बातों पर विशेष ध्यान दिया गया, वह हमारी पुत्रियां, हम उनके माता पिता, वे हमारे बच्चे हैं और हमारी गोद उनके लिये वैसी ही खुली है जैसी अपनी निज सन्तान के लिये।

हम उनके साथ खाते पीते हैं वे हमारे साथ। हमें अपनी पुत्रियों और

उनमें कुछ भी भेद दिखाई नहीं देता। हम उनके यश में प्रसन्न और वे हमारी कीर्ति में खुश, हमारी और उनकी लाज एक है और ऐसा ही होना चाहिये यह इस वर्ताव ही का फल है जिसने पण्डिता मुकुन्दी देवी, गोमती देवी, सुनंदा देवी रक्षा देवी, भाग्यवती देवी, रामस्नेही देवी, दुर्गा देवी, और लीलावती देवी सी ब्रह्मचारिणियों को अनाथालय में पैदा किया है"।

अछूत जातियों में ईसाइयों का काम ॥

इस लेख को इन्द्र लाहौर से यहां इसीलिये उद्धृत कर देते हैं कि सत्यसनातनवैदिक धर्म्मानुयायी मनुष्यमात्र के साथ अपने कर्त्तव्य को समझ सकें। उन्हें "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे" के अर्थ का यथार्थबोध हो और यथासाध्य गिरतों को सहारा देकर समझाने का कारण बन सकें।

सम्पादक.

छोटा नागपुर के मुंड और कोल लोगों में ईसाई प्रचारक चिरकाल से काम कर रहे हैं मुंड और कोल अछूत जातियां समझी जाती हैं प्रथम ही प्रथम नवम्बर सन् १८४० ई० में इन लोगों में काम करने के लिये जर्मन प्रचारकों ने रांची में मिशन स्थापन किया और पादरी स्काट्स, पादरी बाश, पादरी ब्रांड, पादरी जनक चार जर्मन पादरी इस प्रान्त के लिये नियत हुए। उन्होंने इन लोगों में बराबर ५ वर्षतक प्रचार किया परन्तु एक मनुष्य को भी ईसाई न बना सके मगर उन्होंने अपना कार्य्य बराबर जारी रक्खा और रांची के सिवाय डूमा लुहार डागा गोविंदपुर में भी मिशन खोल दिये। जो जून सन् १८५० ई० के अन्ततक ९ वर्ष से अधिक समय में वे ४ मनुष्यों को ईसाई बना सके। कई मास के पश्चात् सन् १८५१ ई० में उन्होंने २ ईसाई और बनाये अर्थात् इतने लम्बे समय तक परिश्रम प्रचार के पश्चात् वे कुल ६ मनुष्यों को ईसाई बना सके, परन्तु उनका प्रयत्न बराबर जारी रहा।

सन् १८५५ ई० में रांची में उन्होंने एक सुविशाल गिरजा भी बना लिया, और कार्य्य पूर्वापेक्षा भी अधिक वेग से आरम्भ किया, यहांतक कि सन् १८५७ ई० में उन्होंने नौसौ स्त्री पुरुषों को ईसाईधर्म की दीक्षा दी और दो सहस्र को उम्मेदवार ईसाई बनाया। छोटा नागपुर के जागीरदारों ने उनका विरोध किया। सन् १८५९ ई० में उन्होंने एक जर्मन पादरी को इतना मारा कि वह बेहोश होकर गिरगया और मृतप्राय: होगया। हिंदुओं ने देशी ईसाइयों के घरों में आग लगाना, उनकी फसलों को उजाड़ना और उनको मारना आरम्भ किया। उन्होंने ईसाइयों के विरुद्ध बड़ी २ पंचायतें

की और अन्त में यह निश्चय किया गया कि ईसाइयों को सर्वथा विनाश करदिया जावे। सन् १८५७ ई० में विद्रोह हो गया। अब हिंदू तअल्लुकेदारों और जिमींदारों को अच्छा अवसर हाथ आया पादरीगण तो रांची छोड़कर कलकत्ते चलेगए परदेशी ईसाई अतिकष्ट की हालत में पड़गए। उन्हें नाना प्रकार के कष्ट दिये गए। वे अपने घरों को छोड़कर जंगलों में भागगए और पहाड़ों की कंदराओं में जा छिपे, जहां उनके खाने के लिये वृक्षों के पत्ते और जड़ों के सिवाय कुछ नहीं था। १८५७ ई० में विद्रोह शान्त होगया तो जर्मन पादरी कलकत्ते से रांची वापस आए। सरविलियम हण्टर साहिब लिखते हैं कि विद्रोह काल में ईसाई तितर बितर होगए पर उनका तितर बितर होना ईसाई मत के अधिक प्रचार का कारण हुआ, क्योंकि जहां भी कोई ईसाई भागकर गया वहां ही उसने अपने मन्तव्यों का प्रचार किया। यहां तक कि विद्रोह निवृत्ति के पश्चात् ईसाइयों की संख्या दिनों दिन बढ़ने लगी। मिशन की रिपोर्ट से विदित होता है कि सन् १८५७ ई० के पश्चात् लोग धड़ाधड़ ईसाई होने लगे यहांतक कि सन् १८५८ ई० में २०५ ग्राम ईसाई होगए और बड़े दिन पर डेढ़ सहस्र स्त्री पुरुषों ने ईसाई मत की दीक्षा ग्रहण की। सन् १८५९ ई० के जनवरी मास में साठ गृहस्थों ने ईसाई मत स्वीकार किया, ऐसा प्रतीत होता था कि समस्त मुंड जाति ईसाई होजावेगी। नागपुर के आसपास ईसाई मत का इतना ज़ोर हुआ कि अछूत जातियों के साथ वहीं के जागीरदार तथा ज़िमीदारों के भी ईसाई होजाने का भय होगया। देशी ईसाई इससे इसलिये भयभीत होते थे कि यदि यह लोग भी ईसाई होगए तो पूर्ववत् ही हमपर अन्याय करेंगे, हमारी ज़मीनादि सब छीन लेंगे।

जर्मन मिशन की रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि सन् १८६० ई० तक १२२५ प्रतिवर्ष के हिसाब से लोग ईसाई होते रहे। लुहार डग्गा के सरकारी आफ़ीसर ए० कमिश्नर की रिपोर्ट से पता लगता है कि हिंदू ज़िमीदारों ने देशी ईसाइयों को मारने पीटने में सङ्कोच नहीं किया। यहांतक कि सन् १८५८ ई० में देशी ईसाइयों और हिंदू ज़िमीदारों में खुल्लमखुल्ला विद्रोह होगया जिसकी निवृत्यर्थ रांची से सेना भेजनी पड़ी।

ए० कमिश्नर साहिब नागपुर लिखते हैं—मुंड जाति के मनुष्य जो ईसाई होते हैं वे बहुधा हिंदुओं के अन्याय से बचने के लिये ही होते हैं और यह प्रकट ही है कि धर्म्म कर्म्म के नाम अभिज्ञ अछूत जाति

के मनुष्य केवल आत्माभिमानी हिंदुओं के अत्याचारों से मुक्त होने के लिये ही मसीह की शरण ले रहे हैं। वे लोग देखते हैं कि ईसाई होकर जहां वे लोग भरण पोषण से बेफ़िक्र हो सकते हैं वहां वेह हिंदुओं के कठोर अत्याचारों से बचकर अपनी उन्नति के अधिकारी बन सकते हैं। प्रत्युत कभी २ उनसे उच्चतर बन सकते हैं, इसीलिये वे ईसाई बनते चले जारहे हैं।

सन् १८६८ ई० में मिशन की २ शाखाएं होगई। एक में तो पुराने प्रचारक रहे और दूसरी में जर्मन से नवीन प्रचारक भरती किये गए जो अधिक जोशीले थे। सन् १८६६ ई० में इन युवकों ने कलकत्ते के (विशप) हेडप्रचारक से प्रार्थना की कि वह इनको धर्म्मगृह का नियमानुकूल धर्म्मगुरु माने। इनकी यह प्रार्थना स्वीकार हुई। सन् १८६० ई० में छोटा नागपुर प्रान्त के लिये पृथक् (विशप) नियत हुआ। इनका नाम रेवेरंड जे० सी० वाइटली था। इन्होंने मुंड लोगों में नियमबद्ध शिक्षा का प्रबन्ध किया। उनके लिये उनकी मातृभाषा में पुस्तकें तय्यार कीं। अछूत लोगों के बच्चों के लिये पाठशालाएं स्थापन कीं कि रांची में पहिले इन लोगों के लिये एक छोटी सी प्रारम्भिक पाठशाला (प्राइमरी स्कूल) थी परन्तु सन् १८८४ ई० में इसको मिडिल स्कूल और सन् १८९६ ई० में हाईस्कूल बनादिया गया। इसमें १७९ बालक शिक्षा ग्रहण करते हैं हाईस्कूल के अतिरिक्त नागपुर प्रान्त में २६ (बोर्डिंगस्कूल) छात्रालय हैं जिनमें १६७४ अछूत बच्चे शिक्षा पाते हैं जिनमें से ६२६ कन्याएं हैं। इनमें से ४ स्कूल मिडिल स्टैंडर्ड तक शिक्षा देते हैं, १२ किंडर गार्टन स्कूल हैं जिनमें ४२३ बालक पढ़ते हैं, इन सब के अतिरिक्त प्रचारकों की ओर से ग्रामीण बालकों की शिक्षार्थ १७५ ग्राम्य पाठशालाएं स्थापित हैं जिन में ३२२९ बालक बालिकाएं मसीही शिक्षा पारही हैं। इनमें समस्त शिक्षक और शिक्षिकाएं देशी ईसाई हैं। इन सब स्कूलों के लिये शिक्षक और शिक्षिकाएं तय्यार करने का काम रांची के ट्रेनिंग स्कूल में होता है। प्रचारक तैयार करने के लिये रांची में एक उपदेशक क्लास स्थापित है। सन् १९०५ ई० में रांची में एक गर्ल्स ट्रेनिंगस्कूल खोला गया जिसमें शिक्षिकाएं तय्यारकी जाती हैं। यह सब अछूत लोगों के लिये ही किया जाता है। सन् १९०५ ई० में इसी जाति की २ कन्याएं कालम्याङ्ग में लैस का काम सीखने को भेजी गई इनके लौटने पर रांची में सन् १९०६ ई० में मिशनलैस स्कूल खोला गया। गिर-

जाओं के अतिरिक्त छोटा नागपुर में ईसाई युवक और युवतियों के लिये ३६ सभाएं हैं। सन् १८७३ ई० में रांची में एक छोटासा यन्त्रालय था लेकिन १८८२ ई० में एक उच्च कक्षा का मुद्रणालय स्थापित किया गया जिसके साथ जिल्दबन्दी का कार्य्य भी आरम्भ हुआ। देशी ईसाइयों के लिये सन् १८७७ ई० में एक हिन्दी पत्र "गृहबंधु" जारी किया गया था जो अबतक जारी है इसके अतिरिक्त एक ईमिल भाषा का पत्र भी जारी है। मंडेरी उड़िया और हिन्दी में विविध पुस्तकें अछूत लोगों की शिक्षा के लिये लिखाई गई। सन् १९०८ ई० में ४५१३५ पुस्तकें मिशन की ओर से इन भाषाओं में प्रकाशित हुई बाइबिल का मंडेरी भाषा में अनुवाद किया गया! इन समस्त विद्या सम्बन्धी कार्य्यों के अतिरिक्त मिशन ने इन लोगों की शारीरिक उन्नति के लिये भी बहुत कुछ किया है। सन् १८९०. ई० से रांची में एक मिशन चिकित्सालय तथा औषधालय स्थापित है॥

अबतो आंख खुली॥

सुधारकव्यक्तियां कब से चिल्लारही थीं कि य हिंदू धर्म्म के अगुवा (लीडर) महाशयो! तुमने अपने ही शरीर की एक उपयोगी अंग न केवल निकम्मा ही छोड़ रक्खा है प्रत्युत उसकी प्रबल शक्ति को अपने विरुद्ध नुक़सान का प्रयत्न कररहे हो। कई सभाएं बनीं और बहुतेरा ज़ोर लगालगाकर शान्त होगई पर आपने बिगाड़ने के अतिरिक्त सुधारने का सबक नहीं सीखा। महात्मा कबीरादि कितने सज्जनों ने चोटी से एडी तक बल लगाया किन्तु आपकी ऐंठ ज्यूं की त्यूं बलखाती ही रही और आपने इस विषय पर विचारने का भी कष्ट न उठाया कि "क्या इन अन्त्यजादि को मनुष्य मानना भी हमें चाहिये या नहीं" लेकिन जब कि संसार में हिला हुआ पत्ता भी अपने पीछे कोई फल अवश्य छोड़जाता है तो हमारे इस व्यवहार का कोई परिणाम न होता, कब सम्भव था, समय आया और कौमी घुड़दौड़ आरम्भ हुई। प्रत्येक विचारशील की दृष्टि एकदम इस ओर आकर्षित होगई कि जिस कौम के साथ यह करोड़ों मनुष्य का समुदाय (जिसको अन्त्यज के नाम से पुकारा जाता है) सम्मिलित होगा उसी का घोड़ा मैदान में सब से आगे नज़र आवेगा।

इस घोषणा के होते ही प्रत्येक कौम के लीडरों ने उनपर हाथ साफ़ करना आरम्भ किया। यावनी दल के केन्द्र मुसलिमलीग ने अनेक मौलवी प्रचारकों के रात्रिदिवस कठोर परिश्रम के अतिरिक्त गवर्नमेण्ट के सन्मुख एक शोशा छोड़ दिया कि "अन्त्यज जातियां मार्च १९११ ई० की मनुष्यगणना में हिन्दू न लिखी जाएं" इधर

मिस्टर गेट अधिष्ठाता मनुष्यगणना पंजाब ने हिन्दू शब्द की परिभाषा निश्चित करने के लिये अनेक हिन्दू विद्वानों से कुछ प्रश्न करदिये । बस फिर क्या था ? चारों ओर हाहाकार मचगया और हमारे हिन्दू भाइयों की भी आंखें खुलीं, उनको अनुभव होने लगा कि यह कमी उनके शरीर को अत्यन्त निर्बल बना देगी । सभाएं हुईं, पत्रों द्वारा आन्दोलन किया गया और इसका परिणाम यह हुआ कि मिस्टर गेटसाहिब को पत्रों द्वारा प्रकाशित करना पड़ा कि अन्त्यज लोग भी हिन्दू ही समझे जाएंगे, इत्यादि।

यह तो हुई लिखा पढ़ी की बात किन्तु वास्तव में क्या होरहा है इसके लिये ईसाई पादरियों का कार्य्य अवलोकन करें।

संयुक्त प्रान्त मिशन की रिपोर्ट बाबत सन् १९०८ तथा १९०९ ई० प्रकाशित हुई है उस में बतलाया गया है कि अकेले इस मिशन की ओर से पंजाब में निम्न-लिखित कार्य्य हुआ है अर्थात् सन् १९०८ ई० में १९६६ व्यक्तियों को ईसाई बनाया गया, सभासद् २११९ बढ़े और क्रिश्चियन मत में ६२४२ की वृद्धि हुई। सन् १९०९ ई० में १६७७ मनुष्यों को ईसाई बनाया गया, सभासदों में ४९१० और क्रिश्चियन मत में ९४१४ की अधिकता हुई।

महाशयगण ! यदि कह सुनकर मनुष्यगणना में आपकी संख्या अधिक भी रही तो क्या वह आपके लिये मान्यप्रद हो सकती है जबतक कि आप के हृदय में उनके लिये उचित स्थान रिक्त न हो। अपने प्रतिद्वन्द्वि ईसाई महाशयों के कार्य्य-क्रम से शिक्षा लेकर दर्दभरे दिल से कार्य्य आरम्भ करदो । मैदान आपका ही है ।

क्या जनरल बूथ की भान्ति कोई उदारहृदय, निर्भीक, धर्मज्ञ आर्य उपस्थित है जो जापान प्रदेश में पहुंचकर समस्त देश के कोढ़ियों के इलाज का ठेका लेसके महाराज मेकाडो की गवर्नमेण्ट से कदाचित् ६००००००) रु० वार्षिक प्राप्त करने का अधिकारी-वही ठहर सकता है पंजाब गव-र्नमेन्ट की दृढ़ सहायता प्राप्त करने की सत्ता उसी में है जो वहां की समस्त नीच जातियों को सभ्य बनाने का ठेका लेसके।

भाइयो ! अब समय आगया है कि आप करवट बदलो हिन्दू समाज हिल चुका है उसकी हरकत को लाभकारी सिद्ध करने का प्रयत्न करो । यदि अबकी बार भी हिल जुलकर आंखें बंद करलीं तो फिर आपको अपनी अन्त्येष्टि का हिसाब लगा लेना चाहिये ।

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने पं० गंगासहायजी द्वारा सहायता दी ।

५) ला० विहारीलालजी प्यारेलालजी गोटे-वाले बाज़ार फतेपुरी देहली कड्डू १९

२) पं० दुर्गाप्रसादजी सबओवरसियर अछनेरा गर्मी कम्बल दो,

२) बा० धनीरामजी सबओवरसियर अछनेरा

५) ला० रामदयालजी साहू अछनेरा

४॥) गुप्तदानियों के द्वारा बा० दुर्गाप्रसादजी सबओवरसियर अछनेरा

१) बा० दयानन्द वर्म्मा राजामंडी आगरा

१) बा० रघुवरदयालजी राजामंडी आगरा

१) बा० जगदम्बाप्रसादजी गोकुलपुरा आगरा

२५) बा० नेकरामजी रईस व्यारा द्वारा ला० जमनादासजी राजमंडी आगरा

८) बा० नेकरामजी रईस व्यारा

२) बा० राधाकृष्णजी पूनाहाना

२) मुंशी नन्हेलालजी गुप्त ,,

४) ला० रामचन्द्रजी ,,

२) ला० रामशरणदासजी ,,

२) बा० भुरियामलजी ,,

२) बा० सुरसुरियामलजी ,,

१) बा० रामस्वरूप रोशनलालजी ,,

१) बा० जौहरीमलजी ,,

॥) बा० पूरणमलजी ,,

१) बा० रामदयालजी ,,

१) बा० छोटेलालजी हलवाई ,,

२) बा० वृद्धिमलजी ,, ,,

।) बा० श्यामलालजी ब्रजवासी ,,

१) मुं० रामदयालजी ,,

१) ला० श्यामलालजी आढ़ती ,,

१) ला० शिवलालजी जेष्ठ ,,

१) ला० जगनीमलजी कोसीवाले ,,

१) ला० रामस्वरूप करकल्लीमलजी पूनाहाना

१) ला० छुट्टनलालजी ,,

।) ला० परसामलजी ,,

।) ला० छज्जूमलजी ,,

१) बा० रामचन्द्रजी पटवारी ,,

॥) ला० बनखंडी छज्जूमलजी ,,

॥) ला० सकटूमलजी किशनलालजी ,,

॥) ग्यारसीरामजी स्वर्णकार ,,

१) चौधरी रहमतखांजी ,,

।) ला० घूड़ानरायण हलवाई ,,

।) ला० घसीटामलजी ,,

।) मोहरा स्वर्णकार ,,

=) ला० नन्दलालजी पनवाड़ी ,,

२) गुप्तदानी ,,

=) ला० प्रभातीजी ,,

॥) ला० प्रसादी कल्लूमलजी ,,

१) ला० नन्हे कालेखां ,,

१) चौ० अब्दुलकरीमखां ,,

-) ला० भोलामलजी ,,

॥) ला० गोकुलचन्दजी ,,

१) ला० रामस्वरूप चिरमिली ,,

।) ला० कन्हैयालालजी हलवाई ,,

१) जीवनराम देवीदासजी ,,

१) रामजस रामलालजी आली ,,

।-) जयरामजी पसारी ,,

१) रामनरायणजी ,,

५) चिरंजीलालजी बिछौर ,,

२३=)॥ ला० चिरंजीलालजी ,, द्वारा ,,

२) मुं० गौरीशंकरजी होडल
१) बा० खुशीरामजी ,,
१) चौबे जुगलसिंहजी ,,
१) पं० वनखंडीलालजी ,,
१) चौ० बालमुकुन्दजी ,,
१) पं० श्यामलालजी मिश्र ,,
॥) ला० ढऊआमलजी ,,
॥) ला० फ़कीरचन्दजी ,,
१) ला० नरायणसिंहजी मेरौली
१) ला० वनखंडीमलजी भक्त होडल
१) ला० घासीराम तुलारामजी आढ़ती पूनाहारा
१) पं० बद्री स्वामीजी ,,
१) ला० बुद्धागुलाब ,,
१) ला० कुन्दनलालजी ,,
॥) ला० बसन्तराम छाजूरामजी ,,
१) ला० परगा प्यारेलालजी ,,
।) ला० दुर्गाप्रसादजी ,,
२) पं० देवीप्रसादजी शर्म्मा कोटवन ,,
१) गुप्तदानी द्वारा पं० प्रसादीलालजी होडल
॥) ला० हरचन्दजी पटवारी ,,
१) ला० घुरंहीराजी ,,
॥) बा० जवाहिरसिंहजी ,,
=) बा० डूंगरमलजी ,,
१) ला० शामलियामलजी बीमावाले ,,
१) चौ० नत्थूसिंहजी जेलदार द्वारा पं० प्रसादीलालजी ,,
॥) चौ० जवाहरसिंहजी ,,
१) पं० लक्ष्मीनारायणजी वैद्यराज जमींदार ,,
५) पं० प्रसादीलालजी शर्म्मा ,, होडल
एक सोने की गूंजटूरी मूल्य ५) को बेची
१) ला० पुरुषोत्तमलालजी ,,
२) ला० हरसुखराय गोविन्दरायजी कपास प्रेस ,,
१) ला० शम्भुदयालजी वैश्य ,,
१) मुं० कृपारामजी मंत्री आ० स० ,,
२) ला० चन्दनमल पूरणलालजी ,,
२) ला० रामचन्द्र बाबूलालजी ,,
१) ला० पूरणलाल भगवानदासजी
१) ला० भगवानदासजी लाइसन्सदार ,,
१) ला० बन्नीलाल मूलचन्दजी ,,
॥) ला० नत्थनलालजी मोहर्रिर चुंगी पलवल
॥) ला० रघुवरदयालजी ,, ,,
१) ला० बद्रीप्रसाद कुन्दनलालजी ,,
॥) ला० सुनपतरायजी श्रीरामजी ,,
१) पं० बेनीरामजी ,,
१) चौबे जसवन्तसिंहजी पलवल
१) ला० भजनलालजी ,,
१) पोस्टमास्टर साहब ,,
१) ला० प्रभुदयालजी ,,
१) ला० जुगलकिशोरजी रामबख्शजी ,,
२) कुंवर रत्नसिंहजी ,,
१) चौबे रामजीलालजी ,,
=) मुं० धर्म्मसिंहजी ,,
१) ला० मुकन्दराम किशनलालजी ,,
॥) ला० जुगलकिशोर छाजूरामजी ,,

॥) ला० कालीचरणजी		पलवल
१) चौ० अमरसिंहजी		,,
२) साहू रामदयाल श्यामलालजी		,,
१) ला० बालमुकुन्द रामदयालजी		,,
१) ला० सेवाराम कल्याणदासजी		,,
१) चौ० भोलानाथजी प्रधान आ०स०		,,
=) ला० दामोदरजी		,,
॥) ला० मुन्नालालजी		,,
१) ला० छोटेलाल मंगलसेनजी		,,
१) ला० रतीरामजी		,,
१) बा० सुलतानसिंहजी सेक्रेटरी म्यूनीसिपालिटी		,,
।) ला० रामगुलामजी पोस्टआफिस		,,
॥) मुं० इनायतुल्लाख्या नवीस		,,
।) ला० मिट्ठनलालजी खज़ानची खतोली तहसील पलवल
॥) मुं० शालिगरामजी मोहर्रिर चुंगी		,,
१) पं० बीधूमलजी		,,
॥) ला० रघुनाथजी बोहरा		,,
।) ला० प्यारेलालजी		,,
=) ला० बुद्धामलजी बजाज		,,
॥) भुपनलालजी		,,
=) ला० किरोड़ीमलजी बजाज		,,
-) ला० दिलीपजी		,,
१) बा० जयनरायनजी असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर असावटी
२=) ला० वधानामलजी स्टेशनमास्टर असावटी
७) ला० मोहनलालजी फ़ीरोज़पुर निवासी मैनेजर रूई फैक्टरी बल्लभगढ़

नामावली उन दाताओं की जिन्हों ने महाशय शमानन्दजी द्वारा दान दिया:—

१) डाक्टर कृष्णलालजी स्थान		जयपुर
१) कृष्णदत्त रामविलासजी		,,
१) उत्तमचन्द रामगोपालजी		,,
१) रामदास बख्शीरामजी		,,
१) पं० हरनारायणजी मोहतमिम ड्योढ़ी		,,
२) डाक्टर भोलानाथजी प्राणनाथ एण्डको		,,
५) श्री गंगाशंकरसिंहजी ठाकुर गुढ़ा
५) श्रीमती सौभाग्यवतीजी धर्मपत्नी डा० नारायणदासजी		जयपुर
२) एस जोरास्टर एण्ड को		,,
५) पं० गोपीनाथजी एम. ए. मेम्बर कौन्सिल		,,
५) श्रीमान् ठाकुर देवीसिंहजी सर्दार चौमू		,,
।) महाशय रामगोपालजी		जयपुर
॥) महाशय प्यारेलालजी		,,
१) महाशय जगमोहनसिंहजी		,,
॥) महाशय हीरालालजी		,,
२) बा० गोपीनाथजी बी. ए. अग्रवाल		,,
२) बा० शिवनारायणजी वकील		,,
१) चन्द्रभान बंशीलालजी		,,
१) गणेशदासजी नरसिंहदासजी		,,
१) कंवलनैन हमीरसिंहजी		,,

१) गोकुलदास गोपालदासजी जयपुर
१) जवाहरमलजी सुगनचन्दजी ,,
१) पन्नालाल छगनलालजी ,,
११) श्रीमान् ठाकुर साहब विसाऊ ,,
१) मोहम्मद अब्दुलखां साहब कामदार सूर्य्यगढ़
२) गेवरमलजी व्यास वकील बीकानेर
१) पं० गोविन्दनारायणजी वैद्य ,,
१) श्रीराम नानकरामजी लाल कटरा ,,
१) सुखानन्द बल्देवसिंहजी ,,
२) महाशय अमरजी उस्ताजी ,,
१) डाक्टर ए० सी० गुप्ता ,,
॥) गुप्तदान एक बाबूजी ,,
।) गुप्तदान एक बाबू साहब जयपुर
।) बा० सुखदेवसहायजी गोदाम रेल्वे ,,
-) बा० गंगाप्रसादजी ,,
॥) गुप्तदान ,,
१) मगनीराम तनसुखरायजी ,,
१) मथुरादासजी सुखलालजी जौहरी ,,
-) गुप्तदान एक ओसवाल महाशय ,,
५) ला० नारायण महादेवजी जौहरी ,,
१) बैजनाथ सूर्य्यबख्शजी ,,
।) बालाबख्शजी ,,
१) बंजीलालजी ठोल्या ,,
१) जौहरीमल दयाचन्दजी ,,
१) सितावराय दुर्जनसिंहजी ,,
।) विहारीलालजी बरठी ,,
१) सेठ बालमुकन्दजी बज ,,
१) परमसुखदास कन्हैयालालजी जयपुर
।) गुप्तदान एक बाबू साहब ,,
१) जगतीप्रसादजी विद्यार्थी ,,
१) गुप्तदान एक वकील साहब एजेण्टी ,,
४) पं० बुद्धमलजी सबइन्सपेक्टर पुलिस माधौगढ़
२) ला० मातादीनजी ,,
१) मुं० जहूरनवीजी ,,
२) ला० मुन्नालालजी ,,
१) पं० शंकरलालजी ,,
४) बा० दाऊदयालजी तहसीलदार जालौन
३) ला० पन्नालालजी माधौगढ़
३) ला० फुन्दीलालजी ,,
५) बा० नवलसिंहजी सबओवरसियर जालौन
५) ला० तुलारामजी ठेकेदार ,,
२) डा० परमात्माशरणजी माधौगढ़
३) रामनाथ जी रखवालिया ,,
२) पं० लक्ष्मीचन्दजी ,,
२) महाशय हरदयालजी मिश्र ,,
२) सेठ सुनकू गुलजारीजी ,,
१) दमोली रावत ,,
॥) मिर्जा रहमानबेग सबइन्स्पेक्टर पेंशनर ,,
॥) गुलजारीलालजी सपौलिया माधौगढ़
२) ला० बल्दी बिशनोई ,,
१) ला० श्यामसुन्दरजी ,,
२) ला० रामगोपालजी ,,

२) ला० रामनारायण डोंगरे माधौगढ़
१) ला० बंशीधरजी ,,
१) ला० रामनाथ पीपरसेनिया ,,
१) ला० विदुर ,,
१) बारेलालजी ,,
२) ला० झझ्झन ,,
२) मुसम्मात केशरबाई ,,
१) अडंगरायजी हैड मुदर्रिस ,,
२) कुंवर दरियावसिंहजी हरौली
१) द्वारिका सेठ माधौगढ़
१) अम्बिका परसौलिया ,,
१) डाक्टर परमात्माशरण ,,
१) एक बाबू रेलवे शाहदरा ,,
॥-)॥ चन्दा पबलिक स्टेशन शाहदरा
१५) ला० रघुवरदयाजी जमीन्दार बिरुहनी
२२) ला० भिक्खनलालजी कांधला
१०) ला० मूलचन्दजी आर्य्य ,,
१) चौधरी दलीपसिंहजी दाहा जि० मेरठ
२) सेठ कुन्दनलालजी बुढ़ाना
२) सेठ नवलकिशोरजी ,,
।) ला० बाबूरामजी ,,
।) ला० रहतूलालजी ,,
॥-) ला० केदारनाथजी गुप्त ,,
।) ला० मुकन्दलाल प्यारेलालजी ,,
॥-) गेंदामलजी ,,
॥-) किशोरीलालजी ,,
॥) ज्योतिप्रसादजी ,,
॥-) विशम्भरलालजी बुढ़ाना
२) कोषाध्यक्ष आ० स० ,,
३) महाशय अमरसिंहजी प्रधान आ.स.,,
=) कुन्दनरवा हबीबपुर
मुरारीलाल मुंशीलालजी रूमाल १
।) बा० प्रेमराजजी बुढ़ाना
॥) डाक्टर बल्देवप्रसादजी ,,
२) पं० गुलजारीलालजी मुदर्रिस ,,
३।≈) कुछ बोर्डर बुढ़ाना मार्फत हरीराम मानीटर ,,
१) हरीरामजी वर्म्मा स्थान माही ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने मास दिसम्बर में सहायता दी ॥

२) सीतलप्रसादजी औरैया
॥) पं० फतहकरणजी चारण महल्ला मावलवाड़ी बीचोले पर उदयपुर
४-)। ब्रह्मदत्तजी सोढ़ा लाखनकोटड़ी अजमेर
१) मि० गुलाबरायजी वर्म्मा पो० मा० मद्दू मा० चंदा
५) कुँवर रामनाथजी भिवानी
२) हुकमचन्दजी मन्त्री आ० स० गनेरा जि० मुजफ्फरनगर
१) मुं० दुर्गाप्रसादजी जेलपुर मलवामाडी जि० देहरादून
२४≈)। द्वारा पं० जयदेवजी शर्म्मा मु० द० म० के झालरापाटन से

५०) सर्दार बहादुर भक्तसिंहजी सेक्रेटरी इजलास खास धौलपुर मा० चंदा

१) भगनी बा० मथुराप्रसादजी अजमेर

≈)॥ पं० ब्रह्मदत्तजी सोढ़ा लाखनकोटड़ी

१) महाशय जगदीशसहायजी माथुर ज्युडिशियल अफसर प्रतापगढ़ (मालवा) मा० चन्दा

५) रामचन्द्रजी सबडिवीजनल अफसर बागमापुरी सहारनपुर

३) शिवलालसिंहजी लछमनपुरा लुहारीगेट

५) जुगलकिशोरजी जि० बुलन्दशहर

५) सेक्रेटरी आ० स० मुस्तफाबाद जि० अम्बाला

५) मदनलालजी गोयनका हा० ए० सर्जन नागोर

५) बिहारीलालजी डिप्टी कलेक्टर मुजफ्फरगढ़ मा० चंदा

२६॥।=)॥ महाशय गोधराजजी अजमेर

३०) गिरधारीलालजी कण्ट्रेक्टर पो० आ० शिव्वो (वर्म्मा) मा० चन्दा

१) खुशालरामजी इङ्गलिश मुदर्रिस बड़वानी सी० आई०

१०) शिवनाथजी मिश्र मारफत चौबे बैजनाथजी अजमेरीगेट जयपुर

*५०) द्वारा महाशय रामानन्दजी उपदेशक द० अ०

॥) एक महाशय द्वारा सु० द० अ०

२) करोला ठेकेदार मारफत एस० सी० गुप्त एण्ड को० कागारोल खैरपुरा

६) लक्ष्मीनारायणजी बर मकान ला० गिरधारीलालजी इटावा

।) ब्रह्मदत्तजी सोढ़ा अजमेर

५) नाथूरामजी मंत्री आर्य्यपुत्री पाठशाला शाहाबाद

२) मि० हरशरनदासजी सदर बाजार मेरठ

८) श्रीमती रानावतजी साहबा श्रीगढ़ मारफत वकील घासीरामजी तिवाड़ी रतलाम (मालवा)

=)। श्रीमती कुँवरानीजी साहबा शाहपुरा

≈)॥ ,, ,, ,, ,,

२५) द्वारा महाशय रामानन्दजी उपदेशक द० अ०

१२=) नाथूरामजी असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर देहली

२) मुत्सद्दीलालजी सुप्रिण्टेण्डेण्ट द० बो० हाउस अजमेर

१९॥।) फम्मनलालजी अग्रवाल चुडूपलां तहसील मुंगा जिला फीरोजपुर

४) लहनासिंहजी रोड सुप्रिण्टेण्डेण्ट अम्बाला

५) मुंशीरामजी मारफत आ० स० मांडले

७॥।=) महाराजसिंहजी मंत्री आ० मर्दान०स०

३॥) श्रीमती कुँवरानीजी साहबा राजाधिराज शाहपुरा

३) रामशंकर विश्वनाथजी शर्म्मा मारफत आ० स० गिरगांव मुम्बई

।≈) दीपचन्दजी शर्म्मा लोको आफिस अजमेर

१) बा० रामदासजी वेक्सीनेटर शाहपुरा
१२।) चिम्मनलालजी ख़ज़ानची मारफ़त
आ० स० शिमला
२) अणचीदेवी धर्म्मपत्नी मोहनलालजी
होलाणी नागोर
दान १), अ० र० १)

स्थानिक चन्दा मास दिसम्बर १० ॥

१) बा० मिट्ठनलालजी वकील अजमेर
१) पं० वंशीधरजी शर्म्मा ,, ,,
१) पं० जी० आर० खांडेकरजी ,,
।) मा० छोगालालजी गवर्नमेण्ट कालेज ,,
१) बा० जवाहिरलालजी जेलर ,,
।) मुं० लाडलीलालजी मुख्तार ,,
=) ला० अंगनलालजी हलवाई ,,
।) ला० चैनसुखजी मुनीम ,,
४) ला० हीरालालजी झा. ,,
=) बालकरामजी ,,
=) गोवरधनजी ,,
१) मि० शोरावजी दादाभाई वकील ,,
१) बा० मूलचन्दजी गार्ड ,,
१) मुं० रामधनजी ख़जानचीगली ,,
=) बा० रामसिंहजी म्यूनीसिपल दफ्तर ,,
=) मि० प्यारेलालजी ब्रैंच स्कूल ,,
=) बा० छीतरमलजी म्यूनीसिपल ,,
॥) बा० डालचन्दजी नगरा ,,
।) बा० रणजीतसिंहजी लोकोआफ़िस ,,
।) बा० रघुवीरसिंहजी ,, ,,
=) बा० नवलकिशोरजी ,,
=) बा० घनश्यामदासजी अजमेर
-) बा० जगन्नाथजी ,,
-) बा० माधौप्रसादजी ,,
-) बा० कन्हैयालालजी ,,
-) ला० हरदेवजी ,,
=) मिस्तरी दूले ,,
=) रामसहायजी ,,
१) बनवारीलालजी बुकिंग क्लर्क ,,
॥) मि० धनपतप्रसादजी वकील ,,
-) धर्म्मपत्नी विलासरायजी ,,
=) फूलचन्दजी सुनार ,,
।) डा० ओ० एम० खांडवाला ,,
।) मि० उस्मान एण्ड सन्स ,,
-) सेठ उस्मानजी साहब कैसरगंज ,,

नामावली उनदाताओं की जिन्होंने मास जनवरी १९११ में सहायता दी ॥

२) ला० प्यारेलालजी सन आफ ला० उदयरामजी भागलिया ज़ि० मुज़फ्फ़रनगर
१) दुर्गाप्रसादजी ख़ज़ानची आ० स० सहारनपुर
२) बा० तनसुखरामजी बा० मारफत रामविलासजी प्रधान आ०स०शाहाबाद
२) प्रधान आ० स० शाहाबाद
१) ला० मेडईलालजी द्वारा प्रधान आ० स० शाहाबाद
५) कुंवर ज्वालासिंहजी वर्मा डा० आ० इन्दरगढ़ ज़ि० फ़र्रुखाबाद

१) कुन्दनसिंहजी सहारनपुर
१) चौ० राधेलालजी लोको स्टोर अजमेर
१) धन्नालालजी ,,
॥) रामनाथजी ,,
।) अमृतदत्तजी सोढ़ा ,,
१) बा० टीकारामजी नवाब का बेड़ा ,,
५) बा० दौलतसिंहजी चिम्मनदासजी
डा० मन्दरी मुम्बई
५) मंगला पटेल थूनी मा० डा० अयो-
ध्याप्रसादजी चाकसू
१) लक्ष्मणसिंहजी अजमेर
५) दीवानसिंहजी मोहर्रिर जानसठ
जि० मुजफ्फरनगर
१) विहारीलालजी संडीला जि० हरदोई
१) फतहकरणजी चारण उदयपुर
५) जगन्नाथजी रेलवे स्टोर क्लर्क आबू
२) बा० हनवन्तमलजी नायब हाकिम
गंगापुर
-) द्वारा मु० द० अ० के
३) धर्म्मपत्नी बा० हरनरायणदासजी
सब ओवरसियर अजमेर
१॥।≡)॥ द्वारा पं० गंगासहायजी उपदेशक
१) अयोध्याप्रसादजी वैश्य मार्फत वि-
श्वनाथजी पो० मा० कमालगंज
(फ़रुखाबाद)
३) हरगोविन्ददासजी उपाध्याय चीफ
गुड्सक्लर्क मुम्बई
१०) जमनाप्रसादजी वकील हाईकोर्ट गो-
रखपुर

२) बद्रीप्रसादजी रजिष्ट्रार कानूगो तहसील
किछा जिला नैनीताल
१) गुप्तदान पता नहीं चलता
१) गुलाबरायजी वर्म्मा पो० मा० देवगढ़
मासिक चन्दा
।=) कालूरामजी मिस्त्री नयानगर द्वारा
मिट्ठनलालजी वकील
)॥ द्वारा मु० द० अ०
७) पं० हीरालालजी इंजीनियरिङ्ग कण्ट्रेक्टर
गोविन्दपेगेनेट जेहलम
१) महादेव भोलूरामजी नसीराबाद
३) श्रीमती माताजी डा० शिवशंकरजी
शुक्ल लैंसडाउन अस्पताल उदयपुर
६) मंगलसिंहजी जिनफिटर कृष्णामिल्स
ब्यावर
४-) चिरंजीलालजी प्रोसीक्यूटिङ्ग इन्सपेक्टर
अलीगढ़
२) पं० मनोहरलालजी आबूरोड़
२) मि० जगदीशसहायजी माथुर मेजिस्ट्रेट
प्रतापगढ़ (मालवा) (मा० चंदा)
≡) उत्तमचंदजी अजमेर
-) ला० अंगनलालजी ,,
-) ला० हरस्वरूपजी ,,
=) भोलाजी ,,
२) गुलाबजी दरोगा अस्तबल लवाण
१) बा० भोलासिंहजी ,,
१६॥।=) महता झंडारामजी खज़ानची आ०
स० लायलपुर
१) सुन्दरलालजी सब ओवरसियर डी०
एच० आर० हिसार

१) श्रीमती धर्मपत्नी भवानीसिंहजी कुर्क-
अमीन तहसील फतहपुर
१८।।।)।। सेठ मांगीलालजी अजमेर
५) डा० मुकन्दसिंहजी असिस्टेण्ट अफ़-
सर लैंसडाउन अस्पताल संघाई
३।) हरदेवसहायजी सभासद् आ० स०
मवानाकलां जि० मेरठ
२।।) नाजिर तहसील जसराना ज़ि० मैनपुरी
१।।।≈) विशम्भरनाथजी सिगनेलर लखनऊ
१०) बा० जगन्नाथजी द्वारा मुं० फूलचंदजी
साहब जज्ज अजमेर
२) स्वामीलालजी आ० स० ठट्टा
।) बा० रामचन्द्रजी वकील बाराबंकी
-) अंगनलालजी हलवाई
-) बा० चोखामलजी
।।) ला० सुखदेवजी रामनारायणजी
।।) ला० गुलाबचन्दजी
३) ला० बसन्तीलालजी हेडक्लर्क उदयपुर
गोशाला २), दवाखाना १)
४।।।≈) मंत्री आ० स० नावली वाया आ-
नन्द (गुजरात)
१।।।=) घनश्यामदासजी पोस्टमास्टर किरठल
ज़ि० मेरठ
४।।≈) महाशय जयनारायणजी भार्गव
पिन्हे स्कूल डूंगरपुर
१०) बा० आत्मारामजी भार्गव
सबपो० मा० माक्सी जि० उज्जैन
५) दान ५) गोशाला
१०) मा० गिरधारीलालजी कन्ट्रेक्टर पो०
आ० शिवो (बर्म्मा) गा० चंदा
१)। मुं० नवलकिशोरजी भार्गव डी. एच.
ब्रादर्स अजमेर
५०) पं० गंगासहायजी उपदेशक द० आ०
द्वारा
१) सोंदेवीजी मा० बा० मोतीलाल कै-
शियर अजमेर
१) बा० हरलालदासजी
१) पं० मोतीलालजी किशनगढ़
१) बा० जयदेवदयालजी कैसरगंज
२) प्यारेलालजी जिमींन्दार खैरपुर लक्ष्मी
के लिये

स्थानिक दाताओं की नामा-वली जनवरी १९११ ॥

।।) मि० धनपतप्रसादजी	अजमेर
≈) बा० रामसिंहजी	,,
।) पं० लक्ष्मीनारायणजी	,,
≈) अंगनलालजी हलवाई	,,
-) छीतरमलजी	,,
।) सेठ उस्मानजी एण्ड को	,,
-) सेठ उस्मानजी	,,
१) पं० वंशीधरजी शर्म्मा वकील	,,
२) राय सेठ चांदमलजी	,,
१) पं० जी० आर० खांडेकरजी	,,
≈) गोवरधनजी मदारगेट	,,
४) बा० विशम्भरनाथजी वकील	,,
१) मि० शोरावजी दादाभाई वकील	,,
१) ला० घीसूलालजी मिस्त्री	,,
=) ला० कजोड़ीमलजी	,,

।) बा०. रणजीतसिंहजी लोको आफिस
।) बा० रघुवीरसिंहजी अजमेर
≈) बा० नवलकिशोरजी ,,
≈) बा० घनश्यामदासजी ,,
=) बा० ईश्वरीप्रसादजी ,,
–) बा० जगन्नाथजी ,,
-) माधोप्रसादजी ,,
-) कन्हैयालालजी ,,
-) हरदेवलालजी ,,
≡) मणीलाल गोपालजी ,,
=) रामसहायजी ,,
=) ला० तनसुखजी
=) बालकरामजी
२) बा० पुरुषोत्तमदासजी
॥) बा० हीरालालजी
१) बा० मिट्ठनलालजी वकील
१) बा० जवाहिरलालजी जेलर
।) मा० छोगालालजी
॥) मु० लाडलीलालजी मुख्तार
=) प्यारेलालजी ब्रैंचस्कूल
।) ला० चैनसुखजी मुनीम
=) बाबूलालजी
≈) फूलचन्दजी सुनार
॥) मा० विभूतीभूषणजी
१) बनवारीलालजी बुकिङ्ग क्लर्क
=) सर्दारसिंहजी कान्स्टेबल चोकी सराय

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास्टर नत्थीलालजी पोनाहाना सब आफिस होडल ज़िला गुड़गांवा द्वारा दान भिजवाया

।-)॥ गुप्तदान
॥) मु० गंगासहाय साहब गिरदावर पनाहाना
॥) का० ज्वाहरलाल साहब पटवारी
॥) ला० छज्जूमल गिर्वरमलजी बजाज
॥) ला० सरकरयामलजी
।) मुन्शीरामचन्द्रजी पटवारी
।) ला० रामनरायणजी
।) ला० शिवलालजी झडूंमलजी
।) ला० रामस्वरूप खलफ चिरमोलीमलजी
।) चोधरी सकटूमलजी
।) लाला हंसराजजी
।) भगतरामलालजी
।) ला० बद्रीप्रसादजी
।-) ला० कन्हैयालाल गोकलचन्दजी
।) जीवनराम देवीदासजी
।) रामसरन छोटेलालजी
।) लाला रामसरनदास कन्हैयालालजी
।) मुन्शी रामदयालजी बजाज
।) पंडित मनसुखरामजी हेडमास्टर
=) लाला रामचन्द्र हलवाई
=) लाला जैराम पनसारी
=) लाला बलदेवदास खोड़मलजी
=) लाला जगन्नाथजी
=) लाला कन्हैयालाल मुरलीधर

=) भगत रामदयालजी
=) मुन्शी रूपरामजी मास्टर पूनाहाना
=) मुन्शी हुरमतखां मास्टर
=) लाला भूरयामलजी
=) लाला रामस्वरूप करकलीमल
=) लाला काजीमलजी
-) लाला प्रभातीमलजी
-) लाला रामस्वरूप रोशनलालजी
-) लाला गोकलचन्द बजाज
-) पण्डित सेढूमलजी चिट्टीरसा
-) पं० डालचन्द नायब मुदर्रिस
-) मुं० छाजूरामजी
-) लाला रामस्वरूप घनश्याम
-) लाला नन्दलाल वल्द गनेशा
-) लाला छज्जूमल वल्द छोटेलाल
-) लाला छज्जूमल प्रभुदयाल
-) लाला नन्दलाल नमूली
-) लाला रामचन्द बरढंडीलाल
-) लाला नत्थीलाल करकुलमल
-) लाला जोहरीलाल वल्द हरनामल
-) लाला मोतीराम विद्यार्थी
-) लाला रामचन्द वल्द जोहरीमल
-) लाला हीरालाल वल्द मुरलीधर
-) लाला शामलाल वल्द बृजवासीलाल
-) लाला पूरनलालजी बजाज
-) लाला रामजीवनजी वल्द राधाकिशन
-) लाला छोटेलाल हलवाई
-) मुन्शी गयासीरामजी

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने लाला नत्थीलाल गयालाल साहूकार कसबा कोसीकलां ज़िला मथुरा द्वारा दान भिजवाया।

=) धरनीधर वेद
।) नत्थीलाल गयालालजी
=) गिराज नीम
=) दुर्गाप्रसाद शिवलालजी
-) मक्खनलालजी हलवाई
-) छोटेलालजी
=) किशनलालजी
=) जौहरी हलवाई
-) रामदासजी
-) दिलसुख
-) केसरी
-) लेखराजजी
=) छोटेलाल गोकुलचन्द
=) ठाकुरदास हीरालाल

मुरलीधरजी भजनीक द्वारा आए दान की सूची।

४) श्रीमान् ठाकुरांराज श्री रणजीतसिंहजी साहब मु० जामोलाव
२≡)॥ श्रीमान् ठाकुर साहब श्री मोडसिंहजी साहब जामोवाल
१) गुलाबचन्दजी कोठारी मु० ,,

१) छोटमलजी बंब मु० जामोला
१) भूरालाल माली मु० ,,
१) गुप्तदान मु० ,,
।) चांदमलजी रंगलालजी डूंगरवाल ,,
॥) हजारीमलजी कोठारी मु० ,,
।) सुजाणमलजी ,, ,, ,,
।) कल्याणमलजी ,, ,, ,,
।) भीवराजजी महता ,, ,,
।) कजोड़ीमलजी महता ,, ,,
।) चांदमलजी मंडिया ,, ,,
।) सूरजमलजी दूणीवाल ,, ,,
।) तेजमलजी कोठारी ,, ,,
=) नन्दरामजी मंडिया ,, ,,
=) छगनमलजी महता ,, ,,
।) बालूराम माली ,, ,,
=) हीरालालजी महता ,, ,,
।) मगनीरामजी दरजी ,, ,,
।) सुवालाल नाई ,, ,,
।≡) किशना तेली ,, ,,
=) केसाजी सलावट ,, ,,
=)॥। केसर विधवा हीरा नाई की बहू ,,
=) हरदेवजी भारती गुसाई मु० ,,
=) हमीरजी तेली ,, ,,
।=) सुगनमलजी कोठारी ,, ,,
=) पोमराजजी दरजी ,, ,,
=) धनराजजी सेवक ,, ,,
-) भूरालाल दरोगा ,, ,,
।) केसरसिंहजी सांखला ,, ,,
=) सुवाई नायक मु० जामोला
=) हमीरो नायक ,, ,,
-) कजोड़ नायक ,, ,,
=)॥ गंगा बेटी महाराम भांबी की ,,
।) रामो चमार मु० ,,
।) वैष्णव नन्दरामदास साधू मु० ,,
५॥=) गांव कानपुरा का चन्दा पंचायती
॥=) साधू तुलसीदासजी

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने मास फरवरी १९११ में सहायता की ॥

५) इन्द्रजीवजी मंत्री आ० स० दक्षिण हैदराबाद
२) कालूरामजी ,,
१) नरसारडीजी ,,
२) ठा० हीरासिंहजी वर्म्मा सोरदा डा० खा० करियामई जिला बदायूं
१०) ला० मुन्नालालजी गुप्त सेक्रेटरी आ० स० चान्दौर
२२॥≡)॥। मुरलीधरजी भजनीक द्वारा
९) बा० गोकुलचन्दजी भाटिया द्वारा राधामोहन गोकुलजी सेक्रेटरी आ० स० कलकत्ता
॥) खांडूभाई ललूभाई नागदाभादा बुलसर बी० बी० एण्ड सी० आई रेल्वे मुम्बई

५) कुंजीलालजी
३) पं० जगनलालजी भार्गव लायब्रेरियन महाराजा लायब्रेरी जयपुर
।) ब्रह्मदत्तजी सोढ़ा लाखनकोटरी अजमेर
१-)॥ धर्म्मपत्नी ला० कन्हैयालालजी अत्तार अजमेर
५) बनवारीलालजी सब रजिस्ट्रार सहारनपुर
९॥।≡) शम्भुदयालजी सेक्रेटरी आ० स० इन्दौर
४०) श्रीमती माजी साहिबा भरतपुर द्वारा डा० सुखदेवजी भरतपुर
६) खुसालीरामजी वर्म्मा स्टेशनमास्टर कानपुर
४०) मुं० पन्नालालजी भार्गव नाजिर जयपुर
२५) अनाथालय
१५) दयानंद ऐंग्लो वैदिकहाई-स्कूल
?) गुलाबरायजी वर्म्मा पो० मा० कैसर-गंज मा० चंदा
४) द्वारकाप्रसादजी भार्गव अजमेर
९) दुर्गादेवीजी धर्म्मपत्नी स्वर्गीय बा० माधोप्रसादजी फारेस्ट अफ़सर मङ्ग-लोर ज़ि० सहारनपुर
१४) दौलतरायजी प्रधान आ० स० क-रहल जि० मैनपुरी
१) जगदीशसहायजी माथुर मजिस्ट्रेट प्र-तापगढ़ (मालवा) मा० चंदा
१०) सेठ महरजी बहरामजी चीफ स्टोर्स आफ़िस बोम्बे
३२॥-≡)॥-प्यारेलालजी गुप्त उपमंत्री आ० स० चन्दौसी
।।।≡) पं० मोतीलालजी किशनगढ़
८) धर्म्मपत्नी स्वर्गीय बा० मथुराप्रसादजी अजमेर
२) पं० रुद्रदत्तजी शर्म्मा आकिंचन अ-थर्ववेदीय औषधालय चन्दौसी
२) ला० गणेशीलालजी प्रधान आ० स० चन्दौसी
२) ला० तेजराम बसन्तरामजी चन्दौसी
१) ला० रामरतनजी बनारसीदासजी अ-मन्तकाप्रसादजी चन्दौसी
१) ला० मोहनलालजी पुरानीपेठ चन्दौसी
२) ला० तेजराम कल्याणदासजी चन्दौसी
१) ला० गुलजारीलालजी जीवनरामजी चंदौसी
१) ला० हरदयाल लछमणदासजी पसा-रट्टा बजार चन्दौसी
१०) रामप्रसादजी प्यारेलालजी बंगला बाज़ार चन्दौसी
१) बा० शिवराज बहादुरजी मा० कैला-शनरायणजी बाबू महल्ला अजमेर
२) रामप्रसाद प्यारेलालजी चन्दौसी गोशाला
२) रामविलासजी मूंदड़ा नायब हाकिम भानुजा (मेवाड़)
२०) विद्याधररामजी नजूमी आ० स० बच्छौ डा० खा० जर्रा ज़ि० अलीगढ़
)॥ कुंवरानीजी साहिबा राजाधिराज शा-हपुरा

६४॥=)४ सेक्रेटरी आ० स० बच्छोवाली लाहौर
१॥।=) पं० रामचन्द्रजी कसना शामली जि० मुज़फ्फ़रनगर
५) हरपालसिंहजी बलवन्तसिंहजी संडीला जि० हरदोई
४९) शमानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा
३) जयकृष्णजी वर्म्मा करचा शिकारपुर जि० मुज़फ्फ़रनगर
२) रूपचन्दजी मा० हरनामदासजी
१०) दलीपसिंहजी साकिन मौजा
१०) भारतेन्दुजी फ़र्रुख़ाबाद
॥=) शामजी अमरनाथजी डाक्टरी दांत और आंख अजमेर
२) महाराजसिंहजी मुगरा ज़िला मुज़फ्फ़रनगर
५) जीवननाथजी इंडला ज़िला फ़ैजाबाद
१२॥।–) ला० मनसारामजी खोलो बिलोचिस्तान
१०॥।–) अनाथालय दान
१) अबलाउद्धारकसभा
१) प्रियभाषिणीसभा
॥) सुखदेवजी रामनरायणजी सोजत
१॥।=) सुखीरामजी मन्त्री आ० स० मजिदमोठ देहली
३६–) कलियाणदासजी देसाई मन्त्री आ० स० मुम्बई
४॥।=) बी बी रूपकुंवरजी मार्फ़त ला० मूलचन्दजी कोषाध्यक्ष आ० सं० भरतपुर
२) मोतीलालजी स्टेट प्रेस जोधपुर
१) दान १) गोशाला
५) मुन्नालालजी मार्फ़त भागवतजी डायरी फार्म अलीगढ़
४) मुं० गंगासहायजी व सर जीतसिंहजी मोजा नावला डाकखाना खनोली जि० मुजफ़्फ़रनगर
८॥=)॥ नत्थीलालजी मुदर्रिस पोनाहाना ज़िला गुड़गांवा
१॥) नत्थीलालजी गयालालजी साहूकार कसबा कोसी ज़ि० मथुरा
१) नरायणजी भगवान खरवा
१) सेठ सुर्जनलालजी अग्रवाल मार्फ़त ला० नन्दलालजी सोनी ब्यावर
५) ठाकुरदासजी लाहोर
२) आर० पी वर्म्मा दानावली लश्कर ग्वालियर
२) बल्देवसहायजी नगीना जि० बिजनौर
५५) द्वारा शमानन्दजी उपदेशक द० अ० के
५) आल्हारामजी हरगोविन्दपुर ज़ि० गुरुदासपुर
१) निहालसिंहजी शर्म्मा बुगाना जि० मुज़फ्फ़रनगर
२०) रायबहादुर मिस्टर किशोरीलालजी भार्गव देहली
१०) श्रीयुत ला० घनश्यामदासजी ठाकुरदासजी ठट्टा सिन्ध
५) बा० बिहारीलालजी भार्गव बी. ए. एल. एल. बी. वकील मा० चंदा कानपुर

५) बा० गिरधारीलालजी भार्गव बी० ए० वकील कानपुर
८) पं० वंशीधरजी शर्म्मा वकील अजमेर
।) ला० अंगनलालजी हलवाई ,,
१) टीचर बलवन्तराजजी हाईस्कूल मार्फत जयदेवसिंहजी, आगरा
४) सूरजसहायजी मुख्तार कलेक्टरी एटा
५) गेदामलजी साहब पोनाहाना जि० गुड़गावां
२५) द्वारा शमानन्दजी उपदेशक दयानन्द अनाथालय अजमेर
४) सीतारामजी क्लोथ मर्चेण्ट कोट ईसा खां (फ़ीरोज़पुर)
१०) जगदीशसहायजी माथुर मजिस्ट्रेट प्रतापगढ़ (मालवा)
२) हजारीलालजी गट्टूमलजी चन्दौसी ज़ि० मुरादाबाद
२) चौधरी खूबचन्दजी वन्ट ज़ि० मुज़फ्फ़र नगर
५)शिवदयालमल रामकिशनदासजी हांसी जि० हिसार
१८।≡) रामस्वरूपजी पोस्टमास्टर जेवर जि० बुलन्दशहर

नामावली स्थानिक सहायकों की मास फरवरी १६११ ई०

१) पं० वंशीधरजी शर्म्मा वकील अजमेर
१) मि० शोराबजी दादाभाई ,, ,,
१) बा० मिट्ठनलालजी ,, ,,
॥) मि० धनप्रसादजी वकील अजमेर
≈) बा० रामसिंहजी ,,
।) ला० कजोड़ीमलजी सुनार ,,
॥) डा० ओ० एम० खांडवाला ,,
≈) बालकरामजी क्लर्क ,,
।) बा० छीतरमलजी ,,
।) सेठ उस्मानजी एण्ड सन्स ,,
।) उस्मानजी ,,
१) बा० जवाहरलालजी जेलर अजमेर
२) बा० विशम्भरनाथजी वकील ,,
१) पण्डित जी० आर० खांडेकरजी ,,
≈) बाबूलालजी मदारगेट ,,
≈) फूलचन्दजी सुनार ,,
≈) प्यारेलालजी ब्रैंचस्कूल ,,
२) बा० पुरुषोत्तमदासजी ,,
१) बा० मूलचन्दजी गार्ड ,,
≈) सर्दारसिंहजी कानस्टेबल ,,
१) बा० बनवारीलालजी बुकिङ्गक्लर्क ,,
≈) ला० अंगनलालजी हलवाई ,,
।) पं० लक्ष्मीनरायणजी ,,
॥) बा० हीरालालजी घीवाले ,,
≈) ला० तनसुखरामजी ,,
३) मुं० फूलचन्दजी जज्ज अजमेर

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने महाशय शमानन्दजी द्वारा सहायता की ॥

२) म० ज्योतिस्वरूपजी रईस बामनौली

७) चौ० घसीटासिंहजी बूड़पुर
१) ,, गंगारामजी ,,
१) ,, भगवानसिंहजी बामनौली
१) ,, रामसिंहजी लूंब
१) म० सुखदेव फतहपुर जि० मेरठ
१) पं० चन्दूलालजी सिलावर
१) मंत्री आर्य्यसमाज एलम
१) बा० चन्द्रभान स्टेशनमास्टर खेड़ी
२०) चौ० रामनारायणजी बामनौली
१) ,, होशियारसिंहजी सुगावा
१) ,, भरतसिंहजी बामनौली
५) ,, चन्दनसिंहजी ,,
१) ,, खजानसिंहजी बिजरौला
२) ,, रघुवीरसिंहजी दौराना
१) ,, सिब्बाराम दादरी
१) ,, धर्म्मसिंहजी बामनौली
१) म० रामरिखजी रहतना
२) बिलेज मुंसिफ सोंजनी
१) चौ० अमरसिंहजी छचरपुर
१) हुकमचन्दजी नम्बरदार बामनौली
१) चौ० लक्खीराम कनियान
१) ठाकुर शम्भुसिंहजी गढ़ी राजपुर
१) चौ० बलवन्तसिंहजी सुकाना
१) चौ० रामस्वरूपजी बरवाड़ा
१) म० हरसान किरठल
१) पं० प्रभुलाल माजू
१) म० अलमचन्दजी किशनपुर
१) चौ० हरकेस डांगरौल
१) चौ० रामसिंहजी जगाना
१) चौ० बलवन्तसिंहजी किरठल
१) महाशय हरबन्श सोंजनी
१) चौधरी रामधन भारती
२) महाशय हरज्ञान कराड़ बामनौली

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास जनवरी सन् १९११ में वस्तुदान दे सहायता की ॥

धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं चने का आटा ऽ६। गेहूं ऽ४॥।= जो गेहूं मिले ऽ२ जवार की फली ऽ॥।= उड़द की दाल ऽ- भूसी रोटी ऽ४-

बाबू जोरावरमलजी कायस्थ महल्ला अजमेर २० कन्याओं को भोजन

पं० गंगासहायजी उपदेशक द्वारा देहली से लड्डू ।ऽ५ धोती पुरानी १ कुरता १ पजामा १ कोट १ वास्कोट १ सब पुराने, दुपट्टा जनाने २ ओढ़ना १ दामन १ वास्कट १ पुस्तकें कर्णामृत ३ पतिव्रतधर्म १६, भजन पचासा भाग २ बालबोधनी ५ भाग १५ अद्भुतसागर ४ अबलाभजनचालीसी २ सेवाजी का जीवनचरित्र २ ईशादि ८ उपनिषद् १ जिल्द नरेन्द्र जीवनचरित्र २ गंजीना भजन ८ कम्मल १ लिहाफ १

धर्म्मपत्नी बा० ग्यारसीलालजी मारफत प्रधानजी स्त्रीसमाज अजमेर गजक ऽ। बन्डी १ (कुरती १)

लक्ष्मणसिंहजी मार्फत दौलतरामजी डिग्गीबाजार अजमेर (।तियल २) लहँगा ओढनी २ आंगी २

धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं जौ का आटा मिला ।ऽ४ बाजरा ऽ१ गेहूं ऽ१॥ जो ऽ२॥ मूंगकीदाल ऽ- भूसी रोटी ऽ८

लाला हरनूमलजी नागपुर जि० काङ्गड़ा पजामा १ कुरता १ दुपट्टा १ टोपी १ दुपलड़ा १ लालकपड़ा पगड़ी १ जूता जोड़ी १

सेठ मदनचन्दजी लाखनकोटरी अजमेर गेहूं का आटा ऽ९॥ अरहर की दाल ऽ१।= मूंग की दाल ऽ१।= मोठकी दाल और मिले चने ऽ१।= बूरा ऽ॥= चावल ऽ॥= नमक ऽ॥= हल्दी धनिया मिली ऽ= घृत ऽ।-

बा० हीरालालजी अजमेर जौ ।ऽ७

चम्पादेवी धर्म्मपत्नी पं० मुत्सद्दीलालजी अजमेर लड्डू तिलके ऽ। लड्डू मगद के ऽ४

धर्म्मपत्नी बा० मिट्ठनलालजी अजमेर खिचड़ी ।ऽ घी ऽ।॥≡ १) रुपये का

धर्म्मपत्नी पं० जयदेवजी शर्मा अजमेर खिचड़ी ऽ॥- पापड़ ४ तिलके लड्डू ऽ२ घी आधी छटांक सुपारी १२

धर्म्मपत्नी बा० ओंकारलालजी अजमेर जलेबी ३) रुपये की ऽ७॥।=

मिस्त्राणीजी अजमेर खिचड़ी ऽ२॥= घृत ऽ-। लड्डू ऽ।≡-॥। नमक ऽ-॥

रामचन्द्रजी केसरगंज अजमेर खिचड़ी ऽ२॥ घृत ऽ-।

श्रीकिशनजी अजमेर खिचड़ी ऽ॥ तिलके लड्डू २

बा० हुकमचन्दजी फारेस्ट आफ़ीसर अजमेर मिठाई ऽ२॥ खिचड़ी ऽ२॥ घृत ऽ-

पं० झप्पीलालजी शर्मा केसरगंज अजमेर खिचडी ऽ। लड्डू ऽ१ नुकती के

ब्रह्मदत्तजी सोढ़ा अजमेर गजक ऽ४॥

लाला शिवदयालसिंहजी रईस जानसठ अँगरखे ४ कोट २ पाजामे १२ बन्डी ५ गुलूबन्द २ साफा १ कुरते २३ वास्कट १८ बनियान ३ दुपट्टे गले के २ ओढ़नी ५ गरारे २ टोपी १४ टोपे ४ जुराब १६ जोड़ी जुराब के उपर के जूते १ जोडी चोली २६ बटन १ लंगोट १

धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं जौ ऽ१॥=मिश्रित आटा ।ऽ।= भूसी रोटी ऽ५॥। खिचड़ी ऽ१=

धर्म्मपत्नी बा० मथुराप्रसादजी अजमेर खिचड़ी ऽ१ अन्दाजन गजक ऽ१≡

बाबू हीरालालजी द्वारा अजमेर चने भुने ऽ२।= गुड़ ऽ१≡

बाबू कल्याणसिंहजी अजमेर खिचड़ी ऽ।—

बा० जवाहरलालजी जेलर अजमेर फेनी लड्डू ऽ२॥—

नाथूलालजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कमिश्नर अजमेर बनियान ५

पं० रामानन्दजी उपदेशक द्वारा छाता १ सुधासिन्धु शीशी २ कमीज १ कुरता १ टोपी ६ साफा १ धोती ५ कपड़ा ३ गज कोट २ पजामा १ अचकन ४ बण्डी ४ मोजा जोड़ी ३ दुपट्टा २ रूमाल ८ कटोरी १

सेठ मांगीलालजी द्वारा बद्रीदास मोड़ूलालजी धानमंडी अजमेर एक समय भोजन सब अनाथ अनाथाओं को

बा० गंगारामजी वकील हाईकोर्ट अजमेर जलेबी ऽ६ चार रुपये की

बा० गौरीशंकरजी वै० अजमेर बाजरा ऽ२। गेहूं ऽ।॥=

पं० जयदेवजी शर्मा अजमेर भुने चने ऽ१।≡ गुड़ ऽ≡

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिला आटा ।ऽ४ गेहूं ऽ४ भूसी रोटी ऽ१।

बा० चोखामलजी अजमेर खिचड़ी ऽ२ लड्डू बेसन के ८

बा० रामचन्द्रजी वकील बाराबंकी द्वारा बाबू जयदेवयालजी अजमेर धोती २ कोरदार १ तथा १ मलमलकी ९ गज़ बार कि लहस धोती पर रखने की

मुन्शी नवलकिशोरजी भार्गव डी० एच ब्रादर्स अजमेर खिचड़ी ऽ४॥ घीऽ= मिसरी के कुंजे १० तिल के लड्डू ८

पं० नथमलजी तिवाड़ी अजमेर अन्न जौ चना मिला ऽ५ आटा मिला ऽ१॥ नमक ऽ=॥

धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं जो का मिला आटा ऽ६॥ अन्न मिला ऽ६। गुड़ ऽ।= आलू ऽ। भूसी रोटी ऽ५॥।=

बा० नाथूलालजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कमिश्नर्स आफिस अजमेर जलेबी ऽ३

श्रीमती चम्पा मालिन मार्फत नाथूरामजी बीड़ीवाले पुरानीमंडी अजमेर भोजन १५ अनाथों को एक समय

पं० रामचन्द्रजी शर्मा डाकी कुये के पास अजमेर आटा ऽ१॥ घी ऽ॥। का उर्द की दाल ऽ~ कुछ नमक

श्रीमती धर्म्मपत्नी बा० मथुराप्रसादजी अजमेर गजक ।) स्वयं बांटी

बाबू लादूरामजी डाकी कुये के पास अजमेर उर्द ऽ२॥। गजक ऽ।

धर्म्मपत्नी बा० मूलचन्दजी पेमास्टर अजमेर कम्बल लाल सूती २

धर्म्मपत्नी मुन्शी पद्मचन्द्रजी अजमेर मिठाई ऽ१।~

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास फरवरी सन् १६११ में वस्तु दान देकर सहायता दी ॥

बा० मोहनलालजी गार्ड आगरा दरवाजा अजमेर भोजन एक समय सब अनाथ बालकों को.

धन्नालालजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ।ऽ१॥ गौओं को.

हजारी द्वारा धन्नालाल तेली अजमेर खल ऽ१~ गौओं को.

रामनाथजी द्वारा धन्नालाल तेली अजमेर खल ऽ२॥। गौओं को.

धर्मपत्नी ला० कन्हैयालालजी अत्तार द्वारा स्त्रीसमाज अजमेर तिल के लड्डू ७४.

पं० जगन्नाथजी भार्गव महाराजा लाइब्रेरी जयपुर जलेबी ऽ२॥। एक १) की.

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिश्रित आटा ।ऽ॥। मिश्रित अन्न ऽ१॥। भूसी रोटी ऽ२.

बा० ग्यासीलालजी लाखनकोटरी अजमेर बेर ऽ६॥.

बा० मथुराप्रसादजी मूंदड़ी मोहल्ला अजमेर तिलके लड्डू ऽ२॥.

बा० मिट्ठनलालजी भार्गव तथा उनके सम्बन्धी द्वारा पं० करुणानन्दजी अजमेर. घास गौशाला की गौओं को ६) मन ४) रुपये की.

धर्म्मपत्नी बा० मथुराप्रसादजी अजमेर घास १॥ऽ गौओं को १) रुपये का.

श्रीमती बंडी कुंवरानीजी साहिबा राजाधिराज शाहपुरा मेवाड़ द्वारा हकीम अहमदअलीजी साहब गेहूं ५ऽ मन मिठाई १०) की ॥ऽ७ सेर.

पं० करुणानन्दजी अजमेर जो ऽ२।

जंगीमलजी गुप्त मूंदड़ी मोहल्ला अजमेर जौ ऽ७.

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिला आटा ।ऽ जौ ऽ१॥। भूसी रोटी ऽ२ गेहूं ऽ१॥। बत्तीस लड्डू ऽ।॥.

पं० रामचन्द्रजी रामप्रसादजी शर्मा डाकीकूआ अजमेर आटा मिला हुआ ऽ२॥। दाल उर्द की ऽ=॥.

ला० चांदमलजी पूर्व चौकीदार द० अ० अजमेर दो अनाथ और कान्हापानीवाले को भोजन कराया एक समय

महाशय धन्नालालजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ऽ४ काकड़े ऽ३॥

महाशय छोगालालजी रघुनाथजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ऽ८

महाशय छोगाजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ऽ॥

महाशय रामनाथजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ऽ३

नन्दरामजी मिस्त्री द्वारा बा० छोटेलालजी नसीराबाद मिठाई ऽ६ दो रुपये की

धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं जौं का आटा ऽ७॥ गेहूं ऽ१॥ जौ ऽ७॥ भूसीऽ२

बा० केशवदेवजी मन्त्री आ० स० अजमेर भोजन कराया ६० २७ अनाथ और ७ सेवकों को एक समय

मुन्नालालजी तापनीवाल अजमेर ऽ५॥ चनेकी भूसी

पं० विनायक शर्म्मा आर्य्यप्रतिनिधिसभा अजमेर मिठाई ऽ१॥ ॥) की छोटे बच्चों को

ला० घनश्यामलालजी ठाकुरदासजी ढड्ढासिंह मिठाई ऽ२॥। एक रुपये की लड़कियों को

ला० दुर्गाप्रसादजी डिप्टी एगजामिनर केसरगंज अजमेर मिठाई ।ऽ४ पांच रुपयों की बालक बालिकाओं को

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिला हुआ आटा ऽ७ अन्न मिश्रित ऽ६।= चावलऽ– घृत ऽ।। भूसी दलिया ऽ६।

महाशय भोपतरामजी स्वर्णकार अजमेर दूध ।ऽ३ दही ऽ२ जलेबी ऽ१। चीनी के थाल ३ रकाबी चीनी की बड़ी १ छोटी १ केतली चायदान १ दूध पिलाने की शीशी १ तेन्जर्स गुड़ का डिब्बा १ कुरता गोटा पक्का १ टोपी गोटा लगी २ बनियान ४ मोजाजोड़ी १ जांगिया १ कुर्ता वस्त १ कुर्ता सादे ८ टोपा १

नक़्शा आय-व्यय श्रीमद्दयानन्द-अनाथालय मास जनवरी १९११ ई०

आय.

२६१≡)३	दान
२१|||-)	मासिक चन्दा स्थानिक
३३)	,, बाहर का
२०||=)	किराया
९।)	अनाथरक्षक पत्र
२८|=)|||	कारख़ाना
२०)	गोशाला
४६=)	फुटकर
३६)	अमानत
१)	औषधालय
४७७|≡)	योग
२००)	उदरत
२७३|||≡)१०½	पिछला शेष
६५१|=)१०½	योग

व्यय.

१३९||≡)||	भोजन
४६|||)|||	शिक्षा विभाग
९०|||=)|||	वेतन कर्म्मचारी
१८≡)||	अनाथरक्षक
२६=)|	गोशाला
५।)	डाकव्यय
१०|=)	फुटकर
२०)	कारख़ाना
१२||=)	अमानत
१||)	पानी
३५)	उपदेशक
१७≡)|||	छपाई
४≡)|||	रोशनी
१९)||	वस्त्र
६|||)	औषधालय
११=)||	धुलाई
||-)||	वर्त्तन
४६१||)|||	योग
२००)	उदरत
२५६|||=)१½	शेष रहे
६५१|=)१०½	योग

नक्शा आयव्यय बाबत मास फरवरी १९११ ई० द० अना० अजमेर ।

आय.

६८२||)१०	दान
१७≡)	मासिक चंदा स्थानिक
१७)	,, बाहर
२)	अनाथरक्षक
१८||=)	किराया
२४)	अमानत
२||=)	कारख़ाना
४||=)|||	फुटकर
३)	गोशाला
१)	अबलाउद्धारकसभा
१)	प्रियभाषिणी सभा
६५||=)	सूद
८३९|)७	योग
२५९|||=)१½	पिछला शेष
१०९९=)८½	कुल योग

व्यय.

२१७||=)|||	भोजन
२८|||=)	शिक्षा
८३)	वेतन कर्म्मचारी
१०)	अनाथरक्षक
४||= |||	पोस्टेज
७|||-)||	फुटकर
६॥।-)	सफ़ाई
११|-)||	रोशनी
५२|-)|	गोशाला
१|=)|	दवाख़ाना
६-)	धुलाई
११)||	सहोदरा की जायदात पर
४२|-)||	छपाई
३२)	अमानत
१|||≡)|	उपदेशक
८७||)|	वस्त्र
५)	कारख़ाना
६०९|||-)||	योग
९४||≡)५	पीपल्स बेंक चल्लू हिसाब
३९४||-)९½	शेष रहे नकद
१०९९=)८½	कुल योग

आयव्यय श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधिसभाराजस्थान बाबत मास पौष ६७.

७६|||≡)।	पोते बाकी	५५-)	वेतन उपदेशक
४१।)	वेदप्रचार निधि	५०||| ६	मार्ग व्यय उप०
८)	ऋषि स्मारकफण्ड	१६)	लेखक वेतन
१९|||)	निश्चित वेदप्रचार	२|||≡)	डाकव्यय
१२)	प्रतिनिधि फण्ड	|||)	कन्टेन्जैन्ट
५)	विद्यालय को		
५)	मार्ग व्यय में		
५|||=)	अमानत		
		१२१||)९	योग
		५१।)।।	शेष रहे
१७६|||-)।	योग	१७६|||-)।	योग

आयव्यय आर्य्यप्रतिनिधिसभा राजस्थान बाबत मास माघ ६७.

५१।)।।	पोते बाकी	७१|||=)।।	वेतन उपदेशक
१७१|||)	विद्यालयनिधि	१२||≡)	मार्गव्यय
३६||≡)।।	पुस्तकों से	२०)	लेखक
३||)	अमानत	३६||≡)।।	पुस्तक प्रचार
३०||≡)	वेद प्रचार	१|||≡)।	कन्टेञ्जैन्ट
४||)	किराया मकान	५||-)।।।	डाकव्यय
५)	मार्गव्यय	३||≡)।।	मिश्रित
		१५२||-)।।	योग
		१५०|||-)।।	पोते बाकी
३०३|≡)	योग	३०३|≡)	योग

Rogister No. J. 19.

* ओ३म् *

भाग ०　　　　　　　　　　　　अङ्क ६

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर का
मासिकपत्र.

अनाथरक्षक ॥

जिसको--

फाल्गुन १९६७ वि०　　　　　　　　मार्च १९११ ई०

अनाथालय सभा ने प० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय
अजमेर से छपाया.
और
पं० मुन्नीलालमिश्र प्रकाशक द्वारा अजमेर से प्रकाशित किया ।

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा बान्धवाः ।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं वा[illegible]ऽकः ॥
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते त्वन्नाम[illegible]
हा हा नाथ ! अनाथरक्षक ! सदा नः पा[illegible]प्रभो !!!

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा ।

वार्षिक मूल्य १)

आयव्यय आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान बाबत मास फाल्गुन ६७.

आय.

१५०|||-)||	पोते बाकी
१८०|||=)	वेद प्रचार
६१।=)	दशांश
५)	मार्गव्यय
४||)	किराया
१७४)	विरजानन्द विद्यालय
६८)|||	अमानत
१-)||	पुस्तकों से
४०३|||-)|||	इम्प्रेष्ट वसूल
१०२०||≡)||	योग

व्यय.

३२|||)||	मार्गव्यय उ० दे०
४६||'|||	वेतन उपदेशक
१≡)।	मिश्रित
२)	पुस्तकप्रचार
||=)||	कण्टेञ्जेण्ट
५||)	अमानत वापिस
५।)||	डाकव्यय
१००)	सेविङ्ग बैङ्क में जमा कराया
१६३|||=)||	योग

विद्यालय व्यय.

२४५)	भोजन व्यय तीन मास का
५)	इम्प्रेष्ट मंत्रीजी को
६।-)||	स्टेशनरी
५६|||-)||	वस्त्रों में
७||-)|||	वर्तन
१५||≡)।	मार्गव्यय
७||-)|||	मिश्रित
८६।)	वेतन अध्यापक
२३||)	चपरासी वेतन
१६)	रसोइया
५||=)|||	पुस्तकों में
७|||)|||	रोशनी
८१||-)।	मकान
५)	दफ्तरी
।-)||	डाकव्यय
५७६।-)	योग
२५३||)	शेष रहे
१०२०||≡)||	योग

फाल्गुन १९६७ वि० ॥

मार्च १९११ ई० ॥

ईशस्तवपञ्चकम् ॥

सुखयते निरते शुभकर्मणो,
घटयते खलभाव निराकृतिम् ।
विनयनम्रशिराविहिताञ्जलि-
र्नतिततिं कलयामि शिवाय वै ॥ १ ॥
भुवनपालनशिक्षणवीक्षण,
करणशक्तिरये त्वयि विद्यते ।
पतितपावनमस्ति च तावकं,
भवति नामनिरर्थकमेव किम् ॥ २ ॥
व्यसनिनां व्यसनात्यय कारकः,
कुशलिनां कुशलप्रद उच्यसे ।
व्यसन वृन्दमये शिवमामक,
मपनयेः कुशलं कुरुपावक ॥ ३ ॥
विरचयन् भवतो भुविमार्गणं,
कृतपरि श्रमको मनुजोऽगणम् ।
भ्रमति वाष्पबिलुप्तविलोचन,
क्षणिकदर्शनदुःखविमोचन ॥ ४ ॥
त्वदुपकारगणां गणयन् गणो,
गणितशास्त्रविदामपि निर्गुणः ।
भवतु नाम गणाऽधिप मादृशः,
कथमलंस्तवने तव बालिशः ॥ ५ ॥

ह० दि० द० श०

अनाथ पुकार ॥

(श्री० सेठ फूलचन्दजी बैंकर नीमच निवासी लिखित)

पुकारें दीन दुखिया अब,
दशा बिगड़ी हमारी है ।
हरो दुख सब करो करुणा,
नयनों से नीर जारी है ॥
बिछुड़ गए मात पित हमरे,
करम की बात सारी है ।

धनी सो कल भिखारी है।
तरस खाओ दया कर दो,
कि महिमा दान भारी है ॥
यहां दोगे वहां लोगे,
यह सौदा धर्मकारी है।
कमाई शुभ नहीं कीन्हीं,
तो होनी अंत ख्वारी है ॥
ऋषि सन्तान क्यों ऐसी,
हमारी सुध बिसारी है।
दान करना सुपातर को,
सदा यह कैसी प्यारी है ॥
विवाह आदि सु अवसर पर,
हमें देना सुखारी है।
अनाथों को मदद दीजे,
विनय वेंकर पुकारी है ॥

अनाथालय समाचार ॥

वार्षिकोत्सव—श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर का सोलहवां वार्षिकोत्सव २६-३० सज्जन अवश्य पधारकर अपने आश्रित बालकों को अवलोकन कर आनंद उठावेंगे तथा कार्य्य पद्धति में यदि कोई त्रुटि दृष्टि-गोचर हो तो उसके सुधार के लिये उचित सम्मति देकर कार्य्यकर्त्ताओं के कार्य्य में सहायक होंगे।

दिसम्बर १६१० के अन्त में अनाथालय में ७५ बालक और ३० बालिकाएं कुल १०५ बच्चे थे, जनवरी, फरवरी, मार्च इन तीन मासों में निम्न प्रकार न्यूनाधिक हुए:—

	लड़के	लड़कियां
दिसम्बर के अन्त में शेष	७५	३०
तीन महीनों में आए	८	२
योग	८३	३२
भागे	४	
मरे	२	२
विवाहे गए		३
पृथक् हुए	२	
मार्च के अन्त में शेष योग	८	५
योग	७५	२७

अनाथहितैषी सज्जन जहां धन, धान्यादि से अनाथालय की सहायता करते रहते हैं वहां अनाथों के संग्रह करने में भी अवश्य श्रम उठाया करें:—

विवाह संस्कार—गत मासों में अनाथालय की ३ कन्याओं के विवाह निम्नानुसार हुए।

१—लीलावती ला० प्यारेलालजी उ० मन्त्री आ० समाज चंदोसी को.

२—कामदा ला० मंसारामजी डेरा गाज़ीखां पंजाब को.

३—मंगला ला० सरमुखरायजी ए० स्टेशन-मास्टर को

तीनों कन्याओं के पत्रों से ज्ञात होता है कि वह अपने नवीन गृह में आनन्द पूर्वक निवास करती हैं। परमात्मा उन्हें अपने और अपने सम्बन्धियों तथा प्राणीमात्र के लिये उपयोगी सिद्ध करे, वे संसार में आदर्श गृहस्थऽस्थापन कर सुख और शान्ति की मात्रा को बढ़ावें।

आवश्यकता नहीं—कोई महाशय विवाह के लिये अब प्रार्थना न करें क्योंकि दफ्तर में इतने प्रार्थनापत्र उपस्थित हैं जितनों की आवश्यकता नहीं।

आवश्यकता है—एक योग्य स्त्री की जो अनाथ बालिकाओं के अधिष्ठातृ पद का चार्ज लेसकें उन्हें रात्रिन्दिवस अनाथाश्रम में ही रहना होगा, भोजन, छादन इत्यादि का सब प्रबन्ध करना तथा कन्योपयोगी सब प्रकार की शिक्षा देनी होगी, वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थना-पत्र मन्त्री दयानन्द अनाथालय अजमेर के नाम भेजें॥

भ्रमण-वृत्तान्त॥

श्री पं० रामानन्दजी शर्म्मा उ० द० अ० अजमेर।

मैं अनाथालय की भजनमंडली सहित जनवरी के शुरू हफ्ते में भरतपुर मथुरा जटवाड़ा आदि स्थानों में भ्रमण करता हुआ ता० ७।१।११ को जयपुर में आया और यहां करीब १ सप्ताह ठहर कर अनाथालयजी की सहायतार्थ उद्योग किया, यहां के निवासियों में श्रीमान् ठाकुर नन्दकिशोरसिंहजी मेम्बर कौंसिल तथा बाबू यादौनाथजी जैनी मैनेजर काटन-प्रेस के द्वारा अच्छी सहायता प्राप्त हुई, जयपुर से कार्यवशात् ता० १५।१।११ को अजमेर आना पड़ा और १ सप्ताह से अधिक यहां ठहर कर अनाथालय सम्बन्धी हिसाब तै किया और फिर ता० २८।१।११ को जयपुर लौट आया, इस बार श्रीमान् डाक्टर नारायणदास तथा बाबू लक्ष्मणसिंह तहसीलदार ने अनाथालय से विशेष सहानुभूति प्रकट की और सहायता कराई, जयपुर से चलकर ता० १५।२।११ को लाला रामकृष्ण बिरुहनी निवासी की

बरात में माधौगढ़ ज़िला जालौन पहुंचा और कई रोज़तक भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया इस अवसर पर श्रीमान् बाबू दाऊदयालजी तहसीलदार जालोन व बाबू नवलसिंह सबओवरसियर ने भी अनाथों पर विशेष दया दिखाई और इस छोटे से शहर से ६४) की सहायता अनाथालय को प्राप्त होगई. यहां से चलकर कांधला होते हुए लाला मक्खनलालजी कांधका निवासी के पुत्र के विवाह में ता० २३।२।११ को बुढ़ाना आये और अख़ीर फरवरी तक यहीं पर आर्यसमाज बुढ़ाना के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया, इति ॥

नीचे का लेख राधेलालजी विद्यार्थी ने हमे भेजा है जिसको ज्यूं का त्यूं प्रकाशित कर आशा रखते हैं कि आगामी में वे अधिक उत्साह और विचारपूर्वक लेख लिखा करेंगे। सम्पादक

दान ॥

मान्यवरो! संसार में दान भी एक अद्भुत पदार्थ है, वेदादि सत्यशास्त्रों में दान करने के बड़े २ महात्म्य वर्णन किये हैं, देखिये यजुर्वेद अ० २८। मं० २४ में ही लिखा है कि जो मनुष्य सत्य विद्यादि पदार्थों को दान करते हैं वह अतुलकीर्ति को पाकर आप सुखी होते तथा अन्यों को भी सुखी करते हैं, इसके अतिरिक्त बड़े २ शास्त्रकारों और स्मृतिकारों ने और बड़े २ ऋषियों, मुनियों और कवियों ने इसकी बड़ी महिमा गायन की है:—

दानेन भूतानि वशीभवन्ति,
दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् ॥
परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानै-
र्दानं हि सर्वं व्यसनानि हन्ति ॥

अर्थात् दान से ही प्राणी वश में आजाते हैं, दान से ही शत्रु नाशको प्राप्त होते हैं, दान से ही पराये अपने बन जाते हैं, दान ही तो सब कष्टों को दूर करता है ॥

दोहा—तुलसी दिया अनूप,
दिया करो सब कोय।
करका धरा न पाइहो,
जो कर दिया न होय ॥

ज्ञानी, अज्ञानी, उत्तम, नीच, सेठ, साहूकार, स्त्री पुरुष सब ही इस के गुणों को जानते हैं, भारतवर्ष में तो उस का महात्म इतना फैला हुआ है कि प्रति दिवस नाममात्र के साधु भी यह कहकर चिताया करते हैं कि "जो देगा सो पावेगा"।

यथार्थ में दान ही करने से मनुष्य इस संसार में तो यश और कीर्ति का भागी बन आनंद से जीवन व्यतीत करता है

और मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्राप्त कर स्वर्ग में वास करता है। परन्तु परमात्मा ने जितनी वस्तुएं संसार में रची हैं उनके उपयोग करने की एक विद्या भी बनाई है जो मनुष्य उन वस्तुओं को उस विद्या के अनुकूल यथावत् काम में लाते हैं वे अपने कार्य को सिद्ध कर आनन्द को प्राप्त होते हैं अन्यथा कार्य की सिद्धि नहीं होती और बहुधा क्लेश उठाने पड़ते हैं।

प्यारे सज्जनो! अब जो आप नाना प्रकार के वस्त्र, सोना, चांदी इत्यादि इन हट्टे, कट्टे, सण्ड मुसण्डों नाम के ब्राह्मण, बैरागी, साधु और सन्तों को दे रहे हैं और उनसे अक्षयफल की प्राप्ति की आशा कर रहे हैं तो क्या आपने दान करने की रीति को कभी सुना है और उस पर कभी विचार किया है, क्या यही सण्डे जैसे गंगाजी के पण्डे जिनका पेट सोने, चांदी, अन्न, घी, हाथी, घोड़े आदि से न भरा तो स्त्रीदान का आर्डर पास कर दिया) पंडित कहाने योग्य है और क्या यही फरेबी, जालसाज़ और व्यभिचारी ऋषियों और मुनियों के वस्त्रों के पवित्र रंग को लजानेवाले (Wolfs in the skin of sheep) विश्वास के पात्र हैं और दान देने योग्य हैं। यदि नहीं तो क्या आप की दशा उस किसान की भांति नहीं है, जो ऊसर में बीज डालकर फलकी आशा करता है, क्या हमारी दशा उस मूर्ख की भांति नहीं है जो नीम का वृक्ष लगा आम के खाने की आशा करता है।

सज्जन महाशयो! सद्ग्रंथों को श्रवण करो और विचारो आप को ज्ञात हो जायगा कि किस पदार्थ को किस प्रकार देना दान कहाता है और पण्डित महात्मा, साधु, बैरागी, पुरोहित और आचार्य्य किनको कहते हैं और कुपात्रों को दान देने से क्या हानियें होती हैं।

राधेलाल विद्यार्थी—

अनाथहितैषियों के लिये एक विचार—हिन्दुस्तान में जब से क्रिश्चियानेटी का प्रचार आरम्भ हुआ तभी से अनाथाश्रमों की स्थापना का विचार कार्यरूप में परिणित हुआ ईसाई मत के प्रचारकों ने खूब विचार लिया कि हिन्दुस्तानी लोग केवल अपने सामने की चीज़ देख सकते हैं आगे, पीछे, दाएं, बाएं बहुत कम उनकी दृष्टि पड़ती है और अपने से दूरस्थ पदार्थ या परिणाम का तो उन्हें कभी भान भी नहीं होता, इसीलिये दुष्कालपीड़ित असहाय बालकों को भोजन छादन से सहायता देकर उन पर प्रेमदृष्टि का वार अनिवार्य्य होगा और सचमुच ऐसा ही हुआ। जब २ और जहां २ दुर्भिक्ष पिशाच ने आक्रमण किया हाहाकार मचगया, मैं तुझे न तू मुझे, माता पिता ने सन्तान को त्याग दिया, भ्रातृभाव एकदम कूच कर गया,

सन्तान के लिये वृद्ध माता पिता भार होगए, जिसने एक समय भोजन पाया जान बची, ऐसी अवस्था में ईसाई पादरियों ने ऐसे समस्त बालकों तथा युवकों और वृद्धों को भी भोजन और वस्त्र की सहायता देकर न केवल उन्हीं के, प्रत्युत मनुष्यमात्र के दिलों को अपनी ओर आकर्षित करलिया। जो लोग इनसे स्पर्श हो जाने में पातक मानते थे उनको मान्य की दृष्टि से देखने लगे, उन्होंने लोगों के शरीर से बढ़कर दिलों पर काबू पाया और वह उस समय का दिया हुआ भोजन और वस्त्र उन्हें बहुत लाभकारी सौदा सिद्ध हुआ।

इधर आर्य्य सन्तान धड़ाधड़ ईसाई होरही थी, विचारशील महाशय इस गिरावट को आश्चर्य्य, बेबशी और दुःख के साथ आंखें फाड़ २ कर देख रहे थे और उधर उन्नीसवीं शताब्दी के एक मात्र वैदिकधर्म्मप्रचारक श्री १०८ महर्षि स्वामी दयानन्दसरस्वतीजी वैदिक नाद बजाकर सोते हुए भारतवासियों को जगारहे थे, दुखे दिल पर दर्द की कथा असर करजाती हैं इनकी भी आंखें खुलीं और इन्होंने भी अनाथालय स्थापन करने की ठानी।

अपने २ समय पर बरेली, अजमेर, फीरोज़पुर इत्यादि अनेक स्थानों में ऐसे आश्रम स्थापित हुए और यथासाध्य अपने कर्तव्य का पालन किया, यद्यपि इनकी सेवा के लिये अभी बहुत कुछ गुंजायश बाकी है। इनकी कई त्रुटियां दूरदर्शी महानुभावों को खटकती हैं तो भी इन से देश की अच्छी सेवा हुई है और देश को इनकी स्थिति की अत्यन्त आवश्यकता है यह निर्विवाद सिद्ध है।

अनेक बालक और बालिकाओं को इन्होंने पाल पोष कर न केवल धर्म्म से पतित होने से ही बचाया प्रत्युत सत्य सनातनवैदिकधर्म्म का अभिमानी बना दिया, विशेष कर कन्याओं को शिक्षा और दीक्षा देकर (क्योंकि कन्याओं को शिक्षा यहां कूटने, पीसने और कातने, पकाने पर ही समाप्त थी) सचमुच पुरुषों की अर्द्धाङ्गिनी बनादिया।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय की कन्याओं ने जिन गृहस्थों में प्रवेश किया उनमें हरएक वर्ण हरएक जाति और सब स्थिति के घर हैं, वह अपने घरों में बड़ी प्रसन्न और बहुत ही आनन्द में हैं और दिनों दिन सुशिक्षित कन्याओं मांग बढ़ रही है किन्तु इससे एक और उलझन पैदा होगई और वह अनाथ बालकों के विवाह का प्रश्न है।

स्त्रियों की कमी और अनाथाओं के सुशिक्षित होने में लोगों को कन्याओं के ग्रहण करने पर मजबूर किया। यह बात

तय होगई और काम चल निकला लेकिन बालकों को कन्यायें कहां से मिलें ? कोई सोसायटी ऐसी नज़र नहीं आती जो बिना खयाल किसी बात के अनाथ बालकों को अपनी कन्या देने को तय्यार हो और यह सब के सब आजन्म ब्रह्मचारी ही रह सकेंगे यह नियम तथा स्वभाव के विपरीत है, ऐसी दशा में जो ख़राबी उत्पन्न होना सम्भव है और हो रही है वह अवश्य रोकने के योग्य है। स्पष्ट प्रश्न यह है कि अनाथालयों की कन्याओं के विवाह तो अन्य गृहस्थी लोगों के साथ होते जावेंगे, बालकों को अन्य पुरुष कन्यायें देंगे नहीं तो यह बालक किस प्रकार शुद्ध जीवन व्यतीत कर सकेंगे ? अनाथहितैषी सज्जनों का व्यय किया धन तथा परिश्रम न केवल व्यर्थ ही जाएगा वरन् पाल पोषकर देश तथा धर्म के शत्रुवों के हवाले करना इस के अर्थ होंगे।

आप कहेंगे इसका इलाज क्या ? यही बस या तो खुले दिल अपनी कन्याएं गुणकर्म्मानुसार अथवा वर्तमान वर्णव्यवस्था के अनुकूल योग्य अनाथ बालकों को देने का साहस करना चाहिये नहीं किसी भी मनुष्य को अनाथालयों से कन्या लेने का अधिकार नहीं होना चाहिये। एक ही आश्रम के बालक बालिकाओं का पाणिग्रहण यदि अनुचित भी प्रतीत हो तो बहुत आसानी से यह प्रबन्ध होसकता है कि समस्त ऐसे आश्रमों का परस्पर सम्बन्ध जोड़ दिया जावे। एक आश्रम की कन्या का दूसरे आश्रम के बालक के साथ विवाह किया जावे ऐसा करने से सब ख़राबी दूर हो जावेगी।

हम चाहते हैं कि भारतवर्ष के समस्त अनाथ आश्रमों के प्रचालक एक भारतीय अनाथरक्षिणी अथवा किसी अन्य ऐसी ही सभा द्वारा सब आश्रमों को मिला देनेका प्रयत्न करें जिससे इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का निबटेरा स्वयम् ही होजावेगा। नहीं तो कम से कम बालकों को चुपचाप इसाइयों को लेने दें ताकि जहां बालक उनके द्वारा सुशिक्षित, परिश्रमी होकर जीवन व्यतीत करसकें वहां आप के सिर पर व्यर्थ का बोझा न रहे।

स्त्रीशिक्षा ॥

महाशयो! आज मैं इस छोटे से लेख में दरशाऊंगा कि आजकल स्त्रीशिक्षा की कैसी आवश्यकता है, सज्जनो! स्त्रीशिक्षा के वग़ैर हम कुछ उन्नति नहीं कर सकते, स्त्री शिक्षा ही के न होने से हम निरे मूढ़ हैं। मान्यवरो! स्त्रीशिक्षा से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि आप अपनी पुत्रियों व भगिनियों को अ, आ पहिचानना सिखला दें परन्तु कम से कम उन्हें नागरी

भाषा की तो अच्छी शिक्षा देवें जिससे वे अपने कर्तव्यधर्म को जानने लगें और यदि होसके तो संस्कृत उर्दू व अंग्रेज़ी आदि भी पढ़ाइये ।

महशयो ! यदि आप पूर्व के विद्वान् और शूरवीरों की शिक्षा पर विचार करेंगे तो आप को निश्चय हो जायगा कि सन्तानोंकी शारीरिक, आत्मिक और समाजिक उन्नति माता ही पर निर्भर है, प्यारे सज्जनो ! यदि आप भारतवर्ष की वर्तमान दशा को इंगलैंड आदि देशों की वर्तमान दशा से मिलावेंगे तो आपको भलीभांति ज्ञात हो जायगा कि देश और धर्म की उन्नति स्त्रियों पर बहुत कुछ निर्भर है और जिस देश की स्त्रियां विद्या से शून्य हैं वह सुविचार सदाचार और सब प्रकार की उन्नतियों से रहित है ।

देखिये ! जब भारतवर्ष में सुमित्रा और कुन्ती जैसी विदुषी अपने पुत्रों को शूरवीरता का ध्यान दिलानेवाली, मन्दालस जैसी पुत्रोंको ब्रह्मज्ञान देनेवाली, द्रौपदी जैसी पतिव्रत धर्म का उपदेश करनेवाली, सुलभा और गार्गी जैसी शास्त्रार्थ करनेवाली और विद्याधरी जैसी पंडिता अपने पति का मान रखानेवाली वर्तमान थीं उस समय भारतवर्ष उन्नति के कैसे उच्च शिखर पर था। हा ! अब उसी भारत वर्ष में स्त्रीशिक्षा के अभाव के कारण भारतवासियों की ऐसी शोचनीय दशा है ।

प्यारे पाठको ! ज़रा तो विचारो कि जब विद्वानों के संग से विद्या में रुचि, मूर्ख के सङ्ग से विद्या में अरुचि बढ़ती है तथा साधु के सङ्ग से जब हम में साधुपन और व्यभिचारी के सङ्गसे व्यभिचारीपन उत्पन्न होता है तो भला जिस माताके संग हमारा इतना गूढ़ सम्बन्ध है उसका स्वभाव हमारे तराने या डुबानेवाला क्यों न होगा ? अवश्य ही होगा क्योंकि वैशेषिक में भी कहा है कि "कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः" अर्थात् कारण के गुण कार्य में आते हैं । इसकी पुष्टि वैद्यवर धन्वंतरिजी ने भी सुश्रुत में की है यथा—"कारणानुरूपं कार्यमिति" जब माता अनपढ़ी और कुढंगी होती है तो उसकी सन्तान भी मूर्ख और फूहड़ होती है क्योंकि जो रंग ढंग वह अपने माता पिता का देखती व सुनती है वही स्वयं कहने व करने लगती है । इसके अतिरिक्त बालक का हृदय फोटो की प्लेट के समान होता है जो कुछ वह इस अवस्था में सीख लेता है वह जन्म भर नहीं भूलता, चाहे वह भला हो चाहे बुरा । एक महाशय का कथन भी है कि बालकों में इस समय में इतनी शक्ति होती

है कि उन दिवसों में जो कुछ वह एक वर्ष में सीख सकते हैं उतना पीछे ५ वर्ष में भी नहीं सीख सकते, महाशयो ! अब तो यह पूर्णरूप से ज्ञात होगया कि हमारा सारा दारमदार हमारी माताओं के ऊपर ही है इसलिये जबतक स्त्रीशिक्षा न होगी तबतक हमारा सुधार होना महा कठिन है अथवा यों कहिये कि असंभव है।

पाठकगण ! आजकल बहुतसे शहरों और कसबों में पुत्रीपाठशालायें भी खुल गई हैं तो हमारे भ्रातृगण यों कहते हैं कि पढ़ाने से लड़कियां बिगड़ जाती हैं, ईसाइन होजाती हैं, और इधर उधर पत्री लिख हम लोगों को क्लेश पहुंचाती हैं। महाशयो ! यह आप का गलत खयाल है। यह विद्या का दोष नहीं यह विद्यादाताओं का दोष है कि उन्हें सीधा सच्चा मार्ग न बता बहका २ कुमार्ग को लेजाते हैं। क्योंकि विद्या उसी का नाम है जिससे ईश्वर से ले के पृथ्वीपर्य्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उससे यथायोग्य उपकार होता है।

महाशयो ! आप ही विचारिये भला विद्या के ग्रहण करने से माताएं और भगिनियें कैसे बिगड़ सकती हैं ?। स्त्रीशिक्षा ही के न होने के कारण हमारी माताएं व भगिनियें मूढ़ होकर पतिव्रतधर्म और मातृधर्म को भूल जाती हैं और इन धर्मों के ही न पालन करने से भारतवर्ष की यह दशा होगई है।

आप जो पूर्वकाल की स्त्रियों के पातिव्रत, वीरता और धर्मज्ञ होने के वृत्तान्त सुनते हैं वह केवल विद्या ही का प्रताप था। प्रथम भारतपुत्रियां गुरुकुल में भेजी जाती थीं पर शोक है कि आजकल हमारे भाई इतना भी परिश्रम नहीं करते कि अपनी पुत्रियों को नगर के नगर ही में शिक्षा देने के लिये पाठशाला या और कुछ प्रबन्ध करें।

प्यारे भाइयो ! जबतक आप पुत्रियों को न पढ़ायेंगे और स्त्रीशिक्षा का प्रचार न करेंगे आप कदापि उन्नति नहीं कर सकते हैं, देखिये य० अ० ३७ मं० ४ में भी कहा है 'हे मनुष्यो ! जबतक स्त्रियां विदुषी नहीं होती हैं तबतक उत्तम शिक्षा भी नहीं फैलती। इसलिये मेरी आप से यही वारम्वार विनय है कि आप स्त्रीशिक्षा के प्रचार में तन, मन, धन तीनों से उद्योग कीजिये ॥

माधोलाल विद्यार्थी

छावनी नीमच के अग्रवाल भाइयो ! इस वेश्यानृत्य से अबतो नाता तोड़ो ॥

अभी फाल्गुन शुक्ला २ के लग्न पर

नीमच समीपी जरिण ग्राम से मोरवण ग्राम को अग्रवालों की बरात गई थी। उसमें एक यवन-वेश्या भी पधारी थी। कुल भेट नियत होजाने पर भी बड़े नाच के रुपये उस ने पृथक् लिये किन्तु बरातवालों के लाख मना करने पर भी एक-भेड़ कुरबानी के लिये वह मोरवण से ले आई और लाई भी प्रकाशरूप से बरात की गाड़ी के साथ। मुरलीधरजी बज़ाज़ (वर के मामा) को यह बात बहुत बुरी लगी। इसलिये उन्होंने ३ दिवस तक अटूट कोशिश करके वह भेड़ उससे लेकर पीछी मोरवण को भिजवाई। नहीं तो महापाप पल्ले बँध चुका था।

सारांश यह है कि वेश्याओं की पूजा से मद्य मांस का प्रचार, दुराचार की वृद्धि और वैश्य जाति की प्यारी सन्तान दोनों लोक से भ्रष्ट होती है, फिर भी आपकी आंखें न खुलें तो आप भी धन्यवाद के ही योग्य हैं। एक प्रकार से ओसवाल और खंडेलवालों ने इस वेश्यासेवा को रोका, सर्वप्रकार से महेश्वरी भाइयों ने स्वजाति से इसे भ्रता बतलाई, यदि अग्र पुराण में इस का महात्म्य असीम न हो तो अग्रवाल भी पीछलवाल न बनें। साधु महात्माओं ने तो कहा है:—

ब्याह समय सौभाग्य को,
रांड नचावें भूल।
मंगल में असगुन करें,
पड़ी बुद्धि पर धूल॥

अधिक क्या यदि आप के शास्त्रों में अहिंसा प्रधान धर्म्म की मुख्यता, मद्य मांस की निन्दा और दुराचर को बुरा कहा हो तो इन धर्म्मधनविनाशिनी कुलकलङ्किनियों का विवाह जैसे संस्कार में आवाहन करना छोड़िये और इनके विना विवाह होना असंभव ही हो और इनके आड़तिये अथवा यार अधिक जोर दें तो लाचारी है।

निवेदक—

रामनिवास वेदपाठी

महाशयो! रामायण की इस शिक्षा से बोध होता है कि पूर्वकाल में जब सन्तानप्राप्ति की इच्छा होती थी तब महाराज दशरथ की तरह ब्राह्मणों से पुत्रेष्टि नामक यज्ञ कराया जाता और यज्ञ शेष (खीर) ग्रहण करने का नियम था, जिस से जितेन्द्रिय, सुशील, दानी, धर्मज्ञ, सत्यवादी, प्रतिज्ञापालक, महाराज रामचन्द्र जैसे सुपुत्र उत्पन्न होते थे। अन्यत्र लिखा भी है कि जैसा जो खाता है, उस से वैसा ही पैदा होता है, जैसा कि—

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते । यदन्नं भक्षयते नित्यं, जायते तादृशी प्रजा ॥

अर्थात्—दीपक अन्धेरे को खाता है और काजल पैदा करता है, जो जैसा अन्न नित्य खाता है उसके वैसी ही सन्तान पैदा होती है। इसी प्रकार जो मनुष्य गाजीमियां, जाहिरमियां, मदारमियां, और मीरां आदि मरे मुरदों की कब्र पर मिठाई रखते और खाते हैं, गूंगापीर, बहिरे पीर, अन्धपीर और लङ्गड़पीर इत्यादि दूषित स्थानों की मिट्टी चाटते हैं। डाकनी, शाकनी, चुड़ैली, मसानी आदि के मिथ्या कल्पित नाम से चूहड़ों की झाड़ू से झाड़ू झपटा कराते तथा घृणित और त्याज्य मनुष्यों के भ्रष्ट बचने के पानी पीते हैं। यह उन्हीं की सन्तान है जो कर्मधर्म हीन, मिथ्यावादी, अभिमानी, कुटिल, कुवचनी, हठी, मातापिता आदि मान्यों से व्यर्थ विवाद करनेवाली तथा धर्मोपदेष्टा आदि पूज्यों से कुवाच्य कहनेवाली सर्वदा नास्तिक धर्मध्वजी इत्यादि कुलक्षणयुक्त है इसका प्रथम कारण यही है कि उनकी गर्भविधि में पूरा २ अनियम हुआ है, जिसकी परीक्षा उपरोक्त कर्मों से होती है। मनुजी लिखते हैं कि—

वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलुषयोनिजम् । आर्यरूपमिवानार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत् ॥ ५७ ॥

अर्थात् सङ्करोत्पन्न (रंग बदले नहीं पहचाने जाते हुए) वे देखने में आर्य सरीखे परन्तु यथार्थ में अनार्य, अधम पुरुष का निज २ कर्मों से निश्चय करे ॥ ५७ ॥

ऋषिसन्तान ! तू स्वभाव से ही श्रेष्ठ है, इसलिये सर्वदा कुसंग से बच और वेदोक्त गर्भाधानादि क्रिया का शीघ्रता से प्रचार कर जिससे सृष्टि में उत्तम प्रजा का बीजारोपण हो।

तुम सब भाइयों को रामायण से शिक्षा ग्रहण करनी व करानी चाहिये। जिससे कि तुम्हारी सन्तान कल्याणकारक बने और आगे को सुख का मार्ग हो। प्यारे सज्जनो ! शिखाधारियो ! राम लक्ष्मण के भक्तो ! और उनको माननेवालो ! तुम किस गफ़लत की निद्रा में चादर तान कर सोते हो। सज्जन पुरुषो ! अब सोने का वक्त नहीं है किन्तु तरक्की करने का ज़माना है उठो कमर कस कर और गफ़लत की निद्रा को दिल से दूर कर भगाओ और अपनी सन्तान को वेद-मार्ग पर चलाते हुए धर्मात्मा बनाओ बस समाप्त। शान्ति ॥ १ ॥

रूपसिंह,

द० अ० अजमेर.

सम्पादक का वियोग ।

श्रीयुत किशनलालजी बलदवा सम्पादक व मालिक "मारवाड़ी" मासिक पत्र अहमदनगर के स्वर्गवास से मारवाड़ी समाज का एक अनुपम रत्न छिन गया। इस को केवल मारवाड़ी समाज ही नहीं परन्तु हिन्दूहितैषी मात्र ही स्वीकार करेगें।

निर्दयी काल का नियम है कि उठते को गिरावे इसी नियम के आधीन होकर उसने बलदवाजी को हमसे जुदा कर दिया और इस प्रकार से उठने की लालसा रखनेवाली मारवाड़ी जाति का एक सच्चा अगुआ छीन लिया उस परमपिता, परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति तथा उनके कुटम्बियों को धैर्य्यप्रदान करने की प्रार्थना करके समाचारपत्र भी अपना कर्तव्य पूरा कर चुके, अब यहां पर एक प्रश्न उठता है कि क्या मारवाड़ी समाज अपने ऐसे अगुआ के एकमात्र प्राणप्रिय पत्र को पुनरुज्जीवित करने का उद्योग करेगा? मेरा तो विश्वास है कि अवश्य ही ऐसा होगा और संभवतः उनके भाई मामा ही इस काम का भार अपने ऊपर लेंगे यदि कारणवश वे ऐसा न कर सकें या न करें तो साप्ताहिक मारवाड़ी नागपुर या कलकत्ता के अध्यक्षों का यह कर्तव्य होना चाहिये कि अपने प्रेस से मारवाड़ी मासिक को मारवाड़ी भाषा में ही प्रकाशित कर बलदवाजी के स्मारक को चिरायु करें वा कोई और पत्र के मारवाड़ी मालिक यथा श्रीवेङ्कटेश्वर आदि इस काम को अपने हाथ में लेवें यदि इन में से कोई भी तत्पर न हो तो मारवाड़ी जाति में ऐसे कई धनवान् हैं जिन के यहां केवल १ दिन की आतिशबाज़ी के खर्च से मारवाड़ी मासिक का वर्ष भर का खर्च निकलसके उन में से ही कोई कृपा करें साथ ही मारवाड़ी के वर्तमान ग्राहकों व मारवाड़ीमात्र का कर्तव्य होना चाहिये कि मारवाड़ी के ग्राहक बने, व औरों को बनावें, जिससे नवीन प्रकाशक का उत्साह भंग न हो, सारांश मेरे कहने का यह है कि "येनकेन प्रकारेण" मारवाड़ी मासिक मारवाड़ी भाषा में ही अवश्य प्रकाशित हो, बंद नहीं होने पावे, यह सब मैं मारवाड़ीपत्र के प्रेमवश लिखता हूं मैंने इस पत्र की केवल ११ प्रतियां ही देखी हैं ग्राहक बनने का सौभाग्य मुझे नहीं हुआ मेरा विचार ग्राहक होने ही को था कि यह बज्रपात हुआ।

यहांतक केवल मारवाड़ीपत्र के सम्बन्ध की बातें हुई अब इस नोट को लिखते जो २ विचार मेरे मन में और भी उत्पन्न हुए उनको भी टूटे फूटे शब्दों में लिखने का यत्न करता हूं।

मैं अजमेर का निवासी हूं यहां पर और लोगों से मारवाड़ियों की वस्ती विशेष है अन्न, घृत, कपड़ा और अन्य वस्तुओं का व्योपार भी केवल इन्हीं के हाथों में

है हुंडी, व्याज, सट्टा, बट्टा, फाटका भी यहीं कराते हैं, राजपूताने का केन्द्र होने से मारवाड़ियों का भी केन्द्र कहना अत्युक्ति नहीं होगी, इतना कुछ होने पर भी जातिहित, देशहित, व्योपार शिल्प सामाजिक संशोधन आदि विषयों का प्रचार करने को न तो यहां कोई सभा है न कोई समाचारपत्र, कुरीतियों व व्यभिचार का राज्य जिस प्रकार यहां जमा हुआ है उसका वर्णन करना असंभव है इन सब बातों को देखकर मैं बहुधा उदास रहा करता हूं किसी से जाकर परामर्श करने का साहस नहीं होता।

यद्यपि यहां पर ओसवालों की ओर से जैनकान्फ्रेन्स हो चुकी है, अग्रवाल व महेश्वरी वैश्यों की सभाएं है, इनके अग्रवाल व महेश्वरी नाम के मासिकपत्र भी निकले थे, इसी प्रकार ब्राह्मणों में भी गौड़ वा दाधीच ब्राह्मण सभायें हैं परन्तु अनुकरणीय परिणाम किसी का भी नहीं निकाला, मारवाड़ी ब्राह्मण से लेकर भंगी तक के कार्य्यों में सीठने गाये जाते हैं केवल कार्यो में ही क्यों जहां ४ मारवाड़ी स्त्रियां मिली नहीं कि गालियां गाना शुरू किया, न दिन देखा न रात न बाज़ार देखा न घर, बड़ियां दे रही हैं और गालियां गा रही हैं ऐसी ऐसी कई कुरीतियां यथा-वैश्यानृत्य आदि ज्यों की त्यों जारी हैं किसी बात में न्यूनता नहीं है क्या हमारे दूर दूर देशों में रहनेवाले मारवाड़ी लक्ष्मीपुत्र होते हुए भी अपनी जन्मभूमि को अविद्या अन्धकार में यों ही डूबी रहने देवेंगे मेरा तो अनुमान है कि जबतक बाहिर से प्रकाश नहीं आवेगा कभी यह अन्धकार दूर नहीं होसकता इसलिये समर्थों से विनय है कि जन्मभूमि के अज्ञान अन्धकार को हटाकर विद्यारूपी सूर्य्य की ज्योति फैलाने का यत्न निरालस्य होकर करें।

सम्प्रति तो मुझे एक सूचना देनी है वह यह है कि श्री दामोदरदासजी राठी द्वारा हिन्दीसाहित्य सम्मेलन पर दिये धन से जो हिन्दीभाषा के उपदेशक राजपूताने में भ्रमण करेंगे वे यहां कुछ समय तक ठहराये जावें व मारवाड़ी मात्र की एक सभा स्थापित करावें जिसका मुख्य उद्देश यह हो कि ब्राह्मण से लेकर शूद्र जाति तक के प्रतिनिधि लेकर कुरीतियों को दूर करें व अपनी जाति से उन प्रस्तावों का वर्ताव करावें, साथ ही इस बात की विशेष आवश्यकता है कि यहां से एक मासिक व साप्ताहिक पत्र भी मारवाड़ियों की ओर से निकले यदि यहां का कोई भी धनी ऐसा उद्योग करे तो यह सब होसकता है पर उन्हें तो अन्य कामों से अवसर ही नहीं इस उद्योग में यदि कोई महाशय मुझे किसी प्रकार की सेवा करने की

आज्ञा देंगे तो मैं यथाशक्ति परिवारपालन के प्रबंध से जो समय बचेगा देने को तत्पर रहूंगा, क्योंकि मेरी आन्तरिक इच्छा यह है कि यहां एक सभा मारवाड़ीमात्र को lead सुराह में चलाने वाली हो व एक मासिक और साप्ताहिकपत्र भी निकले।

परन्तु प्रतीत ऐसा होता है कि यह आशा मैं अपने साथ ही ले जाऊंगा कारण न तो मेरे पास धन है न इतनी बुद्धि है कि उद्योग कर सकूं, किसी ने ठीक कहा है:—

"नहि विद्या नहि बाहु बल नहि खर्चन को दाम। मोसे पतित पंतग की तू पत राखे राम॥

मारवाड़ियों के अन्न व लवण से पोषित मारवाड़ी जाति का

सेवक—

ब्रह्मदत्त सोढा,

लाखन कोठरी,

अजमेर।

आर्य्यसमाज अजमेर का २८ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २५-२६-२७ मार्च सन् १९११ ई० को समाप्त होगया॥

गणना के ख्याल से यह उत्सव अट्ठाईसवां उत्सव था किन्तु कृतकार्य्यता की दृष्टि से इसका नम्बर सबसे प्रथम उत्सव ही है। उत्सव की कृतकार्यता इन बातों पर निर्भर रहती है, १—उपदेश किस कक्षा के हुए?, २—उपस्थिति कैसी रही?, ३ अपील पर कितना रुपया आया?

१—जहां आर्यसमाज के प्रसिद्ध तार्किक, सिद्धान्ती, वैरागी और अथक परिश्रमी श्री० स्वामी दर्शनानन्दजी सरस्वती उपस्थित हों, सच्चे साधु, सरलवक्ता दृढ़प्रतिज्ञ और वृद्ध श्रीस्वामी सर्वदानन्दजी विराजमान हों, युवकमण्डल के आदर्श, दृढ़ता और परिश्रम के धनी श्री० पं० केशवदेवजी शास्त्री मौजूद हों, मनोहर, ओजस्विनी वक्तृता के स्वामी श्री० ब्रह्मचारी मुनीश्वरानन्दजी व्याख्यानदाता हों और वैदिकधर्म्म की लगन में सब कुछ भूले हुए श्री० पं० मुरारीलालजी शर्म्मा जैसे अनेक व्याख्याता व्याख्यान दें वहां व्याख्यान किस प्रकार के हुए होंगे इसका अनुभव स्वयं ही हो सकता है। पं० वासुदेवजी की उपस्थिति भजनों के लिये पर्याप्त थी।

जिन लोगों ने आर्य्यमन्दिरों में कदम न रखने की ऐसी ही प्रतिज्ञा की हुई है जैसे कभी जैनमन्दिर में न जाने की कीजाती थी, उनके सिवाय जिस के हाथ में विज्ञापन पहुंचा चल खड़ा हुआ और जो आया स्थित होकर समाप्ति तक चुपचाप सुनता रहा, अनेक विषयों पर उपर्युक्त सज्जनों के अति प्रभावशाली और

मनोरञ्जक व्याख्यानों ने नगर निवासियों को मुग्ध बनादिया ।

२—उपस्थिति के विषय में इतना ही पर्याप्त है कि गतवर्षों की अपेक्षा उपस्थिति अच्छी रही और अधिक विशेषता यह रही कि इस वर्ष उत्सव में पधारकर नगर के उन सज्जनों ने लाभ उठाया जो कदाचित् समाज की स्थापनतिथि से आज तक दूरही रहे थे, २६—३—११ रविवार ७ बजे सायङ्काल श्री० ए० जी० जी० साहिब बहादुर के फर्स्ट एसिस्टेण्ट श्री० मि० हालेण्ड साहिब उत्सव में पधारे और कम से कम १॥ घंटा "जबतक श्री० स्वामी दर्शनानन्द सरस्वतीजी का व्याख्यान ईश्वरसिद्धि विषय पर होता रहा" बड़ी सावधानी के साथ सुनते रहे और प्रसन्नता पूर्वक आगे को कभी २ पधार ने को कह गए ।

३—अपील पर इस वर्ष नकद और वादा मिलाकर १०००) रु० आया जो गतवर्षों की अपेक्षा अधिक है ।

उत्सव के साथ ही:—

१—श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान का भी वार्षिक अधिवेशन हुआ जिसका पूरा वृत्तान्त अन्यत्र प्रकाशित होगा आगामी वर्ष के लिये प्रधान बा० महेशस्वरूपजी भरतपुर तथा मन्त्री बा० गौरीशंकरजी बैरिस्टर अजमेर ही पूर्ववत् रहे ।

२—आर्य्यस्त्रीसमाज का उत्सव २४$\frac{3}{11}$ से ही समाजभवन में आरम्भ होगया था श्रीमती गायत्रीदेवीजी कई दिवस पूर्व से ही अजमेर पधारी हुई थीं और उनके व्याख्यानों से स्त्रीसमाज में अत्युत्साह पैदा होरहा था, श्रीमती गुलाब देवीजी प्रधाना स्त्रीसमाज अजमेर के सुप्रबन्ध में यह उत्सव भी भली प्रकार कृतकार्य्य हुआ, बड़े छोटे सब ही घरों की स्त्रियों ने सम्मिलित होकर लाभ उठाया, समाजभवन के लिये कुछ चन्दा भी एकत्रित हुआ । जगत्पिता ! हमारी बहिनों को अपने कर्तव्याकर्तव्य का बोध करावें जिससे संसार का उद्धार हो क्योंकि स्त्रियां ही धर्मज्ञ, सदाचारी सन्तान उत्पन्न कर देश को उठा सकती हैं और इसके विपरीत येही गिराने का भी हेतु होती हैं ।

३—आर्य्यकुमारसभा । अजमेर में आजकल ३—४ कुमारसभाएं आर्य्यकुमारों में सुधार का कार्य कररही हैं । यह उत्सव उन सबका साझेका था । उत्सव २६—३—११ को २ बजे से ५ बजे तक तथा २८ $\frac{3}{11}$ के मंगल के दिन प्रातः सायं दोनों समय हुआ, इनमें ब्रह्मचारी मुनीश्वरानन्दजी, पं० केशवदेवजी शास्त्री तथा पं० मुरारीलालजी शर्मा इत्यादि ने कुमा-

रोपयोगी शिक्षाएं दीं, हम बा० गवाचरण-सिंहजी बी. ए. हेडमास्टर डी. ए. वी. हाई-स्कूल अजमेर से आगामी में अधिक ध्यान देने की आशा रखते हैं।

इसके साथ ही रविवार को ५ बजे के पश्चात् आर्य्यकुमारों तथा एंट्रेंस की परीक्षार्थ बाहर से आएहुए विद्यार्थियों को फलाहार कराया गया जिसमें लगभग १५० विद्यार्थी तथा अन्य महाशय भी सम्मिलित थे यह फलाहार (फूटपार्टी) पं० रामचन्द्रजी सब डि० आ० तथा मास्टर गौरीसहायजी के परिश्रम का फल था।

४—आर्य्यन्कान्फ्रेंस—२७ ३/११ को १ बजे से आर्यन्कान्फ्रेंस का कार्य आरम्भ हुआ, उपस्थित जनों में से प्रत्येक की आकृति और भाषण यह बता रहा था कि आर्यसमाज की वर्तमान दशा निःसन्देह शोचनीय है, आवश्यकता है कि इस समय आर्यधर्म के नेता और विद्वान् महाशय घोर आंदोलन करके इस बढ़ते हुए प्राणनाशक रोग का निदान खोजें और उसका उचित प्रतिकार करें।

लंडन के पैनी बाज़ार।

पैनी बाज़ार उसे कहते हैं जहां पर एक वस्तु पेनी अर्थात् एक आने को मिलती है। बाज़ार उर्दू शब्द है पर विलायत में सब गोल उसका मतलब समझते हैं। इस शब्द का इतना प्रचार कैसे हुआ सो कुछ पता नहीं। हमने बहुत कुछ पूँछ-पाछ की पर किसी ने सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया, पैनीबाज़ार एक परमोपयोगी वस्तु है। बहुतसी काम की वस्तुएं यहां एक आने को मिलसकती हैं जो दूसरी जगह दूनी क़ीमत देने पर भी नहीं मिलतीं। इसका कारण यह है कि पैनीबाज़ार की कुछ वस्तुएं जर्मनी फ्रांस इत्यादि बाहरी देशों से आती हैं। परीक्षार्थ हमने एक दिन एक नीली लाल पैंसिल एक दुकान से ख़रीदी। यह पैंसिल विलायत की बनी थी दाम इसके देने पड़े तीन आने, थोड़ी देर बाद पैनीबाज़ार जाकर प्रायः उसी प्रकार की दो पैंसिलें एक पैनी में ख़रीदीं बस भेद तुरन्त मालूम होगया।

विलायती स्वदेशी लोग (Tariff reformers) टैरिफ रिफारमर्स चिल्लाते हैं कि विदेशी वस्तुओं पर कड़े टेक्स लगाओ ताकि हमारे देश की वस्तुओं की बिक्री हो उनकी यह चिल्लाहट व्यर्थ है, जब तक वे अपनी बनाई चीज़ों को विदेशी चीज़ों के मुक़ाबले बराबर कम दाम में न बेचेंगे तबतक उनका बिकना जारी रहेगा यही दशा दूसरे देशों की होगी। पैनी बज़ार में तो सोलह आने सब चीज़ें विदेशी

रहती हैं पर दूसरी दुकानों में भी उनकी भरमार कम नहीं है। तात्पर्य यह है कि बिलायती दूकानों में विदेशी माल आधे से अधिक पाया जाता है। इसमें विदेशियों का दोष नहीं है। जो वस्तु सस्ती और टिकाऊ होगी वही अधिक बिकेगी। एक दुकान से हमने तसवीर का चोखटा मयकांच के पौने दो शिलिंग अर्थात् एक रुपये पांचआने को खरीदा। इसमें कैबीनट आकार की तीन तसवीरों की जगह थी। लकड़ी पर बहुत सुन्दर नक्श था। वज़न में बहुत हल्का और खूब मज़बूत था, लेकर घर आये। मालिक मकान और लड़के लड़कियों को दिखलाया। सबों ने उसकी कीमत पांच और सात शिलिंग जांची। जब हम ने बिल आगे फेंका तो कीमत पढ़ कर चकित हो गये। यों बहुतसी विदेशी चीज़ें अंगरेज़ी चीज़ों की अपेक्षा बहुत सस्ती सुन्दर और मज़बूत मिलती हैं। विलायत एक छोटासा द्वीप है। अतएव वहां हरप्रकार की सामग्री मिलनी कठिन है। उसे अपनी अवश्यकताओं के लिये अन्य देशों पर अवश्यमेव निर्भर होना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त वहां के लोग दूसरे देशों के कारीगरों की अपेक्षा बहुत कम प्रवीण हैं। बस इन्हीं कारणों से विलायती वस्तुएं विदेशी वस्तुओं से बहुत मँहगी मिलती हैं। विलायती कारीगरों की अयोग्यता का दूसरा उदाहरण आज कल के हवा में उड़नेवाले व्योमयानादि यन्त्र हैं। आज जितने लोग हवा में उड़ते हैं सभी के पास फ़्रांस के बने हुए यन्त्र Aero Planes हैं। यहांतक कि उनके सिखाने, चलानेवाले भी फ़रासीसी हैं। अंगरेज़ों ने अपने दिमाग़ से अभीतक एक भी ऐसी कल नहीं निकाली है। बहुत बातों में दूसरों की नक़्ल करने में अंगरेज़ बड़े कुशल हैं। कुछ काल पश्चात् इन्हीं कलों में थोड़ी बहुत रद्दो बदल कर चिल्लाने लगेंगे कि इस कल के निकालने वाले हम हैं।

अस्तु पैनीबाज़ार लंदन के प्रायः हरएक महल्ले में पाये जाते हैं। कई लोग इकट्ठे होकर एक कम्पनी बनाते हैं। पैनीबाज़ार खुली जगह में नहीं लगता, न वहां हमारे बाज़ारों की भांति कुंजड़पन होता है। सड़क पर किसी मौक़े पर एक मकान में बाज़ार लगता है। बाज़ार की लम्बाई अनुमान ३० से पचास फुट और चौड़ाई २० से ३० फुट होती है। कहीं इससे कम ज्यादा कहीं। बाज़ार प्रतिदिन आठ नौ बजे सवेरे से सन्ध्या के आठ बजे तक लगता है। दोनों ओर दीवारों के निकट टेबलों पर सब चीज़ें खूबसूरती से सजी हुई रक्खी रहती हैं।

बीच में खरीदारों के आने जाने और खड़े रहने को चौड़ा रास्ता होता है।

प्रत्येक बाज़ार में आठ दस सुन्दर तरुण लड़कियां सामान बेचने को खड़ी रहती हैं। बच्चों के हरतरह के खिलौने, चाय पीने के कटोरे, कंघी, पेंसिल, कागज़, कलम, दवात, नोटबुक, हथोड़ा, सुई, धागा, आलपीन, साबुन, चाकोलेट, के छोटे छोटे पाकट, जूतों के फीते, चाकू कैंची, कागज़ के फूल इत्यादि बहुतसी काम की वस्तुएं एक पैनी को मिलती हैं। रोज़ २ नई चीज़ें दिखाई देती हैं। हमारे देश में ऐसे बाज़ारों की बड़ी आवश्यकता है। ऐसे बाज़ारों से गरीबों का बड़ा निर्वाह होता है। न जाने यह बातें हमारे देश में कब होंगी। इस स्थिति को देख हमें अत्यन्त खेद होता है। अंगरेज़ों के बड़े त्योहार क्रिसमस पर पैनी बाज़ारों की खूब सजावट होती है माल बिकने की धूम होती है और कम्पनियां अच्छा लाभ उठाती हैं॥

उपरोक्त लेख प्यारेलालजी मिश्र ने सरस्वती में प्रकाशित कराया है इससे स्पष्ट है कि १—जो स्वदेशी लोग हाथ पांव विना हिलाए अन्य देशी व्यौपार को बिसर्जन (वायकॉट) करने के पक्षपाती हैं वे देश को लाभ के बदले हानि कारक सिद्ध होंगे।

२—सच्चाई ही व्यवसाय की जान हैं सत्य व्यवहार से खरीदने और बेचने वाले दोनों का समय बचकर अन्तःकरण अनृत के कुत्सित संस्कारों से बचा रहता है जो हमारे देश के व्यौपार का अंगमन गया है।

परमात्मा करें कि हमारे देश में सच्चे वैश्य उत्पन्न होकर इस अधःपतन से देश को फिर उठावें। (सम्पादक)

पंजाब की शिक्षा—पंजाब प्रान्त के शिल्पशिक्षा विभाग की रिपोर्ट गतवर्ष की निम्नलिखित है:—

शिल्प विद्यालयों की संख्या १० ही रही हाईस्कूल ६४ से ९८ होगए।

आरम्भिक शिक्षणालय ३१५१ से ३२४५ होगए, शिल्पमहाविद्यालयों में कन्याओं की संख्या १६०६, १९०७ में १५९८ थी, १६०९ तथा १९१० ई० में २०२२ होगई, हाईस्कूलों में ३०७८१ से ४०८६५ होगई, प्राइमरी स्कूलों में १४१२४५ से बढ़कर १५७९४६ होगई।

कन्याओं की औसतसंख्या पबलिक स्कूलों में १६०६—०७ में १२.८ थी जो १९०९—१० में १४.६ होगई।

कन्याओं के लिये कोई शिल्पविद्यालय नहीं है, हाईस्कूलों की संख्या १९०६—१० में भी १२ ही रही जो १९०७ में थी,

ह कन्याओं, की संख्या ६५७ से बढ़कर १७०० होगई।

१९०७ में ५४२ प्राइमरीस्कूल थे जो १९०९–१० में ६०२ होगये, पहिले इनमें कन्याओं की संख्या २०२०१ थी और १९०९–१० में २६३०० होगई।

साधारण शालाओं में छात्राओं की औसतसंख्या १९०६–०७ में १०७ १९०९–१० में २०२ होगई।

पंजाब के समस्त छात्र, छात्राओं की संख्या पहिले ३००२३७ थी और १९०९ १० में ३२९४६६ होगई। कुल व्यय शिक्षा पर १९०६–०७ में ५११७००० था और १९०९–१० में ५८४३००० हुआ।

शिक्षा विभाग की रिपोर्ट से १९०६–०७ में शिल्पविद्यालय १२८ थे जो १९०९–१० में भी इतने ही रहे।

हाईस्कूल १९०६–०७ में ११६५ थे, १९०९–१० में ११९० होगये। शिल्पविद्यालयों में पहिले १८७५८ प्राइमरीस्कूलों की संख्या पहिले १०२९४७ थीं जो अब १०७४१३ होगई। विद्यार्थी शिक्षा पाते थे अब उनकी संख्या २२९१२ होगई।

हाईस्कूलों के विद्यार्थियों की संख्या २८६३११ से बढ़कर ३४४६४७ होगई। प्राइमरीस्कूलों में १९०६–७ में ३४२-४६१८ बालक पढ़ते थे, १९०९–१० में ३८८८६७१ पढ़ते हैं।

पबलिकस्कूलों में जानेवाले विद्यार्थियों की औसतसंख्या १९०६–०७ में २२०७ थी और १९०९–१० में २६०२।

उपरोक्त संख्या केवल बालकों के लिये है, कन्याओं की निम्नानुसार समझें:—

कन्याओं के लिये १९०६–०७ में शिल्पविद्यालय ८ थे जो १९०९–१० में भी ८ ही रहे।

हाईस्कूल ११२ से १२५ और प्राइमरीस्कूल ९९८३ से ११७५३ होगए।

शिल्पविद्यालयों में छात्राओं की संख्या १९०६–०७ में १६० थी जो १९०९–१० में २१७ होगई हाइस्कूलों में कन्याओं की संख्या ११८८५ से १४२५७ और प्राइमरीस्कूलों में ५१३-२४८ से ६६८८६३६ होगई।

पबलिक पाठशालाओं में छात्राओं की संख्या ३०२ से ४०२ होगई। पबलिक संस्थाओं में बालक बालिकाओं की कुल संख्या १९०६–७ में ४७४४४०८ थी जो १९०९–१० में बढ़कर ५५९० १३४ होगई।

१९०६–०७ में कुल व्यय शिक्षा पर ५५९०४००० रुपये हुआ और १९०९–१० में ४८६७६००० रुपये।

मनुष्य गणना में स्त्रियों की कमी—इस वार की मनुष्यगणना से

ज्ञात होता है कि हिन्दुस्तान में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा बहुत ही न्यून है और यह न्यूनता किसी एक या दो प्रान्त में ही नहीं प्रत्युत हिन्दुस्तान भर में है।

लाहोर प्रान्त में लगभग ६ लाख पुरुष हैं और ४½ स्त्रियां, मुम्बई प्रान्त में पुरुषों की संख्या ६३३८५६ है और स्त्रियां केवल ३३६०३६ है अर्थात् पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां आधी है। गुजरात में पुरुषों से स्त्रियां १००००० कम है।

अम्बाला, जालंधर में १—१ लाख कम हैं, अमृतसर, स्यालकोट गुजरांवाला प्रत्येक में १½ लाख, देहली, हिसार में लगभग १—१ लाख की कमी स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा है। यही हाल अन्य प्रान्तों का भी है।

स्त्रियों की कमी देश के ह्रास का कारण है और इनकी कमी का कारण कन्याओं के प्रति माता पिता आदि का अश्रेष्ट व्यवहार है।

स्त्रियों की कमी न केवल हिन्दुस्तान ही में है प्रत्युत अन्य देशों में भी स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा कम हैं, अभी हाल में एक जहाज़ सुंदर युवतियों का इगलेंड से कनेडा को भेजा जायगा जिनके लिये वहां के कृषकों की मांग है।

हिन्दुस्तान की कुल जन संख्या—इस मनुष्यगणना के आधार पर समस्त हिन्दुस्थान की मनुष्यसंख्या ३१५००१०६६ है सन् १९०१ ई० की मनुयष्गणना से ७ प्रति सैकड़ा की अधिकता है। लाहोर, बनारस, फैज़ाबाद, बड़ोदा आदि कुछस्थानों के सिवाय सब जगह की संख्या में वृद्धि हुई है।

भयानक अग्नी—न्यूयार्क में एक दश खण्ड के मकान को आग लग गई इस मकान में अनेक कारख़ाने थे और उनमें विशेषतः कन्याएं ही काम करती थीं लिखा है कि १५० कन्याएं इस अग्नि प्रकोप की भेंट हुईं।

अग्नि सब से ऊपर के खण्ड में लगी, पुलिस ने आकर जाल बिछा दिया ताकि कन्याएं कूद सकें, वह कूदतीं थीं कि जाल टूट गया और ५३ कन्याएं गिर कर मृत्यु की ग्रास बनीं, २० कन्याएं एक छज्जे पर मृतक पाई गईं कुछ ने बिजली के तार को पकड़ कर बचने का प्रयत्न किया, दूसरी छतों पर कूदीं, किन्तु यह समस्त साधन उनकी जान न बचासके और कुल १५४ जाने इस प्रकार जाती रहीं जिनमें से १५० कन्याएं थीं। २०८ लड़कियां घायल हुईं और ३०० बचगईं।

आह! कैसा भयानक वह दृश्य होगा जब कि अग्नि की भभकती हुई लपटें चा-

चारों ओर फैल रही होगी और उमंग भरे दिलों से अनेक युवतियां जान की रक्षा के लिये इतस्ततः भाग, दौड़ करती और धड़ाम २ कूद रही होंगी।

संक्षिप्त वृत्तान्त ॥

श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान अजमेर ॥

श्रीमती सभा का २२ वां वार्षिकाधिवेशन ता० २५ । २६ मार्च ११ को आ० स० अजमेर के उत्सव के साथ सानन्द समाप्त होगया, इस वर्ष २२ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे जो गत वर्षों की अपेक्षा अधिक उत्साह के साथ आये थे और हर्ष है कि सेखावाटी प्रान्त की कई समाजें जो बहुत वर्षों से कायम हैं इसी वर्ष अपने २ प्रतिनिधियों को भेजकर सम्मिलित होगईं रामगढ़ समाज के सञ्चालक स्वामी नृसिंहानन्दजी सरस्वती पधारे थे आपकी सहायता से सभा का गौरव बहुत बढ़ने की आशा है।

आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए:—

प्रधान—बा० महेशस्वरूप वर्म्माजी भरतपुर
उपप्रधान—डा० सुखदेववर्म्माजी ,,
,, से० फूलचन्दजी बेङ्कर नीमच
मन्त्री—बा० गौरीशंकरजी बी. ए. बैरिस्ट एटला अजमेर
उपमंत्री—बा० नारायणदासजी अजमेर
कोषाध्यक्ष—बा० चोखामलजी ,,
पुस्तकाध्यक्ष तथा आडीटर—मुं० हीरालालजी भरतपुर
प्रबन्धकर्ता सभासद्—पं० वंशीधर शर्म्मा एम. ए. एल. २ बी वकील अजमेर
प्रबन्धकर्त्ता सभासद् बा० गिट्टनलालजी बी. ए. एल एल. बी वकील अजमेर
,, स्वा० नृसिंहानन्द सरस्वती रामगढ़
,, डा० शंकरदत्तजी बडवानी
,, डा० गुप्तदत्तजी कोटा
,, बा० दयाशंकरजी फलेरा
,, बा० गोरधनजी देवास
,, बा० शम्भुदयालजी इन्दौर
,, ला० बीजेराजजी सुजानगढ़
,, ला० नन्दलालजी ब्यावर
,, ला० रामलालजी जयपुर

विरजानन्द साधु आश्रम—मथुरा के प्रबन्धार्थ एक उपसभा १२ सज्जनों की निर्वाचित हुई जिसमें सात सज्जन प्रतिनिधि सभा की ओर से निर्वाचित किये गये शेष पांच सभासद् चुनने का अधिकार उससभा को दिया गया विद्यालय सम्बन्धी प्रबन्ध के लिये डा० सुखदेव वर्म्माजी भरतपुर उपसभा के मंत्री निर्वाचित किये गये, आनुमानिक आयव्यय का बजट बनते समय निम्नलिखित सज्जन पुरुषों ने सभा की सहायतार्थ जो २ प्रतिज्ञायें की हैं उनको नामावली के साथ २ लिखाजाता है आशा है सर्व सज्जन अपनी २ प्रतिज्ञानुसार शीघ्र ही धन भेजदेवेंगे और शेष सभासद् गण तथा राजस्थान प्रान्तीय आर्य्यसज्जन जो उस समय उपस्थित नहीं थे अपनी २ शक्ति अनुसार शीघ्र ही निश्चित धन मुकर्रिर करके सूचना प्रदान करेंगे।

५०) बा० महेशस्वरूपजीवर्म्मा

६०) सेठ मांगीलालजी
५०) मुं० हीरालालजी
२१) पं० नृसिंहनरायणजी
१५) बा० तुलसीप्रसादजी
१२) पं० विनायकरावजी
१२) बा० चोखामलजी
११) स्वा० नृसिंहानन्दजी
११) म० मोतीलालजी
१०) बा० रामप्रसादजी
५०) बा० गौरीशंकरजी
५०) से० फूलचन्दजी बेङ्कर
५७) म० हरीकृष्णजी
१५) बा० दयाशंकरजी
१५) पं० गणेशीलालजी
१२) बा० नारायणदासजी
१५) म० छोटेलालजी
११) म० गणेशरावजी
१०) ला० बीजेराजजी
५) म० डूंगजी

उपरोक्त कार्य्यवाही के अतिरिक्त और जो २ कार्य्यवाही हुई है शीघ्र ही सभा की वार्षिक रिपोर्ट में मुद्रित होने वाली है।

आनुमानिक आयव्यय का बजट निम्नानुसार स्वीकार हुआ है:—

३०००) वेदप्रचारादिनिधियों को
२०००) विद्यालय के लिये
५०००) योग
३०००) सभा सम्बन्धी खर्च
२०००) विद्यालय
५०००) योग

इस बजट को पूर्ण करने के लिये सब प्रतिनिधि सभासदों को ध्यान देना चाहिये और राजस्थान प्रान्तीय आर्य्यपुरुषों के लिये यदि वेएक २ रुपया भी भेज देवें तो इसको पूरा करना कौन बड़ी बात है, आशा है कि सर्व सज्जन इस ओर ध्यान देवेंगे।

(१) आर्य्यसमाज अजमेर का २८ वां उत्सव सानन्द समाप्त होगया जिसका वृत्तान्त आप अन्यत्र पढ़ेंगे यहां यह बतलाना आवश्यक प्रतीत होता है कि इस वर्ष श्रीमती सभा की सहायतार्थ नक़द और वायदा सब मिलाकर १०००) एक हज़ार रुपये का हुआ है और पूरी आशा है कि शेषधन शीघ्र ही प्राप्त हो जावेगा, श्रीयुक्त मिस्त्री घीसूलालजी तथा महाशय बलदेवजी ठेकेदार ने एक बैलगाड़ी सभा को देने की प्रतिज्ञा की है यदि कोई सज्जन महाशय बैल और देदेवें तो अजमेर मेरवाड़ा में प्रचार कराने का बड़ा सुविधा होजावे आशा है कि कोई न कोई सज्जन हमारी प्रार्थना पर ध्यान देवेंगे हम सभा की ओर से अजमेर समाज को इस सफलता के लिये धन्यवाद देते हैं राजस्थान प्रांतीय आर्य्यसमाजों को अजमेर समाज के उत्सव का अनुकरण करना चाहिये।

(२) सर्वहितकारिणीसभा, चूरू का प्रथम वार्षिकोत्सव ७–८ अप्रैल ११ को सानन्द समाप्त होगया सभा की ओर से ला० मुरलीधरजी तथा ब्यावर की भजनमंडली भेजी गई थी—नगर निवासियों पर प्रभाव उत्तम रहा हम इस सभा के अधिकारियों को इस सफलता के लिये धन्यवाद देते हैं।

Register No. J. 19.

* ओ३म् *

भाग ९ — अङ्क ६, ७

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर का
मासिकपत्र.

अनाथरक्षक ॥

चैत्र, वैशाख १९६८ वि० — अप्रेल, मई १९११ ई०

जिसको--
अनाथालय सभा ने पं० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय,
अजमेर से छपाया.
और
पं० मुन्नीलालमिश्र प्रकाशक द्वारा अजमेर से प्रकाशित किया ।

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा बान्धवाः ।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं वारि, वातश्च कः ॥
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते त्वन्नाम जानीमहे ।
हा हा नाथ ! अनाथरक्षक ! सदा नः पाहि पाहि प्रभो ॥

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा ।

वार्षिक मूल्य [illegible]

आवश्यक निवेदन।

जीना मरना किसी के हाथ की बात नहीं, इसलिये कोई निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि वह कबतक सनाथ रहेगा। जब यह बात है तो फिर कौन ऐसा अदूरदर्शी और कठोरहृदय मनुष्य होगा जो उनकी सहायता के लिये आतुर न हो। श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर ऐसे समस्त बच्चों का आश्रयस्थान है। आप भी उसकी सहायता करें, धन भिजवावें, बच्चे भिजवावें और शुभसम्मति प्रदान करते रहें।

प्रभुदयाल एम.ए. मन्त्री द० अ० अजमेर.

॥ ओ३म ॥

अनाथरक्षक ॥

चैत्र वैशाख संवत् १९६८ वि० ॥

अप्रेल, मई १९११ ई० ॥

दीनों की प्रार्थना ।

(लेखक नी० नि० सेठ फूलचन्दजी बैंकर)

लगी आग तन में बुझै हो कि नाहीं ? ।
ये बिगड़ी दशा है बनै हो कि नाहीं ? ॥
मुहब्बत से पितु मात रातों जगे थे ।
हमें गोद में ले खिलै हो कि नाहीं ? ॥
दुखित हैं, सिसकते हैं, रोते पड़े हैं ।
उठाकर गले से लगै हो कि नाहीं ? ॥
बनाओ अवश आप पशुओं की शाला ।
हमारे लिये घर बनै हो कि नाहीं ? ॥
दिये हैं तुम्हें हाथ दो दान प्यारो ।
धरम के लिये अब उठै हो कि नाहीं ? ॥
सनातन ये रीती ये शास्त्रों की आज्ञा ।
अनाथों का पालन करै हो कि नाहीं ? ॥
सताती है सरदी तपाती है गरमी ।
यथासाध्य इनसे बचै हो कि नाहीं ? ॥
दया भाव रखना है कर्तव्य मनुष का ।
वही भाव हम पर दिखै हो कि नाहीं ? ॥
सम्भव है कंकर में मिलजाए हीरा ।
शंकर सा हमको बनै हो कि नाहीं ? ॥
अनाथों को दोगे तो शतगुण लहोगे ।
ये सौदा नफ़ का उठै हो कि नाहीं ? ॥
विनय बस बहुत होचुकी है बयंकर ।
परिचय धरम का बतै हो कि नाहीं ? ॥

(श्री० पं० रामानन्दजी उ० द० अनाथालय लिखित)

—पद्य—

भाइयो दुनिया में फिर यह,
देह नर दुशवार है ।
उस की आज्ञा को न पाला,
जो जगत करतार है ॥
हैं जो दुनियां के पदारथ,
शान्ति वह देते नहीं ।
लूट जावेंगे सब इनका,
मोह बस बेकार है ॥

होगये लाखों शहंशाह,
राजो धन भरपूर था।
चल बसे तजि जब किया था,
मौत ने लाचार है ॥
शाह सिकन्दर से व रुस्तम,
से पहलवां होगये।
उनकी सारी ताकतों को,
मौत ने दी हार है ॥
जक्त की सेवा जिन्होंने,
की वही ज़िन्दा हुए।
धर्मसञ्चय के विना यह,
तन जमीं का भार है ॥
इन यतीमों को बचालो,
जोकि दुख पाये हुए।
ईश्वरी आज्ञा रामानन्द,
की ये मित्र पुकार है ॥

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर का १६ वां वार्षिकोत्सव ता० २९—३० अप्रेल तथा १ मई १९११ ई० को होगया।

परमात्मा का अनेकानेक धन्यवाद है कि श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अपनी अवस्था के १६ वें वर्ष को सानंद समाप्त कर १७ वे में प्रविष्ट हुआ, यह वर्ष अनाथालय के लिये साधारणतया ठीक ही रहा। इसकी वार्षिक रिपोर्ट पृथक् आप की सेवामें पहुंचेगी यहां केवल उत्सव के संक्षिप्त समाचार आपकी भेट करते हैं।

२८-४-११ को प्रोग्राम में उत्सव का समय १ बजे से था लेकिन (कोर्म) पर्याप्त उपस्थिति ४ बजे से पूर्व न होसकी (क्या अच्छा हो यदि पठित समुदाय ही समय पर काम करने में भारतवासियों के मुखपर से हिन्दुस्तानीपन का धब्बा दूर करसके) कोर्म होने पर गत वर्षों का हिसाब स्वीकृति के लिये पेश हुआ। हिसाब में १०५०) रु० गवर्नर सन् १९०५ के नाम तथा ६००) बा० रामानंदजी के नाम (जो कई वर्षों से रिपोर्ट में दिखलाये जाते रहे हैं और जिनके लिये अनेक भ्रमभूलक बातें फैलाई जारही थीं) विवादास्पद रकमें थीं। बा० चोखामल जी जाचक ने इनका खुलासा पेश किया और ३०-४-११ को ४ बजे तक के वादानुवाद और प्रश्नोत्तर का परिणाम यह हुआ कि ६००) रु० की रकम स्वीकार हुई और १०५०) रु के० लिये ४ महाशयों की एक कमेटी नियत कीगई जो २ मास के अंदर कुल हिसाब को जांचकर खुलासा पेश करें और यदि २ मास के अंदर २ नियत कमेटी परिणाम न भेजे तो वर्तमान जाचक का खुलासा स्वीकार समझा जावे। तत्पश्चात् आगामी वर्ष के लिये निम्नानुसार अधिकारी चुने गए:—

श्री० बा० मिट्ठनलालजी भार्गव बी० ए० वकील प्रधान
,, सेठ लादूरामजी ठेकेदार उ० प्रधान
,, बा० प्रभुदयालजी एम० ए० वकील मन्त्री
,, बा० ग्यासीलालजी गुप्त उ० मन्त्री
,, बा० हीरालालजी गवर्नर
,, बा० केशवदेवजी गुप्त उ० गवर्नर

इनके अतिरिक्त ११ सभासद् और चुने गये और पूर्ववत् ही १८ सभासदों की कमेटी नियत हुई।

१—५—११ ई० को ठीक ६ बजे श्रीकमिश्नर साहिब बहादुर अजमेर मेरवाड़ा ने पधारकर सभापति के आसन को ग्रहण किया। प्रथम सम्पादक अनाथरक्षक ने ईश्वरोपासना की तदनन्तर मन्त्री सभा ने अंग्रेज़ी रिपोर्ट सुनाई जिसका भाव बा० मिट्ठनलालजी प्रधान ने हिन्दी भाषा में बताया और पूर्व २ दिवस की समस्त स्वीकृत कार्य्यवाही सर्वसाधारण के कर्णगोचर कराई गई।

बजट पेश करते हुए उक्त महोदय ने उपस्थित महाशयों का ध्यान अनाथालय की आर्थिक दशा की ओर भी आकर्षित किया और आप प्रसन्न होंगे यह जानकर कि लगभग १५००) रु० नक़द तथा वादा उसी समय अनाथालय की सहायतार्थ लिखा गया।

पाठक जानते हैं कि अनाथालय की स्थिति दृढ़ करने के लिये उसके हितैषियों ने यह उपाय निश्चय किया हुआ है कि जो महाशय कम से कम २००) रु० एक बार अनाथालय को दान दें वह रुपया स्थिरनिधि में सम्मिलित कर उसके सूदमात्र से वर्ष में १ बार दानी महाशय की रुच्यनुसार किसी एक तिथि पर अनाथालयस्थ समस्त बालक बालिकाओं को सदैव भोजन दिया जाता रहे और दानी महाशयों के नाम पत्थर पर खुदवा कर किसी विशेष स्थान-पर लगवा दिये जावें, उत्सव पर ४ महाशयों ने निम्नानुसार एक २ दिन के लिये द्रव्य दान दिया।

२००) श्री० बा० प्रभुदयालजी मंत्री अनाथालय सभा अपनी प्रिय धर्मपत्नी की मृत्यु के स्मारकरूप पर (आप २००) से (१ दिन पूर्व ले चुके हैं)
२००) श्री० सेठ दामोदरदासजी राठी मालिक कृष्णामिल ब्यावर
२००) मैनेजरजी कृष्णामिल ब्यावर कपड़ा
२००) ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी वर्म्मा

इनके अतिरिक्त कई महाशयों ने १२ रु० प्रतिवर्ष नियत तिथि पर भेजकर भोजन कराने की प्रतिज्ञा की है। आशा है कि यह क्रम शीघ्र ही फलीभूत होगा और अनाथालय के अधिकारी उसकी अन्य

उन्नतियों की ओर अधिक समय दे सकेंगे।

समाप्ति पर सभापति (श्री० कमिश्नर साहिब व महोदय ने अपनी शुभ सम्मति प्रकट की (जो अन्यत्र छपी है)

१ दिन और कम हुआ।

वैदिक विवाह–अनाथालय की सुयोग्य कन्या देवी सुमित्रा का विवाहसंस्कार महाशय गोविंदरामजी कलकत्ता निवासी के साथ ८ मई १९११ ई० को कन्या अनाथालय में पूर्ण वेदोक्तरीति से हुआ। कन्या की अवस्था १७ वर्ष और अनाथालय की सप्तमश्रेणी में पढ़ती थी। वर कलकत्ते के सुप्रसिद्ध गोरक्षक बा० हासानंद जी वर्मा के सुपुत्र बा० गोविंदरामजी वास्तव में सिंधप्रदेश में शिकारपुर के निवासी हैं परन्तु मुद्दत से मुम्बई और कलकत्ते में व्यवसाय कर रहे हैं।

आजकल आप बा० गोकुलचंदजी ठट्टा निवासी के साथ नं० २१३ बड़ा बाज़ार स्ट्रीट कलकत्ते में स्वदेशी कपड़े की दूकान करते हैं, हमारे १०–१२ दिवस के सहवास ने बताया कि उक्त दोनों भागीदार महाशय जिस प्रेम प्रीति और भ्रातृभाव से रहते हैं उससे आजकल के भाइयों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

संस्कार के समय अनाथाश्रम आर्यपुरुषों से भरा था, यज्ञ मण्डप आश्रमवासिनी कन्याओं द्वारा सुसज्जित हुआ था और दर्शक महाशय वर और वधु के मुख से सन्मानित वाक्य तथा प्रतिज्ञा मन्त्रों को श्रवण कर गद् २ होरहे थे। आचार्य्य का आसन श्री० पं० ब्रह्मदत्तजी शर्म्मा धर्म्मशिक्षक द० ए० वे० हा० स्कूल अजमेर ने ग्रहण किया था, आप ने प्रत्येक मन्त्र की भली प्रकार व्याख्या कर उपस्थित जनको आल्हादित किया।

कन्यादान के समय अनाथालय की ओर से १ जोड़ा कपड़े १ सत्यार्थप्रकाश तथा १ प्रति संस्कारविधि सहित वर को भेट किये गये इसके सिवाय निम्नानुसार दान और मिला।

१) जयदेव शर्म्मा अधिष्ठाता अनाथालय की धर्म्मपत्नी।

१) बा० नथमलजी तिवाड़ी।

२) भूतपूर्व डाक्टर चेटर्जी के औषधालय से।

संस्कार की समाप्ति पर जयदेव शर्मा अधिष्ठाता ने वर और वधु का परिचय सर्व साधारण को कराया तथा दोनों को उनकी नवीन स्थिति, उसके महत्व और कठिनता की ओर ध्यान दिलाते हुए उन से आदर्श गृहस्थ स्थापन की आशा प्रकट की तथा वर पक्ष का दान इस प्रकार सुनाया:—

१००) श्रीदयानन्द अनाथालय अजमेर
२०) श्रीविरजानन्द विद्यालय मथुरा
२०) गुरुकुल कांगड़ी
२०) लज्जावती कन्या आश्रम लुधियाना
१०) पुत्रीपाठशाला कलकत्ता
१०) आर्य्यसमाज अजमेर
५) दुआबा आश्रम जालंधर
५) आ० कन्यापाठशाला शिकारपुर
५) आ० कन्यापाठशाला अजमेर
५) दक्षिणा
६) सेवकों को इनाम
२०६) योग

उपरोक्त दान वर महाशय बा० गोविन्दरामजी की ओर से था किन्तु अधिष्ठाता अनाथालय ने धन्यवाद देते हुए ऐसी आशा प्रकट की कि शीघ्र ही महाशय गोविन्दराम कम से कम २००) रुपये जमाकर। एक दिन के भोजन भार को अपने ऊपर लेंगे, इस पर बा० गोकुलचंदजी ने २००) दुकानखाते से दान देकर अनाथालय को सदैव के लिये एक दिन के भोजन व्यय से मुक्त कर दिया।

८ मई १९११ ई० को बा० गोविन्दप्रसादजी की ओर से अनाथाश्रमी बालक बालिकाओं को अत्युत्तम भोजन लग भग ५०) रु० लगाकर दिया गया.

वर महाशय से ९००) रु० कन्या के नाम सेविंगबेंक में जमा करा लिये गए हैं पासबुक दफ्तर अनाथालय में है। ११-५-११ को कन्या ने विदा होकर ठट्टा शिकारपुर होते हुए कलकत्ते को प्रस्थान किया। परमात्मा इस नवीन जोड़े को धर्म और प्रतिष्ठा के साथ दिनों दिन उन्नत करता रहे।

धन्य है वह धनी जिसका धन विद्या तथा धर्म्मप्रचार में व्यय हो ॥

मान्यवर चौधरी श्रीरामकृष्णजी रईस देवबन्धु का नाम विद्याप्रेमी आर्य्य पबलिक से अप्रकट नहीं। आपने पुष्कल धन दान देकर गुरुकुल कांगड़ी की शाखा अपने ग्राम देवबन्धु में स्थापन कराई है एप्रिल मास में आप भ्रमण करते हुए ५-६ अन्य महाशयों सहित अजमेर पधारे और कईवार अनाथालय को अवलोकन कर बड़ा सन्तोष प्रकट किया, एक से अधिक बार फल तथा भोजन से बच्चों का सत्कार किया और २ कन्या तथा २ बालकों को विद्याप्राप्त कराने के निमित्त कमेटी से स्वीकार करा अपने साथ लेगए।

बालकों को आपने शाखा गुरुकुल देवबन्धु में प्रविष्ट करा दिया और कन्याओं को कन्या महाविद्यालय जालधर तथा कन्या आश्रम मुलतान में।

पाठकवृन्द इनमें १ बालक और १ बालिका वही विश्वनाथ और महालक्ष्मी हैं जिनका दुःखमय वृत्तान्त किसी गतांक में आपको सुना चुके हैं कि बा० गनपतराय के माता पिताविहीन ४ बालक अनाथालय में प्रविष्ट हुए हैं जिनकी विशेष व्यवस्था के लिये कई सज्जन इच्छुक हैं। परमात्मा उन्हें चिरजीवी करे।

बख्तावरसिंह पूर्व अनाथ द० अनाथालय अजमेर का पत्र ॥

श्रीमान् पूजनीय पिताजी! नमस्ते,

शायद यह चौथा पत्र आपकी सेवामें रवाना करता हूं परन्तु पिताजी! मुझे कैसे निश्चय हो कि यह सब खत आपको मिल गए या मिलजाते हैं। यद्यपि मैं जानता हूं कि आपको कार्य विशेष रहता है किन्तु मुझे भी मायूस होकर लिखना ही पड़ता है।

वर्ष में एक बार भोजन कराने से आपका क्या प्रयोजन है? आया १ दिन या १ वक्त? मैं इस प्रकार के एक दो ग्राहक बनाना चाहता हूं किन्तु कृपाकर आप स्पष्ट लिखें कि साधारण भोजन (जो रोजाना करते हैं) तथा बढ़िया भोजन जैसे खीर, पूरी, हलुवा आदि में क्या २ व्यय होता है।

मुलतान से { धर्मपुत्र
बख्तावरसिंह.

बख्तावरसिंह को यथासमय यथोचित उत्तर दे दिया गया, आशा है वह अपना कर्तव्य अवश्य पालन करेगा। परन्तु सर्व साधारण की विज्ञप्त्यर्थ यहां प्रकट कर देना उचित जानते हैं कि आजकल अनाथालय में लगभग १०० बालक बालिकाएं हैं जिनके नैत्यिक भोजन में साधारण दाल रोटी के लिये प्रतिदिन १२) व्यय होते हैं मध्यम घृत चावल और मीठे में २०) और उत्तम भोजन पूरी कचौरी इत्यादि में ४०) से ५०) तक व्यय हो जाते हैं।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर में पालित ८० से अधिक कन्यायें आजकल अच्छे घरों की मालिक हैं, कम से कम इतने ही बालक भी बाल्यावस्था के दुःसाध्य कठिन दारिद्र्य पथ को समाप्त कर स्वतन्त्र वृत्ति के विस्तृत मैदान में आशालता की सुहावनी हवा खारहे हैं, यदि वह तनिक ध्यान दें और प्रत्येक बालक बालिका १-१ दिन के भोजन का भार अपने ऊपर ले (कई उन में से स्वयम् करासकते हैं अन्यथा उनकी प्रेरणा से कई सज्जन इस महान्यज्ञ में यह आहुति देने को तय्यार हो सकते हैं) तो सहज में आधे वर्ष के लिये भोजन की निवृत्ति हो सकती है।

आप प्रसन्न होंगे यह जान कर कि

अजमेरस्थ सज्जनों को सुभीता।

अजमेर निवासी सज्जनों के लिये सुभीता है कि जब और जिस प्रकार का भोजन दान करना चाहें समस्त बच्चों को अपने घर पर बुलाकर अपनी दृष्टि के सामने यथारुचि करा सकते हैं जैसा कि प्रायः कराते ही रहते हैं। हम उन सब महाशयों से सविनय प्रार्थना करते हैं कि वह इस **एक दिवस भोजन प्रणाली** की व्यवस्था को दृढ़ और कृतकार्य्य करने के लिये यथासाध्य प्रयत्न करें, स्वयं दें और अन्यों से दिलावें। केवल अजमेर से कम से कम ५० दिवस का भोजन मिल-सकना कठिन नहीं यदि अनाथलय के हितैषी ध्यान दें और दानी जनों की रुचि इधर दिलावें।

बाहर वाले सज्जन भी अ-प्रसन्न न हों हम पहिले घर से आरम्भ करके नम्बरवार आप के पास तक पहुंचने की चेष्टा कर रहे हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि जब ५० दिन अजमेरस्थ दान वीर अपने घर में से कर लेंगे तो शेष ३१५ दिवस आनन् फानन् में उनके सहवासी और दूरवर्ती भाई अवश्य पूरे कर देंगे। जिसके लिये २००) रु० एकबार किसी बेंक में जमा करदेना ही स्थिरावधि है।

अगले मास से व्यौरेवार भोजनतिथि लिखना आरम्भ करेंगे।

अनाथालय के एक सुपुत्र बा० गोधराजजी (जो आजकल लोकोशाप में १८) दैनिक पर क्लर्क हैं और जिनका विवाह भी हो चुका है) १ दिन समस्त बच्चों को २ वर्षों से भोजन कराते हैं और अब उन के भोजन की तिथि उनकी विवाहतिथि ही रहेगी। हमें आशा है यह अपील अपने स्थान पर निरर्थक सिद्ध न होगी।

२ दिनकी प्रतिज्ञा—बा० जोरावरमलजी कायस्थ महल्ला अजमेर कई वर्षों से अपने पूज्य पिताजी के सन्मानार्थ समस्त अनाथाश्रमी बालक बालिकाओं को अपने गृह पर बुलाकर भोजन कराया करते थे। इस वर्ष किसी विशेष निमित्त से १३ मई १९११ ई० को भी निमन्त्रित किये गए। बात चीत में मैंने एक दिवस भोजन प्रणाली पर उनकी दृष्टि आकर्षित की आपने बड़ी प्रसन्नता के साथ मुझे अधिकार दिया कि वर्ष के २ दिन आप मेरे नाम अवश्य लिखलें, तिथियों की सूचना मैं पीछे से दूंगा। **इसी प्रकार** बा० मूलचन्दजी गार्ड सभासद् आर्य्यसमाज अजमेर भी प्रायः वर्ष में १ बार निमन्त्रण देते ही हैं आशा है आप भी किसी विशेष तिथि के लिये निश्चय कर सूचित करेंगे ताकि लिस्ट तय्यार करते समय ध्यान रक्खा जावे।

देवी श्रृंगारी तुम चलबसीं !

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर से शिक्षा ग्रहण कर जिन देवियों ने स्त्री जगत् के सुधार के लिये कुछ कार्य्य किया है या कररही हैं उनमें से देवी श्रृंगारी एक थीं । वह २७ सेप्टेम्बर १९०७ ई० को बा० रामचन्द्रजी पनवार (राजपूत) क्लर्क दफ्तर डिप्टीकंट्रोलर डाकखाना के साथ विवाही गईं और श्वशुर गृह में पदार्पण करते ही देहली की कई कन्या पाठशालाओं में विद्या दान करना आरम्भ करदिया, यथाशक्ति व्याख्यान भजनादि से भी प्रचार किया। गत सेप्टेंबर मास में उसको पुत्र उत्पन्न हुआ जो इस समय तक सकुशल है । अभी वह पूर्णतया गृहस्थ सुख भोग सकी थीं और नहीं अपने जीवनोद्देश्य "ऋषिऋण" से उऋण होने के निमित्त स्त्रीशिक्षा का कार्य्य यथेच्छा करसकी थीं कि २१ वर्ष की अवस्था में २५ मार्च १९११ ई० को ६½ बजे सायं समय अपने फूल से बालक (इन्द्रकिशोर) तथा समस्त सम्बंधियों को खिन्न मन छोड़ स्वर्गधाम पधार गईं । मृतिका ने अन्तिम श्वास पर्यन्त पाठशाला को नहीं छोड़ा और वहीं रहते २ सदैव के लिये विदा होगईं ।

देवी श्रृंगारी तुम्हारे सम्बंधियों को जितना असह्य कष्ट होगा उसका अनुभव किसी ऐसी ही दुःखी व्यक्ति को हो सकता है जिसको (परमात्मा किसी को न दिखलावें) कर्मवश ऐसा दुःख सहन करना पड़ा हो, हमको जब उसके प्रियपति तथा सरल स्वभाव वृद्ध सास श्वशुर का ख़याल आता है तो बड़ा दुःख होता है परमात्मा मृतात्मा को सद्गति और उसके सम्बन्धियों को शान्ति प्रदान करे ।

भ्रमण वृत्तान्त श्री० पं० शमानन्दजी उ० द० अ० अजमेर ।

श्रीयुत महाशय सम्पादक अनाथ रक्षकजी ! नमस्ते"

कृपाकर निम्निलिखित लेख को निज पत्र में स्थान दीजिये—

(भ्रमण वृत्तान्त)

बुढ़ाना से चलकर मैं अनाथालय की भजनमंडली सहित ता० २ । ३ । ११ का शामली जिला मुज़फ्फ़रनगर में श्रीमान् चौधरी मामराजसिंह रईस के स्थान पर आया, उक्त चौधरी साहब अनाथालय के सच्चे हितैषी हैं और यथावसर सहायता करते रहते है यहां से दूसरे दिन श्रीमान् पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्य की प्रेरणा

पर आया उक्त चौधरी साहब अनाथालय के सच्चे हितैषी हैं और यथावसर सहायता करते रहते हैं। यहां से दूसरे दिन श्रीमान् पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्य की प्रेरणानुसार सिलावर को गया और उक्त वैद्यजी के उद्योग से अनाथालय को कुछ सहायता प्राप्त हुई यहां से कुछ एक स्थानों पर होकर ता० ७। ३। ११ को बागणोली आया, यहां पर श्रीमान् चौधरी ज्योतिस्वरूपजी एक उत्साही और अनाथालय के हितैषी हैं जिनके सद्योग से ५०) की सहायता अनाथालय को प्राप्त हुई, वहां से शामली लौट आया और श्रीमान् चौधरी मामराजसिंह ने एक स्थान मे १२) की सहायता दिलाई इसके पश्चात् आर्यसमाज कैराना में आया और करीब १ सप्ताह यहां भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया यहां के धार्मिक सज्जनों के द्वारा करीब ४०) की सहायता प्राप्त हुई यहां से चलकर दिल्ली होते हुए ता० २६। ३। ११ को सायंकाल आर्यसमाज अजमेर के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुआ। यहां से चलकर ता० ४। ४। ११ को ब्यावर पहुंचा यहां के निवासियों में श्रीमान् पं० बिहारीलालजी बी० ए० एल एल बी० तथा महाशय नन्दलालजी सोनी ने अनाथों से विशेष सहानुभूति दिखाई। ता० १६। ४। ११ को श्रीमान् सेठ दामोदरदासजी राठी से मिलकर अनाथालय की सहायतार्थ प्रार्थना की। उक्त श्रीमान् एक प्रसिद्ध दानी पुरुष हैं जिन्होंने समयानुसार कुछ सहायता अनाथालय को दी और उत्सव पर पधार कर एक अच्छी रकम अनाथालय की सहायतार्थ दान कर गये। ऐसे परोपकारी सज्जन को धन्य है। ब्यावर से इस समय सौ रु० से कुछ अधिक की सहायता अनाथालय को प्राप्त हुई वहां से अजमेर वापिस आकर ता० २०। ५। ११ को खरवा पहुंचा और कई रोज़ तक भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया यहां के निवासियों में पं० लक्ष्मणसिंह मास्टर से विशेष सहायता मिली खरवा से बिरगचियावास आदि स्थानों में होते हुए मैं मय अनाथालय की भजन मण्डली के ता० २७। ४। ११ को अजमेर आगया और अखीर मास एप्रिल में अनाथालय के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित रहा। अजमेर से ता० ३। ५। ११ को रात्रि की गाड़ी में मुज़फ्फ़रनगर को रवाना हुआ और ता० ५। ५। ११ को चौधरी छज्जूसिंहजी महमूदपुर माजरा निवासी के पुत्र की बरात में शामिल हुआ, वहां से ता० ६। ५। ११ को आर्यसमाज मुज़फ्फ़रनगर में वापिस आगया और चार रोज तक यहां भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया वहां से चलकर ता० ११ को आर्यकुमारसभा के नगरकीर्तन में सम्मिलित

होकर भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया वहां से चलकर ता० १५ को कासीपुर पुरखेड़ी की एक बरात में पहुंचा और भजन व उपदेश द्वारा प्रचार किया, श्रीमान् चौधरी मामराजसिंह शामली निवासी के सदुद्योग से यहां से ३१) रु० की सहायता प्राप्त हुई वहां से चलकर मौज़ा बावली की बरात में प्रचार करते हुए हम लोग ता० १८। ५। ११ को सायंकाल अजमेर आगये।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय का परिचय (कारुणिक दृश्य)

जयपुर राज्य में नवाई के पास उससे पश्चिम की ओर २—३ मील की दूरी पर रम्भा नामी एक ग्राम है, जिसमें **जोधा केशरीसिंगोत ठाकुरों** का एक घराना रहता था। ठाकुर साधारण स्थिति का मनुष्य था, राज्य की ओर से कुछ भूमि आदि मिली हुई थी और अपने तीन पुत्र, तीन पुत्रियें, एक पुत्रवधु तथा अपनी सुहधर्म्मिणी सहित आनन्दपूर्वक दिन व्यतीत करता था, घर में सब प्रकार की वस्तुएं उपस्थित थीं, गायें, भैंसें, घोड़ी, ऊंटादि सब वस्तुएं प्राप्त थीं। ठाकुर अपने जातीय बन्धु वर्ग के साथ ग्राम में वास करता था, किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

सम्वत् १९५६ विक्रमी का प्रसिद्ध, भयानक दुर्भिक्ष अभी प्रकट नहीं हुआ था कि ठाकुर का स्वर्गवास होगया, ठकुरानी छः छोटे बड़े बालकों और एक पुत्रवधु सहित निराधार खड़ी रहगई। यों होने को तो देवर, जेठ सब कोई थे किन्तु समय के हेर फेर ने अब इन सम्बन्धों को केवल स्वार्थसिद्धि का साधन बना दिया है और इसी घाट मृतक ठाकुर के उत्तराधिकारियों को उतरना पड़ा।

भाई बंधुवों ने मुख फेर लिया, रुपया, पैसा, लेना, देना जहां का तहां रहा, कुछ गाय, भैंस, ऊंट इत्यादि के सिवाय और कुछ शेष न रहा, बेचारे इन्हीं को बेच खोंचकर दिन बिताने लगे।

विपत्ति जब आती है तो चारों ओर से आती है इसी वक्त जगत्व्यापी सम्वत् १९५६ वि० का कठोर दुर्भिक्ष आन उपस्थित हुआ।! अब तो बेचारों को जीवन धारण करना दुर्लभ होगया, आठ मनुष्यों का पालन बिना किसी आयके ऐसे संकट समय में किस प्रकार होसके ? जब बची खुची, गौ भैंसादि बेचकर खापी चुके तो एक दिन अति दुखित ठकुरानी ने कहा " बेटो और बेटियो ! "यहां अब निर्वाह कठिन ही नहीं असम्भव है, यहां रहकर मांगा भी नहीं जाता, मरे भी तो सहवासियों में अप्रतिष्ठा ही है, इसलिये " देश चोरी परदेश भीख " कहावत के अनुसार यहां से चल देना ही चाहिये और खबरदार कहीं किसी से अपने को ठाकुर मत प्रकट करना, ऐसा न हो हमारे कारण ठाकुर नाम को कलङ्क लगे, हम कुम्भकार (कुम्हार) बनकर

जीवन की रक्षा करेंगे " ऐसा निश्चय कर ठकुरानी अपने सब परिवार तथा एक भैंसे को लेकर (जो उनके जीवन का एकमात्र आधार रह गया था) रम्भा को अश्रुपूरित नेत्रों से परिणाम कर कोटे की ओर चल दी।

जमाने की हवा देखिये जिसके दरवाजे पर अनेक भिखारी आकर अन्न और जल से तृप्त होते थे उनका प्रिय परिवार प्रत्येक घर से भिक्षा मांगता हुआ पैदल कोटे को जा रहा है, अस्तु । मांगते खाते कोटे पहुंच गए और ज्यूं त्यूं भिक्षावृत्ति करके कुछ दिन वहां व्यतीत किये, लेकिन गुज़ारा न हुआ और शेष पूंजी भैंसे को भी ५) रु० पर बेचकर पुनः घर की ओर लौटे ।

पाठक ! जिस स्वदेश के लिये एक फ़ारसी कवि कहते हैं—

" हुब्बे वतन अज़ मुल्के सुलैमां ख्वश्तर,

खारे वतन अज़ सम्बुलो रेहां ख्वश्तर "।

अर्थात् स्वदेश प्रेम सुलेमानी देश (स्वर्ग) से अधिक होता है और स्वदेशी कांटे विदेशी फूलों से भी प्रियतर होते हैं, उसी रम्भा ग्राम की दरो दीवार इस राजपूती परिवार को सिंहवत खाने को दौड़ने लगी । व्यथितहृदया राजपूतनी दांत, नख, कटी सिंहनी की भान्ति पेचो ताब खाती हुई घर पहुंची और दश पांच दिन यथा तथा व्यतीत किये ।

" बुभुक्षितः किन्न करोति पापम् " ?

सायंकाल के ६ बजे होंगे, राजपूतनी समस्त परिवार सहित ग्राम से बाहर नदी के तट पर बैठी प्राणरक्षा के यत्न सोच रही है और सजल नेत्रों से अबोध बालकों की ओर देखकर कहती है "अब यहां रक्षा का कोई साधन नहीं दीखता यहां से निकल चलना ही अच्छा है, चलो कहीं चलकर इस बड़ी लड़की (गौरां) को बेचकर पेट पालेंगे " आह ! जिन कन्याओं की रक्षा के लिये राजपूतों की रक्तधारा बहा करती थी आज वही कन्यायें पेट पापी की पूर्ति का साधन बनाई जाती हैं सच हैं "भूखा क्या पाप नहीं करता"?

नैराश्यपूर्ण कहां जाना है और किसलिये ? यह न जानते हुए यह टूटे हाल परिवार एक ओर को चल पड़ा, कुछ दूर चल कर एक ठाकुरों का ग्राम आया जिस में उन्होंने अपनी प्राणप्रिय कन्या के बदले में १०) प्राप्त किये फिर एक बार रम्भा आए लेकिन पैर न टिक सके और फिर चलदिये, दौसा, भांडारेज़ इत्यादि स्थानों में होते हुए मारवाड़ के स्थान गोठड़ा में जापहुंचे जहां ठाकुर प्रतापसिंह

का अधिकार था, यहां पहुंच कर छोटी कन्या (रामकुंवारी , और सबसे छोटे बालक (रूपजी) को ४-४ रुपये पर देदिया। ठकुरानी शेष बच्चों को लेकर आगे बढ़ी और इधर से यह दोनों भी भागकर उसके पास चले आए, किन्तु शीघ्र ही पकड़े जाकर ठाकुर प्रतापसिंह के पास पहुंच गए और अबके तीसरी कन्या (गवरां) भी (जो पूर्व १०) में बेची गई थी और पुनः भागकर इनके पास आगई थी) इनके साथही ४) रु० में देदी गई। यहा से यह दुःखित परिवार बिलकुल तितर बितर होगया, रूपजी ठकुर प्रतापसिंह के साथ लेही चला गया और दोनों कन्यायें ठाकुर प्रतापसिंह के सालेके साथ उनके घर चली गई, शेष आपत्तिग्रस्त ठकुरानी और बच्चे हमारी दृष्टि के ओट होगये नहीं बता सकते उनका क्या हुआ।

रूपजी अब १३-१४ वर्ष का होगया था कि ठाकुर प्रतापसिंह का समय पूरा होगया, अब यह उसकी कठोरहृदया कटुभाषिणी विधवा स्त्री के हाथों पर नाचने लगा। अतिक्लेशित हो भागा, पकड़ा गया। फिर भागा और किशनगढ रेनवाल होता हुआ भींड़ा में एक ठाकुर के पास ठहरा। अब यह कुम्भकार टिकुटा था, जैसे तैसे कुछ दिन निकाले, परन्तु यह ठकुरानी ठाकुर प्रतापसिंह की विधवा स्त्री से भी अधिक दुःखदायिनी सिद्ध हुई और यह वहां से भी चल निकला, फलेर पहुंच कर धर्मशाला मे १ दिवस ठहरा और भूखा प्यासा अजमेर को रवाना हुआ यहां पहुंच कर एक दो दिन हिंदू अन्नक्षेत्र में भोजन करके **श्रीमद्दयानन्द अनाथालय में** प्रविष्ट होगया।

वाचकवृंद! आजकल वही टिकुटा फिर रूपसिंह का शक्ल में यहां उपस्थित है, चार वर्ष में उसने कर्फी योग्यता प्राप्त करली है और आशा रखनी चाहिये कि रूपसिंह अपने वंश अपनी अवस्था और संसार का चाल पर दृष्टिपात कर अपने लिये सुमार्ग का खोज करेगा।

मित्रगण! आप इस हालात को जानकर इस परिणाम पर अवश्य पहुंचेंगे कि **श्रीमद्दयानन्द अनाथालय** जैसी संस्थाओं की यहां बहुत आवश्यकता है और जितना ही उन्हें कामयाब बनाया जायगा, उनकी सेवा और रक्षा का कार्य विस्तृत और दृढ़तर होता जायगा। जिम्मेवार मनुष्य अपनी जिम्मेवरी को सोचें।

चूंकि यह हालात रूपसिंह के लेख के आधार पर दिये गए हैं इसलिये जो उसे याद न थे नहीं दिये जासके।

जीवन अभिनय का अन्तिम दृश्य ।

एक अस्सी वर्ष का वृद्ध गत १ वर्ष से बराबर रुग्न चला आता है, दम के मारे दम लेना कठिन है रातों बैठा खुं, खूं किया करता है.. नींद बिलकुल नहीं आती अब बेचारा बिलकुल चारपाई से लगगया है, न लेटे चैन है न बैठे, चारपाई के आस पास राख और थूक का ढेर है, निर्बलता ने उठना भी कठिन कर दिया है मल मूत्र त्याग भी उसी कोठड़ा में करता है जहां बैठकर एक दो ग्रास कण्ठ गत करता है, कुछ समय से मस्तिष्क भी विक्रित होगया है रात्रिन्दिवस बड़बड़ाया करता है बेटे, बेटियां, जामाता और पोते, नाती सभी कुटुम्ब उससे दुःखी हैं ।

आह !!! जिसके मुख की ओर हर एक मनुष्य ताकता रहता था, जिसके सङ्केत मात्रपर लोग दौड़ पड़ते थे, अब उसकी मृत्यु के अभिलाषी होरहे हैं ।

वृद्ध सांसारिक दृष्टि से अच्छा धनी पुरुष था, उत्तराधिकारी लड़कों को पर्याप्त भाग प्राप्त हुआ है किन्तु अब वृद्ध, वृद्ध ही है, जब वह अपना काम स्वयम् कर सकता था, नीरोग्य और बलसम्पन्न था लोग उसका काम करने को बिना बुलाए आते थे और अब जब कि उसे आवश्यकता है, कतरा जाते हैं, जब तक होश ठिकाने रहे बुड्ढे ने कुछ धन अपने पास पृथक् रक्खा परन्तु चालाक आदमियों ने चाबियां अपने अधिकार में करलीं, बेचारे का मस्तिष्क बिगड़ गया, कुछ समय तक तो लोकलाज, पैत्रिकस्नेह के कारण कुछ सेवा होती रही मगर अब जब कि सब अवयव ढीले पड़गये लड़कों ने भी कन्नी काटली हां! एक अर्द्धाङ्गिनी है जो आप भी वृद्ध के साथही वृद्धा बनगई है, असक्त है, रुग्न है और हर प्रकार लगभग वैसी ही बेबश है जैसा कि वृद्ध, हां, होश ठिकाने हैं और पतिभक्ति के पवित्रभाव ने उसे इस योग्य बना रक्खा है कि हर समय हर प्रकार से अपने सरमौर, अत्यन्त कृष्य पति की सेवा करसके । लकड़ी पकड़कर चलती है परन्तु वृद्ध प्राणनाथ के सुख पहुंचाने का हरदम ध्यान है और वह उसके पास से एक दम को भी नहीं सरकती । वृद्ध के कष्ट को देख कर जब लोग कहते हैं "कि बेचारा बड़ा दुःखी है इससे तो मरजाना ही ठीक है कष्ट से तो छूटे" बेचारी एक २ का मुंह तकने लगती है या लड़पड़ती है ।

वृद्ध की अवस्था दिन दिन बिगड़ती जाती है, कफ दुर्गन्ध देने लगा, ज्वर हर समय मौजूद रहता है, पीठ में दो चार फोड़े निकल आए, घबराहट, बेहोशी इत्यादि सभी चिन्ह ऐसे मौजूद हैं जिन से

निश्वास होता है कि मृत्यु अतिनिकट है, खाना पीना कई दिन से बन्द है और अब सब को निश्चय है कि वृद्ध कोई दिन का पाहुना है, सम्बन्धी ताक में हैं कि कब मरे ? कहीं शरदी की रात में मरना न पड़े ।

आह !!! संसार के दृश्य कैसे विचित्र हैं ? सांसारिक सम्बन्ध और ऐश्वर्यभोग का प्रबन्ध कैसा अविश्वस्थ है ? जिनके पीछे प्रत्येक मनुष्य दौड़ता नहीं थकता । गैरों का तो यह हाल देखा अब वृद्ध के मन की क्या अवस्था है ? यद्यपि यह जानना अति कठिन है परन्तु उसकी हालत पर दृष्टि डालने से बहुत कुछ पता चल सकता है, एक रात उसकी धर्मपत्नी उसकी चारपाई के पास बैठी हुई उसके बिछौने को ठीक कर रही थी (जो मलमूत्र से भृष्ट होगया था) और बेहोश बुड्ढे के चेहरे को देखती जाती थी कि वृद्ध ने आंख खोली और कहने लगा "लल्लू की मां ! तुम्हारे चोट तो नहीं आई ? देखा कैसे २ देव थे जो तुम न होतीं तो मैं मरजाता, मुझे तो यह मार डालते, अब मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगा, मुझे तुम अकेला मत छोड़ना" वृद्धा बेचारी क्या समझती ? समझी बक लग रही है, मधुरस्वर से बोली "नहीं जी में कभी नहीं छोड़ूंगी, तुम्हें कौन मार सक्ता है ? वृद्ध चिल्ला उठा "अरे वह देखो लल्लू की मां वे बड़े २ आदमी मुझे बुला रहे हैं" अच्छा तो मैं जाता हूं, देखो तुमने मेरी बहुत सेवा की, उम्रभर मेरा कहना माना, जो कहा सो ही किया, अपना जीवन मेरे लिये समझा, अब बताओ मैं इसके बदले में तुम्हें क्या दूं ? लल्लू की मां ! अब मैं जाता हूं जाने मेरा क्या हाल हो ? यह लोग नहीं मानते लिये जाते हैं, हाय ! अब मेरे पास कुछ नहीं रहा, बहुओं ने चाबी भी चुराली, हाय ! तुम रोती क्यों हो ? तुम्हारे लिये सब कुछ है और यह कह कर वृद्ध उठ बैठा, वृद्धा का हाथ पकड़ कर चूम लिया, वृद्धा भी प्रसन्नता से उठ खड़ी हुई और कहने लगी "नहीं जी तुम यह क्या कहते हो तुम अच्छे हो जावोगे और मुझे अपने कंधे पहुंचावोगे, मैं भी उसी दिन अपना जन्म सफल जानूंगी कि जब तुम्हारे कंधे पर चढ़कर जाऊंगी" वृद्ध निढाल हो चारपाई पर गिर गया और धीमे स्वर से बोला देखो जो परमात्मा करे, बेहोशी छागई, आंख बंद किये फिर बोला कौन है ? लल्लू ! क्यों बेटा कैसे खड़े हो ? बैठ जाओ, वृद्धा ने कहा यहां लल्लू कहां है ? वह तो सो रहा है क्या बुलाऊं ? वृद्ध ने कुछ न सुना और अपनी धुन में कहता रहा "देखो लल्लू अपनी मां को दुःख

मत्त देना अम्मू पे साल सौ रुपये आते हैं लेकर अपनी मां को देदेना और देखो मेरे लड्डू कचौरी करदेना, अधिक व्यय न करना, अरे मुन्ना ! आ बच्चे आ तो मेरी गोद में आ, क्या करूं तेरा विवाह न करपाया रामजी की मरज़ी, देखो मेरे तीनसौ रुपये नंगू नाई पर थे न उसने दिये न उस के बेटे ने जब घर नीलामपर चढ़ा तो लेकर आया पांच सौ का घर क्यों छोड़ता ? नीलाम करालिया, अब फिर रुपया लिये खड़ा है, चल हट मैंनेतो मकान मुन्ना के नाम करदिया, अब क्या होता है ? बेटा मकान मत देना, पांच सौ से अधिक है। हाय रे हाय मरा, अरे मार डाला, अच्छा भाई लेलो, लेलो, मुझे मारे क्यों डालते हो ? अरे लल्लू ! ओ लल्लू ! देदे, बेटा देदे, अरे जल्दी घर के कागज़ देदे, मैं रुपये भर पाये, नहीं तो मुझे मार डालेंगे, हाय राम २। रोगी की आवाज़ से घर भर जाग पड़ा, इधर वृद्धाने भी लड़के को आवाज़ दी, लल्लू क्रोधित हो कर आया और आते ही झल्ला कर कहने लगा "क्या है ? क्यों शोर मचा रक्खा है ? न आप सोवें न और को सोने दें" वृद्धाने अश्रुपूर्ण नेत्रों से लल्लू की ओर देखा और कहा "बेटा इसीलिये पाला-था ?" हाय तुम यह कहते किससे हो ? वह होश में कब हैं ? अब यह सचमुच कोई घंटे के पाहुने हैं। लड़का यह सुनकर वृद्ध का बाजू पकड़ कर बोला "कहो क्या देदूं ?" रोगी ने उत्तर दिया अरे मुन्ना वाला घर देदे, लल्लूने पूछा आखिर किसको देदूं ? वृद्धने कहा, नंगू को और किसको ? लड़का बोला "खूब, वह तुम को वहीं मिलेगा जहां तुम जाते हो देदेना" बुड्ढे ने कहा, वाह वह सामने खड़ा उस्त्रा दिखा रहा है तुम देदो दो, है तो मेरा ही तुम्हें इससे क्या ? लड़केने कहा बस अब चुप होजाओ और सो रहो यह कहकर बुड्ढे का मुख ढांक दिया, बेचारा चुप होगया। थोड़ी देर के पश्चात् हाथ पांव मारने आरम्भ किये जिससे उसकी कठिन व्यथा का पता लगता था, मुंह खोलता और बंद करता था जिससे मालूम होता था कि वह कुछ कहा चाहता है पर कह नहीं सकता है आंख से आंसू निकल रहे थे और वे खुली थी यह हालत देखकर तत्काल ज़मीन पर लेलिया गया, बेचारी बुढ़िया व्याकुल होगई कलेजा पकड़ कर उठी और ज़मीन पर पड़े हुए मृतप्राय: प्राणनाथ के पास जाकर बोली "क्यों ? क्या मुझे अनाथ छोड़कर जाओगे ? क्या मेरे साथ यही प्रतिज्ञा थी ? आप तो कहते थे तुम्हारे साथ चलेंगे, अब अकेले क्यों ? अस्तु, आपने छोड़ा तो छोड़ा पर मैं आप को नहीं छोडूंगी" परंतु

अथ ! इन बातों को सुनने या जवाब देने वाला वहां कौन था ? बेचारा बुड्ढा तो अपने श्वास पूरे कर रहा था । वृद्धा यह कहकर वहां से उठी, कलेजा पकड़े हुए शौच गई, हाथ मुह धोया, स्नान किया सेन्दूर लगाया, शुद्ध वस्त्र धारण किये और आभूषण पहिनें, इधर सारा घर जाग पड़ा, बहुवों ने बच्चों को तो बुड्ढे के पास तक भी न जाने दिया और उनकी रक्षा के बहाने स्वयम् भी न आई, लड़के अवश्य उसके पास थे, बुढ़िया थोड़ी देर पश्चात् वहां पहुंच गई और कलेजा पकड़े हुए मृत शय्यासीन वृद्ध की सूरत देखती रही, उसके हाथ मे दो चार रुपये पुराय कराये, लड़के रोने भी लगे, परन्तु बुढिया की आंख से एक आंसू न गिरा, न वह कुछ किसी से बोली और जब उसका पति हिचकियां लेरहा था वह एकदम हंसी और कहा " **क्या मेरी राह देखते हो ?"** अच्छा यह कहकर वह बुड्ढे की बराबर ज़मीन पर लेट गई और देखते २ जान देदी, तत्पश्चात् बुड्ढे का जीवन भी शीघ्र ही समाप्त होगया ।

(ज़माना)

नामावली उन दाताओं की जिन्हों ने पं० गंगासहायजी उपदेशक द्वारा सहायता की ।

---

२) ला० रामस्वरूपजी रईस पोरह (बु० श०)
७) ला० जुगलकिशोरजी रईस ,, ,,
१) ला० प्यारेलालजी ,, ,, ,,
१) ला० भोलानाथ गणेशीलालजी
=) ठा० बल्लासिंहजी ,,
२०) ला० रामचन्द्र बाबूलालजी बजाज पलवल
२) शंकरलालजी सेठ नीमका
।) अमृतलालजी चिरौली द्वारा शंकर लालजी
२) बा० रामस्वरूपजी सब पोस्टमास्टर जवेर
२) बा० आनन्दस्वरूपजी कानूगो ,,
१) ला० रतनचन्द गुप्त पिता ला० नन्दकिशोरजी ,,
१) ला० छाजूरामजी पटवारी जेवर
१) प० छेदीलालजी स्वामी ,, —
=) ला० छाजूरामजी वैश्य कदीमी ,,
।) ला० रामरतनजी ,,
१) ला० कल्याणदास प्रेमदासजी ,,
।) ला० हरकचन्दजी मैड़ ,,
॥) ला० डालचन्द लखीरामजी पटवारी

।) मुन्शीलाल रामचन्द्रजी
।) ला० रामस्वरूप हरस्वरूपजी
।) पं० भगवानसहाय नायब मुदर्रिस
।) ला० दयाराम लक्ष्मीचन्दजी
॥) पं० ईश्वरीप्रसाद सब ओवरसियर
पो० आ० जेवर
।) ला० सुखानन्दजी गौड़ जेवर
≈) ला० नौरङ्गलालजी कुर्दीमी वैश्य
≈) प ० सोहनलालजी रामचन्द्रजी
≈) ला० रामरत्न पित्त श्री गोपाल
२) ला० झंडीलालजी रईस
१) ला० परसराम रामदयालजी बोहरे
।) स्वामी मुरलीप्रसादजी
−) ला० गिरधारीलालजी बोहरे
−)॥ हरकिशनजी विद्यर्थी
≈) बाबूप्रसाद भ्राता नौरंगलालजी जेवर
॥) ला० रामस्वरूपजी बोहरे ,,
)॥ पं० ईश्वरीप्रसाद सब ओवरसियर ,,
।) पं० छगनलालजी ,
)॥ रामचन्द्र विद्यार्थी पंचम श्रेणी ,,
।) पं० सुखरामजी चिट्ठीरसा ,,
।) रामस्वरूपजी के पुत्र रामजीलालजी
।) ला० बुद्धामल गणेशीलालजी
।) ला० गोविन्दरामजी गौड़
≈) ला० मदनलाल भागमलजी
।) पं० थानसिंहजी हैडमुदर्रिस
−) ऊधो हलवाई

।) ब्रजलाल असिस्टैण्ड स्टेशन मास्टर
।) ला० गयालालजी विद्यार्थी दर्जे ६
नीमका
−) ला० चेतरामजी विद्यार्थी
≈) पं० छीतरमलजी के पुत्र रामलालजी
।) ला० किरोड़ीमलजी पूरणलालजी
१) बा० नत्थनलालजी पलवल
१) बा० मन्नूलालजी पलवल
१) बा० मोहनलाल सोहनलालजी पलवल
१।) बा० पूरणलाल बजाज द्वारा
३) बा० रामचन्द्र बाबूलालजी द्वारा
बा० कृपारामजी मंत्री आ० स०
२५) बा० हरफूलसिंहजी पटवारी उजीना
(गुरू ग्राम) चौबे केवलसिंहजी ठे-
केदार ग्राम कपना
५।−) द्वारा चौ० दयाराम अगुआपुर
१०) चौबे नत्थूसिंहजी रईस जेलदार
हथीन
१०) चौबे रणजीतसिंहजी वर्म्मा रईस
हथीन
१) ला० पूरणचन्दजी हथीन
१) ला० नारायणदास गडुरमलजी
१) ला० चुन्नीलाल कुड़ियामलजी
१) ला० इन्द्रमलजी हलवाई
१) ला० लोकमनजी बजाज
१) ला० भवानीमलजी
२) ला० रामलाल मक्खनलालजी
२) ला० ननुवांमलजी
१) चांदखां सिपाही

४) दुलीचन्दजी वैश्य हथीन
२) भिक्खामलजी गोकुलचन्द्जी ,,
२) ला० हीरालालजी ग्यासीरामजी ,,
२) ला० कुशालीरामजी ,,
१) चौ० देवीसिंहजी ,,
१) ला० नन्दकिशोर खेमचन्दजी ,,
१) ला० किशनलाल भगवानदासजी ,,
१) ला० गोपाल छीतर स्वर्णकार ,,
१) ला० चुन्नीलालजी ,,
१) ला० टंडू मूलचन्दजी
१) फौजदार साहब
२) परमानन्थीमलजी
१) ला० शोभाराम ग्यासीरामजी
२) नन्नामलजी पसारी
१) ला० छीतरमलजी खोमचेवाला
१) मुं० मेदसिंहजी मुदर्रिस भोंडसी
॥) ला० प्रसादीलालजी स्वर्णकार
१) चौबे गिरवरसिंहजी नम्बरदार
१) इन्स्पेक्टर साहब पुलिस के घरसे पलवल
=) लछमणसिंहजी पोस्टमैन
१) श्रीमदनुभवप्रकाश स्वामी अध्यापक आर्य्यपाठशाला बढ़ा
१) भीष्मजी बैरागी
१)॥। चौबे नत्थनसिंहजी वर्म्मा
१) चौबे रामसिंहजी वर्म्मा
१) चौबे रामफूलसिंहजी वर्म्मा
॥) जगरामसिंहजी
॥) काकारामजी

।=)। पं० यज्ञदत्तजी शर्म्मा बढ़ा
१) ला० मुरारीलालजी वैश्य
१) ला० रामजीलालजी पटवारी महेशपुर
॥) ला० छज्जनजी वैश्य बढ़ा
१) चौ० तुलारामजी वर्म्मा बढ़ा
१) चौ० नारायणसिंहजी वर्म्मा
४) ला० भजनलालजी द्वारा कृपारामजी मंत्री आर्य्यसमाज पलवल
१) ला० लोकमनजी लहीसी
=) बा० गणपतरामजी टिकट कलेक्टर पलवल
१) चौबे जवाहरसिंहजी सौंही
१) पं० कल्याणदत्तजी शर्मा ,,
=) ला० छीतरसिंहजी वैश्य ,,
।) ला० कृपारामजी पटवारी ,,
१) ला० शिवलालजी दुकान परचून ,,
१) मिस्तरी शादीरामजी ,,
१) पं० जीवनलालजी शर्मा
१) ला० हरबक्शजी वैश्य ,,
॥) पं० भगवानसहायजी शर्मा
।) चौबे गोलमसिंहजी वर्मा
॥) ला० शिवचरणजी वैश्य
२।=) ला० कन्हैय्यालालजी पुत्र ला० हरबक्सजी
=) भीमामलजी सुनार
॥) ला० मोहनलालजी बल्लभगढ़
५) ला० मुन्शीरामजी प्रधान ,,
५) ला० तुलारामजी

२) ला० रतनलालजी
१) ला० भजनलालजी बल्लभगढ़
१) ला० चन्दामलजी वैश्य
१) ला० जग्गीमलजी ,, ,,
१) ला० किरोड़ीमलजी नत्थनलालजी
१) ला० भूपसिंहजी खज़ानची
१) ला० कुंजामलजी बजाज
१) वंशीधरजी सुनार
१) ला० चिरंजीलालजी भगवानदासजी
१) ला० हिम्मतसिंहजी
१) ला० कंवरलालजी
२) ज्ञानचन्दजी डाक्टर
१) ला० पूरणमल सोहनलालजी
१) मु० गुलाममोहम्मदजी कम्पाउंडर शफाखाना
१) मुं० हयातखांजी मेम्बर कमेटी
१) मु० मोहम्मद हुसैनजी हकीम
॥) ला० रामजीदासजी बजाज
१) ला० यादराम रामलालजी
॥) ला० हजारीमलजी आढ़ती
॥) ला० चतुरलालजी सुनार बल्लभगढ़
॥) ला० रामसहाय जमनादासजी
॥) ला० बिहारीलालजी सुनार ,,
॥) ला० गड्डूरमलजी पिता नथुवामलजी,,
॥) ला० रामजीदास धूमीमलजी
॥) ला० मिरचूमलजी पसारी
॥) ला० श्रीरामजी सर्राफ़
॥) ला० गंगासहाय वंशीधरजी
।) ला० गुलाबमलजी सुनार

।) ला० हरभजनजी
।) ला० जमनामलजी
।) ला० किरोड़ीमलजी
।) ला० डालचन्दजी
।) ला० इच्छाराम रूपचन्दजी
।) ला० सन्तीमल
।) ला० चिरंजीलालजी
।) ला० बत्तूलालजी
।) ला० रामचन्द्रजी सुनार
।) ला० केशवदेवजी
।) ला० नत्थनलालजी
।) ला० वृन्दावनजी
।) ला० जगनी बद्रीजी हलवाई
।) ला० कुंजामलजी
।) ला० दुर्गाप्रसादजी
।) ला० चूहीमलजी
।) ला० जमनी हलवाई
।) डालचन्दजी हलवाई
।) कन्हामलजी
।) भानामलजी
।) गुलुमलजी सुनार
।=) रूपसिंहजी रामप्रसादजी
।=) बहालसिंहजी
२) बा० प्रभूदयालजी पुत्र मा० गणेशीलालजी के
।) ला० देवीसहायजी हलवाई
।) ला० नानकचन्दजी
।) ला० मामराजजी
।) ला० रामलालजी साहूकार बल्लभगढ़

॥) हकीम कालेखांजी

॥) ला० भगवाना पसारी

॥) ला० ननुपामल कन्हैय्यालालजी

॥) ला० बद्रीमलजी मोदी

१) पं० प्रभूदयालजी गिरदावर

२॥=) ला० चन्दामलजी द्वारा

१) चिरंजीव जयचन्द्र पुत्र बा० भोलानाथजी के

।) ला० दुर्गा सुनार

।) सब पोस्टमास्टर

१) पं० जगन्नाथजी अरज़ीनवीस

बा० जयप्रसादजी द्वारा बा० चतरविहारी नरायनजी देहली १ लौंग सोने की

२) ला० विश्वम्भरसहायजी (राजाजी) महल्ला इमली देहली

३॥=)॥ मुं० जीवनलालजी के घरपर फुटकर दाईवाड़ा

१) पं० विशम्भरनाथजी असिस्टेण्ट हॉसपिटल देहली

१०) बा अर्जुनसिंहजी गेट हाथी शेखां का फाटक देहली

॥) बा० पंचानन चटर्जी स्वदेशी दुकान नई सड़क देहली

=) ला० अजुध्याप्रसादजी लुधियाना

।) बा० गंगासेनजी काशी

/) ला० आशारामजी आगरा

१०।) बा०भगवानकिशोरजी बर्म्मा की पुत्री के यज्ञोपवीत में देहली

२) ला० माधोराम बुधसिंहजी लोहिया देहली

१) पं० कन्हैयालालजी दुकानकटड़ा ,,

५) ला० रामचन्द्र गोपीचन्दजी द्वारा ला० मुदरामलजी ,,

६) आर्य्यसमाज चावड़ी बाजार द्वारा छोटेलालजी देहली

१) बा० हरपतरायजी क्लर्क शं षलहोटल द्वारा बा० भगवतकिशोरजी बर्म्मा देहली

३) ला० सूर्य्यभानजी कटड़ा अल्लादिया ,,

२) ला० रामरछपालसिंहजी नयावास ,,

१।॥) पं० कन्हैयालालजी द्वारा ,,

॥) ला० कचरीमलजी ,,

।) प० कन्हैय्यालालजी द्वारा ,,

४) डा० गोपाललालजी वर्मन ,,

॥) ला० चन्दूलालजी मन्त्री भारत-बीमा कम्पनी ,,

१) बा० श्रीरामजी क्लर्क साहिब द्वारा बा० कृपारामजी कमिश्नर ,,

१) हरपतरायजी क्लर्क शीषल होटल ,,

१) कृष्णदासजी कटड़ा अल्लादिया ,,

१) पं० विशम्भरनाथजी सबजीमंडी ,,

२) बा० महेशचन्द्रजी रेल्वे स्टेशन ,,

।) ला० मोतारामजी ,,

२) ला० जोतीप्रसादजी दालवाले खारीबावड़ी ,,

॥) हजारीलालजी दुकान रेलवे स्टेशन ,,

॥) लज्जारामजी ,, ,,

॥) जमनादासजी ,, ,,

।) गंगाप्रसादजी रेल्वे स्टेशन देहली
॥) बा० मोहनलालजी ,, ,,
॥) बा० बांकेबिहारीलालजी ,,
१५) बा० कुन्दनलालजी खजानची
फ्लोअर मिल ,,
॥) छैलबिहारीलालजी रेल्वे स्टेशन ,,
॥) ला० परमेश्वरीदासजी ,,
।) ला० जयलालजी ,,
।) बा० जशरथसिंहजी ,,
॥) ला० परमानन्दजी ,,
॥) ला० गेंदामलजी ,,
॥) ला० जंगलीमलजी ,,
॥) पं० धूमीमलजी ,,
॥) ला० मुरलीधरजी ,,
॥) बा० गंगासिंहजी ,,
।) बा० आदरामजी
बा० मनोहरलालजी मंत्री आ. मि. सभा ,,
१ पगड़ी २॥ गज २ तीपले
१) ला० श्यामलालजी लोहिया ,,
१) पं० उमाशंकरजी शर्म्मा गली
छोटी टकसालिया
३)। सेवकमंडली द्वारा पं० उमाशंकरजी
शर्म्मा
१) ला० बन्नोमल द्वारा कूंचा घासीराम
॥) ला० सूर्य्यभानजी
॥) ला० टलीमलजी
१) ला० रामरक्षणलजी की पत्नी देहली
।=) ला० रामरक्षपालजी द्वारा
ला० हरनन्दरायजी गुप्त
ला० हरीशंकरजी गुप्त नई सड़क ,,

५ कोट २ अंगरखी, ९ जाकट
१ पजामा
।) ला० रामस्वरूपजी देहली
१) हीरालालजी स्वर्णकार ,,
१५) बा० रामचन्द्रजी वर्म्मा द्वारा
चौबे जगन्नाथजी वर्म्मा मंत्री
आ० स० सब्जीमंडी देहली
चौबे जगन्नाथजी वर्म्मा ,, ,,
५० गायत्री ४५ ओं ३ श्री ज्ञानमाला
१) बा० प्रभूदयालजी रेल्वे मेल एजेण्ट
पं० विशम्भरनाथजी असिस्टेण्ट
हॉस्पीटल ३ जोड़ धोती
ला० राजारामजी द्वारा पं० विशम्भर-
नाथजी १ गज १० गिरह मलमल
।) रामगोपालजी दलाल द्वारा ला० भग-
वानचन्दजी लेखक देहली
१) जसरथमलजी नीलका कटरा देहली
१) परमानन्दजी हगीना ,,
१) भागीरथलालजी नीलका कटरा ,,
१) दुर्गाप्रसादजी ,,
॥) छोटेलालजी ,,
॥) ब्रजमोहनलालजी ,,
२) जादोरायजी विशम्भरनाथजी ,,
५) श्यामसुन्दरलालजी कूंचाब्रजनाथ ,,
५) परमेश्वरीदास कूपारामजी ,,
=) सुखदेवदासजी ,,
५) ला० बालकिशनदासजी नीलकटरा ,,

५ ला० अखूमलजी देहली
३। ला० बैजनाथजी ,,
२) ला० खैरातीरामजी कूंचा घासीराम ,,
१) ला० उगरावसिंहजी स्वर्णकार ,,
१) ला० सीताराम दुकान मुरलीधर शंकरदासजी चावड़ी बाजार ,,
५) ला० रामचन्द्र हुकमचन्दजी कटड़ा तमाखू ,,
॥) ला० झम्मूमलजी द्वारा ला० मुद्रामलजी ,,
१) ला० ठाकुरदासजी ,,
१) ला० धनीरामजी ,,
२) ला० कल्लूमलजी ,,
१।) मा० श्रीरामजी चीरेखाना ,,
१) ला० जौहरीमलजी चितली दरवाजा,,
१) बा० तुलसीदासजी अकाउण्टैंड पंजाब नैशनल बैंक ,,
४) ला० छोगामलजी राठी ,,
१) ला० मुदरामलजी ,,
३०) बीबी कलावती द्वारा शेरसिंहजी रईस कशमीरी दरवाज़ा ,,
४) ला० पूरणचन्दजी गन्धीगली ,,
२) ला० रामकिशनजी चांदनी चौक ,,
४) ला० भगवानदास परमेश्वरीदासजी कटड़ा कुतबुद्दीन देहली
२) ला० मोतीरामजी खन्ना
५) सेठ लक्ष्मीरामजी द्वारा दीनदयालजी कटड़ा अशरफ़ी देहली
२) ला० चोखाराम आशानन्दजी द्वारा ला० मुदरामलजी
२) दामोदरदासजी द्वारा मुदरामलजी ,,
२) मुदरामलजी हाबीशखां का फाटक ,,
५) रामचन्द्र गोपीचन्दजी द्वारा लाला मुदरामलजी ,,
५) रामनरायणजी कल्लूमलजी द्वारा लाला मुदरामलजी ,,
५) उगरावसिंहजी लक्ष्मणसिंहजी द्वारा लाला मुदरामलजी देहली
३) अमीचन्दजी कर्क बैंक अलाहबाद ,,
१) डाक्टर हरबंशगोपालजी देहली द्वारा बा० अन्तरामजी ,,
५।॥ बा० सूर्यनरायणजी की माता छीटा छीपीबाड़ा देहली लोटा १ कटोरा १ डुपट्टा १ गेहूं ॥५४
२) फतेहसिंहजी द्वारा शिवचरणदासजी व प० उमाशंकरजी देहली

नामावली उन दाताओं की जिन्हों ने महाशय मुरलीधरजी गायक द्वारा सहायता की।

४) श्रीयुक्त ठा० रणजीतसिंहजी साहब मुकाम जामोला
२०)॥ श्रीयुक्त ठा० मोडासिंहजी जामोला

१) गुलाबचन्दजी कोठारी
१) छोटामलजी बंबे जामोला
१) भूरामल माली ,,
१) गुमदान ,,
।) चांदमलजी रंगलालजी डूंगरमल जामोला
॥) हजारीमलजी कोठारी ,,
।) सुजाणमलजी ,, ,,
।) कल्याणमलजी ,, ,,
।) भीवराजजी महता ,,
।) कजोड़ीमलजी ,, ,,
।) चान्दमलजी मंडिया ,,
।) सूरजमलजी चूणीवाल ,,
।) तेजमलजी कोठारी ,,
=) नन्दरामजी मंडिया ,,
=) छगनमलजी महता ,,
।) लालूरामजी माली ,,
=) हीरालालजी महता ,,
।) मगनीरामजी दरजी ,,
।) बालूरामजी माली ,,
=) हीरालालजी महता ,,
।) मगनीरामजी दर्जी ,,
।) सुवालालजी नाई ,,
।≡) किसनाजी तेली ,,
=) केसरजी सलावट ,,
=)॥। केसर विधवा ,,
=) हरदेवजी भारती गुसांई
=) हमीरजी तेली ,,
।=) सुगनमलजी कोठारी ,,

=) भीमराजजी दरजी जामोला
=) धनराजजी सेवग ,,
–) भूगलालजी दरोगा ,,
।) केसरसिंहजी सांखला ,,
=) सुवाई नायक ,,
=) हमीरो नायक ,,
–) कजोड़ नायक ,,
=॥) गंगापुत्री महाराम भांवीकी ,,
।) रामो चमार ,,
।) विष्णु नन्दराम दास साधु ,,
॥=) तुलसीदासजी साधू कानपुरा
५॥=) पंचायती चन्दा
१) जुगला बनिया जैल मथुरा
।) ठा० धर्म्मसिंहजी ,, ,,
११) बा० मंगलसिंहजी वैश्य भरतपुर
१) ला० सुन्दरलालजी ,, ,,
८॥) ला० भीमराजजी गूजर मोहल्ला अजमेर
१६) मंत्रीजी आर्य्यसमाज कानपुर

द्वारा पं० जयदेवजी सु० द० अ० के भ्रमण में एकत्रित हुए:—

४) बा० जुगलकिशोरजी तहसीलदार चाटसू
१) धर्म्मपत्नी बा० उमरावसिंहजी स्टेशन मास्टर रानी
१०) पं० रामकुमारजी तहसीलदार बोनली

१) पं० रामनरायणजी दीक्षित चाटसू
१) रामनरायणजी चौकीदार ,,
।) पं० रामचन्द्रजी हेडमास्टर ,,
॥) हरसहायजी ,,
१) गंगाप्रसादजी ,,
१) पं० रामेश्वरजी ,,
॥=)॥। मा० गोवरधनजी ,,
=) पं० शिवनाथजी ,,
१) बा० छेदालालजी ,,
-) पं० शिवबख्शजी ,,
॥) वृन्दावनजी
=)॥ ला० प्रभूदयालजी ,,
॥) बा० मिट्ठनलालजी
१) अटलविहारीलालजी

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने पं० रामानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा सहायता की।

१) बा० कबूलसिंहजी वकील कैराना जि० मुज़फ़्फ़रनगर
१) चौधरी माड़ूसिंहजी हैदरनगर
१) चौधरी छज्जूसिंहजी बनेड़ाजट
१) चौधरी रूपरामजी बनत
१) चौधरी जगतसिंहजी खरड
१) चौधरी दलवतसिंहजी लोंक
१) चौबे रोड़ासिंहजी बनेड़ाजट
१) चौधरी मागराजसिंहजी सामली
१) चौबे निहालसिंहजी लांक
१) चौबे उगरावसिंहजी पलग
१) चौबे हांशियारसिंहजी कुड़ाना
१) चौबे भोलासिंहजी खेड़ीपट्टी
१) चौबे गांडेसिंहजी ,,
ला० नथमलदासजी जैनी कैराना
टोपी दो, बटन आधा दर्जन, कापी दो.
ला० प्यारेलाल जयदयालमलजी कैराना
कोट १, जाकट १, अंगरखी १.
१) मंत्री सनातनधर्म प्र० सभा ,,
॥) मुंशी भवानीप्रसादजी मुहर्रिर ,,
॥) मुं० बलवन्तसहायजी ,,
।) रामचन्द्रसहायजी आढ़तिया ,,
१) बा० बद्रीप्रसादजी वकील ,,
=) बनारसीदासजी स्वर्णकार ,,
२) मुं० बाबूरामजी प्रधान आ० स० ,,
तथा १ धोती जोड़ा
॥) महाशय आसारामजी ,,
१) मुंशी झंडूसिंहजी ,,
=) विश्वेश्वरदयालजी ,,
।) महाशय हरवंशलालजी
।) महाशय हरवंशलालजी ,,
॥) महाशय होशियारसिंहजी ,,
।) महाशय फकीरचन्दजी ,,
।) महाशय तोफारामजी ,,
॥) महाशय जीवनरामजी ,,
।) महाशय मुसद्दीरामजी कैराना जि० मुज़फ़्फ़रनगर
२) मुन्शी रामचन्द्रसहायजी कानूगो ,,
॥) महाशय परमानन्दजी ,,

॥) महाशय हरनन्दलालजी कैराना जि॰ मुजफ्फरनगर
॥) महाशय जगन्नाथप्रसादजी ,, ,,
॥) महाशय रोड़ीमलजी ,, ,,
॥) महाशय भजनलालजी ,, ,,
२) बा॰ मिट्ठनलालजी ,, ,,
१) बा॰ ज्वालाप्रसादजी नाजिर ,, ,,
१) पं॰ मुरलीधरजी पटवारी करौंदा,, ,,
१) धर्म्मपत्नी पं॰ बनवारीलालजी कैराना,,
।) ला॰ प्यारेलालजी आर्य्य ,, ,,
॥) मुन्शी खुशीरामजी ,, ,,
।) पं॰ बल्लेरामजी ,, ,,
॥) ला॰ कपूरचन्दजी ,, ,,
५) माता बा॰ गुरुचरणदासजी वकील,,
३॥≈)॥। कुछ स्त्रियां मार्फत माता बा॰ गुरुचरणदासजी कैराना जि॰ मुज़. नग.
॥) डाक्टर बृजनरायणजी शर्मा ,,
१) सब रजिस्ट्रारसाहब तहसील ,,
≈) मुरलीमलजी बल्देवसहायजी ,,
≈) गुप्तदान एक वैश्य ,,
४)१ श्रीमती दुर्गाकुंवर लेडीडाक्टर ,,
।) गुप्तदान एक जैनी ,,
।) गुप्तदान ,, ,,
।) ला॰ हरवंशलालजी अत्तार ,,
।) ला॰ मिट्ठनलालजी बजाज व एक रूमाल,,
≈) जुहारलाल हलवाई ,,
१) ला॰ मिहरचन्दजी चुकड़ायत कैराना,,
१) जानकीदास विशम्भरनाथजी ,, ,,
।) रामजी लालजी ,, ,,
≈) टिटेमल जानकीदासजी ,, ,,

—) संतलालजी पंसारी कैराना जि॰ मुज़फ्फ॰
≈) रहतूलाल मुसद्दीलालजी ,, ,,
ला॰ कबूल एक रुमाल ,, ,,
≈) लाला रुड़ीमलजी ,, ,,
—)॥ ला॰ ज्योतीप्रसादजी हलवाई ,, ,,
≈) ला॰ बूमीमलजी ,, ,,
।) ला॰ किशोरीलालजी ,, ,,
१) चौधरी गंगारामजी मौजा भीकी ,,
१) बा॰ प्यारेलालजी सब ओवरसियर शामली
१) बा॰ बंशीधरजी देहली
१) महाशय रामजीदासजी ,,
१) बा॰ रामचन्द्रजी ,,
१) ला॰ घासीरामजी ,,
१) ला॰ जियारामजी ,,
।) ला॰ प्रभुदयालजी ,,
≈) महाशय लालताप्रसादजी ,,
१) ला॰ शम्भुदयालजी ,,
१) उमरावसिंहजी वर्मा कूंचाघासीराम ,,
सेठ मांगीलालजी तीन पुस्तक भाषापिंगल नीमच
१॥) पं॰ आशादत्तजी विदकी
॥।) पं॰ शिवधनजी मिश्र बिलग्राम
१॥) धर्म्मपत्नी राय ज्वालाप्रसादजी लखनऊ
।) मंत्रीजी आर्य्यसमाज मल्लावां
२) बा॰ केशवचन्द्रजी फ़तहगढ़

१) पं० सूर्य्यप्रसादजी आर्य्य रायबरेली
१) ठाकुर माधोसिंहजी माधोगंज
=) भारतसिंहजी राजपूत ब्यावर
।) ला० कालूरामजी धूत ,,
१) थानेदार कालिकाचरणसिंहजी ,,
॥) महाशय चिरंजीलालजी ,,
।) ला० मूलचन्दजी धूत ,,
४) पं० मांगीलालजी दारोगा चुंगी ,,
१) पं० नौरंगरायजी शर्म्मा ,,
॥) पं० कन्हैयालालजी ,,
३) मैनेजर औघड़रामजी ,,
१) बा० विश्वेश्वरदयालजी ,,
॥) बा० हरीरामजी ,,
=) महाशय भोलारामजी ,,
।) सेठ चौथमलजी गुप्त ,,
=) गुप्तदान ,,
२) गुप्तदान ,,
४) बा० महाराजस्वरूपजी तहसीलदार ,,
।) गुप्तदान भोजनार्थ ,,
१) बा० हीरालालजी ,,
१) जमादार जगमाल गुप्त ,,
१) सेठ बालूराम बोदूरामजी ,,
१) ला० लक्ष्मीनारायणजी ,,
।) उमरावसिंहजी लोढ़ा ,,
॥) लालचन्दजी लोढ़ा ,,
१) सेठ चम्पालाल मांगीलालजी ,,
१॥) पूनमचन्दजी लालचन्दजी स्वर्णकार,,
२) महाशय बालूरामजी चूनपुज़ ,,
१) ला० भगवानदासजी ,,

।) महाशय दीपचन्दजी ब्यावर
१) पं० गुलजारीलालजी शर्म्मा स्कॉट-निवासी ,,
५) सेठ बालचन्दजी अगरचन्दजी ,,
१) गुप्तदान ,,
१) सेठ पन्नालाल चुन्नीलालजी ,,
१) सेठ ओटरमल चतुर्भुजजी ,,
।) अमरचन्द हरीरामजी ,,
१) पं० मोहनलालजी हेडमास्टर सनातन धर्म्मस्कूल ,,
१) पं० गयाप्रसादजी मास्टर ,,
१) सेठ नवलराम मंगनीरामजी ,,
५) रामगोपाल रामस्वरूपजी ,,
२) धूलचन्दजी कालूरामजी ,,
२) करोड़ीमलजी बालमुकन्दजी ,,
२) खूबीरामजी जैलालजी ,,
२) जोतराम केदारनाथजी ,,
१) गाढ़मल मगनमलजी ,,
॥) धूलचन्दजी नथमलजी ओसवाल ,,
॥) महाशय नाथूजी ,,
१) रामनाथजी स्वर्णकार ,,
१) मथुरादासजी ,, ,,
१) बा० छोगालालजी डिप्टी इन्स्पेक्टर ,,
१) सूर्य्यराजजी वकील मारवाड़ ,,
२) शिवदयालजी रूडमलजी ,,
=) बा० छगनलालजी ,,
॥) पं० रामनरायणजी शर्म्मा ,,
२) देवकरणदास रामकुमारजी ,,

।) नन्दरामजी जड़िया	ब्यावर	।) रड़मलदानजी	खरवा
॥) जीवराजजी पोखार	,,	१) तेजमलजी नाहर	,,
१) हेतराज जेठमलजी	,,	५) रानमलजी गांदी	,,
१) पं० विहारीलालजी भार्गव बी. ए. एल. एल. बी. वकील	,,	=) घीसूजी खाती	,,
		॥) नारायणजी खाती	,,
२) पं० लक्ष्मीनरायणजी वकील प्रधान सनातनधर्मसभा.	,,	१) सूर्यनारायणसिंहजी	,,
		=) पूसालालजी ब्राह्मण	,,
॥) अम्बालालजी शाकलद्वीपी	,,	१) पं० सांवलरामजी	,,
।) पं० ओंकारशर्माजी	,,	॥) बालाबख्शजी चपरासी	,,
१) सेठ लक्ष्मणजी युगलकिशोरजी	,,	।) गांगीलालजी पोस्टमैन	,,
॥) महाशय नथमलजी चोरड़िया	,,	।) गणेश नाई	,,
।) मोतीलालजी कोठारी	,,	।) पं० हरिशंकरजी	,,
१) नाथूरामजी मिस्तरी	,,	१) चौथमलजी दावतप	,,
१) सेठ कालूराम पूसामलजी	,,	१) मूलचन्दजी देड़िया	,,
१) सेठ फूलचन्दजी	,,	॥) कजोड़ीमलजी बोगावत	,,
२) सेठ बख्तावरमल वृद्धिचन्दजी	,,	≈) कनकमलजी	,,
४) महाशय नन्दलालजी स्वर्णकार	,,	=) मोडूलालजी पदावत	,,
१) महाशय मंगलसिंहजी	,,	=) कुन्दनमलजी सरावगी	,,
२५) दी कृष्णामिल्स लिमिटेड	,,	।) जेठमलजी बंट	,,
।) गुप्तदान	,,	।) शंकरजी ब्राह्मण	,,
१) पं० मदनलालजी क्लर्क रेलवे	,,	॥) बालचन्दजी पदावत	,,
१) सेठ नौंदराय जयनाथजी	,,	=) केसरीमलजी बंठ	,,
।) बख्तावरमल पूनमचन्दजी	,,	१) सूवालालजी चोरड़िया	,,
१) ठाकुर मोरासिंहजी कीढ़ी	खरवा	=) जवाहरमलजी पदावत	,,
१) मुंडेत हरिसिंहजी	,,	।) मंगनमलजी	,,
२) मुंशी मुरलीधरजी	,,	।) जीवनमलजी डूंगरमलजी	,,
२) पं० लक्ष्मणसिंहजी मास्टर	,,	॥) बद्रीजी ब्राह्मण	,,
।) महाशय कृष्णलालजी	,,	२) मुहरसिंहजी पुरोहित	,,

॥) लक्ष्मीनरायणजी पुरोहित	खरवा	१) पं० गौरीलालजी मास्टर विड़गच्च्यावास	
।) घोड़ा दारोगा	,,	=) जयचन्दजी हवालदार	,,
॥।) चांदमलजी पदावत	,,	=) विद्यार्थी रामकृष्णजी	,,
१) मिश्रीलालजी	,,	धर्मपत्नी पं० रामचन्द्रजी अध्यापक	,,
२) महाशयनारायणजी	,,	एक थालीपीतल की मूल्य !)	,,
॥।) ,,	,,	।) महाशय जवाहरमलजी	,,
१) पं० रामचन्द्रजी अध्यापक विड़कच्यावास		।) भागीरथजी इनांणी	,,
?) पटेल सूर्य्यमलजी	,,	।) भूरामलजी विद्यार्थी	,,

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्हों ने मास मार्च सन् १६११ में वस्तुदान देकर सहायता दी ॥

द्वारा मन्त्री जी द० अ० डाकद्वारा पाजामा १ कमीज़ २ दुपट्टे जनाने २ धर्म्मादा रविवार अजमेर गेहूं जौ का आटा मिलाहुआ ।ऽ४ गेहूं जौ मिले ऽ८ भूसी रोटी ऽ१॥

सेठ लादूरामजी केसरगंज अजमेर गूंदा हुआ आटा ऽ७.

श्रीमती भगनीजी बा० हरिशंकर रविशंकरजी अजमेर लँहगे ४ ओढ़नी ४ कांचली ४.

श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी मिस्त्राणी विधवा—आश्रम अजमेर एक गाय बछिया सहित.

श्रीमती भूरी मालिन द्वारा कान्हा अनाथ अजमेर मोगरी ऽ८ शाक को.

पं० हमीरमलजी अजमेर बेर ।ऽ॥.

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिश्रित आटा ।ऽ६॥ जौ मिश्रित ऽ७ बाजरा ऽ॥।. रोटी ऽ१॥ चने भुने ऽ-.

बा० सर्व्तासिंहजी केसरगंज अजमेर एक अनाथ को भोजन.

बा० चोखामलजी मोची मोहल्ला अजमेर गूंजे पपड़ी ऽ?.

पं० हरिश्चन्द्रजी मैनेजर वैदिक—यन्त्रालय अजमेर एक कन्या को भोजन कराया.

चान्दूमलजी भूतपूर्व चौकीदार द० आ० अजमेर लड्डू ऽ२॥ चने ऽ॥.

माधो प्रसादजी मदारदरवाज़ा अजमेर मिठाई ऽ।। १) रुपये की.

चौधरी रामकृष्णजी रईस देवबन्धू फली केला संतरा आदि ४) रुपये के.

धर्म्मपत्नी पं० नथमलजी तिवाड़ी अजमेर गुड़ ऽ१ चने की दाल ऽ१।.

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिश्रित आटा ।)३।। मिश्रित अन्न ऽ४॥≈. घृत ऽ०॥ भूसी रोटी ऽ३.

बा० मथुराप्रसादजी अहाता मोहल्ला अजमेर गेहूं ऽ३ जौ ऽ२ ठाठे २.

मुन्नालालजी तोपखानेवाले अजमेर २ लड़कों को भोजन.

धर्म्मपत्नी मांगीलालजी द्वारा प्रधाना स्त्रीसमाज अजमेर मिठाई ऽ३।- २) की.

माताजी बा० मोतीलालजी द्वारा प्रधाना स्त्रीसमाज अजमेर कांचली मलमल की १.

बा० खुशलालजी एसिस्टेन्टस्टेशन मास्टर द्वारा छोटेलालजी नसीराबाद घास गौओं को २) की मिठाई लड़के लड़कियों को ऽ५।। सेर २) रुपये की.

बा० महेशस्वरूपजी आर्य्य० भरतपुर धोती ४ टुकड़े कपड़े ३ टोपी १० टोपे २ पतलून ४ पजामे ९ कोट १५ कुड़ते २१ बंडी ८ बनियान २ तकिया १ गेंद खेलने का बल्ला १ मोजा १ जोड़ी गिलास बच्चों के ३ छोटे कटोरे ३ छोटी बच्चों की ब्रच जड़ाऊ पीतल का १ तस्तरी छोटी १ खिलौने टीन के २ बाजा १ बोरे २ चक्की १ बेंगन काष्ठ का १ डिब्बी टीन की २ घड़ी खिलौना १ चम्मच १ बटन कमीज़ के ३ खिलौने चीनी के २ पैसे गवालियर के २३.

मन्त्री आर्य्यसमाज अजमेर लड्डू ऽ२॥.

पं० जयदेवजी शर्मा द्वारा अजमेर जलेबी ऽ१ ३) की.

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्हों ने मास अप्रेल सन् १९११ में वस्तुदान देकर सहायता दी ॥

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिश्रित आटा ।) मिश्रित अन्न ऽ४ चने की दाल ऽ।। भूसीरोटी ऽ४॥.

मन्त्री आर्य्यसमाज अजमेर लड्डू ऽ७

पं० ब्रह्मदत्तजी द्वारा लाखनकोठरी अजमेर ज्वार की फूली ऽ२ पापड़ी ऽ१.

धर्म्मपत्नी पं० नथमलजी तिवाड़ी अजमेर खिचड़ी ऽ२॥.

महाशय टीकारामजी नवाब का बेड़ा अजमेर ७ लड़की ४ लड़कों को भोजन दिया.

महाशय रामनाथजी तेलीवाड़ा अजमेर खल ऽ६ गौओं को.

महाशय धन्नालालजी तेलीवाड़ा अजमेर खल ऽ३ गौओं को.

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिश्रित आटा ।)४ मोठ की दाल ऽ।।≈ गेहूं ऽ१। जौ ऽ१।।। भूसी रोटी ऽ२।।.

पं० गंगासहायजी द्वारा देहली बन्डी ६ पगड़ी १ कपड़ा गज १।। अगरखी बच्चों की २ पजामा छोटा १ कोट २ घाघरी २ लुगड़ी २ आंगी २ धर्म्मरत्नावली पुस्तक ४ स्त्रीज्ञानमाला पुस्तक ३ गायत्रीमंत्र के पाने ५.० ओ३म् के पाने ४५ ।

गुप्तदान द्वारा पं० शंकरजी गुरु जयपुर कुर्ते ४० ।

बा० सरूतसिंहजी केसरगंज अजमेर आटा ऽ।। दाल मूंग ऽ’

गुप्त दान द्वारा बा० लक्ष्मीनारायणजी स्टेशन अजमेर टोपी गोल पुरानी २३ दूध पिलाने की शीशी १.

बा० ईश्वरीप्रसादजी केसरगंज अजमेर जलेबी ऽ२।।। १) की.

बा० पूरणचन्दजी केसरगंज अजमेर एक बालक तथा बालिका को भोजन.

बाबूलालजी टिकटकलेक्टर अजमेर घड़े २ डोरी सूत की १ पानी छानने का अंगोछा १.

धर्म्मादा रविवार अजमेर मिश्रित आटा ।ऽ१ भूसीरोटी ऽ७ जौ ऽ४।।। मीठा तेल ऽ१ गुड़ ऽ१।।।≈.

मा० उदयरामजी गूजर मोहल्ला अजमेर सब कन्याओं को भोजन दिया.

बा० कल्याणसिंहजी अजमेर २ लड़के तथा २ लड़कियों को भोजन दिया.

पं० गंगासहायजी उपदेशक द० अ० द्वारा लूगड़ी गोटेदार १ कटोरी १ टुकड़े मलमल के २.

बा० हरनरायणजी गवालियर निवासी जलेबी १) की ऽ२।।।-

धर्म्मादा रविवार अजमेर भूसी रोटी ऽ४।।। मिश्रित अन्न ऽ५। मिश्रित आटा ।ऽ१।। उड़द की दाल ऽ।≈

ला० कपूरचन्दजी केसरगंज अजमेर चने भुने ऽ३.

बा० गवाचरणसिंहजी हेडमास्टर डी. ए. वी. हाईस्कूल अजमेर पजामा १ कोट १ साफे २

ठाकुर गिरवरसिंहजी सब डिप्टीइन्सपेक्टर तिलहर बालक बालिकाओं के लिये खिरनी ॥ऽ २) की.

बा० बंशीलालजी नायब जेलर अजमेर दूध ऽ८। सेर १) का, शक्कर ऽ॥= भर।) की दूध में, पेड़े ऽ१॥= १) के.

भंगीमलजी द्वारा भजनलाल अनाथ अजमेर दूध ।)५, चावल ऽ॥=, बूरा ऽ१=.

पं० हरविलासजी द्वारा पं० करुणानन्दजी अजमेर ऽ५ जौ गौओं को.

बा० रामेश्वरप्रसादजी के पुत्र द्वारा बा० ईश्वरीप्रसादजी अजमेर पुड़ी ऽ४ १) की.

पं० गंगासहायजी उपदेशक द० अ० अजमेर ओढ़नी २, कांचली ३, लहंगा १.

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने ला० श्यामलालजी बज़ाज पूनाहाना ज़िला गुड़गावां द्वारा दान भेजकर सहायता दी ॥

२॥) ला० छज्जूमल गिरवरमलजी
॥) ला० सरसारियामलजी
।) रामनरायण प्रतपाजी
१।) सकटूमलजी चौधरी
=) भक्त रामलालजी
।) ला० रामचन्द्र जैनरायणजी
।) जीवनराम मनोरीमलजी
।) रामसुखदास कन्हैयालालजी
।) मुन्शी रामदयाल श्यामलालजी बजाज
=) रामस्वरूपजी करकली
=) मूर्यामलजी शाहूकार
=) जगन्नाथजी
=) कन्हैयालालजी देहली
=) भक्त रामदयालजी
-) प्रभाती रामगोपालजी
-) रामस्वरूप रोशनलालजी
-) गोकुलजी बजाज
-) छज्जूमल प्रभुदयालजी
-) नन्दलालजी गोल
-) जौहरीजी परना
-) पूरनजी बजाज
-) शिवलाल दुलारामजी
-) गिरवरजी पसारी
-) रामचन्द्रजी जौहरी
।) रामचन्द्रजी पटवारी

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने नथीमलजी पसारी कोसी ज़िला मथुरा द्वारा दान भेजकर सहायता दी ॥

॥) नत्थीमल गयालालजी
।) छोटेलाल गोकलचन्दजी
।) ठाकुरदास हीरालालजी

=) केसरीप्रसाद ब्रजलालजी
=) रामदास जगन्नाथजी
≡) तुलसीरामजी
।) गीराजजी
=) किशोरीलालजी
=) रामचन्द्रजी
-) बुद्धामलजी
=) लेखराज प्यारेलालजी
।) जौहरीजी हलवाई
-) मक्खनजी हलवाई
=) छोटेलालजी मुजवाल
=) घीसामल गोकुलमलजी
=) पूरणमलजी
।) नरायणप्रसादजी
=) थानामल वखेरीचाजी
=) सेढूमलजी
=) मुरलीधरजी
=) बालकिशनजी
।) किशनलालजी
।) धरनीधरजी वैद्य
।) जगन्नाथजी

मासिक चंदा स्थानिक ॥

२) बा० विशम्भरनाथजी बी. ए. एल. एल. बी वकील अजमेर
२) मि० शोराबजी दादा भाई वकील अजमेर
॥) मि० धनपतप्रसादजी वकील ,,
१) पं० वंशीधरजी शर्म्मा वकील ,,
१) बा० जवाहरलालजी जेलर ,,

१) मुं० देवीदयालजी भार्गव अजमेर
-) ला० छीतरमलजी ,,
॥) बा० रणजीतसिंहजी
॥) बा० रघुबीरसिंहजी
।) बा० नवलकिशोरजी
।) ला० घनश्यामजी
।) बा० ईश्वरीप्रसादजी
=) जगन्नाथजी
=) माधोप्रसादजी
=) हरदेवलालजी
=) मनीलाल गोपालजी
।) रामसहायजी
=) पं० लक्ष्मीनरायणजी
-) कन्हैयालालजी
।) डा० ओ० एम० खांडवाला
।) सेठ उस्मानजी एण्ड सन्स
-) उस्मान एण्ड को०
।) पं० लक्ष्मीनारायणजी
१) गुलाबरायजी वर्म्मा
१) बा० पुरुषोत्तमजी
।) ला० चैनसुखजी मुनीम
॥) महाशय रामधनजी
=) फूलचंदजी सुनार
=) बा० रामसिंहजी
१) बा० मिट्ठनलालजी वकील
१) मि० विभूतीभूषणजी
१) बा० बनवारीलालजी
१) पं० जी. आर. खांडेकरजी

-) धर्मपत्नी विलासरायजी अजमेर

नामावली उन दाताओं की जिन्हों ने मास अप्रेल १९११ में सहायता दी।

१) साहू श्यामलालजी कस्बा बैजोई ज़ि० मुरादाबाद
२) ज़ोने दलीपजी आर्य्य मुक़ाम दाहा डाकखाना व ज़िला मेरठ
२) गंगाप्रसादजी मंत्री आ०स०ग़ाज़ियाबाद
४) जगदीशसहायजी माथुर प्रतापगढ़ (मालवा) मासिकचन्दा
१८१।।।≈)।।। श्रीमान् रावसाहब गोपाल सिंहजी खरवा
१०) पं रामकुंवारजी तहसीलदार चाकसू मार्फ़त शिवबख्शजी सरिश्तेदार जयपुर मासिकचंदा
१३) सेठ बिशनलालजी पुलगांव बर्द्धा
१) पं० रामचन्द्रजी व्यास शाहपुरा
॥) रामपालजी भारद्वाज
।) पं० श्रीनिवासजी व्यास शाहपुरा
=) पं० वंशीधरजी शर्म्मा वकील
=) ला० अंगनलालजी हलवाई
=) बा० हरस्वरूपजी कायस्थ महल्ला
-) ला० किशनलालजी ,,
५०) बलदेवदास जुगलकिशोरजी वैश्य सभा कलकत्ता

१) बा० महेशदासजी अजमेर
३) मंत्री आ० स० बहसूमा ज़ि० मेरठ
१-) पं० श्याममनोहरजी शुक्ल द्वारा सन्नूलालजी गुप्त मंत्री आ० स० बुलन्दशहर
२) रावत हरप्रसादसिंहजी मौजा इकडल्ला पो० किशनपुर
५) डाक्टर श्रीरामजी एन्ड को० मार्फ़त बा० चन्दूलालजी वकील गुड़गांवा
१४।।।-) मक्खनलालजी छोटेलालजी मौजा कालामई ज़ि० आगरा मार्फ़त डा० हरचरणलालजी आगरा
१०) कालकाप्रसादजी श्रीवास्तव मक्बूलगंज लखनऊ
५) बा० ज्योतीप्रसादजी वल्द परसरामजी मु० शाहाबाद ज़ि० कर्नाल
१) बा० जगतप्रसादजी सन् आफ मु० लाडलीप्रसादजी मार्फ़त पं० ईश्वरीप्रसादजी
=) पं० वंशीधरजी शर्मा वकील
-) बा० शक्तिसिंहजी
।) पं० ब्रह्मदत्तजी
१॥=) महाशय मुरलीधरजी भजनीक द्वारा
४।।।=) भंवरलालजी कायां डाक्टर डूंगरपुर
१) दयालूरामजी सभासद् आ० स० प्रागपुर ज़ि० कांगड़ा.
५) दत्तूरामजी असिस्टेंट सर्जन

८॥)॥ बा० केशवदेवजी क्लर्क डिस्ट्रिक्ट मैनेजर्स दफ्तर जोधपुर --

५) लाडलीप्रसादजी वकील भड़ोंच

५) मथुराप्रसादजी नायब नाज़िम लदेवरा रियासत कोटा

२) छत्रपति सभासद् आ० स० मुस्तफ़ाबाद

७५) रामानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा

१) हरगोविन्दप्रसादजी प्रधान आ० स० प्रतापगढ़

१०) मुंशीरामजी सौदागर शाहाबाद ज़ि० कर्नाल

१) कन्हैयालालजी व छुट्टनलालजी पूना हाता जि० गुड़गांवां

४) डाक्टर मदनलालजी २) गौशाला २) दान

॥) बाबूलालजी टिकटकलेक्टर अजमेर

२) चिरंजीलालजी वल्द सांवलदासजी दर्जी अजमेर

१) पं० प्रभुदयालजी वकील देहली

४) बा० गौरीशंकरजी बी० ए० बैरिस्टर एटला अजमेर

३) नरसिंहनरायणजी आर्य्योपदेशक फतहपुर सीकरी

२) पारवती देवी मार्फ़त बा० बृजलालजी सभासद् आ० स० लाहौर

१५) जगन्नाथजी पत्तेवाला सब्ज़ीमंडी देहली

२) भगिनी रामप्रसादजी मुख्तार नैनीताल द्वारा रामदीनजी

१॥≈) रामसरनजी मार्फ़त मंत्री आ० स० खेड़ा डा० खा० अजीठ जिला० सहारनपुर

३) दीवानसिंहजी जानसठ ज़िला मुज़फ्फरनगर

२५) इन्द्रजीत रामजसजी चारकोमन अफ़ज़लगंज हैदराबाद

≈) पं० बंशीधरजी शर्म्मा वकील

१) आर्यकुमारसभा अजमेर

-)॥ महाशय मुरलीधरजी द्वारा

२) अयोध्याप्रसादजी स्टेशनमास्टर डलवाड़ा ग्वालियर स्टेशन

२) गंगारामजी वर्म्मा मुन्सरिम बन्दोबस्त तहसील भादरां रियासत बीकानेर

१) छोटेलाल सीतारामजी असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर R. M. Ry. पीपलिया.

१५) डाक्टर नन्दकिशोरजी चाकसू (जयपुर)

१०) मुंशी जुगलकिशोरजी तहसीलदार चाकसू (जयपुर)

अनाथालयसम्बन्धी

मासिक रिपोर्ट ॥

मार्च के अन्त में अनाथालय में ७५ बालक और २७ बालिकाएँ कुल १०२ बच्चे

थे, एप्रिल और मई में ५ बालक तथा २ बालिकाएँ नवीन प्रविष्ट हुए और ४ बालक और २ बालिकाएँ कम हुई और मई के अन्त में घट बढ़कर ७६ बालक और २७ बालिकाएँ कुल १०३ बच्चे शेष रहे ।

विवाहार्थी नोट करलें— अब अनाथालय में कोई कन्या विवाह योग्य नहीं है इसलिये कोई महाशय विवाह के लिये प्रार्थना न करें । आवश्यकता होगी तो अनाथरक्षक द्वारा विज्ञापन दिया जावेगा ।

दानी महाशय ध्यान रक्खें— आजकल अनाथालय के दोनों उपदेशक पं० गंगासहायजी शर्म्मा तथा पं० शमानन्दजी पाठक छुट्टी पर हैं, उनकी वापसी तक आश्रमस्थ अनाथों की अपील लेकर कोई सज्जन आपकी सेवामें उपस्थित होनेवाले मौजूद नहीं हैं, अतएव यह कार्य्य भी आप को ही करना होगा अर्थात् विना मांगे अपना दान अनाथालय में भेजने की कृपा करें ।

विवाह संस्कार— अनाथालय की कन्या भूरी देवी का विवाहसंस्कार ब० विहारीलालजी गुजरात निवासी के साथ ता० ३०-५-११ को अनाथाश्रम में किया गया । आप पूर्व भी अनाथालय की कन्या गोबिन्दी देवी के साथ विवाहे गये थे, जिस का दैवयोग से स्वर्गवास होगया । आपने निम्नानुसार दान इस अवसर पर दिया:—

दयानन्द-अनाथालय १०), वेद प्रचार राजस्थान ४), गुरुकुल कांगड़ी ४), महाविद्यालय ज्वालापुर ४), वेदप्रचार मुजफ्फरगढ़ ४), अनाथालय मुजफ्फरगढ़ ४), पुत्रीपाठशाला अजमेर १), दक्षिणा २)

ता० १-६-११ को समस्त बच्चों को आपकी ओर से विशेष भोजन दिया गया । अनाथालय की सहायता में ६) वार्षिक देने की प्रतिज्ञा की है (पूर्व आप ६) वार्षिक देते थे) परमात्मा आपको धर्म्मपूर्वक गृहस्थसुख भोगने के लिये सामर्थ्य प्रदान करें ।

अनाथरक्षा के प्रेमी—ध्यान पूर्वक पढ़ें कि देश के दुर्भाग्य और अनुचित जातिबन्धनों के कारण छोटे से छोटे अनेक बालक (जिनके फूल की भान्ति विकसित चेहरे देखकर भूख भागती है) आए दिन अनाथालय में प्रविष्ट होते रहते हैं, परन्तु अत्यन्त दुःख के साथ प्रकट करना पड़ता है कि उनमें से बहुत कम को अनाथालय जीवित रखने में कृतकार्य्य होसकता है, इसका कारण यह नहीं कि अधिकारी जन अपनी करनी में कसर करते हैं, वह अपने कर्त्तव्यपालन में यथाशक्ति

त्रुटि नहीं करते लेकिन वह प्रयत्न करने पर भी दुर्दर्शक माताओं को प्राप्त नहीं कर सकते। जिन सौभाग्यवान सज्जनों के घरों में सन्तान उपस्थित हैं उनसे छुपा नहीं कि बालकों की पालना किस कठिनाई से कितने परिश्रम के साथ हो सकती है, जिस घर में एक बच्चा होगया सारा घर उस की टहल के लिये मानो वचन हारगया, ऐसी दशा में जब कई २ बालकों के लिये एक स्त्री भी मातृस्नेह के साथ रक्षक न हो, रक्षा की आशा किस प्रकार फलवती हो सकती है ? ।

अपने पाठकों से कई वार प्रार्थना कर चुके हैं कि यदि वे ध्यान रक्खें तो उन्हें ऐसी स्त्रियों का मिलना असम्भव नहीं जो स्वयं भी सहायता की अधिकारिणी हों ॥ अनाथालय के लिये भी बहुत उपकारी और ... वह्द ... सिद्ध हों। सभा उनके पूरा वेतन आदि देने को तय्यार है। आशा है कि अनाथहितैषी अवश्य सहायता करेंगे।

विशेष भोजन—बा० जोरावरमलजी कायस्थ मुहल्ला अजमेर ने अपने एक मित्र को (जिनका नाम याद नहीं रहा-) प्रेरणा की कि वह अनाथ बच्चों को अपने घर निमन्त्रित करें, जिस पर उन्होंने ता० ३-६-११ को समस्त आश्रम निवासी बालक बालिकाओं को अह्वान कर के विशेष भोजन कराया।

यदि अजमेर निवासी अन्य सज्जन भी बा० जोरावरमलजी का अनुकरण करें तो अनाथरक्षा का कार्य बहुत हलका हो सकता है।

विविध वार्ता ॥

मुसल्मानों की जागृती—अपने सहवासी मुसल्मान भाइयों की उत्तरोत्तर उन्नत अवस्था को देखकर हमें बड़ा आनन्द होता है। परमात्मा हमारे भाइयों को विद्या और शिक्षा के निकटतर पहुंचने में सहायकारी हों और उन्हें सिखलादें कि:—

"दिल वदस्त आवर
कि हज्जे अकबरस्त"।

हिन्दुओं की मति—लोग कहा करते हैं कि पिछली रोटी खाने से पीछे मति आती है, पर क्या खबर हमारे हिंदू-भाइयों को पीछे भी रोटी मिली या नहीं? क्योंकि इनको आगे पीछे किसी समय बुद्धि आती नजर नहीं आती। सर आगाखां की कक्ष्र आजकल समाचारपत्रों में गूंज रही है हिन्दुस्थान लोहारी ने उसके जो हालात पबलिक को खोलकर दिखलाए हैं बड़े भयानक हैं।

कहां एक मुसल्मान कि जिसके साथ से भी पक्के हिन्दू को छूत लगजाती थी

और कहां उसी को सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का अवतार मानकर सर्वस्व अर्पण कर मोक्षप्राप्ति का साधन ?, आश्चर्य यह है कि सब कुछ प्रकट होजाने पर भी इनके कान पर जूं नहीं रेंगती।

मुसल्मान सर आगाखां को अपना अगुवा मान सकते हैं या नहीं (जब कि वह मनुष्यपूजा ही नहीं स्वयं खुदा बनने का जीवित उदाहरण उपस्थित करता है) इसका उत्तर मुसल्मान भाई आप देंगे लेकिन हम अपने हिंदू भाइयों से सविनय प्रार्थना करते हैं कि वह अपने पांव के नीचे की पृथिवी का पोलापन गहरी दृष्टि से अवलोकन करें।

भावी विश्वविद्यालय—मुसल्मि विश्वविद्यालय के नेता सर आगाखां साहिब कदाचित् पर्याप्त चंदा एकत्रित कर राजराजेश्वर महाराज श्रीजार्जपंचम के राज्याभिषेक में सम्मिलितार्थ लन्दन पहुंच गए हैं और आशा कीजाती है कि उक्त शुभ अवसर पर आप किसी और उपाधि से अलंकृत हो जावेंगे, इधर हिन्दू विश्वविद्यालय के लिये भी माननीय पं० श्रीमदनमोहनजी मालवीय ने कार्य्यारम्भ करदिया है, उसके लिये २१ मई १९११ ई० को लखीमपुर (अवध) में विशेष उत्सव हुआ, जिसमें निम्नानुसार चंदा लिखा गया—

१२०००) राजासाहिब महिवास
१५०००) रानीसाहिबा खैरीगढ़
७०००) राजा रघुवीरसिंह व मंगलसिंह झड़ियाधीश
५०००) निमहासन निवासी
२०००) सेठ तुलसीराम दुनियाराम
१०००) पं० संखताप्रसादजी बाजपेई
१०००) कुंवर खुशबख्तरायजी
१०००) सरदार हुकमसिंहजी

४४०००) योग

इसके सिवाय चार आदमियों ने ४–४ सौ रुपये देने की प्रतिज्ञा की, लखीमपुर हाईस्कूल के विद्यार्थियोंने २००) रु० दिये और खेड़ी निवासियों ने एक लक्ष पूरा करदेने का प्रण किया है।

मिसेज़ एनीबेसेन्ट के विश्वविद्यालय से मिलाप नहीं हो सकता, यह तो लगभग तय ही होगया है।

आर्य्यों को यही करना चाहिये—प्लेग ने जिस बेदर्दी से देश पर आक्रमण कर रक्खा है कदाचित् कोई सौभाग्यशील भारतवासी उससे अनभिज्ञ हो, लाखों मनुष्य साप्ताहिक इस पिशाच रोग के ग्रास हो रहे हैं, इसका सन्देह होते ही तीन तेरह होजाते हैं, चारों ओर हाहाकार मचजाता है, कोई किसी को नहीं पूंछता, ऐसे आपत्तिकाल में जो ज़रा धीरज बंधाए, सेवा करे, औषध दिलाए उसके

लिये रोग से मुक्त हुए प्राणियों के मुख से जो आशीर्वाद निकलता होगा उसका अनुभव प्रत्येक को हो सकता है ।

अबोहर के आर्य्यसामाजिक भाइयों ने ऐसे समय पर जब कि अबोहर में प्लेग प्रकोप के कारण अंधेर मचा हुआ था जो सेवा हिन्दू तथा मुसलमान तक विपद्-ग्रस्त ग्राम निवासियों की की, वह आर्य्य भाइयों के लिये अनुकरणीय है । उन्होंने न केवल रोगियों की सेवा ही की प्रत्युत यथोचित औषध आदि का प्रबन्ध भी मुफ्त कराया और मृत्युप्राप्त जनों के लिये सब प्रबन्ध कराते रहे । जिन भाइयों ने इस अवसर पर कार्य्य करके आर्य्यत्व का परिचय दिया है उनके नाम ये हैं:—

१—पं० गंगादत्तजी शर्म्मा उपदेशक
२—महाशय जीवनानन्दजी
३—महाशय सुन्दरलालजी
४—महाशय ईश्वरदासजी
५—महाशय कर्म्मचंदजी
६—महाशय देवीदयालजी
७—महाशय शेरसिंहजी
८—महाशय तुलारामजी
९—महाशय गुरुदत्तसिंहजी
१०—महाशय कादररामजी
११—महाशय कर्म्मचंदजी

परमात्मा ऐसे भाइयों के बल और उत्साह में वृद्धि करें और अन्य आर्य्य जनों को उनसे शिक्षा प्राप्त करावे ।

हर्ष की बात है—कि नवाज़ अली कान्स्टेबिल आर्य्य का लड़का श्रीमद्दयानन्द अनाथालय आगरे को मिल गया और अत्यन्त प्रसन्न होंगे आप यह जानकर कि उस लड़के को एक ब्राह्मण कान्स्टेबिल ने दत्तकपुत्र (मुतबन्ना) बनालिया (शुभम्)

शोक समाचार ।

बड़े दुःख की बात है कि श्रीमान् महाराजा साहिब बहादुर जोधपुर का पूर्ण युवावस्था में स्वर्गवास होगया, युवराज महाराजकुमार अभी बालक हैं इसलिये उनकी सहायता के लिये श्रीमान् महाराज सर प्रतापसिंहजी (जो स्वर्गवासी महाराज के चचा हैं) एजेण्ट बनाए गए हैं, एक राज्यसभा उनकी सहायतार्थ निर्माण हुई है । आशा कीजाती है कि आपकी संरक्षा में जोधपुर राज्य का सुप्रबन्ध रहेगा और नवयुवक महाराज की शिक्षा भी अत्युत्तम हो सकेगी ।

ईडर में श्रीमहाराज सर प्रतापसिंहजी की अनुपस्थिति में उनके दत्तक पुत्र राज्य करेंगे जो हर प्रकार से सुयोग्य और राज्य के कार्य्य में कुशल हैं ।

Register No. J 91.

* ओ३म् *

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर का
मासिकपत्र.

भाग ९.

अङ्क ८, ९.

अनाथरक्षक ॥

जिसको--
अनाथालय सभा ने पं० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय,
अजमेर से छ्ापा.
और
पं० मुन्नीलालमिश्र प्रकाशक द्वारा अज्मेर से प्रकाशित किया।

ज्येष्ठ, आषाढ़.
१९६८ वि०

जुलाई १९११ ई०

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा बान्धवाः।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं वारि, वातश्च कः॥
जानीमो न दयानिधे! सुरपते त्वन्नाम जानीमहे।
हा हा नाथ! अनाथरक्षक! सदा नः पाहि पाहि प्रभो!!!

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा।

वार्षिक मूल्य १)

॥ ओ३म् ॥

अनाथरक्षक ॥

ज्येष्ठ तथा आषाढ़ संवत् १९६८ वि० ॥

जून तथा जुलाई सन् १९११ ई० ॥

अनाथ सहायता ॥

जो मनुष्य दूसरों का दुःख देखकर दुखी नहीं होता उस मनुष्य को मनुष्य ही न कहना चाहिये। पशु पक्षी आदि भी अपना पेट प्रातःकाल से सायंकाल पर्यंत किसी न किसी तरह भर ही लेते हैं, मनुष्य होकर यदि किसी ने अपना जीवन पशुओं की भांति व्यतीत किया तो उसमें और पशु में अन्तर ही क्या रहा। मनुष्य उसी मनुष्य को कहना उचित है जो अपने कुटुम्ब वालों की ही नहीं बरन् सारे संसार के अनाथ और दीन दुखियों की सहायता करे। जो कभी दुःख झेल चुका होगा वह दुखियों के दुःख को भलीभांति जानता होगा, परन्तु हमारे अमीर, धनी, सेठ, साहूकारों को अनाथों का ध्यान क्यों होने लगा ?

सवैया ॥

भोजन भोजि भलो विभवादि में जीवन जौन व्यतीत कियो है, सो नहिं जानत है कबहूं गति वाही की जो सहि भूख जियो है। जानत हैं कवि रत्न कहै, गति दीनन की कुछ तासु हियो है। जो कमु दीनता आनन को, अवलोकि के ऊँची उसास लियो है ॥

ऐ धनवारो न मान करै, धन को फल याही है भाखत साँची। दीन अनाथन के परिपालन, में रखिये रुचि नीच न बांची। जो नहिं पालहिगो तू अनाथ और दीन तथा धन दौलत कांची। पावहिगो कवि रत्न न तू, कबहूं परलोक में मानहि सांची ॥

प्रार्थना (चेतावनी) ॥

हे देशवासी भाइयो बिनती सुनो हमारी।
सब मिल सहाय कीजै दुखिया कहैं पुकारी ॥
तुम ऐश में पड़े हो तुमको खबर नहीं है।
लाखों अनाथो दुखियों को भूख ने सँहारी ॥
तुम पहिनो टसर मखमल अरु ओढ़ते दुशाले।
कितने अनाथ बच्चे फिरते है तन उघारी ॥
यह भी तुम्हारे बच्चे कुछ हैं नहीं बेगाने।
इनके पिता औ माता हैं काल ने सँहारी ॥
यह भूखे प्यासे नंगे सब तुमको तक रहे हैं।

इनका सहाय करके दुख मूलको उपारो ॥
मति बैर भाव राखो ये भ्रात हैं तुम्हारे ।
बनजावो सब हितैषी दो मित्रता प्रचारी ॥
इनकी दशा बिलोके नहिं धैर्य अब रहत है ।
बिनती रतन करै है नयनों से नीर जारी ॥

नाथ दया करो ॥

श्रावण मास समाप्ति के निकट है इस वक्त जब कि खेती पृथिवीतक से हाथों ऊंची होकर जल के ऊपर लहलाती हुई कृषक-समूह के हृदय को शीतल किया करती थी केवल वायुमण्डल में उड़ता हुआ गोर्दा गुबार उनकी आशालता को शुष्क कर रहा है,.. जो महाजन कृषकजनों को खेती (फसल) के भरोसे पर वर्षभर धन देते रहते थे उन्होंने भी धीरे २ हाथ खींच लिया है। अन्न की खत्तियां ज्यों की त्यों भरी पड़ी हैं किन्तु अवर्षा के कारण भाव दिनों दिन घटता जाता है, धनी इकट्ठा ख़रीदने की चिन्ता कर रहे हैं और निर्धन आनेवाले भूख प्यास के दुःख के भय से भयभीत । यद्यपि कहीं २ स्थानिक सूक्ष्मसी वृष्टि होते रहने के कारण अभीतक कोलाहल नहीं मचा तथापि दुर्भिक्ष और घोर दुर्भिक्ष के चिन्ह पूरे दिखलाई देरहे हैं (परमात्मा दयाकरे) यदि यही अवस्था रही तो भारत और विशेष कर राजपूताना प्रदेश बड़ी भयानक दशा को प्राप्त होजावेगा । अन्न की कमी प्राण शुष्क करेगी ही पर जलाभाव मरुस्थल निवासी मनुष्य तथा पशुओं के लिये यमदूत सिद्ध होगा ।

अब समय है जब कि सब लोग अपनी २ फ़िक्र में लगे हुए हैं आदर्श पुरुषों और देशहितैषियों का भी कुछ कर्तव्य है । उनको चाहिये कि जो जिस प्रकार की शक्ति अपने अन्दर रखता है उसको लिये हर समय स्वयंसेवक (वालंटियर) रूपमें उपस्थित रहे, जिस के पास धन है वह उस धन का सदुपयोग ही प्राणरक्षा और दीनपालना में देखे, जो दीर्घदर्शी और सुविचारी हैं वे सीधी सरल और आसानपद्धति लोगों के सन्मुख धरें, और जिनके पास समय है वह शारीरिक उद्योग द्वारा अपने थकित भाइयों के कष्टों को हलका करने की चेष्टा करें गरज़ जिस प्रकार भी कोई इस आनेवाले दुःसमय में (परमात्मा न लावे) सेवा कर सकते हैं कठिन सेवाव्रत को धारण करें ।

भाइयो ! आप के विपक्षी ईसाई भाइयों ने (जो सदैव ही दीन अनाथों की प्राणरक्षा के निमित्त कटिबद्ध रहते हैं) कार्य्य आरम्भ कर दिया है । वे विविध स्थानों पर कार्य आरम्भ करने की फ़िक्र कररहे हैं ।

हम अपने पाठकों से सानुनय "पर दृढ़ता के साथ" प्रार्थना करते हैं कि वे

अपने २ स्थान पर ऐसी कमेटियां अभी से बनालें जो आवश्यकता पड़ने पर असहाय बच्चों को प्राप्त कर श्रीमद्दयानन्द अनाथलय अजमेर में भेजते रहें । अनाथालय ने आर्य्यसमाजों, अनाथालय के सभासदों और सहायकों तथा राजपूताने के श्रीमानों की सेवामें ऐसा निवेदन करने का विचार करलिया है, आशा है कि शीघ्र ही पत्र रवाना होकर स्वीकारी प्राप्त करेंगे ।

इसवार इतना ही निवेदन कर के आशा रखते हैं कि अनाथरक्षा के अभिमानी अपने कर्त्तव्य को विचार कर प्रयत्नमान होंगे और उचित सम्मति देकर सहायता करते रहेंगे ।

अनाथरक्षा ॥

देशहितैषी सज्जनो ! मनुष्य शब्द सार्थक तभी हो सकता है जब मनुष्य दया दाक्षिण्यादि गुणों से विभूषित हो देश के कल्याणार्थ यत्न करता है, और दया किस स्थल पर कब किस प्रकार करनी चाहिये यहभी मनुष्य के विचार का एक उत्तम चिन्ह है. अन्धाधुन्ध दया दिखाना अविवेक का प्रधान लक्षण है अतएव उचित रीति से दयादि गुणों का पालन करना आर्यकर्त्तव्य है । सम्प्रति भारतनिवासियों को दयादि गुणों के पालन करने का अत्युत्तम अवसर दैववशात् अनायास उपलब्ध हुआ और होता रहता है ऐसे समय में कठोरता दिखाना और सुख चैन की गहरी नींद में सोना मुझको काम नहीं प्रत्युत धर्मक्षेत्र में आगे बढ़कर वीरता का परिचय देना मनुष्यजन्म को सफल करने का एकमात्र सदुपाय है । कितनेही दयालु सज्जन कूप, बावड़ी,तालाब,बाग,बगीचे लगाकर पथिकों के दुःख दूर करने का यश लूटते हैं और कितने ही तीर्थों के मघन और विकट मार्गों का परिष्कार कर यात्रियों की पीड़ा कम करने का कैसा पुण्य प्राप्त करते हैं. अन्नक्षेत्र, सदाव्रत, पियाऊ आदि नियत करते हैं इनमें सहस्रों अन्धे, लूले, अपाहिज भोजन पाते और दाता के नाम का यशोगान करते हैं क्या यह थोड़े यशका काम है ? नहीं ! अनन्त फल मिलने का एक श्रेष्ठकार्य है फिर प्रत्येक मनुष्य को यथाशक्ति ऐसे पुण्यकार्य में क्यों न आगे बढ़ना चाहिये ऐसा सुअवसर फिर कब मिलेगा ? समर्थ मनुष्य अपना और अपने आत्मीय गणका पालक होकर अपने समस्त गृहस्थ के भार का आभारी बन क्या आप से याचना करता है कि आप मुझे कुछ सहायता दें ? कदापि नहीं, क्यों नहीं करता उत्तर स्पष्ट है जब विधाता ने हस्तपादादि समस्त साधन दृढ़ और उत्तम दिये हैं ऐसी अवस्था में कौन विज्ञनर आपके सम्मुख हाथ रोपकर क्षुधा निवारणार्थ प्रार्थना करेगा ? अनाथ, पाठक ! आप जानते हैं कि अनाथ कौन हैं ? हां जानते हैं सुनिये जिनके माता

पिता मृत्युको प्राप्त होगये हों अथवा होते हुए भी अपनी दुर्बलता से बच्चों का पालन पोषण न कर सकते हो ऐसों का नाम अनाथ है और वे मनुष्य भी अनाथ है जो अदृष्टवश अन्धे, लूले, कुष्टी होजाते हैं और असहाय हो इतस्ततः भ्रमण कर भारत की भूमि को नापते फिरते हैं इतना ही नहीं प्रत्युत बड़े हृदयविदारक करुणा पूरित शब्दों से द्वारे २ याचना करते फिरते हैं इनमें से कितने तो किसी न किसी प्रकार अपनी उदरज्वाला को सड़े गले अन्नादि से शान्त कर लेते हैं परन्तु अनाथबालक कई प्रकार के सामर्थों के अभाव से अपनी क्षुधा को शान्त नही करसकते और अकाल में ही करालकाल के गाल में होकर यमलोक को प्रयाण कर जाते हैं, हा ! इतने हिन्दुसमुदाय के विद्यमान होते भी फिर बड़े २ लम्बी २ धोती विशाल पगड़ियों से भूषित शिरवाले धर्म के अभिमानी दयाके ठेकेदार हिंसा के विरोधी जनों के समान ऐसी आश्चर्यमय दुर्घटना कैसे होती है ?, हा ! जिन सन्तानों के प्राप्त्यर्थ राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, गरीब, अमीर सभी उत्सुक रहते हैं, वही भोली सूरत के सुहावने निरपराध दुधमुंहे बालक आप के सम्मुख दुर्गति को प्राप्त हों । क्या यह आपका अपराध है या उन बच्चों का ? यह निश्चय ही आपका अपराध स्वयं आप को स्वीकार करना पड़ेगा । पाठक ! आप अपने शब्दों में स्वयं अनाथ शब्द की मीमांसा कर चुके हैं फिर किसी प्रकार से भी इस अपराध से पृथक् नहीं होसकते । इस घोर पाप से मुक्त होने के लिये तन मन, धन से अनाथरक्षाके निमित्त उद्योग कीजिये जिससे अनाथों का प्राण और धर्म दोनों सुरक्षित हो और आपके चिरजीवन का प्रशंसित कार्य हो । विदेशी लोग आपके प्यारे बच्चों के प्राणरक्षक और धर्म भक्षक बनते हैं उस समय बच्चों पर उनका कितना प्रभाव पड़ता है क्या उस समय हम अपने ही रक्त से बने उन प्रियतम बालक और बालिकाओं को यह कहने का साहस कर सकते हैं कि आप धर्मभक्षकों के साथ क्यों हैं वा उनका सम्बन्ध कल्याणकारक नहीं ! ऐसा कहना यद्यपि धर्मरक्षार्थ निकृष्ट नही पर कहने में कठिनतर बाधा और लज्जाजनक हो जाता है कारण यह है कि इतने सम्प्रदायों और पन्थों के रहते भी अपने बच्चे अन्यों से पालित हों यह वास्तव में शोकपूर्ण वार्त्ता है । आपको सावधानी से कार्यस्थल में आगे बढ़कर अपने कर्त्तव्य के पालन में तत्पर होना चाहिये भारत में किसी न किसी प्रान्त में दुर्भिक्ष बनाही रहता है दैववशात् वृष्ट्याभाव प्रत्येक स्थान में विद्यमान रहता है इसी कारण दुर्भिक्ष पड़जाता है धनहीन मनुष्य अपनी ही रक्षा नहीं कर सकते फिर सन्तानों की रक्षा करना तो महान् कठिन है इसी अवसर पर विधर्मी हमारे प्यारे बच्चों को अपना कर

लेने का उत्तम अवसर पाजाते हैं, आजन्म के लिये हमसे हमारे प्राणसदृश बालक पृथक् होजाते हैं, हाय ! इस हृदय-विदारक घटना से किस का हृदय न फटता होगा ? पाठक किंचित् विचार करें। कैसा भयंकर समय है और ऐसे समय में भारती अचेत पड़े रहे तो निश्चय है कि पुरुषार्थी मुक्ति फौजवाले हमारे बच्चों को हम से छीनकर अपनी फौज में भरती कर किसी समय आप से सब प्रकार सबल हो मनमानी करेंगे क्या यह सहस्रों की संख्या में कुसुम्भी वेषधारी नरनारी विदेश से लाकर फौज में नियुक्त किये हैं नहीं ? ये सब भारत के सन्तान हैं, शोक ! हम कैसे मनुष्य हैं हमसे पशु अच्छे, अपने बालकों को कैसे चाटचूट के प्यार करते और गैरों से बचाते और उन की रक्षा करते हैं अस्मदादि मनुष्य कहलाकर भी अपने बच्चे स्वयं न पालकर विधर्मियों के पंजे में देदेते हैं इस शोकमय घटनापर कितना शोक करें ! और कितना रोवें कहांतक अपने भाइयों को सचेत करें। पाठको ! उठो देशहित और धर्म के लिये अब तो कुछ करो। इस वर्ष राजस्थान में अवश्य दुर्भिक्ष पड़ने के लक्षण दीख पड़ते हैं आषाढ़ कोरा गत हुआ श्रावण भी कोरा निकला जाता है यही दो मास वर्षा के उत्तम मास हैं इन्हीं में बरसने से कृषि की आशा होती है सो दोनों कूर फांद कृषकों को निराश करते समाप्त हो चुकने पर हैं अब अनाथों की रक्षा का कोई भी स्थायी प्रबन्ध होना आवश्यक है जिससे उनके प्राण और धर्म दोनों की रक्षा हो।

दयालु सज्जन ! १२ करोड़ हिन्दुओं की शक्ति कितने भार को उठा सकती है देशहितैषी ध्यान से सोचें एक व्यक्ति एक पैसा मासिक देकर एक चुकटी आठा निकाल कर यदि अपनी शक्ति का सदुयोग करे तो एक देशी वा अल्प देशी दुर्भिक्ष के पड़ने पर अपनी सन्तान की रक्षा अच्छे प्रकार कर सकते हैं अवसर आगया है कि हम सब मिलकर अनाथों की रक्षार्थ अच्छे २ यत्न सोचें और भारत के प्रान्तों में भ्रमण कर अनाथों को इकट्ठा करें धन एकत्रित कर और किसी अच्छे स्थल पर अनाथों को रखकर अन्न वस्त्र से सुरक्षित कर शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करें। राजपूताने में श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर में उत्तम प्रबन्ध है उपदेशकों के द्वारा दूर २ देशों से हर मजहब और प्रत्येक जाति (वर्ण) के बच्चे लाये जाते और सुरक्षित रक्खे जाते हैं, परन्तु विना धन कोई काम नहीं बनता अतएव आर्य्य सन्तानों से हमारी अपील है कि आप दया को आगे रखकर अपनी बिछुड़ी हुई और अनाथ सन्तान की रक्षा के लिये अवश्य सहायता करें थोड़े २ हिस्से से अम्बार लगता है, बूंद २ पानी गिरकर नदी नाले और तालाब भरजाते हैं।

आपके थोड़े से हिस्से से एक समुदाय सहज में होजायगा जो दुर्भिक्ष में पुष्कल अनाथों के प्राण बचाकर आप को यशस्वी बनावेगा । पाठक ! क्या मेरी इस प्रार्थना पर मेरे भ्राताओं का ध्यान आकार्षित होगा मुझे आशा है कि दयालु सज्जन इस अवसर को हाथ से न जाने देंगे और यावच्छक्य अनथरक्षा का उद्योग करेंगे शमिति ।

भवानीप्रसाद शर्मा

केसरगंज, अजमेर ।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय में रहनेवाले बालक बालिकाओं की शिक्षा का क्रम निम्न प्रकार निश्चित हुआ है । अब से इसी पद्धति के अनुसार शिक्षा होगी ।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालयस्थ बालक बालिकाओं की शिक्षापद्धति ॥

बालक ॥

(१) इनकी शिक्षा का कार्य एक उपसभा के सुपुर्द रहेगा जिसको द० अनाथालय कमेटी प्रतिवर्ष निर्धारित करेगी ।

(२) प्रत्येक बालक को सात वर्ष की अवस्था से पाठशाला में भेजा जायगा जहां व्यवहारिक तथा धार्मिक शिक्षा दी जायगी ।

(३) प्रत्येक बालक को श्रीमद्दयानन्द एंग्लो हाईस्कूल की आठवीं कक्षा (or third standerd या उसकी बराबर) तक शिक्षा पानी होगी । जिससे साधारणतया देवनागरी भाषा के लिखने पढ़ने तथा हिसाब का बोध होजावे ।

(४) आठवीं कक्षा (III Stendrd) के उत्तीर्ण बालकों में से दो एसे बालक जिन्हों ने अपने क्लास में अच्छे नम्बर प्राप्त किये होंगे (अर्थात् ७५ फी सदी से कम न हों प्रत्येक विषय में) और जिनकी अवस्था १२ वर्ष से अधिक न हो । अंग्रेजी शिक्षा की प्राप्ति के लिये आगे बढ़ाये जायेंगे । यदि अ० कमेटी उचित समझे तो उनको अनाथालय की ओर से बोर्डिंग हाउस में प्रविष्ट कराया जायगा । शेष आठवीं कक्षा के बालकों को स्कूल से वापिस लिया जायगा । पाठशाला से वापिस किये बालक तथा अन्य इच्छित बालकों की शिक्षा के दो भेद होंगे ।

(१) संस्कृतशिक्षा ॥

(अ) उपदेशक । (उ) वैद्य ।
(आ) अध्यापक (ऋ) गायक ।
(इ) आचार्य । (लृ) प्रेससम्बन्धी

(२) जो शिल्प में रुचि रक्खेंगे उन्हें शिल्पकार बनाया जायगा । यथाः—

(क) खाती या फिटर, नक्शे, हिसाब ।
(ख) Droftsmen ।
(ग) मौजे बनाना ।

(५) जो बालक अंग्रेजी तथा संस्कृत कक्षा में प्रविष्ट होकर विना किसी विशेष कारण के परीक्षा में उत्तीर्ण न होंगे

वे वहां से हटा उनकी यथारुचि शिल्पकारी में लगा दिये जायंगे ।

(६) धर्मशिक्षा (च) पंचमहायज्ञविधि इत्यादि जो नियत हो, (छ) भजन होसकें तो व्याख्यान भी । नोट (१) धर्मशिक्षा में उच्च नम्बर प्राप्त सदाचारी बालकों के यज्ञोपवीत के लिये कमेटी से सिफ़ारिश कीजायगी । सदाचार के प्रमाण के लिये अधिष्ठाता द० अ० के पास रक्खा हुआ आचार व्यवहारसम्बन्धी रजिष्टर भी देखा जायगा । नोट—(२) संस्कृत कक्षा में से प्रत्येक योग्य बालक को यथावसर बाहर दौरे पर उपदेशकों के साथ उपदेश की शिक्षा के लिये वर्ष में कम से कम एक मास अवश्य जाना होगा । नोट—(३) धर्मशिक्षा कम से कम सप्ताह में एक बार व्याख्यान द्वारा भी हुआ करेगी ।

कन्या ॥

प्रत्येक कन्या को देवनागरी तथा संस्कृत और गणितादि की उच्चशिक्षा दीजायगी । जिससे उपदेशिका तथा अध्यापिका का आवश्यक काम कर सके । इसके अतिरिक्त गृहसम्बन्धी प्रत्येक प्रकार सुई आदि की शिक्षा का काम सिखाने का प्रबन्ध होगा । वैद्यक भी सिखलाई जावेगी । (२) कन्याओं के आचार विचारादि का प्रमाण भी अधिष्ठाता द० अनाथालय के पास रक्खे सदाचारसम्बन्धी रजिष्टर से लिया जायगा ।

नोट—विवाह संस्कार के समय आचार, विचार और व्यवहार पर ध्यान रखकर वर निश्चय किया जायगा ।

अनाथालय की खबरें ॥

जूनमें १ लड़का और १ लड़की नवीन प्रविष्ट हुई तथा २ लड़के कम होगये जुलाई के आरम्भ में ७५ लड़के और २८ लड़कियां कुल १०३ बच्चे अनाथालय में उपस्थित रहे ।

आप यह जानकर प्रसन्न होंगे कि कन्याओं के अधिष्ठात्री पद पर १९-७-११ से श्रीमती मोहनी बाईजी काम कररही हैं । आपने धातृशिक्षा में परीक्षा दी है और कदाचित् कुछ समय प्रयोग में भी लाती रही हैं । प्रयत्न किया जारहा है कि आप अनाथालय के लिये उपयोगी सिद्ध हों और आशा कीजाती है कि आपकी उपस्थित में अनाथालय की कन्यायें गृहकार्य्य में कुशल होसकेंगी ।

२० जून सन् १९११ ई० को अनाथालय की कन्या तारादेवी का विवाह संस्कार ला० उत्तमचन्दजी मुलतानिवासी के साथ होगया । आपने २५) रुपये प्रदानकर अनाथालय के समस्त बालक बालिकाओं को विशेष भोजन कराया और २०) रुपये विविध स्थापनाओं को दान दिये ।

वर्षा न होनेके कारण लोग घबराए हुए हैं इनकी आंखों के आगे सम्वत् ५६ का

असह्य दृश्य खिचित होरहा है और वे भौंचक से चारों ओर देखरहे हैं। ऐसी अवस्था में श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर ने विचार किया है कि आर्य्यसमाजों और अनाथ सेवकों से सम्मति करके राजपूताने में अनाथरक्षा का कार्य्य बड़े पैमाने पर आरम्भ किया जावे कृपाकर शीघ्र (दामे, दिरमे, क़दमे) मांसिक शारीरिक और आर्थिक सहायता के लिये उठ खड़े हूजिये।

मनुष्यों की रक्षा पाव आधसेर अन्न तथा जल पर निर्भर है, किन्तु सारे दिन में मनो चारा और पानी खाने पीने वाले पशुओं की क्या दशा ? अनाथालय सम्बन्धी गोशाला में इस समय ४० के लगभग पशु हैं जिनकी रक्षा के लिये पुष्कल द्रव्य और पुरुषार्थ की आवश्यकता है। इसके सिवाय अन्य गायों के बढ़ने का भी इस समय में पूरा ख़याल है। क्या कोई सज्जन पता देकर अनुग्रहीत करेंगे कि इस समय में गायों को कहां भेजा जावे जहां चारा और पानी पर्याप्त प्राप्त होसके।

छातड़ी निवासी नम्बरदार भारमलजी इस विषय में धन्यवाद के पात्र हैं जो दुधाल गायों के अतिरिक्त समस्त का रक्षण पोषण अपने ग्राम छातड़ी में रखकर करते हैं।

२२ जून का दिन भी बड़े आनन्द का था, जिधर देखो अपने राजराजेश्वर श्रीजार्ज-पञ्चम के राज्याभिषेक आनन्द में खुशी मनाई जारही थी, अनाथालयस्थ बालक बालिकाओं ने भी दीपावली प्रकाशित कर अपने हार्दिक आल्हाद को प्रकट किया। नगर के समस्त भाग में उत्सव हुए, रोशनी की गई और दरिद्र अनाथों को मिठाई बांटी गई और इसी प्रकार मुबारक और बधाई देते हुए दिन समाप्त होगया, परमात्मा महाराज और महाराणी को चिरायु करे और श्रीमानों का राज्यकाल प्रजा और विशेष कर भारतवासियों के लिये शुभकर हो।

बड़े ही हर्षका समाचार है कि अजमेर के रईस, आनरेरी मजिस्ट्रेट और रामायणमण्डल के प्रधान श्री० मुं० देवीदयालजी भार्गव के सुपुत्र बा० महादेवप्रसादजी इसी मास में बैरिस्टर एटला की डिगरी प्राप्त कर युरोप यात्रा से कुशलपूर्वक अजमेर वापस लौट आए हैं, खुशी की बात है कि अजमेर निवासी तथा उक्त मुंशीजी की बिरादरी ने आपकी अगवानी बड़े समारोह से की और ता० को हुए प्रीतिभोजन में अत्युत्साह दिखलाया। परमात्मा बैरिस्टर महोदय को अपने कार्य में कृतकार्य करे और देश तथा धर्म के लिये उपयोगी बनावे।

सत्यव्रत ।

प्रथम परिच्छेद ।

गोरखपुर प्रान्त तथा नैपाल के निचले भाग में किसी समय "कपिलवस्तु" ॥ एक प्रसिद्ध स्थान था, जहां बुद्ध भगवान् ने जन्म लिया था, अब वह एक साधारण स्थिति का ग्राम है। उसके विशाल-भवन पृथिवीतल से मिलगए, नगर का नगर पृथिवी में धसगया और उसपर बैनैके कांटेदार वृक्ष उत्पन्न होगए। यदि बृटिश गवर्नमेंट की कृपा से उसके खण्डरात खोदे न गए होते तो हमको यह विश्वास करना अतिकठिन होजाता कि यह स्थान कभी बुद्ध भगवान् जैसे असाधारण जगत्-मान्य की जन्मभूमि तथा बहुसंख्यक बौद्धभक्तों का तीर्थस्थान रहा होगा ?।

इस स्थानपर भी महाराज अशोक ने एक बहुत बड़ा स्तूप बनवाया था, वह भी पृथिवी की गोद में सोगया और खोदे जाने पर उसके कुछ टुकड़े निकले, जगत् इसी प्रकार का है कभी उसके कोई भाग ऊंचे होकर पर्वत बनजाते हैं और कभी नीचे घुसकर समुद्र की तह में लोप होजाते हैं यहां किसी बात का ठिकाना नहीं, जो आज है कल न रहेगा, जो कल होगा वह आज नहीं है। यही व्यवस्था मनुष्य-जीवन की भी है।

पद्य ।

आदमी बुदबुदा है पानी का,
क्या ठिकाना है जिन्दगानी का।
है वृथा मान नौजवानी पर,
फ़ख़्र बेजा है शादमानी पर।
आज ईसों है कल रहे न रहे,
नहर जारी है कल बहे न बहे।
वक़्त जो कुछ कि हाथ आया है,
तुमने अवकाश जो भी पाया है।
काम करलो इसे दवाम नहीं,
ज़िंदगी सुबह है तो शाम नहीं।
उठो जागो न नींद में सोवो,
ग़ाफ़िलो ! ज़िंदगी को मत खोवो।
ऐसा अवसर मिलेगा फिर न कभी,
काम जो कुछ है करलो जीते जी।
जीवन अस्थिर का है भरोसा क्या !,
सामना अन्त को है ईश्वर का ॥

कहनेवाला पुकार २ कहता है, कान रखते हो तो सुनोः—

क्या २ न बादशाहों का नामों निशां मिटा,
हरएक अपने वक़्त का नौशेरवां मिटा।
मौसम गया बहार का रंगेख़िज़ां मिटा,
जो फूल इस चमन में खिला बेगुमां मिटा।
दरपेश सब के वास्ते मंज़िल अजीब है,
ग़ाफ़िल व होशयार अजल अनक़रीब है।

जब अशोक का ज़माना गुज़र गया, कपिलवस्तु फिर भी बहुत कालतक प्रजा का पूज्य स्थल रहा, बौद्ध और हिंदू

दोनों ही उनकी यात्रा को आया करते थे और बुद्ध भगवान् के पवित्र जीवन और पवित्र कार्य्य को याद करते हुए उनसे श्रद्धा और भक्ति का वर पाते थे, वहां भिक्षुकों और साधुओं के मन्दिर थे, जिनमें बालक बालिकाएं शिक्षा ग्रहण करते थे और उनके द्वारा धर्म्मप्रचार हुआ करता था।

उन्हीं दिनों वहां ब्राह्मणों के दो घर बसते थे, एक उनमें से बौद्ध था और दूसरा हिंदू। दोनों के घर पास २ थे और दोनों ही में परस्पर प्रेम और प्रीति का व्यवहार था। हिंदू के घर एक लड़की थी जिसका नाम "सुमित्रा" था, बौद्ध के घर एक लड़का था जो "शारीपुत्र" कहलाता था। बाल्यावस्था में ये दोनों साथ २ खेला करते थे, दैवयोग से इनमें प्रेम होगया और भोलेभाले अबोध बालकों ने प्रतिज्ञा की कि यदि गृहस्थ धर्म्मपालन करेंगे तो परस्पर ही करेंगे और सिवाय मृत्यु के हम को अन्य कोई भौतिक या दैविकशक्ति पृथक् न कर सकेगी। यह दोनों अपने समय पर भिक्षुक और भिक्षुनियों के विहारों में पढ़ने चले गए, परन्तु उनके प्रेम भाव में कुछ क्षति नहीं हुई। दोनों वंशों के लोग उनकी प्रतिज्ञा को जानते थे, किसी ने उन्हें न बुरा कहा न भला और उनके भोलेपने पर हंसा किये जैसा कि माता पिता का दस्तूर है। लड़की और लड़के दोनों ने वर्षों तक विहार में रहकर शिक्षा प्राप्त की, इस समय शारीपुत्र की अवस्था २० वर्ष की थी और सुमित्रा की १८ वर्ष की, बौद्ध के धर्म्म में बालविवाह की आज्ञा न थी और नहीं कोई बौद्ध और उनकी देखादेखी न कोई हिंदू पुरुष एक से अधिक विवाह करता था।

यह शिक्षा केवल बौद्धों ही से आरम्भ हुई, इनसे पहिले लोग ५–५ और ७–७ विवाह करते थे, वैदिक समय में भी इस की रुकावट नहीं देखी जाती, याज्ञवल्क्य ऋषि (जो बृहदारण्यक उपनिषद् तथा शतपथ ब्राह्मण के रचयिता हुए हैं) इसके विरुद्ध नहीं थे, उनके स्वयम् **कात्यायनी** और **मैत्रेयी** दो स्त्रियां थीं और राजे महाराजाओं का तो कहना ही क्या था, अयोध्यापति प्रसिद्ध राजा दशरथ के तीन राणियां **कौशल्या, सुमित्रा** और **केकई** थीं, इनके सिवाय और कितनी स्त्रियां उनके महलों में रहा करती थीं।

इसके विरुद्ध दुनियां में सब से पहिलीवार जिस तेजस्वी महात्मा ने आवाज़ उठाई वह महामुनि गौतम बुद्ध ही था। और उसी के समय से बहुविवाह की प्रथा बंद होनी आरम्भ हुई।

द्वितीय परिच्छेद।

शारीपुत्र जब बीस वर्ष का होगया

भिक्षुओं ने उसको तीर्थयात्रा करने की आज्ञा दी, तीर्थयात्रा से लाभ यह था कि लोग घर से बाहर निकलकर देखें कि संसार में क्या होरहा है ? लोगों की क्या हालत है ? जिससे उन्हें संसार के व्यवहार का कुछ अनुभव प्राप्त हो और वहां जाकर वह महात्माओं का सत्सङ्ग करें, उनके सद्चरित्र जो पुस्तकों में अवलोकन किये थे स्वयं उनकी व्यावहारिक दशा को देखें और अपने जीवन को श्रद्धा भक्ति और पवित्रता का जीवन बनाएं, यह तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य था और बौद्धों में बलपूर्वक इसकी आज्ञा दी जाती थी, विद्यार्थी ने पुस्तकीय विद्या तो प्राप्त करली, किन्तु उसके व्यावहारिकस्वरूप को नहीं जाना, उसकी विद्या फिर भी अधूरी रही, वास्तविक विद्या वह है जो जातीय अनुभव पर स्थित हो बिल्कुल मंगनई न हो, मांगी हुई विद्या उतनी उपयोगी नहीं होती जितनी अनुभव द्वारा प्राप्त की हुई विद्या होती है ।

यह सत्य है कि विद्या अविद्या से अच्छी है, परन्तु सत्यविद्या वही है, जो कर्तव्य के साथ हो । पढ़ना, लिखना ठीक है, पर कुछ गुनना भी चाहिये और यात्रा में ऐसे अवसर अनायास प्राप्त होजाते हैं, इसलिये बौद्ध विद्यार्थियों को विहार छोड़ने पर गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होने से पूर्व तीर्थयात्रा अत्यावश्यक समझी जाती थी ।

शारीपुत्र तीर्थयात्रा को चला गया, उस समय रेल की सवारी का प्रबंध न था, लोग पैदल यात्रा को जाते थे, साथ एक समूह मनुष्यों का होता था क्योंकि आजकलकीसी निश्चिन्तिता (जो बृटिश राज्य के आधीन हमको प्राप्त है) पहिले कम थी, अशोक का समय वास्तव में हिन्दू सभ्यता का आदर्श था, उसके समय की बहुत प्रशंसा की जाती है, किन्तु यह अवस्था थोड़े ही समय तक स्थिर रही, अशोक के पश्चात् यह अवस्था गिरने लगी और देश में फिर कहीं २ लूट, खसोट के घृणित व्यवहार होने लगे और यही कारण समुदाय के साथ यात्रा करने का था ।

शारीपुत्र बौद्ध गया में आया, श्रावस्ती में गया, उस पर्वत की यात्रा की, जिसकी चोटीपर बैठकर बुद्धभगवान् ने एक प्रभावशाली उपदेश सुनाया था, इसमें उसको मुद्दत लगगई, देश में देशव्यापी भयानक दुर्भिक्ष पड़गया और आजकलकी भान्ति स्थान २ पर अन्न के पहुंचाने का सुप्रबन्ध न होने से लोग कुत्तों की मौत मरने लगे ।

उसी समय में सुमित्रा भी विहार से निकलकर माता पिता के घर आई, वह बुद्धधर्म्म की थी क्योंकि बौद्धविद्यालय में शिक्षा पाने से उसके अंदर महामुनि के संस्कार पैदा होगए थे । पहिले हिंदू

इसके पक्षपाती और सङ्कीर्णहृदय न थे, उनकी सन्तान भिक्षुकों से शिक्षा पाती थी, सामुदायिक विचार एक थे और धर्म्म भी लगभग एक जैसा ही था, केवल छोटे २ भेद थे और लोग उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देते थे। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि वैदिकधर्म्म का अद्वितीय प्रचारक कुमारलभट्टजी श्री स्वामी शंकराचार्य्यजी से पूर्व वैदिकमत का जबरदस्त शिक्षक हुआ है, उसने बौद्ध के शिक्षणालय में ही शिक्षा पाई थी।

जब सुमित्रा घर आई, उसकी अवस्था अठारह वर्ष की थी, माता, पिता को एक ब्राह्मणकुमार से विवाह करदेने का विचार उत्पन्न हुआ जो पढ़ा, लिखा, धर्मात्मा और साथ ही धनाढ्य भी था, माता पिता प्रसन्न थे कि कन्या उसके घर में जाकर प्रसन्न रहेगी, इसके सिवाय सुमित्रा का बाप निर्धन था, उसका ख़याल था कि इस सम्बन्ध से उसको भी पर्याप्त सहायता प्राप्त होगी और क्या आश्चर्य्य है कि धनाढ्य घराने के सम्बन्ध से उसकी हालत भी सम्भल सके। जो लड़का इस कन्या के लिये तजवीज़ हुआ था उसका नाम सोमदत्त था।

तृतीय परिच्छेद ।

जब सब बात तय होचुकी, सुमित्रा को भी विवाह की सूचना दीगई, उस बेचारी को ध्यान तक भी नहीं था, कि माता, पिता किस फ़िक्र में हैं, उसने जब सुना, अपनी माता के पास गई और उसके चरणों में सिर झुकाकर कहने लगी "माता! मेरे और शारीपुत्र के बीच में प्रतिज्ञा हो चुकी है कि हम किसी दूसरे से विवाह न करेंगे क्या आप हमारे बाल्यावस्था को भूलगईं" ?।

माता को आश्चर्य्य हुआ और कहने लगी "लड़की वह बालपन की बातें थीं उन्हें भूल जा देख तेरे पिता ने कैसा अच्छा वर तलाश किया है ऐसा लड़का रोज २ नहीं मिलता"।

सुमित्रा बोली "यह सच है, परन्तु क्या आप चाहती हो कि मैं अपना व्रत तोड़ दूं? प्राण जायँ पर बचन न जाही" शारीपुत्र का चित्त मेरे हृदयतल पर अङ्कित है जो दूर नहीं किया जासकता, मैंने उसको अपनी जीवनयात्रा में साथी चुनालिया है, आप हठ करके मुझे अधर्म्म की ओर मत झुकाओ।

माता या तो अबतक उसकी बातें शान्ति के साथ सुन रही थी या अब उसके तलुवों में अग्नि लग गई, क्रोधाग्नि भड़क उठी, वह कहने लगी "अभागी तूने भिक्षुणियों से यह निरर्थक बातें सीखी हैं, मैंने व्यर्थ तुझ को विहार में भेजा, लड़की को माता पिता का वचन मानना

चाहिये इसके अतिरिक्त तुझ को हमारे घर का हाल मालूम है, रोटियों के लाले पड़े हुए हैं, आज खाने को मिलगया तो कल का ठिकाना नहीं, दुर्भिक्ष दिनोंदिन बढ़रहा है क्या तू अपने माता पिता की बात न मानेगी और उनको दरिद्र ही रक्खेगी ? सोमदत्त दौलतमन्द है, वह इस वृद्धावस्था में हमारी सहायता करेगा। यह कारण और भी है जिससे तेरे पिता ने इस सम्बन्ध को आवश्यक समझ रक्खा है।

सुमित्रा ने कहा "माता! तुम्हारे विचार शुद्ध नहीं हैं हिन्दुओं में कोई जामाता के धन को नहीं लेता, यह अधर्म्म समझा जाता है, इसके अतिरिक्त मैं कदापि अपने को रुपयों के बदले में तय्यार नहीं हूं, जो व्रत करलिया वह करलिया, उसको कभी नहीं बदलूंगी और जीवन पर्य्यन्त शारीपुत्र का नाम लेकर इस जीवन को व्यतीत कर दूंगी।

मां ने पूछा "क्या यदि हम लोगों ने विवाह के लिये तुझे मजबूर किया तो तू हमें छोड़ देगी ?"।

वह बोली धर्म्म के लिये मनुष्य क्या नहीं करता ?, विभीषण ने भाई का साथ छोड़ा, प्रह्लाद ने माता पिता का कहना नहीं माना, मनुष्य आए दिन जन्मते और मरते हैं, जीवन का भरोसा ही क्या है ? आज है कल नहीं ऐसी अवस्था में बुद्धिमान् मनुष्य धर्म्म को कैसे छोड़े ?।

माता चुप होगई और रोती हुई सुमित्रा उससे पृथक् होकर दूसरी कोठड़ी में जा सोचने लगी।

चतुर्थ परिच्छेद।

दुर्भिक्ष देशव्यापी था, लोग भूख प्याससे मररहे थे, कुछ लोग जो तीर्थयात्रा को गए थे लौट कर आए, इनमें शारीपुत्र नहीं था, उसको लोग बीमारी के कारण बिहार में छोड़ आए थे, सुमित्रा के माता पिता ने उसे फिर भी समझाया बुझाया मगर उसने किसी की भी नहीं मानी। अपने खयाल में मस्त थी और अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में तुली हुई थी, अन्ततः ग्राम में यह बात प्रसिद्ध होगई कि शारीपुत्र मरगया, उस बेचारे के मां बाप जीवित थे इस असह्य समाचार को सुना और रोपीट कर चुप हो रहे सुमित्रा की माता ने अवसर पाकर कुछ समय के पश्चात् उससे कहा "पुत्री! तूने शारीपुत्र के विषय में बुरी खबर सुनली, अब तू क्या कहती है ?।

वह बोली "मुझ को जो कुछ कहना था कहचुकी, बारम्बार उसे क्या कहूं, उसने कहा आखिर तेरा विवाह होना भी चाहिये या नहीं ? लड़कियां सदा मातृगृह में नहीं रहसकतीं, वे दूसरे का धन होती

हैं" हम सब चाहते हैं कि तेरा विवाह सोमदत्त के साथ करदें ।

सुमित्रा बोली माई ! मेरा विवाह होचुका, मैं शारीपुत्र के सिवाय और किसी को न वरूंगी, तुम्हें भ्रम है, तो वह आकर मुझ को लेजायगा या आजन्म कुमारी ही रहूंगी, पर अपने व्रत को खण्डन न होने दूंगी और यदि तुम मुझ को अपने घर में रखना नहीं चाहतीं तो मैं विहार में जाकर रहूंगी ।

मांने कहा "अभागी क्या तुझे विश्वास नहीं है कि शारीपुत्र मरगया" ? ।

उसने उत्तर दिया " मुझ को विश्वास नहीं है, मैं समझती हूं कि लोगों ने मुझको धोका देने के लिये मिथ्या बात उड़ादी है, शारीपुत्र जीवित है सम्भव है रुग्न हो, वह अवश्य आयेगा और मुझको अकेली न छोड़ेगा उसको भी अपने व्रत का ध्यान होगा बुद्ध भगवान् के शिष्य मिथ्यावादी नहीं होते मैं किसी बात के सुनने और मानने को उद्यत नहीं हूं कृपाकर तुम मुझ को मेरी हालत पर छोड़दो मुझ को क्लेशित न करो मैं तुम्हारी लड़की हूं तुम्हारे पेट से उत्पन्न हुई हूं बच्चों के साथ धोखा करना अधर्म है ।

मां सन्नाटे में आगई "सुमित्रा तू धर्मात्मा बनती है और मुझे अधर्मी बनाती है क्या आज्ञाकारिणी कन्या के लिये ऐसे शब्द जिह्वापर लाने उचित हैं ? ।

सुमित्रा बोली "माता ! क्षमा करो दुःखावस्था में मैंने ऐसी बातें कहदी थीं इस बात को निश्चय जानो कि मैं अपनी प्रतिज्ञा को भङ्ग न होने दूंगी चाहे पृथिवी उलट जाए ।"

मां चुपके से उठकर चली गई, दो चार दिवस बीतने पर शारीपुत्र की मृत्युचर्चा विशेष होगई, सुमित्रा के हृदय पर दुःख का पर्वत टूट पड़ा, वह मन ही मन पछताने और दुःख पाने लगी, अन्ततः जब एक दिन माता पिता ने उसे अत्यन्त सताया तो वह रात्रि के समय घर से निकल गई और विहार में जाकर भिक्षुणियों का व्रत धारण करलिया और बुद्धधर्म और संघ की शरण लेली ।

सुमित्रा के माता पिता को अगले दिन इस बात का पता लगा "काटो तो बदन में लहू नहीं" लड़की हाथ से निकलगई, वह भिक्षुणी होगई, किसका अधिकार था कि उसको विहार से वापस लाता ?, इसके अतिरिक्त वह युवा और समझदार भी होचुकी थी, हिन्दुओं का सदा से यह खयाल है कि जिस लड़के या लड़की का साधु या साधुनी की भान्ति संस्कार होगया, वे फिर गृहस्थाश्रम में वापिस नहीं आसकता था । सोसायटी इस नियम

का पालन कड़ाई के साथ करते थे और कभी नहीं सुना गया कि कोई हिन्दू या बौद्ध साधु बनकर फिर गृहस्थ में वापिस आया हो ।

पपिहा बन को ना तजे, तजे तो तन बेकाज,
तन छांड़े तो कुछ नहीं, पन छोड़े है लाज ।
भाग्यदोष समझ रो पीटकर चुप हो बैठे ।

पंचम अध्याय ।

शारीपुत्र यात्रा से लौटकर घर आया, उसने सुना कि सुमित्रा ने उसके लिये अतिकष्ट सहन किये, उसी के नाम के आश्रय जीती थी, आख़िर जब मां बाप बहुत सताने लगे वह विहार में गई और भिक्षुणी होगई, उसके आन्तरिक भावों का कोई क्या वर्णन करे । यह वह बात है कि मन की मन ही में रहती है और मन ही खूब जानता है दूसरों को उसकी तनिक भी ख़बर नहीं रहती ।

चोट सतावे विरह की सब तन जाजर होय,
मारनहारा जानिये के जिस लागे सोय ।
विरहा पूत लुहार का धर्म हमारी देह,
कोयला हुआ न छांडसी जबलग हुए न खेह ।

वह एक दिवस अवसर पाकर भिक्षुणियों के विहार में आया, भिक्षुणियों को किसी पुरुष के साथ बात चीत करने की आज्ञा नहीं थी, किन्तु शारीपुत्र के साथ यह विशेषता कीगई, सुमित्रा साधुवाना वस्त्र पहिने उसके पास आई, इसने उसको और उसने इसको देखा दोनों की आंखें डबडबा आई थीं, सुमित्रा का मुख पीत होरहा था, परन्तु चेहरे से शान्ति बरस रही थी, शारीपुत्र ने कहा, सुमित्रा ! उसने उत्तर दिया अब मुझे इस नाम से न पुकारो, मैंने भिक्षुणी का व्रत धारणकर लिया है, मेरा नाम अब गोतमी रक्खा गया है ।

शारीपुत्र बोला "क्या तुमने सचमुच मुझे भुलादिया" ।

वह बोली "तुम देर में आये मैं सचमुच तुम्हारे भुलाने का यत्न कररही हूं, अब जीवन ने दूसरी ओर पलटा खाया, मैंने तुम्हारे लिये अनेक कष्ट सहन किये आख़िर असह्य अन्याय से घबराकर विहार में धर्म्म की शरण ली और इसी व्रत को आजन्म धारण कर रक्खूंगी" ।

शारीपुत्र ने कहा "तुमने पहिले अन्य प्रकार का व्रत धारण किया था उसकी उपस्थिति में यह व्रत कैसे धारण किया जासकता है ?" ।

सुमित्रा की आंखें पहिले ही डबडबाई हुई थीं अब वे तिलमिला उठीं, शारीपुत्र मेरे हृदय में तुम्हारी बहुत प्रतिष्ठा थी, तुम क्या कहते हो ? क्या मुझको धर्म्म से पतित करना चाहते हो ? यह कभी नहीं होसकता, ऐसी बातें जुबान पर

मत लाओ इनमें तुम्हें शोभा नहीं मिलती, जो कुछ होना था हो लिया, यह सत्य है कि मुझ में अभी तक निर्बलता है मेरी आकृति पर दृष्टि डालो मैं किस दुःख और परिश्रम के साथ तुम्हारे खयाल को भुला रही हूं, मैं अब बुद्धदेव की पुत्री हूं सम्भव नहीं कभी अपने विचार को पलटा दूं, आसमान और ज़मीन हिल-जावे मगर भिक्षुणी का व्रत नहीं बदल सकती मैंने अपने लिये मार्ग निश्चय कर लिया है और दृढ़तापूर्वक उस पर स्थिर हूं, बुद्धभगवान् का उपदेश रोज २ मेरे दिल में स्थान ग्रहण करता जाता है अब मुझ को सांसारिक सम्बन्धों की ओर झुकने की किंचित् भी इच्छा नहीं है और नहीं आकाश की ओर, पतित मनुष्य संसार में कुत्ते से भी गया बीता है जाओ तुम अब मेरे पास कभी मत आना, मेरा तुम्हारा सम्बन्ध टूट गया, तुम सांसारिक मनुष्य हो और मैं भिक्षुणी, मेरे हृदय में गुरु के उपदेश का तीर कारी लगा है।

सतगुरु मारा तानकर शब्द सुरंगी बान,
मेरा मारा जो जिये तो कर नहिं गहूं कमान।
सतगुरु साचां सूरमा सिख सिख मारा पूर,
बाहर घाव न दीखिये भीतर चकनाचूर॥

शारीपुत्र! इस समय तुम जीवित से नहीं मृतक से बातें कर रहे हो, अब मुझ में सांसारिक जीवन नहीं, तुम जाओ अब कभी मेरे पास मत आना, यह मेरी और तुम्हारी अन्तिम भेंट है, विहार की भिक्षुणी मेरे और तुम्हारे व्रत को जानती थीं इसीलिये तुम्हें बातचीत का अवसर दे दिया गया अन्यथा भिक्षुणियों के विहार में किसी पुरुष को आने की आज्ञा नहीं है।

शारीपुत्र ने कहा "देवी! तुम्हारा साहस धन्य है, तुम स्त्रियों में धन्य हो, मैं भी तुम्हारा अनुकरण करूंगा, केवल एक बार और कल प्रातःकाल मुझे दर्शन देने की प्रतिज्ञा करो मैं उस समय यहां उपस्थित रहूंगा।"

सुमित्रा ने हाथों के सङ्केत से उसको चले जाने की आज्ञा दी और आप शीघ्रता पूर्वक विहार में भिक्षुणियों के पास चली गई, तीसरे पहर के समय वह शारीपुत्र को मिली थी, इसके पश्चात् वह कुछ समय तक पोथी का पाठ करती रही, सायङ्काल की संध्या के पश्चात् उसने विहार के मन्दिर में प्रार्थना करने की आज्ञा मांगी, समस्त रात्री मन्दिर ही में रही, उसने किस प्रकार प्रार्थना की, इसका कुछ पता नहीं, रात्री के पिछले प्रहर में उसके दिल की धड़कन बंद होगई वह पृथिवी पर लेट गई और यूंही जीवन समाप्त करदिया। उसका हाथ बुद्धदेव की मूर्ति के पावों पर था, प्रातःकाल

भिक्षुणियों ने उसे इस हालत में पाया और प्रभु का मंगल राग गाते हुए उसके शव को दरिया के किनारे लेजाकर दाह करा दिया। शारीपुत्र प्रातः ही आया और उसने भी भिक्षुक का व्रत धारण करलिया।

यह एक पवित्र जीवन का संक्षिप्त वृत्तान्त है जिससे वह प्रभावशाली उपदेश प्राप्त हो सकता है जिसके लिये गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी रामायण में महाराज रामचन्द्रजी को ज़ुबानी सुनाया है।

रघुकुल रीति यही चलि आई,
प्राण जायं पर वचन न जाई।

यह वह पवित्र सत्ताएं हैं, जो अपने सन्मुख उच्च आदर्श निश्चत कर परोपकार बुद्धि और निष्कामभाव से उनकी पूर्त्ति करते हैं और जिनका जीवन मानुषीय निर्बलताओं से परे होता है।

कवीर सीप समुद्र की रटे प्यास प्यास,
और नीर को ना गहे स्वातिबूंद की आस ॥
ऊंची जात पपैहरा, पिये न नीचा नीर,
कै सुरपत को जांचिये, कै दुःख सहे शरीर ॥

(मार्तंड)

नम्र ॥

(विनय)

ओ मालिक कर्त्तार जहां के,
दिल के मालिक वाली जांके।
छोटे और बड़े सब तेरे,
बैठे और खड़े सब तेरे।
सब से दूर है पास भी तू है,
सब की सच्ची आस भी तू है।
तू ने सृष्टि की जब ठानी,
आग हवा और मिट्टी पानी।
तू ने बना के सब को बनाया,
अपना करिश्मा कैसा दिखाया।
धरती अकाश बनाये तूने,
अपने रंग दिखाये तूने।
चांद और सूरज तारे सितारे,
तेरे करिश्मे हैं यह सारे।
कंकर पत्थर और जवाहर,
नद्दी नाले और समंदर।
पेड़ उगा के फूल खिलाये,
फूलों में फल क्या २ लगाये।
बागो बहार अरु खेती क्यारी,
सारी चीजें हलकी भारी।
तूने बनाई, तूने बनाई,
कारीगरियां क्या २ दिखाई।
तेरी कुदरत सब से निराली,
दिन है उजला रात है काली।
गुन गाती हैं चिड़ियां तेरे,
डाली डाली शाम सबेरे।
तूही मारे तूही जिलाये,
तूहीं पिलाये तूहीं खिलाये
तूहीं तिराये तूहीं डुबाये,
तूहीं हंसाए तूहीं रुलाये।
बाप न मा है तेरे दाता,

भाई बहिन से कुछ नहिं नाता ।
बेटी बेटा कोई नहीं है,
नाती पोता कोई नहीं है ।
अपने नाम का एक ही तू हैं,
बाहिर यकता एक ही तू हैं ।
दोनों जहां में राज है तेरा,
जो है वह मुहताज है तेरा ।
कैसा खाना कैसा पीना,
कैसा मरना कैसा जीना ।
ज़ात है तेरी सब से निराली,
सब का मालिक सब का वाली ।
सब को तू देता है दाना,
बहुत बड़ा है तेरा ख़ज़ाना ।
औरत तूने ऐसी बनाई,
नस्ल आदमी की इससे चलाई ।
नर नारी का जोड़ा बनाके,
बीबी मियां का रिश्ता जमाके ।
पेट में माके बच्चा डाले,
खिला पिला के वहीं तू पाले ।
पाल पोस के पैदा करे तू,
माको उस पर शैदा करे तू ।
माकी ममता बाप की उल्फ़त,
बच्चे की दोनों से मुहब्बत ।
माकी मुहब्बत जानते सब हैं,
बाप की उल्फ़त मानते सब हैं ।
मा बच्चे को दूध पिलाये,
टहल करे और झूला झुलाये ।

कैसे कैसे दुख है उठाती,
सच है पर माकी है छाती ।
दिन को चैन न रात को सोना,
सारी उम्र इसी में खोना ।
देखो कैसी मुसीबत उठाई,
तब औलाद की दौलत पाई ।
बच्चे की मां बाप से राहत,
यही न हो तो क्या ही हक़ीक़त ।
बेमा बाप के कैसे जीवे,
बच्चा क्या खावे क्या पीवे ।
क़ुदरत ने मा बाप बना के,
अपनी रैनी सारी रचाके ।
पालना बच्चों का सिखलाया,
रहम दिली का रस्ता बताया ।
अब देखो कैसा है ज़माना,
कुछ नहिं बेवारिस का ठिकाना ।
बैर पड़ा है सब के दिल में,
रंज भरा है सब के मन में ।
ऐयाशी पर कोई तुला है,
बदियों पर दिल खूब खुला है ।
कोई नशे का मतवाला है,
किसी को जूए से पाला है ।
चोरी की है धुन में कोई,
राहज़नीके गुन में कोई ।
लच्छन अच्छा एक नहीं है,
काम कोई भी नेक नहीं है ।
संगदिली को छोड़ो भाई,

बदियों से मुंह मोड़ो भाई ।
दुखियारों के काम में आओ,
यश भी और आराम भी पाओ ।
बाप नहीं जो कमा के लावे,
मा भी नहीं जो पका खिलावे ।
पालनेवाला कोई नहीं है,
पूछने वाला कोई नहीं है ।
हम तुम सब आराम हैं करते,
चैन से अपना पेट हैं भरते ।
यतीमों की कुछ ख़बर नहीं है,
बेवों पर कुछ नज़र नहीं है ।
हम तो खावें भूखे रहें वे,
हम तो पीवें प्यासे रहें वे ।
ख़ाक है ऐसा खाना पीना,
मौत से बदतर ऐसा जीना ।
सच पूछो है फ़र्ज़ हमारा,
यतीमों को कुछ देना सहारा ।
इससे अच्छा काम नहीं है,
इससे बेहतर नाम नहीं ।
एक पन्थ दो काज यही है,
दोनों जहां में राज यही है ।
पालना बेवारिस का जहां में,
सींचा पोदा गोया खिज़ांमें ।
बेवों पर भी रहम करो तुम,
शादी दूसरी उनकी करो तुम ।
पाप से उनको भी तो बचाओ,
क़ौम को इस सूरत से बढ़ाओ ।
फ़र्क़ न डालो तुम कुदरत में,
दख़ल न दो उसकी फितरत में ।
(Nature)

नरनारी को क्यों है बनाया,
शादी का क्यों रस्ता दिखाया ।
जवान जो विधवा कोई पावो,
उसकी शादी खूब रचाओ ।
सुख दो उसको दुख से छुड़ाओ,
नेकी सिखाओ बदी छुड़ाओ ।
सुख दीजे सुख पाओ भाई,
दुख दीजे दुख पाओ भाई ।
पाक के पाले जाओ भाई,
टाल के टाले जाओ भाई ।
नेकी करना नेक बहुत है,
काम यही बस एक बहुत है ।
अब यह दुआ है मेरी दाता,
कोई नहीं जुज़ तेरे बचाता ।
रहमदिली तू क़ौम को देवे,
हमदर्दी तू क़ौम को देवे ।
बेवारिस बच्चों की ख़बर लें,
विधवा विवाह भी आगे धरलें ।
मुहताजों की नहीं है शिकायत,
दौलतमंदों को दें हिदायत ।
मदद अनाथालय की करें वो,
बोझ यह अपने सरपै धरें वो ।
जैसा देना वैसा लेना,
अपनी किस्मत अपना लेना ।
काम किसी के हम नहिं आवें,
औरों से आराम उठावें ।

खुदगर्ज़ी जब ऐसी होवे,
हमदर्दी फिर क्यों न रोवे ।
इसको छोड़ो इसको छोड़ो,
खुदगर्ज़ी से मुंह को मोड़ो ।
मानो कहना भाइयो मेरा,
ऐसा करो तो पार है बेड़ा ।
इसको सरीर न समझो कहानी,
एक दिन सब की जान है जानी ।

विद्यार्थी बालचन्द का लेख हम इस आशा से प्रकाशित करते हैं कि उस से नवयुवक अपने माता, पिता आदि की उचित सेवा और सत्कार सीखकर आयु, बल, विद्या और यश के भागी बनेंगे । (सम्पादक)

पितृयज्ञ ।

हे भाई, बहिनो ! इस संसार में परमेश्वर के उपरान्त हमारे माता, पिता आदि कर्त्ता रक्षक हैं, जब हम बेसुध और अज्ञान वरन हाथ पैर चलाने हिलाने और रोने के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते वही हमारे शरीर की सर्वप्रकार से सुध लेते हैं, फिर भला उनसे अधिकतर कौन हमारा उपकारी हितैषी होसक्ता है? कदापि नहीं, कदापि नहीं। इसलिये हम सबको ईश्वर के अतिरिक्त अपने माता, पिता, सुखकर्त्ता, दुःखहर्त्ता, परमरक्षक, परमदयालु की मन, वाणी शरीर से सेवा टहल करनी चाहिये, कि जिनके प्रसन्न करने ही से हम सबको संसार में सुख और अप्रसन्न रहने से दुःख मिलते हैं । सचमुच इनकी सेवा करने से मेवा मिलता है। अट्ठासी हज़ार ऋषियों ने सुत के पुत्र सौतजी से पूछा कि कौन धर्म अक्षयसुख का दाता है? जिसके करने से स्वर्ग में भी देवता लोग उसकी पूजा करते हैं, ऐसा कोई तीर्थ, उत्तम यज्ञ, भूतल पर करने योग्य हमसे कहिये, इस को सुन सौतजी ने कहा पिता धर्म है, पिता स्वर्ग है, पिता ही परम तप है, इससे पिता के प्रसन्न होने पर सब देवता प्रसन्न होते हैं जिसकी सेवा वा गुण से पितरलोक तृप्त होते हैं उसको प्रतिदिन पितृयज्ञ का फल मिलता है । हे बालक बालिकाओ ! देखो तो हम ने तुम को कैसे दुःखों और क्लेशों से पाला, हम तुम्हारे खान पान वस्त्रादि के संग्रह अर्थ अपने प्राण देने को भी उद्यत रहे और आप सदा भूखे नंगे रहे, परन्तु हमने तुम को उत्तम २ भोजन मनोहर वस्त्र पहनाये कि जिनको देख २ कर और भी प्रसन्न होते रहे ।

अपने दुःख को तुम्हारे आनन्द विलास पर कुछ भी न जाना, जहां तुम्हारे मुखड़े के प्रकाश की छबि में कुछ अन्तर आया, ज़रा भी अनमने हुए, माता पिता को चैन न हुआ घर बार बरन व्यापार को भी तुच्छ जाना, हमने तुम्हारे अर्थ इधर उधर दौड़ धूप करने में रात दिन

का भी ज्ञान न किया, वैद्यों, हकीमों आदि के दर्वाजों की खाक को छान डाला, परमेश्वर की प्रार्थना करने से भी अचेत न रहे, मुख्य तो यह है कि माता पिता ने बिना हमारे आराम चैन के अपना सुख नहीं जाना। जिस प्रकार माता पिताओं ने सुख दिया है उसी प्रकार हम भी माता पिताओं को आनन्द दें। वर्त्तमान समय को देखिये कि जहां पुत्र को होश आया और बाहर भीतर आने जाने लगे और प्राणप्यारी के दर्शन हुए फिर तो हरदम तिउरीं चढ़ी हुई हैं, बात सीधी करना कठिन होगया, माता पिता प्रेम के कारण अपने प्राण तक न्यौछावर किये हुये फूले नहीं समाते परन्तु उनको बात ही करना बुरा जान पड़ता है, प्रथम तो मुखारविन्द से बात करते ही नहीं यदि कुछ कहा भी तो उस समय इस प्रकार से वार्त्तालाप करते हैं मानो किसी सेवक को शिक्षा कर रहे हैं। धन्य आपकी विद्या और बुद्धि को क्या आप को वह समय स्मरण नहीं रहा जब माता अपने ही दूध से तुम्हारे प्राणों की रक्षा करती थी, प्रत्येक समय छाती से लगाये रहती थी, सोने, उठने, बैठने, खाने पीने के समय सदा स्मरण कर तुम्हारा पालन करती थी। हाय शोक कि माता की बात तक नहीं सुहाती, धिक्कार है! प्यारे मेरे इस कथन से आपको अत्यन्त क्लेश हुआ होगा और मेरे अर्थ मन में भी कटुवचन उच्चारण करते होंगे, यदि ध्यान लगाकर विचार करोगे तो मैं आपको सच्चा हितैषी जान पड़ूंगा क्योंकि मित्र वही है जो अपने मित्र के गुण को जानकर उनका यथार्थ प्रकाश कर शुभगुणों के धारण करने के अर्थ प्रयत्न करे और वैरी वह है जो उसके अवगुणों को प्रकाश न करे। इसलिये अब विचारपूर्वक माता पिता गुरु इत्यादि की तन मन धन से सेवा टहल करो कि जिसमे संसार में यश और परलोक में सुख आनन्द प्राप्त हो नहीं तो इसी पाप में आप को नाना भांति के क्लेश उठाने पड़ेंगे, संसार में अपयश होगा। परलोक में भी घोर नरक के दर्शन करने पड़ेंगे।

बालचन्द विद्यार्थी,
नीमच-छावनी.

फ़रीदकोट राज्य आजकल सुधार के मैदान में बढ़ा जारहा है, वहां के राज्य-सभा ने प्रजा के हित के लिये निम्नलिखित १० प्रस्ताव पास किये हैं। यदि यह दश प्रस्ताव ज्यों के त्यों प्रयोग में आगये (जैसाकि राजाज्ञा होने से आने ही चाहियें) तो फ़रीदकोट शीघ्र ही उच्च कक्षा का राज्य होजाना आवश्यकीय बात होगी) परमात्मा ऐसाही करे।

१— यदि राज्य में किसी जगह कन्याहत्या की वार्दात हो तो कौंसिल आबरिजेन्सी को उसी दम उसकी इत्तिला दीजाय।

२— लोगों को समझाया जाय कि रुपया लेकर लड़की ब्याहना या बेचना या ऐसे कामों में मदद देना बड़ा पाप है, यदि समझाने से लोग यह निन्दनीय कार्य न त्यागें तो कौन्सिल को सूचित किया जाय।

३— लड़के और लड़कियों के कान बिलकुल न छेदे जायं, यदि अभी यह नहीं हो सकता हो तो लड़कियों के कानों की लौमें केवल एक छेद करदिया जाय।

४— व्यर्थ बहुत से गहने रखने की चाल बिलकुल उठादी जायँ। यदि किसी को कुछ गहने रखने हों तो वह कानों के लिये बालियाँ और हाथों तथा गले के लिये हलके गहने रख सकता है। बाकी सब गहने को बेच डालना चाहिये।

५— माता पिता लड़कियों के लिये वर स्वयं तलाश करें। वर को पसन्द करने में घराना देखने के बाद विद्वत्ता, तन्दुरुस्ती, चालचलन आदि का ख़याल रखना आवश्यक है। बहुतसे मूर्ख माता पिता अपना ऐसा महत्त्व का कर्त्तव्य कार्य नाइयों या पुरोहितों के ऊपर छोड़ देते हैं, जिसका बहुधा यही परिणाम होता है कि अबला बालिका जीते जी मर जाती हैं। ऐसा न होना चाहिये माता पिता को लड़की के सुख दुःख का पूरा ख़याल रखकर यह कार्य करना चाहिये। जब पिता वर को पसन्द करें तो शकुन के रीत्यानुसार १) उसके हाथ पर धर दें। मंगनी के लिये कुछ भी व्यर्थ व्यय न किया जाय।

६—विवाह के समय मद्यपान नाचरंग, यह सब बन्द किया जाय। बरात में अधिक से अधिक १५ आदमी हों और तीन बार से अधिक भोजन न दिया जाय। दहेज़ की फिजूल रस्म दूर की जाय। वर और वधू पक्षवाले अपने अपने मीरासियों और नाइयों को आप आप दें, लड़की का बाप लड़की को केवल पांच पौशाकें और वर को एक पगड़ी दे। मिलनी के समय १) से अधिक न दिया जाय।

७—इस बात का ख़ास तौर से ख़याल रक्खा जाय कि विवाह के समय लड़के की उमर १८ और लड़की की १५ से कम न हो। कम उमर की लड़कियों का विवाह बूढ़ों से करना और कम उमर लड़के का विवाह जवान स्त्री से करना बहुत बुरा है, इसलिये यह बुरी चाल तुरन्त बन्द कीजाय।

८— बूढ़ों के मरने पर सब रिश्तेदारों के जमा होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मरने की ख़बर डाक से दीजाय ख़ास आदमी भेजने की कोई आवश्यकता नहीं।

९— बहुत से सण्डे मुसण्डे बेकार लोग साधु फकीरों के भेष में इधर उधर फिरा करते हैं और शादी विवाह के मौके पर जमा होकर भीख मांगते हैं, ऐसे लोगों को कुछ देना ऐसे बेकारों की संख्या बढ़ाना है। यदि कोई दान करना चाहें तो विद्यालयों, अनाथालयों और विधवाश्रमों की सहायतार्थ जो देना चाहें दें, जिससे स्वजाति और स्वदेश को लाभ पहुंचे। व्यर्थ रुपया लुटाने से कुछ लाभ नहीं।

१०— विवाह के समय गन्दे गीत न गाये जायें। स्त्रियां मर्दों के सामने किसी प्रकार ठट्ठा न करें।

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास मई १९११ में वस्तु दान देकर सहायता प्रदान की ॥

बा० काशीनाथजी द्वारा लाला अंगनलालजी हलवाई मूंदड़ी मोहल्ला अजमेर जलेबी ऽ१ पुड़ी ऽ१ दही ऽ। गेहूं ऽ१॥ दाल अरहरकी ऽ१≈ फल खिरनी ऽ१॥

बा० छोटेलालजी आर्य नसीराबाद खरबूजे ॥ऽ८ १॥) रुपये के.

श्रीमती जयदेवी बाई द्वारा बा० हरिशंकरजी रविशंकरजी डी० एच० आदर्स अजमेर पुड़ी ऽ३॥≈ जलेबी ऽ८ लड्डू ऽ५

रामनाथजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ऽ६ ॥) की.

धन्नालालजी तेलीबाड़ा अजमेर खल ऽ३≈ ।) की.

कन्हैयालालजी अत्तार मदारदरवाज़ा अजमेर २ बोतल शरबत अनार तथा गुलाब की.

बा० गप्पूरामजी गार्ड-अजमेर खरबूजे ४४ अनुमान १॥) मन.

धर्मादा रविवार अजमेर मिश्रित अन्न ।ऽ३। मिश्रित आटा ।ऽ६ गेंदीभूमी ऽ८।

बा० रामचन्द्रजी सेठ लादूरामजी के मकान के पास गेहूं ।ऽ१। दूध ऽ२ बूरा ऽ≈ कुरता १ टोपी १.

डी० एच० आदर्स मदारदरवाज़ा अजमेर गौ १ ओढ़नी १ १) रुपया.

पं० हमीरमलजी अजमेर जलेबीऽ५॥ २) की

बा० गोविन्दरामजी नं० २१ बड़ा बाज़ार कलकत्ता। लँहगा १ ओढ़नी २ कांचली ३, जाकट १,

अखेश्वरनाथजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर दूध ऽ४॥ बूरा ऽ।

सेठ बिरधीचन्दजी घसेटी मोहल्ला अजमेर दूध ऽ३ जलेबी लड्डू ऽ१॥

पं० हमीरमलजी अजमेर सब अनाथ अनाथाओं को भोजन कराया

बा० जोरावरमलजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर ,, ,,

बा० मूलचन्दजी गार्ड ,, ,, ,,

बा० नाथूरामजी बीड़ीवाले खरबूजे ।ऽ सेर.

पं० मिट्ठनलालजी वकील गेहूं जौ मिले ॥ऽ६

ला० श्रंगनलालजी पुरानीमंडी खरबूजे ।ऽ

धर्मपत्नी राय मूलचन्दजी पेमास्टर खरबूजे १० तरबूज १.

भारमलजी द्वारा खाखला कई दाताओं का २ गाड़ी आया छातड़ी से.

धर्म्मादा रविवार बूरा ऽ- घीऽ-दाल उड़दऽ≡ मिश्रित आटा ।ऽ३॥- जौ ऽ५भूसी रोटी ऽ७ लड्डू पेड़े पतासे ऽ।ः

प्रभुदयालजी वकील थाली पीतल की २, लोटे २, आसन छोटे ७, सिलीपर जोड़ी २, ओढ़नी २, कपड़े के टुकड़े २, ४ गज के तथा २ टुकड़े २ आधआध गज के.

म० ग्यारसीलालजी अजमेर ककड़ी ।ऽ४ सेर

द्वारा मुरलीधरजी अजमेर अन्न ग्रामों से एकत्रित १५।ऽ८, जौ २॥ऽ ५ ग्रामों से आया

हिन्दू पटेल आखरी एक गाड़ी खाखला और १ मन जौ

पं० हमीरमलजी जौ ॥ऽ गुड़ ऽ१= तेल ऽ१- उड़द ऽ१॥=

धर्मादा रविवार मिश्रित आटा ।ऽ५॥

बा० केशवदेवजी बाबूमोहल्ला अजमेर भूसी ऽ५॥

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास जून १६११ में वस्तु दान देकर सहायता की ॥

श्रीमती सत्यदेवीजी अजमेर खर्बूजा ६ तरबूज १

ला० मोतीलालजी खंडेलवाल महाजन ब्यावर बाटी ऽ८ पकी खिचड़ी ऽ६ ॥) का घृत.

बा० रामचन्द्रजी जूनियर विटनरी असिस्टेन्ट हासपिटल अजमेर १२ कन्याओं को भोजन तथा ५ लूगड़ी.

धन्नाजी तेलीपाड़ा अजमेर गायों को खलऽ३

रामनाथजी ,, ,, ,, ,, ऽ३

छोगालालजी ,, ,, ,, ऽ३

मोतीलालजी रावत ब्यावर पके हुये चावल ।ऽ३ बाटीऽ३॥ दाल ऽ४

ला० शिवनरायणजी द्वारा बाबू जोरावरमलजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर सब बालक बालिकाओं को भोजन कराया पुरी शाक लपसी.

धर्मपालजी द्वारा देवीराम ,, हरएक बालक को एक २ पैसा दिया.
धर्मादा रविवार मिश्रित आटा ऽ९॥ गुड़ऽ। सत्तूऽ॥ अन्न ऽ३ चन्दलाई का साग ऽ। भूसीरोटीऽ३
पं० रामचन्द्रजी सेठ लादूरामजी के मकान के पास, रोटी ऽ३ शाक बेंगन का
बा० फूलचन्दजी कायस्थमोहल्ला अजमेर =जलेबी ऽ१॥ छोटे बच्चों को व दो पैसे दान में.
पं० रामचन्द्रजी सेठ लादूरामजी के मकान के पास=रोटी ऽ२॥ शाक.
बा० फूलचन्द्रजी कायस्थमोहल्ला अजमेर । जो ऽ८॥
पं० रामचन्द्रजी ,, रोठीऽ२॥ बनीहुई शाक
दीवान जयनाथजी अटल चौड़ा रस्ता जयपुर=खर्बुजे १०० एक २ पैसा बूरा के वास्ते
श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी पूर्व पंडिता कृष्णगढ़ । पजामे ४ छोटे बच्चों को
पं० रामचन्द्रजी केशरगंज अजमेर रोटी ऽ२॥ शाक
धर्म्मादा रविवार ,, मिश्रित आटा ।ऽ२ अन्न ऽ४॥ भूसीरोटी ऽ४
मा० स्वरूपनरायणजी कायस्थमोहल्ला=गेहूं जो मिले ऽ८ आटा ऽ।
बा० मदनमोहनलालजी रेलवे मेलसरविस=गेहूं का आटा ऽ५ मूंगकी दाल ऽ४ चावल ऽ२ गुड़ ऽ१।= तेल मीठा ऽ१।= घृतऽ॥।= नमक ऽ१॥।
बा० हरनरायणदासजी सब ओवरसियर =छाते ३ तीन
धर्मपत्नी बा० मथुराप्रसादजी -भोजन सब बालक बालिकाओं को दालभात
बा० जवाहरलालजी जेलर जलेबी ऽ१॥ लड्डू ऽ१॥।=
बा० भागीरथलालजी मन्त्री आ० समाज देहली मिठाई ऽ३॥।
धर्म्मादा रविवार गेंहू का आटा ऽ५ जो ऽ१। आटा ऽ६॥ भूसी ऽ६ चने सिके १=
पं० मिट्ठनलालजी वकील अजमेर शाक बेंगन करेले ऽ३
मास्टर गोवराजजी ,, आम १५०
मन्त्री आर्य्यसमाज अजमेर चठाई के आसन ।≡॥ के
पं० मिट्ठनलालजी वकील द्वारा ,, लड्डू ॥ऽ४ सेर
जनरल इन्स्युरेंस कम्पनी ,, लड्डू ऽ२॥।=
धर्मादा रविवार ,, आटा मिला हुआ ।ऽ ५॥। चने की दाल ऽ७॥ छिलके रोटी ऽ२ चने की दाल ऽ१

बा० मूलचन्दजी गार्ड मूदड़ी मोहल्ला =आम ३७
पं० गिरवरलालजी बा० भजनलालजी के मकान के पास=आटा गेंहू का ऽ॥ दाल अरहर ऽ= नमक मिर्च (सीधा).
मा० देवीप्रसादजी कायस्थमोहल्ला =जलेबी ऽ१॥। गिलास पीतल का
म० टीकारामजी नवाब का बाड़ा ,, ७ बालकों को भोजन कराया पूरी शाक
ला० कन्हैयालालजी अत्तार मदारगेट अजमेर आम ४० चालीस जलेबी ऽ।
बा० नाथूरामजी गार्ड अजमेर जामुन ऽ॥=
बा० जगदम्बालालजी कायस्थमोहल्ला अजमेर जलेबी ऽ।
बा० आनन्दीलालजी व मुं० शिवनाथजी कायस्थ अजमेर आमछोटे २०० लड्डू ऽ॥
ला० दोलतरामजी बरसनी आसीन उदयपुर जूता जोड़ा १
मा० विजयराजजी कायस्थमोहल्ला अजमेर जलेबी ऽ॥
पं० हमीरमलजी शर्मा अजमेर सब अनाथों को भोजन कराया दालभात बूरा.

नामावली उन दाताओं की जिन्हों ने महाशय शमानन्दजी उपदेशक द्वारा सहायता की

२६) चौधरी छज्जूसिंहजी महमूदपुर माजरा जिला मुजफ्फरनगर
५) बा० बलदेवसहायजी दूनवाले मुजफ्फर नगर
-) मुहम्मद सर्फा ,,
१) मिस्तरी तुलसीरामजी ,,
॥) महाशय कबूलसिंहजी ,,
।) महाशय समवासिंहजी ,,
१) महाशय बनवारीलालजी ,,
।) मिस्तरी कबूलसिंहजी ,,
=) मुहम्मद उमर ,,
=) पीरू शोराज ,,
॥) महाशय राजारामजी ,,
१) बा० भगवानदासजी ,,
।) ला० शंकरलालजी ,,
।) महाशय बाबूरामजी ,,
॥) बाबू सन्तलाल गुप्त ,,
१) महाशय बूटारामजी ,,
२) मंत्री आर्य्यकुमारसभा गाजियाबाद
१) चौधरी पद्मसिंहजी बहादुरपुर
१) ,, मुख्तारसिंहजी एलम
१) ,, खजानसिंहजी बनली खेड़ा
१) ,, मामराजसिंहजी शामली
१) ,, बख्तावरसिंहजी भारली
१) ,, शेरसिंहजी बहादुरपुर
१) पं० चन्दूलालजी सिलावर
१) पं० रामचन्द्रजी वैद्य शामली
१) चौधरी जगतसिंहजी खरड़
१) ,, गंगारामजी एलम

१) छज्जूसिंहजी	खेड़ीपट्टी
१) ,, रामसिंहजी	एलम
१) ,, समानन्दजी	फफड़ीपुर
१) ,, केहरसिंहजी	,,
१) ,, दुलारसिंहजी	एलम
१) अलमसिंहजी	,,
१) चौधरीनिहाल सिंहजी	कांफ
१) ,, पद्मसिंहजी	खेड़ी
१) मुंशी कल्याणसिंहजी	किनौनी
१२) चौधरी गणेशीसिंहजी	एलम
१) ,, दातारामजी	ऊन
१) ,, नकलीराम	,,
१) ,, भरलू	,,
१) ,, रामसिंहजी	डीडाली
१) ,, धर्म्मसिंह	ऊन
१) ,, आशाराम	,,
१) ,, छज्जू	बटराड़ा
१) ,, नन्दू	फूलगढ़
१) ,, दीनदयाल बावली	
१) ,, बलदेव	बावली
१) ,, लालचन्द	,,
१) ,, हरज्ञान	लांक
१) ,, भूपसिंह	बावली
१) गुप्तदान	
२) बा शंकरलालजी हैड ड्राफ्समैन	जयपुर
१) ,, दुर्गादासजी	,,
२) ,, बृजमोहनलालजी	,,
१) ला० काशीप्रसादजी मुहाफिज दफ्तर	
२) जोहरी मिहरचन्दजी	,,
१) बा० श्यामसुन्दरलालजी	,,
१) पं० रामप्रतापजी	,,
१) महाशय दौलतरामजी वेक्सीनेटर	,,
१) बा० गोविन्दरामजी फोटोग्राफर	,,
२) बा० जगन्नाथ प्रसादजी भार्गव	,,
१) बा० लालचन्दजी नक्शा नवीस	,,
१) बा० उमाशंकर प्रिंसिपल	,,
४) बा० नानकराम जोहर बी.ए.	,,
बा० लक्ष्मणसिंहजी तहसीलदार अंगरखी	,,
२) बा० गौरीलालजी देवलीवाल	,,
२) सेठ कन्हैय्यालालजी	,,
२) पं० घासीरामजी वेक्सी नेटर	,,
1) कविराज ऋषिकेशरायजी	,,
१) बा० मूलचन्दजी	भरतपुर
१) बा० चुन्नीलालजी ठेकेदार सेवर	भरतपुर
१) मुंशी बाबूप्रसादजी सुप्रिण्टेण्डेण्ट जेल	,,
१) डाक्टर किशोरीलालजी	,,
१ पं० गोपालदासजी जेलर	,,
५) आर्य्यसमाज	,,
२) बा० हीरालालजी प्रधान आ० स०	,,
१) बा० महेशस्वरूपजी	,,
४) बा० कन्हैयालालजी	,,
1) ला० श्यामलालजी	,,
1) ला० हीरालालजी	,,
१) बा० नानकरामजी	,,
२) डा० शालिगरामजी	,,
1) पं० कुंवर कृष्ण	,,
डाक्टर गौरीशंकर	,,

॥) बा० केदारनाथजी वर्म्मा भरतपुर
१) मुं० अशरफ़ीलालजी ,,
॥) पं० ईश्वरी प्रसादजी ,,
॥) पं० सदानन्दजी ,,
१) बेहरीजी मा० सोहनलालजी ,,
बा० सोहनलालजी भरतपुर २ कुड़ते १ कोट
४।=) बा० शिवकरण वर्म्माजी देहली
१) पुत्री मुं० पुरुषोत्तमस्वरूपजी भरतपुर
२) डाक्टर सुखदेवजी वर्म्मा अंगरखी २ कुड़ता ४ टोपी १
बा० नानकरामजी कुड़ता १ धोती १
=) गुप्तदान
॥) मास्टर बाबूलालजी ,,
७) कुंवर विजयसिंहजी विद्यार्थी व मारकीन १६ गज
२) पं० बिहारीलालजी ,,
२) मु० बालबिहारीलालजी ,,
८) मुंशी गुरुस्वरूपजी ,,
।) गुप्तदान ,,
१) डा० द्वारिकाप्रसादजी ,,
१) बा० सुन्दरलालजी मंत्री आ० समाज ,,
।=) पं० गोकुलचन्दजी दीक्षित ,,
२) बा० शान्तिस्वरूपजी तहसीलदार डीग
१) बा० पुरुषोत्तमस्वरूपजी भरतपुर
-) गुप्तदान गंगाराम अनाथ द्वारा
५) डाक्टर मित्रा असिस्टेण्टसर्जन भरतपुर
॥) गणपतसिंहजी ,,
५) रावबहादुर मुंशी रोशनलालजी
१) धर्म्मपत्नी डा० द्वारिकाप्रसादजी भरतपुर
डाक्टर द्वारिकाप्रशादजी भरतपुर
१।) माता ,, ,,
१) ठाकुर माधोसिंहजी ,,

नामा बली उन दानी महाशयों की जिन्होंने महाशय नत्थमलजी पंसारी कोसी द्वारा चंदा भेज कर सहायता की।

।) नत्थामल पंसारी
।) किशनलाल राधावल्लभ
=) छोटेलाल गोकलचन्द्र
=) कन्हैयालाल
=) गिरराज मुनीम
=) रामचन्द्र
=) जोहरी हलवाई
=) नारायणदास
=) धरणीधर वैद्य
-) हीरालाल छगनमल
-) किशोरी मुनीम
-) रामदास जगन्नाथ
-) गयासीराम नत्थीमल
-) केशरीप्रसाद बृजलाल
-) बुद्धा तोला
-) छोटेलाल लछमीनारायण
-) प्यारेलाल रामचन्द्र
-) मक्खनलाल छज्जुमल हलवाई
-) घीसामल गोकलमल तमाखूवाले
-) श्यामलिया पूर्णमल बजाज
-) थानामल बाखेटिया
-) सेढू

-) मुरलीधर ब्राह्मण
-) बालकिशन
-) उग्रसेन
-) जगन्नाथ

श्रीसेठ मांगीलालजी कविकिङ्कर" नीमचनिवासी संग्रहीत उपदेशमाला अपने पाठकों के लाभार्थ भेट करते हैं, आपमें उपदेशमाला के प्रत्येक उपदेशपूरित श्लोक का अनुवाद अत्युत्तम दोहों में किया है जिस से माला रत्न जटित होगई है। बालकों को कण्ठस्थ कराने के लिये बहुत ही उपयोगी होगी, व्याख्याताओं के लिये भी उनके काम में कम सहायक नहीं। हमारा विचार इसे एक साथही निकालदेने का था, किन्तु स्थानाभाव से ऐसा न करसके। अगले अङ्क में पूर्ण करदी जायगी।

सम्पादक

"कविकिङ्कर" श्री सेठ मांगीलालजी नीमच निवासी संग्रहीत सहटिप्पणी।

उपदेश माला

अधनो दातु कामोपि,
संप्राप्तो धनिनां गृहम्।
गम्यते याचकोऽयंधिग्,
दरिद्रयं खलु देहिनाम् ॥
देने को भी आय जो,
निर्धन धनिक द्वार।
याचक समही मानहो,
दारिद को धिक्कार ॥

अन्नाद् भवन्ति भूतानि,
पर्जन्यादन्न संभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो,
यज्ञः कर्म समुद्भवः ॥
होवें प्राणी अन्न से,
अन्न मेघ से होय।
मेघ बनत है यज्ञ से,
यज्ञ कर्म से जोय ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्च,
संरोधनान्मूत्रपुरीषयोश्च,
दिवाशयाज्जागरणाच्च रात्रौ।
षडाभिः प्रकारैः प्रभवन्ति रोगाः।
अतिपानी का पान अरु,
विषमाशन,मल-रोक।
दिवश-शयन,निशि जागरण,
रोग हेतु ये लोक।

असतां सङ्गदोषेण,
साधवो यान्ति विक्रियाम्।
दुर्योधनप्रसङ्गेन,
भीष्मो गोहरणे गतः ॥
दुर्जनसङ्गति दोष से,
साधुक्रिया हो भङ्ग।
भीष्म गाय हरणे गये,
पादुर्योधन सङ्ग ॥

अनुकूलां विमलांगीं
कुलजां कुशलां सुशीलसम्पन्नाम्,
पञ्चलकारां भार्या
पुरुषः पुण्योदयाल्लभते ॥
कुलजा कुशल, सुशील अरु,

विमलाङ्गी अनुकूल,
मिलती पञ्चलकार-तिय
पुण्योदय के मूल ॥
अनाथं नानुकंपन्ति
ये सतां द्वेषकारकाः ।
विनापराधं दण्डन्ति
ते वै नरकगामिनाः ॥
करुणा नहीं अनाथ प्रति
पुनि साधुन से द्वेष ।
विना दोष ही दण्ड दे
उनको नरक प्रवेश ,
अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं,
दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं,
तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥
अङ्ग गले शिर पक गया
गये दांत भी टूट ।
वृद्ध,लगुड़धारी हुआ
तृष्णा से नहीं छूट ॥
अन्नदानात्परंदानं ।
विद्यादानमतःपरम्,
अन्नेन क्षणिका तृप्ति,
यावज्जीवं च विद्यया ॥
अन्नदान से नीक है
विद्या दान विशाल ।
क्षण तृप्ति हो अन्न से
विद्या से सब काल ॥
अचला कमला कस्य
कस्य मित्रं महीपतिः ।
शरीरञ्च स्थिरं कस्य.
कस्य वश्या वराङ्गणा ॥
किस के मित्र महीश हैं
लक्ष्मी थिर किस भौन ।
अमर देह किसका ! करी
वेश्या को वश कौन ॥
अवश्यमेव भोक्तव्यं
कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म
कल्पकोटिशतैरपि ॥
अवशि भोगनो पड़त है
कियो कर्म भल खोट ।
भोग किये विन कर्म नहीं
नशत कल्पशत कोट ॥
अर्थानामर्जनं कार्यं ,
वर्धनं रक्षणं तथा ।
भक्षमाणो निरादायं
सुमेरुरपि क्षीयते ॥
धन पैदा करनो भलो
रक्षण, वर्धन, फेर ।
भोग किये, विन आय के
खुटत मेरुसम ढेर ॥
अनादायी व्ययं कुर्या—
दसहायी रणप्रिय ।
आतुरःसर्वभक्षीच
नरः शीघ्रं विनश्यति ॥
खर्चे करे बिन आय के,
अस हायी रण जाय ॥

रोगी हो सब कुछ भखै,
सो नर शीघ्र नशाय ॥
अकृत्वा परसंताप,
मगत्वा खल नम्रताम् ।
अनुत्सृज्य सतां मार्गं
यत्स्वल्पमपि तद्बहु ।
खल आगे रोवे बिना,
हिंसा के बिन और ।
सन्त गैल छाड़े बिना,
थोर मिले सु अथोर ॥
अहिंसा सत्य वचनं
सर्व भूतानुकम्पनम् ।
शमो दानं यथा शक्ति
गार्हस्थो धर्म उच्यते ॥
सत्य, अहिंसा, सकल से
करुणामय आचार ।
दान यथा बल शम पुनः,
गृही धर्म को सार ॥
अर्थागमो नित्यमरोगिताच,
प्रियाच भार्या प्रियवादिनीच ।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरीच विद्या,
षट् जीवलोकेषु सुखानि राजन् ! ॥
योग्य पुत्र धन दायनी,
विद्या, प्रति प्रिय नार ।
द्रव्यागम, आरोग्यता,
षट सुख भूभरतार ! ॥
अप्रियाण्यपि पथ्यानि,
ये वदन्ति नृणामिह ।
त एव सुहृदः प्रोक्ता,
अन्य स्युर्नामधारकाः ॥
कटुक वचन हित से भरे,
कहैं सु सज्जन रीत ।
मित्र कहाने योग्य वे,
अन्य नाम के मीत ॥
अर्थोनराणां पतिरङ्गनानां
वर्षा नदीनामृतुराट् तरूणाम् ।
स्वधर्मचारी नृपतिः प्रजानां,
गतं गतं यौवनमानयन्ति ॥
धन नरका, पति-नारि का,
तरु वनका ऋतुराय ।
वर्षा-नद, नृप-प्रजन का,
गत यौवन दें लाय ॥
अनाश्रितः कर्मफलं,
कार्यं कर्म करोति यः ।
स संन्यासी च योगी च,
न निरग्निर्नचाक्रियः ॥
यज्ञादिक जो करत है,
फल अभिलाषा त्याग ।
सो संन्यासी योगि है,
न बिनक्रिय बिन आग ॥
अनामा स्वर्णमाधत्ते,
न कनिष्ठा न मध्यमा ।
निज नाम प्रसिद्धानां,
भूषणैः किं प्रयोजनम्? ॥
अंगुली सब पहिने नहिं,
पहिने हेम अनाम ।
जो निजनाम रखें उन्हें,
भूषण से क्या काम ॥

अभक्ष्य परिहारश्च ,
संसर्गश्चापि निन्दितैः ॥
आचारेषु व्यवस्थानं ,
शौचमित्याभिधीयते ॥
त्यागन करे अभक्ष्य का ,
अरु निन्दित जन सङ्ग ।
सदाचार में दृढ़ रहे ,
यही शौच का अङ्ग ।
आहारो द्विगुणः स्त्रीणां ,
बुद्धिस्तासां चतुर्गुणा ॥
षड्गुणो व्यवसायश्च,
काम श्चाष्टगुणःस्मृतः ॥
वरणत नारी नरनतें,
लाज चौगुणी चित्त ।
भूख द्विगुण साहस छगुण,
काम आठ गुण मित्त ॥ (१)
आदादीतन शूद्रोपि ,
शुल्कं दुहितरं ददन् ।
शुल्कसंज्ञेन मूल्येन,
छन्नं दुहितृ विक्रयम् ॥
कन्यादाता शूद्र भी ,
शुल्क (२) तनिक नहिं लेय ।
शुल्क लिवैया गुप्त विधि,
सुता मोल से देय ॥

(१) यह दोहा श्रीकेशवदासजी की कविप्रय का है । (टीका कर्ता)

(२) शुल्क अर्थात् रुपैया पैसा, अमर में "घटाविदेयं शुल्कोस्त्रि"

आहार, निद्रा,भय,मैथुनानि,
समानमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।
एको विवेकोऽप्यधिको मनुष्ये,
ते नैव हीनः पशुभिः समानः ॥
नींद,अहार,भय,भोग,ये,
नर पशुओं में एक ।
नर में अधिक विवेक है,
पशुसम विना विवेक ॥
अश्वस्य लक्षणं वेगो,
मत्तं मातङ्ग लक्षणम् ।
चातुर्य्यं लक्षणं नार्या ,
उद्योगः पुरुष लक्षणम् ॥
चतुराई तिय चिन्ह है,
लक्षण वेग तुरङ्ग ।
नर लक्षण उद्योग है,
मद लक्षण मातङ्ग ॥ (३)
अयं निजः परो वेति,
गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानान्तु,
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
यह अपना यह अन्य है,
लघुजन करें विचार ।
समझें—चरित उदार नर,
वसुधा ही परिवार ॥
अम्मणिओ सन्देउओ,
तारय कन्ह कहिज्ज ।
जगदालद्दिहिडुब्बिउं,
बलि बन्धण हमुइज्ज ॥
कहु हमार संदेश उस,

(३) मातङ्ग—हाथी पाठ है ।

तारक कृष्ण समीप ।
क्यों जग दारिद डूबियो,
बलि नहिं लुटत महीप ॥
अतिथि बलिक:पत्नी,
जननी जनकस्तथा ।
पञ्च ते गृहिणः पोष्या,
इतरे च स्वशक्तितः ॥
पत्नी, बल, अतिथि ,अरु,
मात,पिता,गृहवान ॥
पांच पोषि के अन्य को,
पोषो वित्त समान ॥

(५) यह पवृत भाषा का दोहा है। विक्रम नृपति में प्रज क्षेम कुशल जानने को विचरते हुए-इस दोहे का पूर्वार्द्ध सुनाथा और शेष उत्तरार्द्ध भी उसी से उक्त राजा ने सुना ।

कार्य आरम्भ कर दिया गया।

जुलाई सन् १६११ ई० के अन्त की श्रीमद्दयानन्द अनाथालय की प्राबंधकीय सभाने अपने अधिवेशन में श्री-पण्डित भवानीप्रसादजी तथा पण्डित सुन्दरदत्तजी श्रोत्रीय को दुर्भिक्ष सम्बन्धी कार्य्य करने को नियत किया है, उक्त दोनों महाशयों ने कार्य्य भी आरम्भ कर दिया है। श्री० पं०भवानीप्रसादजी किशनगढ़ फलेरा होते हुए शेखावाटी में आवश्यकता और सुभीतानुसार कार्य्य करेंगे और प० सुन्दरदत्तजी ने सोजत से आरम्भ करके जोधपुर, पाली इत्यादि मारवाड़ में कार्य्य करना है। श्री पं० गंगासहायजी देहली और पं० रामानन्दजी पाठक आगरा धौलपुर की ओर पूर्व से ही कार्य्य कररहे हैं अर्थात् इस समय उपरोक्त ४ महाशय इस अनथालय की ओर प्रचार का कार्य करते हैं।जिनके लिये अनाथालय उत्तरदाता है इनके अतिरिक्त यदि कोई सज्जन अनाथों पर दया करके उन की सहायतार्थ धनादि एकत्रित करना चाहें वह कृपाकर कार्य्य करने से पहिले अनाथालय को सूचित अवश्य करदें ।

अनाथहितैषी महाजनों से सानुनय प्रर्थना है कि वह आर्थिक सहायता के अतिरिक्त अनाथों के एकत्रित करने में भी परिश्रम करें और अधिक परिश्रम करें। रुपया अपनी यथाशक्ति दे देना अनाथ बालकों को खोज २ कर उनको रक्षित स्थान भिजवाने की अपेक्षा आसान है किन्तु क्या इसलिये कि यह कार्य्य कुछ कठिन है इस से आंखें बचालेनी चाहिये ! कदापि नहीं, यह जितना कठिन है उतना ही आवश्यक भी है ।

खेद है कि बारम्बार लिखने और प्रयत्न करने पर भी छोटे बालकों के पालनार्थ कोई ठीक उपाय नहीं बन पड़ा। कोई ऐसी स्त्रियां नहीं प्राप्त होतीं जो बच्चों को अपना या बाहर का दूध पिलाकर पोषण

कर सकें यह कार्य तब तक नहीं हो सकता जबतक कि हृदय के अन्दर मातृस्नेह से पूरित दिल उपस्थित न हो। यूं तो स्त्रियां रहती ही हैं और यथासाध्यप्रबंध भी होता ही है किन्तु मातृविहीन बालकों को माता की गोद को भूलादेने वाली देवियों की आवश्यकता है। यदि कोई सज्जन इस विषय में अनाथालय की सहायता करेंगे तो बड़ा उपकार होगा।

विविध वार्ता

महाविद्यालय ज्वालापुर—की भूमि सुडौल सुरक्षित और हर प्रकार की मौसमी बीमारी से मुक्त है, इस समय ६० के लगभग ब्रह्मचारी और पर्याप्त अध्यापक उपस्थित हैं। श्री पूज्य पं० गंगादत्तजी आचार्य और श्री० पं० नरदेवजी शास्त्री वेद तीर्थ व्यवस्थापक सर्वतः विद्यालय के हो चुके हैं, पं० दलीपदत्तजी भी इनके साथ आ मिले हैं। पं० रविशंकरजी अधिष्ठाता, चौ० रघुराजसिंहजी, महन्तजी इत्यादि अन्य सज्जन भी आपको ऐसे ही योग्य प्राप्त हुए हैं। श्री० पं० पद्मसिंहजी मन्त्री विद्यालयसभा तथा सम्पादक भारतोदय के अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। छात्रालय में २ बड़े कमरें, बृहत्यज्ञशाला और कई छोटे २ स्थानों के अतिरिक्त एक और कमरा अभी तय्यार हुआ है। पाठशाला में काफ़ी गुञ्जायश है। २ उत्तम कूप चलते हैं। सबजी भाज़ी और लगभग सभी प्रकार के फल अपने बाग़ में होजाते हैं। गरज़ जैसा प्राचीन विद्याप्राप्ति के लिये विद्यालय उपयोगी स्थान है इसी प्रकार जल, वायु और भूमि के ख़याल से भी विश्वस्थ है।

हम पबलिक से प्रार्थना करते हैं। कि वह हरिद्वार और गुरुकुल पधारते हुए महाविद्यालय को अवश्य अवलोकन करें। उसके पश्चात् यदि उन का अन्तरात्मा उन्हें साक्षी दे उसकी सहायता का मार्ग तलाश करें। विशेष समाचार जानने के लिये विद्यालय का मुखपत्र भारतोदय मँगाकर अवलोकन करें।

श्रीमान् महाराजा साहिब बनारस ने एक अत्युत्तम मकान जिसका नाम "खुर्द-महल" लघुभवन था और जिस की लागत लगभग साठ सहस्र रुपये कूती जाती है सेंट्रल हिन्दूकालेज बनारस को अर्पण किया है जिससे श्रीमानों का विद्याप्रेम प्रकट होता है। हमें आशा है कि श्रीमान् महाराजा साहिब ने उक्त कालेज तथा उस की स्थापिका श्रीमती बसन्तीदेवी के विषय में "प्रभु यीशु या बुद्धदेव के अंतर की उत्पत्ती और उस की पूजासम्बधी चर्चा को अवश्य श्रवण कर अनुसंधान किया होगा और हिन्दू धर्म्म के लिये उस की उपयोगिता को जान लिया होगा।

गोरक्षा और पारसी—हिन्दूधर्म्म में जो कुछ माना गया था उसकी तह में कुछ न कुछ उपयोगी नियम काम करता था, समय अधिक होजाने तथा राजव्यवस्था के साथ २ धर्म्मव्यवस्था भी अदल बदल होते रहने के कारण कई कार्य्य एैसे बेढङ्ग रूप में परिवर्तित होगए कि प्रायः उनका वास्तविक स्वरूप ही नष्ट होगया है। उन्हीं में से गोरक्षा भी एक कार्य्य है जिसकी बुनियाद गाय के परमोपयोगी होने पर रक्खी गई थी उसके उपकारों के उपलक्ष में ही उसे गोमाता का नाम दिया गया था न कि मनमाना।

आप यह जानकर प्रसन्न होंगे कि उसी कृतज्ञता के आधारपर श्री० जे० एस० जस्सावाला एक पारसी महाशय आगामी नवम्बर मास में एक समुदाय (डेपूटेशन) के साथ लंदन पधारकर श्रीमान् राजराजेश्वर श्री० जार्ज पञ्चम की सेवामें यह निवेदन करेंगे कि भारतवर्ष में गोवध को बन्द करने के लिये विशेष नियम निर्धारित किये जाएं।

आशा रखनी चाहिये कि प्रजावत्सल राजराजेश्वर महोदय भारत वर्ष के लिये गो को अमृतदायिनी देवी जानकर (क्योंकि यहां की कृषी इसी देवी के सपूतों के कंधे पर स्थिर है तथा उसका दूध वास्तव में जीवनप्रद है) अवश्य महाशय जस्सावाला की उचित प्रार्थना को स्वीकार कर यहां की समस्त प्रजा को अनुगृहीत करेंगे।

अद्भुत घड़ी—जर्मनी के एक शिल्पकार ने एैसी घड़ी तय्यार की है, जो न केवल हर घंटे में प्रत्युत हर १५ मिनट के पश्चात् मधुरस्वर से पुकार कर कहती है कि "अब इतने बजे हैं" घड़ी में एक विशेष रीति पर फोनोग्राफ की मेशीन लगाई गई है। जब आवाज़ को बन्द करना चाहो एक लीवर को दबा दो।

प्रकृतिदेवी का उपासक, तत्त्ववेत्ता विज्ञानी जो कुछ कर सके वह थोड़ा है।

धर्म्म में श्रद्धा—आप इसको सिवाय धार्मिक विश्वास के क्या कहेंगे कि २० एप्रेल को न्यूयार्क के एक नीलाम में एक बाइबिल जिसका नाम "गिटिनबेरी" है डेढ़लाख रुपये को बिकी, १४ वर्ष पूर्व यही बाइबिल साठ सहस्र रुपये को बिकी थी। इतने मूल्यपर आजतक कभी कोई पुस्तक नहीं बिकी।

माया के खेल हैं—क्लीडीफिया (एफ्रिका) में मुर्गियों की प्रदर्शनी हुई थी उसमें आर्पिंगटन" नस्ल की दो काली मुर्गियों का मूल्य नम्बर वार ३६ सहस्र तथा ३० सहस्र रुपये मिले हैं। उनका एक एक अंडा ७५-७५ रुपये को बिक सकता है। कहीं कहानियों की सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी यहां तो नहीं है?

हमारे राजराजेश्वर का निज-व्यय श्रीमान् राजराजेश्वर श्रीजार्ज पञ्चम बकिंगहाम भवन के दैनिक व्यय को छठे मास जबकि वह उनकी स्वीकारी के लिये पेश होता है अवलोकन करते हैं, भृत्यों का वेतन तथा अन्य व्यय भी निजखाते से चुकाए जाते हैं। यह हिसाब लेखक लोग तय्यार करके हर तीसरे मास श्रीमानों की सेवामें उपस्थित करते हैं और महाराज स्वयम् उसका रुपया चुकाते हैं। श्रीमहाराज किसी वस्तु का मूल्य नहीं ठहराते यदि मूल्य अधिक जंचता है तो फिर उससे कुछ नहीं खरीदते। खाद्य वस्तुओं का हिसाब मासिक प्रस्तुत किया जाता है, कोयले, शीशे तथा वर्त्तनों की सफ़ाई आदि के काम ठेके पर दिये जाते हैं।

श्रीमानों का व्यय श्रीमानों के पूज्य पिता से अधिक नहीं मालूम होता है। स्वर्गवासी महाराज एडवर्ड सप्तम एक जोड़े को प्रायः १—२ बार ही पहनते थे। आप ३—४ बार तक काम में लाते हैं। आपका वस्त्रव्यय केवल ९० पौंड अर्थात् १३५० रुपया मात्र है जबकि आप के श्रद्धास्पद पिता इससे ५ गुना व्यय करते थे। आप जूतों पर अधिक व्यय करते हैं अर्थात् ७०—८० गिनी (हज़ार डेढ़ हज़ार रुपया) व्यय होजाता है।

हिन्दुस्थान में १० वर्ष के अन्दर प्लेग से मृत्यु ॥

राज्यसभा (पार्लियामेंट) में एक प्रश्न के उत्तर मे साहिब नायब वज़ीर हिन्द ने वर्णन किया कि हिंदुस्थान और उसके देशी राज्यों में गत दश वर्षों में निम्नानुसार मृत्यु हुईः—

सन् १९०१ ई० में २८७०२७
,, १९०२ ई० में ५७६३६५
,, १९०३ ई० में ८८३०७६
,, १९०४ ई० में ११४३९९३
,, १९०५ ई० में १०६९१४०
,, १९०६ ई० में ३५६७२१
,, १९०७ ई० में १३१५८९२
,, १९०८ ई० में १५६४८०
,, १९०९ ई० में १७८८०८
,, १९१० ई० में ५११२०२

कुल योग ६४३७७०४ हुआ। पौन करोड़ के लगभग मनुष्यों को दश वर्ष के अंदर केवल प्लेगरोग से मृत्यु का ग्रास होना पड़ा जो हिंदुस्तानियों के दुष्कर्म्मों का द्योतक है। यद्यपि कृपालु गवर्नमेंट ने रोग निवृत्त्यर्थ अनेक यत्न किये और द्रव्य भी व्यय किया ही किन्तु इस रिपोर्ट को जानकर यह मानने में सन्देह नहीं रहता कि प्लेगरोग का निदान वर्त्तमान डाक्टरी को ज्ञात नहीं पाया

और इसलिये आशा रखनी चाहिये कि कि आगामी में इससे बचाव के असली उपाय खोज करने में अधिक धन, मस्तिष्क और समय दिया जायेगा।

शोकसंवाद।

एक नहीं दो।

विद्या के प्रेमी यह जानकर दुःखित होंगे कि श्रीमान् ठाकुर करणसिंहजी जो बनेराधिपति इस मास की १—७—११ के ? बजे संग्रहणी रोग से स्वर्गवास होगए। आप अजमेर समाज के आजन्म सभासद और श्रीमती परोपकारिणीसभा के सदस्य थे विद्यानुराग आपका इससे प्रकट है कि आपने बहुतही साधारण आय में पुष्कल मात्रा विद्याप्रचार के लिये पृथक् कररक्खी थी, लगभग पचास सहस्र की लागत से करणसिंह एंग्लोवैदिक हाईस्कूल तथा बोर्डिंग हाउस बनवाया, बोर्डिङ्गहाउस के अंदर सैकड़ों बालक ३) मासिक नाम मात्र व्यय पर रखकर उनकी शिक्षा और दीक्षा का उत्तम प्रबंध किया, रात्रिन्दिवस आपको स्कूल ही का ध्यान रहता था। आपने तन, मन, धन विद्याप्रचार के लिये अर्पण करदिया था ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं। ऐसे सज्जनों का देश से कम होजाना बड़े खेद का विषय है। सन्तोष की बात यही है कि श्रीमानों के सुपुत्र कुंवर नरेन्द्रसिंहजी ने अपने पूज्य पिता की उत्कट इच्छा के अनुसार हाईस्कूल को चलाने की प्रतिज्ञा की है। हम माननीय कुंवर साहिब तथा उनके अन्य सम्बन्धियों के साथ उन के दुःख में सम्मलिन होकर मृतात्मा की शान्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

(२) सेठ फूलचंदजी बेंकर प्रधान आ० समाज नीमच उन सज्जनों में से थे जिनकी मौजूदगी किसी गृह नगर तथा देश के लिये अभिमान का कारण हो सकती है, आप सत्यसनातन वैदिकधर्म्म के दृढ़ विश्वासी थे, अनाथरक्षा के लिये आपका तन, मन, धन, हर समय तय्यार था, सम्वत् १९५६ वि० के भयानक दुर्भिक्षमें आपने थोड़ी अवस्था होने पर भी प्रशंसनीय सेवा की थी, उसके पश्चात् से अनाथरक्षा का पुण्यकार्य्य आपकी दृष्टि से ओझल नहीं हुआ। आप नीमच बैठे हुए अपने विस्तृत निजकार्य्य के साथ २ धर्म तथा सुधारसम्बन्धी किसी भी आवश्यक बात से बेखबर नहीं थे, नीमच पहुंचकर किसी भी अपील को नाकामयाबी का भय नहीं था, क्योंकि सेठ फूलचन्दजी वहां उपस्थित थे।

आह !!! प्यारे फूलचंदजी आपने बहुत जल्दी की, ला० शिवसहायजी के वियोग के आंसू तो खुश्क होने देते ! भाई ! यह समय तो आपकी सेवा का था, वर्षा नहीं हुई, दुर्भिक्ष का भूत मुंह फाड़कर निगलना चाहता है, धीमी सही पर हाहाकार की पुकार सुनाई देरही है और आप सुख

और शान्ति से स्वर्ग पधार गये। वास्तव में आपने अपनी नववधू, लघु बालक तथा अन्य सम्बधियों के साथ २ सेठ मांगीलाल जी और अन्य आर्य्यभाइयों से भी धोखा किया। अच्छा आपकी इच्छा यूंतो" जो जियेगा अपनी खंदड़ी सियेगाही"।

वाचकवृन्द २८ जुलाई के ४ बजे हमारे भाई ने स्वर्गयात्रा की आओ हम सब आप के निकटस्थ तथा दूरस्थ सम्बधियों के साथ उनके असह्य दुःख में सम्मिलित होकर उस मृतात्मा की शान्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करें।

दानवीरों! सावधान!

दुर्भिक्ष निश्चितरूप से होगया, बालक चारों ओर से आने आरम्भ होगये अनेक पत्र अनाथों को लाने, एकत्रित करने तथा रक्षा के विशेष प्रबंधार्थ आरहे हैं, तदनुसार श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर की प्राबंधकीय सभा ने भी अपने एक साधारण अधिवेशन में श्री पं० भवानीप्रसादजी तथा पं० सुन्दरदत्तजी को दुःखग्रस्त बालकों की साथ नियतकर अन्य प्रकार के कार्य्य भी आरम्भ कर दिये है।

आजकल पं० भवानीप्रसादजी शेखावाटी तथा पं० सुन्दरदत्तजी आबू की ओर अपना कार्य्य कर रहे हैं। अन्य दो उपदेशक श्री पं० गंगासहायजी तथा पं० शामानन्दजी पूर्व से ही नियुक्त हैं। इन सबके द्वारा तथा अन्य रीति से जो बालक अनाथालय में प्रविष्ट हो रहे हैं अथवा होंगे उनके रक्षण तथा पोषणार्थ निम्न लिखित वस्तुवों की शीघ्र आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति श्रीमानों और दानवीरों ही के आधीन है। हमें पूर्ण आशा है कि दुर्भिक्ष दुःख से निकालकर बालकों को आवश्यकीय वस्तुवों के बिना कष्ट नहीं पाने देंगे।

आवश्यकीय वस्तुवों की सूचि

रजाई	५०
गद्दे	४०
दरी	४०
दोहर	४०
कोट	५०
कुरते	४००
पाजामे	१००
धोती	२००
टोपी	४००

इत्यादि इनके सिवाय हरप्रकार के बर्तन इत्यादि की आवश्यकता होगी। हरप्रकार के दान भजने का पता

पं० प्रभु दयाल एम० एल०
मंत्री श्री मद्दयानंद अनाथालय अजमेर

Register No. J. 91

* ओ३म् *

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर का
मासिकपत्र.

भाग ८.
अङ्क १०, ११.

अनाथरक्षक ॥

श्रावण, भाद्रो
१९६८ वि०

अगस्त, सितम्बर ११ ई०

जिसको--
अनाथालय सभा ने पं० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय,
अजमेर से छपाया.
और
पं० मुन्नीलालमिश्र प्रकाशक द्वारा अजमेर से प्रकाशित किया।

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा बान्धवाः ।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं शा[illegible] यानश्च कः ॥
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते त्वन्नाम जानीमहे ।
हा हा नाथ ! अनाथरक्षक ! सदा नः पाहि पाहि प्रभो !!

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा ।

वार्षिक मूल्य १)

आवश्यक निवेदन।

जीना मरना किसी के हाथ की बात नहीं, इसलिये कोई निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि वह कबतक सनाथ रहेगा। जब यह बात है तो फिर कौन ऐसा अदूरदर्शी और कठोरहृदय मनुष्य होगा जो उनकी सहायता के लिये आतुर न हो। श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर ऐसे समस्त बच्चों का आश्रयस्थान है। आप भी उसकी सहायता करें, धन भिजवावें, बच्चे भिजवावें और शुभसम्मति प्रदान करते रहें।

प्रभुदयाल एम.ए. मन्त्री द० अ० अजमेर.

नक्शा आयव्यय श्रीमद्दयानन्द-अनाथालय अजमेर, बाबत मास मार्च १९११ ई०.

आय.

१०९५॥≡)॥	दान
२१-)	मासिक चन्दा स्थानिक
२२)	,, बाहर का
२३॥=)	किराया मकानात
१०)	गोशाला
२॥॥)॥।	कारख़ाना
६८)	अमानत
७-)।	फुटकर
१२५०।)॥	योग
५००)	शिमला अलाइन्स बेंक
३९४॥-)९½	पिछला शेष
२१४४॥=)३½	कुल योग

व्यय.

९९॥।)॥	भोजन
३४॥)॥	शिक्षाविभाग
८८।-)॥।	वेतन कर्म्मचारी
१४४॥।)	अनाथरक्षक
३८-)।	गोशाला
१४।-)	फुटकर
१॥)	पानी
१३॥)	सफ़ाई
१२=)	रोशनी
६८॥=)॥।	वस्त्र
-)	दवाख़ाना
२।)॥।	धुलाई
३॥)॥।	पोस्टेज
≡)	सहोदरा की जायदात पर
१३।≡)।	विवाहसंस्कार
५८)	अमानत
४८।=)।	छपाई
६४१॥।)॥।	योग
५००)	बा० प्रभुदयालजी को चुकाये
४१८।≡)॥	पीपल्स बेंक में जमा कराये
५८४॥=)½	शेष रहे
२१४४॥=)३½	कुल योग

नक्शा आयव्यय श्रीमद्दयानन्द-अनाथालय अजमेर, बाबत मास अप्रेल १९११ ई०.

आय.

५२०≡)।।।	दान
१४)	मासिक चंदा बाहर का
१८=)	,, ,, स्थानिक
२६॥=)	किराया मकानात
२≡)	अनाथरक्षक
५॥)	गोशाला
१≡)	कारखाना
१)	फुटकर
१२)	अमानत
१०।)	खातीखाना
६१४-)॥।	योग
५८४॥=)½	पिछला शेष
११९८॥≡)६½	कुल योग

व्यय.

१७६-)॥	भोजन
२४)।।।	शिक्षा
८४।=)।	वेतन कर्म्मचारी
१०)	अनाथरक्षक
३।-)।।।	पोस्टेज
६८)।	गोशाला
१३।=)	फुटकर
१॥)	पानी
१४।)।	सफ़ाई
१२।)	रोशनी
११॥)॥	वस्त्र
५।-)।	धुलाई
।≡)।	दवाई
७)	उत्सव
१६।)॥	खातीखाना
५)	अमानत
२०)	मकानात सफ़ेदी
॥।=)।।।	नया सामान
४७९॥।-)	योग
७१८॥।=)६½	शेष रहे
११९८॥≡)६½	कुल योग

नक्शा आयव्यय श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर, बाबत मास मई १९११ ई०.

आय.

१७७॥=)७	दान
३४।=)	मासिक चन्दा स्थानिक
२४)	,, ,, बाहरका
२०॥=)	किराया मकानात
४२॥=)।	अनाथरक्षक
॥)	गोशाला
≡)	कारखाना
=)॥	फुटकर
१)	औषधालय
१६)	गवर्नमेण्ट यू० पी०
८॥≡)॥	अमानत
११२६-)१०	योग
२८५=)	उद्रत गवर्नर द० अ०
७१८॥=)९½	पिछला शेष
२१३०=)७½	कुल योग

व्यय.

१७२॥)॥	भोजन
३८॥)॥	शिक्षाविभाग
११४॥≡)॥	अनाथरक्षक
४३॥-)	गोशाला
१३≡)	डाकव्यय
८६)	वेतन कर्मचारी
१८॥-)।	फुटकर
१०॥=)।	उपदेशक
१२=)	सफ़ाई
१३॥-)।	रोशनी
६।≡)॥	वस्त्र
।-)	उत्सव
६॥)।	छपाई
३५॥-)	औषधालय
१।≡)॥	विवाह संस्कार
४०)	सफेदी कराई मध्ये
५≡)।	धुलाई
॥≡)।	नया सामान
१५)	खातीखाना
३≡)	पानी
५)	अमानत
६५०।-)।	योग
१०००)	पीपल्स बैंक अजमेर
२८५=)	उद्रत गवर्नर द० अ०
१९४॥=)४½	शेष रहे
२१३०=)७½	कुल योग

नक्शा आयव्यय श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर।

बाबत मास जून १९११ ई०.

आय.

२२६॥-)॥	दान
२००)	चिरस्थायी फंड
१९।=)	मासिकचन्दा स्थानिक
१०)	,, ,, बाहर का
१४॥=)	किराया मकानात
३-)	अनाथरक्षक
३।)	फुटकर
८=)॥	गोशाला
२२।-)॥	अमानत
११९०॥)	सूद
५॥)	कारखाना
२)	औषधालय
१७०८।=)॥	योग
५००)	उत्तमचन्दजी व धर्म्मप्रिया ताराबाई अनाथ के अमानत
२३७≡)॥।	पीपल्सबैंक अजमेर
२६४॥=)४½	पिछला शेष
२६४०।)७½	कुल योग

व्यय.

३)	अनाथरक्षा
४।-)	फुटकर
११≡)॥।	अनाथरक्षक
३३=)	उपदेशक
५-)॥।	डाकव्यय
७२॥-)॥।	वेतन कर्मचारी
१४)॥	खातीखाना
॥।)॥।	शिक्षा
७)	गोशाला
२८-)॥।	सूद चुकाया
१७९।-)।	योग
२४)	अमानत
४६७॥=)॥	उद्रत मध्ये गवर्नर द० अ० को
५००)	शिमला अलाइन्सबैंक खाते उत्तमचन्दजी के
११९०॥)	सूद के
२७८॥)१०½	शेष रहे
२६४०।)७½	कुल योग

अनाथरक्षक ॥

श्रावण तथा भादों संवत् १९६८ वि०

अगस्त तथा सेप्टेम्बर १९११ ई०

अनाथों के साथ आपका कर्त्तव्य ॥

चौपाई ॥

वचन श्रवण करिके हे भ्राता,
बनहु अनाथन के पितु माता ॥
नहिं ये अन्य अहैं हे भाई,
तन मन धन से करहु सहाई ॥
जिसने यहां धर्म्म नहिं कीन्हा,
व्यर्थहिं जन्म जगत मधि लीन्हा ॥
लाखों अनाथ इस देश के भाई,
होते हैं हाय ! नित्य ईसाई ॥
पण्डे पुजारियों को जा धन देवो,
रक्षि अनाथन जग यश लेवो ॥
कुत्सितजन की करणी भाई ,
तीरथहिं जाहु प्रकट ह्वैजाई ॥
तिनकहँ करहु दान अधिकाई,
तुमको कबहुं ध्यान नहिं आई ॥
देखहु निशदिन इन करतूती,
तबहुं लुटावत फिरहु विभूती ॥
आयो घड़ित पितर पखवारा,
जनि धन व्यर्थ लुटावहु सारा ॥
फन्द काटि अब दूर भगाओ,
मङ्गलमय मारग अपनाओ ॥
मूढ़न बात करहु जनि काना,
भूल जाहु निज शुभकृत जाना ॥
भूलहु तात जो पर अपकारू,
चित्त धरहु तुम पर उपकारू ॥
करहु अनाथन केरि भलाई,
याही में देखहु प्रभुताई ॥
नहिं मैं कवि हौं किङ्कर बालक,
होउ जगतपति शिवप्रतिपालक ॥

"रत्न"

—(*)—

अनाथालय समाचार ॥

उपदेशकों का दौरा—मास जुलाई और अगस्त में श्री पं० गंगासहायजी ने देहली ही में प्रचार किया।

पं० रामानन्दजी ने भरतपुर, आगरा, धौलपुर, पछोली, फ़ीरोज़ाबाद, गक्खनपुर, शिकोहाबाद, जसराना, मदान, जसवन्तनगर, इटावा और पं० सुन्दरदत्तजी श्रोत्रिय ने सोजत, रानी, स्टेशन, आबूरोड, पाली, बाड़मेर और पं० भवानीप्रसादजी शर्मा ने सुजानगढ़, कुसुम्भी, बुजार, चूरू, रामगढ़ इत्यादि स्थानों पर अनाथरक्षा के लिये कार्य्य किया और प्रत्येक महाशय यथाशक्ति अनाथालय के लिये आर्थिक सहायता भी भिजवाते रहे। जहां २ उक्त उपदेशक महाशय पधारें स्थानिक सज्जनों को यथाशक्ति उनकी सहायता करनी चाहिये।

शीतकाल—लम्बे २ पावों से चला आरहा है, दशहरा गुजरते ही शरदी आरम्भ होजावेगी। आप अपने आत्मीय जनों के रक्षण पोषण के निमित्त यत्नवान् होंगे, समय से पूर्व उनके लिये कोट, कमीज, ओढ़ने, बिछोने तय्यार मिलेंगे, क्या उस अवसर पर आपको उन दीन दुखियों का ध्यान भी आएगा जिनकी सारी आशाएं और इच्छाएं आपकी दयादृष्टि के साथ ही समाप्त हैं। उनकी आवश्यकताएं आपके करणगोचर करादेनामात्र ही "अनाथरक्षक" का कर्तव्य है आगे आप स्वतन्त्र हैं।

कलजुग नहिं करजुग है ये,
यहं दिन को दे और रात को ले॥
क्या खूब सौदा नक़द है,
इस हाथ दे उस हाथ ले॥

अपने लिये यथेच्छ सहायता की कामना करनेवाला मनुष्य कितना भोला समझा जावेगा जबकि वह अपने सहवासियों और पड़ोसियों की उस स्थान पर भी सहायता नहीं करता जहां सुगमता पूर्वक उसका हाथ पहुंच सकता है और जहां से उसकी आवाज़ प्रतिष्ठापूर्वक श्रवणीय मानी जासकती है। वास्तव में यह जगत् करजुग है, विना किये फलप्राप्ती यहां का दस्तूर ही नहीं। जो लोग ऐसी इच्छा करते हैं वह उसके पूर्ण न होसकने के कारण दुनियां को ही नहीं प्रायः परमात्मा को भी दोष देने से नहीं छोड़ते और उनकी आयु दूसरों का गिला शिकवा करते हुए ही व्यतीत होती है। एक हाथ देकर लेनेकी इच्छा करनेवाला पाएगा और इसीलिये उसका जीवन प्रसन्नता का जीवन होगा।

हम नहीं समझते कि कोई मनुष्य क्यों कर्तव्यहीन होकर दुःख के सामान एकत्रित करेगा।

पितृपक्ष (करणागत) के आज ११ दिवस गुजर चुके केवल ५ दिन शेष हैं दानियों का हाथ ऊपर है राजा करण की भान्ति छौर कर्म्म और वस्त्र प्रक्षालन का सावकाश भी कठिन है, जिस ओर देखिये श्रद्धापूर्वक भूखे तृप्त किये जाते हैं। हां ! अनाथाश्रमी बालक बालिकाएं भी निमन्त्रित होती हैं। जयपुर राज्य से एक महाशय का पत्र ५) के सहित प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है कि अमुक तिथि को इन ५) रु० से आश्रमी बच्चों को भोजन करादें उस दिन मेरे पिता का श्राद्धदिवस है। सचमुच श्राद्ध यही है। आशा है सज्जन दान करते समय देश, काल और पात्र का विचार अवश्य रक्खा करेंगे।

एक दिवस की बेफिक्री और हुई—१ दिवस भोजन दान को अनाथालय के प्रेमी सज्जन महाशयों ने बहुत अच्छी दृष्टि से देखा है। उसके लिये यदि पूर्ण परिश्रम से काम किया जावे तो उसके कृतकार्य्य होने की पूर्ण आशा है। इसी मास में हैदराबाद दक्षिण के राजा इन्द्रजीतजी ने ११०) रु० भेजकर लिखा है कि शेष ९०) रु० वह शीघ्र अदा करदेंगे उनके नाम से १ दिन भोजन का प्रबन्ध कर दिया जावे। आप अनाथालय के आजन्म सभासद् हैं और सदा ही सहायता करते रहते हैं।

अनाथालय का कार्य्य राजपूताने ही तक नहीं है।

माना कि अनाथालय राजपूताने के मध्य अजमेर में स्थापित है लेकिन उसका कार्य्य अकेले राजपूताने के लिये ही नहीं है, मुम्बई, गुजरात, पंजाब और यू० पी० समस्त प्रान्तों के असहाय बालक यहां आश्रय पाते हैं। नासिक से एक सज्जन डाक्टर ने भीख्यो नामी एक क्षत्रिय बालक को जिसके माता पिता का देहान्त होगया था अनाथालय में भिजवाया। मुम्बई आ० प्र० निधि सभा के मंत्री रा० रा० कल्याणदासजी के द्वारा १ कन्या मुम्बई से गत मास में प्रविष्ट हुई, हैदराबाद (दक्षिण) समाज के मंत्री महाशय के द्वारा १ कन्या तथा १ बालक आया इसी प्रकार प्रत्येक प्रान्त के अनाथहितैषी सज्जन जब और जहां कहीं किसी ऐसे दुखी बालक का पता पाते हैं उसे यहां भेजने का प्रबन्ध करते हैं जिससे उनकी रक्षा और शिक्षा भलीभांति होसकती है।

शिक्षा—शिक्षापद्धति गतांक में प्रकाशित होचुकी है इस समय खाती का कार्य आरम्भ होचुका है विद्यार्थियो को ड्राइंग, नक्शा और मन्सूरेशन सिखाई जाती है। दरज़ी कक्षा के आरम्भ के लियेजाने का प्रबन्ध होरहा है इन दोनों क्लासों में वही विद्यार्थी सम्मिलित होंगे जो स्कूली शिक्षा से

पद्धत्यनुसार हटालिये जायंगे । ४ बालक केवल संस्कृत शिक्षा प्राप्त कररहे हैं। श्री० चौ० रामकृष्णजी मुलतान निवासी की सहायता से २ बालक शाखा गुरुकुल देवबन्धु में प्रविष्ट होगए हैं और १ कन्या महाविद्यालय जालन्धर में। १ कन्या प्रथम से ही महाविद्यालय में उपस्थित है जो आजकल पढ़ाने का काम करती है ।

अनाथों में न्यूनाधिक्य ॥

जुलाई और अगस्त में जो बालक अनाथालय में प्रविष्ट हुए वा पृथक् किये गए उनका व्यौरा निम्नानुसार है:—

	लड़के	लड़कियां	योग
जून के अन्त में	७५	२८	१०३
जुलाई और अगस्त में प्रविष्ट	८	४	१४
योग	८३	३२	११७
जुलाई और अगस्त में कम हुए	४	५	९
योग	७९	२७	१०६

कम हुए बालकों का व्यौरा इस प्रकार है कि ३ कन्याएं वारिसों को वापस कीगईं, १ कन्या २ मास की मृत्यु को प्राप्त हुई और २ बालक भाग गए तथा २ वारिसों को लौटा दिये गए ।

विवाह—अनाथाश्रमी कन्याओं के विवाह संस्कार के लिये प्रथम प्रार्थनापत्र आने पर नियत फार्म जिसकी नकल नीचे दीगई है भरवाकर मंगालिया जाता है उसकी पूर्ण तस्दीक़ वहां के आर्य्यसमाज के मन्त्री या प्रधान या वहां आर्य्यसमाज न होने की अवस्था में किसी अन्य प्रतिष्ठित और परिचित महाशय द्वारा कराई जाती है तिसपर भी वर के अजमेर आने पर यदि किसी प्रकार का सन्देह उत्पन्न हो तो डाक्टरी परीक्षा इत्यादि कराई जाती और अयोग्य होने की अवस्था में वापस कर दिया जाता है । वह समय बहुत ही कठिन होता है जब कोई महाशय यहां से वापस कियेजाते हैं इसलिये विवाहार्थी सज्जनों से और विशेष कर तस्दीक़ करने वाले महानुभावों से सानुनय प्रार्थना है कि वह सच्चे न्यायी की भांति सच्चे हालात से निष्पक्ष होकर अनाथालय को सूचित किया करें जिससे पीछे कठिनाइयों का सामना न हो । हमारे विचार में अनाथालय के लिये इससे अधिक खोज करना अति कठिन और अनावश्यक भी है । एक धार्मिक सभा के अधिकारियों की तस्दीक़ उनके लिये काफ़ी होनी चाहिये । हमें इस नोटके लिखने के लिये हालात ने मजबूर कर दिया है इसलिये हमारे भाई हमें क्षमा करें ।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर की कन्याओं के "विवाह की नियमावली" ॥

१		नाम	११	यदि विवाह हुआ तो संतान क्या है ?
२		पिता का नाम	१२	आजीविका किस प्रकार की है ? (नौकरी वा दुकानदारी)
३		वर्ण (जाति)	१३	मासिक आय क्या है ? (सिक्का गवर्नमेण्ट)
४		निवासस्थान	१४	आपत्तिकाल के लिये कन्या के नाम से ५००) पांच वर्ष तक जमा करा सकते हैं वा नहीं ?
५	शारीरिक व्यवस्था	आयु	१५	बिरादरी में विवाह हो सकता है वा नहीं, यदि नहीं हो सकता है तो किस कारण से ?
६		शरीर की लम्बाई और वजन	१६	वर्त्तमान जातिबन्धन तोड़ने को तय्यार हैं वा नहीं ?
७		सीने का नाप	१७	कन्या से स्त्रीशिक्षा का प्रचार करा सकते हैं या नहीं ?
८		आप की जाति में मांस आदि सेवन वर्जित है या नहीं और आपका क्या व्यवहार है ?		
९		आर्य्यसमाज के सभासद् हैं वा नहीं (नाम समाज)		
१०		पहिले विवाह हुआ वा नहीं ?		

भारतीय महिलायें ॥

अनाथरक्षक के किसी गतांक में पंजाब के कायलपुर प्रान्त निवासिनी किसी ग्रामीणा धर्म्मप्रिया देवी का वृत्तान्त पाठक पढ़ चुके हैं कि किस प्रकार उसने धर्म्म के नाम पर पिघलजानेवाले कोमल हृदय से एक पिशाचवृत्ति धूर्त साधु (वेषधारी) को अन्न जल से तृप्तकर रात्रिनिवास की आज्ञा दी थी, किन्तु जब उस अनाचारी ने गृहपति की अनुपस्थिति में अपनी अन्नजलदातृ मातृवत् देवी के अंगस्पर्श की कुटिल चेष्टा की तो उसी धर्म और प्राणों से प्रिय धर्म्म के आधार पर अपने एकमात्र, प्राणाधार अबोध बालक के प्राणघात किये जाने

पर भी गृहद्वार खोलना स्वीकार नहीं किया था।

अभी सरायली ज़िला नरायणगंज की एक नवयुवा धर्मपरायणा देवी ने एक भ्रष्टाचारी कुलकलङ्क मनुष्य को मारडाला, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि एक रात्रि को जब कि सुशीला अपने गृह में अकेली थी वह अन्दर घुस आया और अबला जान पापमयी पिशाचवृत्ति की निवृत्ति में प्रवृत्त होना चाहा। आह ! पाप मनुष्य को कहांतक अंधा करदेता है। उसकी विवेकशक्ति समूल नष्ट होजाती और बुरी इच्छायें दिनों दिन नाश की ओर लिये जाती हैं।

मूर्ख भूल गया "साहसं षड्गुणं चैव" धर्म्म और मर्य्यादा का प्रश्न आते ही यह अबला अष्टधातु की सबला बनजाती है और इनका साहस पुरुषों से छः गुणा अधिक होजाता है।

सुशीला भूखी सिंहनी की भान्ति तिलमिला उठी और शीघ्रता में जो १ गंडासा हाथ में आया उसी से उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। रात्री व्यतीत हुई और प्रातःकाल होते ही पुलिस ने सुशीला को मनुष्यहत्या के अपराध में दोषी ठहराकर चालान करदिया। न्यायालय में अभियोग उपस्थित हुआ और सुशीला ने उस अनाचारी लम्पट मनुष्य की हत्या करना स्वीकार किया और सब वृत्तान्त सच सच कह सुनाया जिसपर न्यायपति ने सुशीला को प्रतिष्ठापूर्वक अभियोग से मुक्त करदिया।

ऐसा क्यों है इसलिये कि आर्य्यकन्याओं और वीरों के विवाहसमय जो प्रतिज्ञाएं करनी पड़ती हैं वे उनके हृदय में दम्पतिप्रेम और परस्पर के हित का अटूट सम्बन्ध संगठित करदेती हैं, जैसे—

ममेयमस्तु पोष्या मह्यम त्वादाद् बृहस्पतिः। मया पत्या प्रजावति शं जीवशरदःशतम् ॥

अर्थः—

हे अनघे ! सब जगत् के पालक परमात्माने जो तुझको मुझे दिया है तू ही जगत् भर में मेरी पोषण करने योग्य पत्नी हो। तू मुझ पति के साथ सौ वर्ष पर्य्यन्त सुखपूर्वक जीवन धारण कर। ठीक इसी प्रकार कन्या भी वर से प्रतिज्ञा कराती है। इस और इसी जैसी अनेक प्रतिज्ञाओं के होने पर पतिपत्नी का जो सम्बन्ध होसकता है उसका लगा यावनी मेहर और क्रिश्चियानेटी का रजिस्ट्री इकरारनामा कब खा सकता है।

पाश्चात्य जगत् प्राकृतिक उन्नति के फेर में पड़कर भले ही कुछ काल भूला रहे, लेकिन गृहस्थ सम्बन्ध यह त्रुटि उन्हें शान्तभाव धारण करने देगी यह असंभव है।

जिसका प्रकाश एम्रिका जैसे सभ्य देश के तलाकमार्गों द्वारा होरहा है ।

बड़ी बहिन ॥

(१)

एक बार शिवगंज ग्राम में सायं समय कई स्त्रियां वार्तालाप कररही थीं । तारा ने एक ऐसे पति की चर्चा करते हुए (जिसने अपनी पत्नी को केवल इस अपराध पर कि वह विना उसकी आज्ञा के गङ्गाऽस्नान को गई थी मारा था) क्रोधित होकर कहा " ऐसे आदमी के मुख में आग लग जाए" ।

यह सुनकर स्त्रियां सन्नाटे में आगई किसी ने हाथ छाती पर रख लिया किसी ने दान्तों से ज़ुबान दबाई "तारा को यह कहना उचित न था" कुन्दन ने त्यौरी बदल कर कहा "तारा ! बहिन तुम मुंह सम्हाल कर नहीं बोलतीं" उसका पति था यदि इस प्रकार यथेच्छ घूमने के लिये मारही दिया तो क्या हुआ ? ।

कुन्दन जयगोपाल चौधरी की सहधर्मिणी थी, बा० जयगोपाल शिवगंज के उन सौभाग्यशाली मनुष्यों में थे जिन्हें बिना हाथ पांव हिलाए भोजन मिल जाता था । वह वर्ष में एकवार भूमिकर प्राप्ति के लिये घर को छोड़ते थे शेष पूरे वर्ष अपने दालान में बैठे गपशप उड़ाते रहते थे, परन्तु यह ग्राम उनकी पैतृकसंपत्ति न थी उनके श्वसुर ने उन्हें विपत्ति में देखकर जीवन निर्वाहार्थ देदिया था । वृद्ध श्वसुर निस्सन्तान था, यह तो नहीं कहा जासकता कि जयगोपाल अपने श्वसुर की मृत्यु चाहते थे किन्तु सम्पत्ति प्राप्ति की शुभतिथि की यादगार में वर्ष में दोबार सत्यनारायण की कथा अवश्य कराते थे ।

अस्तु, जयगोपाल के दश वर्ष बड़े सुख से व्यतीत हुए, तीन सन्तान हुई पेट गुबद की सूरत निकल आया चंदिया के बाल झड़ने लगे, सौभाग्य का मार्ग साफ़ होने लगा पर आना किसे था और आई कौन ? जो बात न होनी चाहिये थी वह होगई और इसने जयगोपाल का भविष्य अंधेरा करदिया । साठ वर्ष की अवस्था में वृद्ध श्वसुर के गृह में एक बालक उत्पन्न होगया, जयगोपाल ने सुना और सर पीटकर रह गए, कुंदन ने वृद्ध पिता को बहुत कोसा और नवागत बालक की मृत्यु के लिये प्रार्थना की ।

इस बालक ने जयगोपाल की वेफ़िकरी और ऐश्वर्य्य भोग का अन्त करदिया, अपनी नन्हीं सी मुट्ठी से इसने जयगोपाल की सारी आशाओं, इच्छाओं, उत्साह और कामनाओं को मसल डाला । श्वसुराल से ख़बर आई पर वे सम्मिलित न हुए, उन्हें अपनी वृत्ति की चिन्ता हो-

गई, आसाम चले गए और एक चाय के कारखाने में नौकरी करली। जीवन में पहिलीवार थी कि जयगोपाल को इतनी लम्बी यात्रा करनी पड़ी वे अबतक कभी अकेले नहीं रहे थे, स्त्री और बच्चे उनके जीवन का अंश बनगए थे। कई मास इनका जी उकताता रहा पर ज्यूं २ दिन व्यतीत होते गए घर का ध्यान भी कमजोर होता गया। एक वर्ष मुश्किल से व्यतीत हुआ होगा कि जयगोपाल के हृदय में नवीन उत्साह उत्पन्न हुआ और वह यह था कि अब गृहव्यवस्था ठीक करनी चाहिये। प्रेम का स्थान व्रत ने लेलिया, प्रथम साप्ताहिक पत्र जाते थे फिर पाक्षिक जाने लगे यहांतक कि दूसरा वर्ष जाते २ महीने में भी पत्र लिखने का अवकाश न मिलने लगा।

परन्तु कुन्दन की अवस्था इसके बिलकुल विपरीत थी वह कभी अपने पति से पृथक् नहीं रही थी और इसीलिये प्रेम की दबी हुई अगनी जुदाई के झोंकों से प्रज्वलित होगई। उसका दिल मानो नवजात प्रेम से आच्छादित होगया वह प्रायः चुपचाप और उदास रहने लगी। वह सोचने लगी "बला से मुझे मोटे कपड़े पहनने पड़े मैं गाढ़ा पहिनूंगी, मुझे कष्ट होगा, कष्ट सहूंगी, उसने आन्तरिक सद्भाव से प्रतिज्ञा की कि अब मैं उन्हें कुछ न कहूंगी, वे जैसे रक्खेंगे वैसे रहूंगी"।

(२)

वृद्धावस्था की सन्तति अतिप्रिय होती है इस नवजात बालक ने जिसका नाम नूनीराम रक्खा गया था अपने वृद्ध माता पिता का भाग्योदय करदिया, वह बालक न था प्रत्युत उनकी जन्मभर की प्रार्थनाओं और इच्छाओं ने मानुषी देह धारण कर लिया था, मगर वृद्ध माता पिता के भाग्य में उसका सुख भोग नहीं बदा था। तीसरे वर्ष उसकी माता बीमार पड़ी उसे ज्ञान होगया कि अब मैं न बचूंगी, तब उसने कुंदन को बुलवाया, कुंदन जाने से अवश्य मना करदेती क्योंकि उसे अपने माता पिता से घृणा होगई थी परन्तु उन दिनों शिवगंज में प्लेग फैला हुआ था इसलिये कुन्दन चली गई। कुन्दन की माता उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुई और खूब रोई। आखिर एक दिन वृद्ध माता की हालत बहुत खराब होगई उसने नूनीचन्द्र का हाथ पकड़ कर कुन्दन के हाथ में दिया और रोती हुई शान्त होगई।

माता का अन्त होते ही कुन्दन के चेहरे पर एक सुहावना परिवर्तन दीख पड़ा, नूनीचन्द्र से जो उसे घृणा थी जाती रही, इस मुरझाए हुए अनाथ बालक को देखकर उसे करुणा आई, जब इसके

अपने बालक नूनी को मारते और वह अश्रुपूरित नेत्रों से जी जी का आंचल पकड़ कर फ़र्याद करता तो उसका कलेजा मसोस उठता था, वह नूनी को मातृ प्रेम से गोद में उठाकर कलेजे से लगालेती और मुख चूमकर प्यार करती । कुन्दन के हृदय में यह परिवर्तन क्यों हुआ ? कदाचित् इसलिये कि वृद्ध माता ने नूनी को उसके सुपुर्द किया था या सम्भव है निर्जनता ने घृणा पर विजय प्राप्त की हो । जो भी हो कुन्दन अब अपने भाई को अपने बच्चों से अधिक चाहने लगी। नूनी की फ़र्याद अब निष्फल नहीं जाती थी, यदि कभी नूनी का ही अपराध सिद्ध होता तो भी उसे दण्ड नहीं देती थी नूनी को रोते देखकर उसका कलेजा फटने लगता था और वह भी इससे कुछ ऐसा हिला कि माता को बिलकुल भूलगया ।

३ मास के पश्चात् कुन्दन का पिता भी मरगया उसने अपने स्वीकारपत्र (वसीयतनामे) में जयगोपाल को नूनी का संरक्षक नियत किया और निर्वाह के लिये उसे १ गांव भी दिया, जयगोपाल ख़बर पाते ही आसाम से चले आए और ज़िमींदारी का काम करने लगे ।

(३)

जयगोपाल अब पूर्व का जैसा बेफ़िकरा और यथेच्छाचारी मनुष्य न था अब वह सांसारिक कारोबारी बाबू बन गया था, उसे रुपये की चाट पड़गई थी और हरदम इसी धुन में रहता था, विदेश में उसने खूब कमाया और खूब ही व्यय किया, चाय के बागों में अनुचित द्रव्योपार्जन के बहुत मौक़े होते हैं इन्होंने उन्हें दिल खोल काम में लाया । बात यह है कि अब इन के दिल में छिछोरपन आगया था । जयगोपाल ने प्रथम दिवस से ही नूनीचन्द्र के साथ बेगानगी का बर्ताव आरम्भ किया, इसके ओर देखता तो घृणा की दृष्टि से, बात करता तो कटुता से कुन्दन भ्राता की प्रीति में पति को सम्मिलित करना चाहती थी, किन्तु यदि वह कभी उसे गोद में उठाकर जयगोपाल के पास चली जाती तो वह घृणा से मुख फेरलेता । कुछ दिवस तक बेचारी कुन्दन ने अनेक प्रयत्न किये कि किसी प्रकार जयगोपाल के हृदय में प्रेमांकुर उत्पन्न हो पर अन्त को उसे ज्ञात होगया कि इसने नूनी का अपराध क्षमा नहीं किया और वह अपराध केवल उसके उत्पन्न होने का था । पहिले जब कभी नूनी और उसके भानजों में लड़ाई होजाती थी तो कुन्दन सदैव अपने अनाथ भाई की ओर रहा करती इसलिये इनको नूनी के साथ कठोरता का बर्ताव करने का साहस नहीं होता था, किन्तु अब हवा बदल चुकी थी जयगोपाल के द्वारा फ़रियादी हो दण्डित होता था । जब कभी जयगोपाल नूनी को

मारते और वह अपनी बड़ी २ आंखों में आंसू भरे शनैः २ कुन्दन के पास आता तो वह उसे गोद में उठालेती और मकान के किसी कोने में जाकर खूब रोती और जबतक नूनी उसे चुप न कराता रोया करती, ज्यूं २ जयगोपाल नूनी के साथ कठोरता बर्तते त्यूं २ कुन्दन के हृदय में उसका प्रेम अधिक होता जाता था, कुन्दन के दिल से जयगोपाल की प्रतिष्ठा अब दिनोदिन न्यून होती जाती थी वह उस सन्दिग्ध दृष्टि से देखती और कभी भी नूनी को अकेला उसके पास नहीं छोड़ती थी, जयगोपाल भी कुन्दन की ओर से अत्यन्त सान्दिग्ध होगया था, वह नूनी को अपने सुखमयी जीवन में बाधक जानता था और कुन्दन को भी, क्योंकि कुन्दन ही उसके विचारों की रुकावट थी, जो इसे ऐश्वर्य्य की ओर लेजा रहे थे।

(४)

भय्यादूज का सुअवसर आया कुंदन ने व्रत रक्खा नूनी के लिये उसने गुलाबी रंग का रेशमी कोट नीले किनारे की धोती सुनहरी रेशमी फीता मंगा रक्खा था, प्रातःकाल उसने नूनी को उबटन मल स्नान कराया वस्त्र धारण कराए और नियमानुसार उसके माथे पर दही और चावल का टीका लगादिया। नूनी सुवस्त्रालंकृत ग्राम में खेलता फिरता था, स्पष्टवचनी तारा भी कार्य्यवश इस ग्राम में आगई थी। यहां अनेक प्रकार के चर्चे हो रहेथे, त... सुना और क्रोध में भरी हुई कुन्दन के पास आकर बोली, बहिन! यह क्या स्वांग रचती हो? दिखावे के लिये तो नूनी का इतना लाड़ प्यार है और वास्तव में घर भर उसकी जान का ग्राहक होरहा है, सोने के कवर में विष मिलाकर देरही हो। कुन्दन ने क्रोधित स्वर से कहा "तारा बरस दिन के दिन ऐसी बात मुंह से मत निकालो" तारा ने उत्तर दिया मैं कोई बात अपने मन से बनाकर थोड़ा ही कहती हूं ग्राम में जो कुछ सुना है वह तुम से आकर कहदिया। जिसके आश्रय तुम्हें समस्त सुख मिल रहे हैं उसी के लिये अब कांटे बोये जारहे हैं, शेखूपुरे में ॥) पर अपने भानजे खरू का नाम चढ़ादिया गया है और कई इलाकों में ऐसी ही चालें चली जारही हैं पर याद रक्खो ऐसा धन कभी पचता नहीं, ईश्वर सब कुछ देखता है।

कुन्दन रोने लगी और जब जयगोपाल घर में आए तो उसने यह जिक्र छेड़ा, जयगोपाल बोले "मैं तो चाहता था कि यह बात तुम्हारे कानतक न पहुंचे मुझे स्वयं बड़ा धोखा हुआ, बात यूं है कि मैंने शेखूपुरे का काम खरू के सुपुर्द करदिया था उसने सरकारी कर नहीं दिया और गांव को नीलाम पर चढ़वादिया और जब नीलाम हुआ तो कुचेष्टा से वा जयगोपाल के नाम से लेलिया मुझे भी तो कल ही खबर हुई है।

कुन्दन-आप उज़रदारी क्यों नहीं करते?

जयगोपाल-उज़रदारी से अब कोई काम न चलेगा, इसके अतिरिक्त अपने भानजे से झगड़ा करना भी अनुचित ही है।

कुन्दन समझ गई कि यह सब चालें नूनी को बिगाड़ने की की जारही हैं, मैं क्योंकर नूनी को बचाऊं? क्या अनाथका नाथ और असहाय का सहाई कोई न्यायकारी दुनियामें नहीं है ?

(५)

कुछ दिनों पश्चात् नूनी बीमार हुआ वर्षाऋतु थी चारों ओर मेलेरिया फैला हुआ था, नूनी भी बीमार होगया, तीन दिन ज्वर नहीं उतरा और नहीं बच्चे ने आंखें खोलीं, ग्राम में एक वैद्य थे जो दोनों समय आते और औषध देते थे, परन्तु इन की औषध से तनिक भी आराम न हुआ। चौथे दिन कुन्दन ने जयगोपाल से कहा "जाकर शहर स शारदा बाबू को ले आते तो अच्छा था नूनी का ज्वर अबतक नहीं उत्तरा" जयगोपाल प्रातः उठकर दिनभर घूमघाम सायङ्काल समाचार लाए कि डाक्टर साहिब घर पर नहीं हैं। कुन्दन को पति की बातों पर विश्वास न आया। रात्रि में जब सब सोगए उसने नूनी को गोद में उठाया, गांव से मिली शारदा नदी बहती थी, घाट पर आकर एक नवका किराये पर की और १२ बजे वह डाक्टर साहिब के मकान पर पहुंची। शारदा बाबू देखते ही पहिचान गए और उसे इस हालत में देखकर उन्हें बड़ा कष्ट हुआ और नूनी के इलाज में प्रवृत्त हुए। रात्री व्यतीत हुई प्रातः काल जयगोपाल कपड़ों से बाहर क्रोध से कांपते हुए पहुंचे और कुन्दन से कहा "अच्छा तू अब मेरे घर मत आना" कुन्दन ने तनकर उत्तर दिया "आपका घर ? वह घर तो मेरे भाई का है" जयगोपाल क्रोध का घूंट पीकर रह गये, उसी समय आकर रहने का मकान और बाग़ अपने बड़े लड़के के नाम लिखा लिया और दूसरे दिन उसकी रजिस्ट्री भी होगई।

कुन्दन एक सप्ताह डाक्टर साहिब के मकान पर रही, नूनी को आराम होचला था इसका विचार एक सप्ताह और रहने का था परन्तु घर और बाग़ की विक्री की सूचना ने उसे ठहरने न दिया अपने बेटे को कुंदन इस समय भाई की अपेक्षा ग़ैर समझ रही थी।

कलेक्टर साहिब शरद्ऋतु का भ्रमण करते हुए शेखूपुरे में ठहरे हुए थे, बा० जयगोपाल भी काले अल्पके का चपकन पहिने सफ़ेद पगड़ी बांधे सलाम को उपस्थित हुए। साहिब बहादुर ने उनको असाधारण प्रतिष्ठा दी और उनके लिये कुरसी मंगाई। जयगोपाल को सात बादशाहत का कोष मिल गया। एक दम एक स्त्री सर से पांवतक चादर ओढ़े एक पांच वर्ष के बालक की उंगली पकड़े आई और खड़ी होगई, साहिब ने पूछा "तुम कौन हो ?" कुन्दन बोली "श्रीमन् ! मैं इसी ग्राम की एक दुखियारी हूं, आपके पास फ़र्याद लेकर आई हूं"।

साहिबबहादुर—अच्छा इजलास के कमरे में चलो हम अभी आता है।

कुंदन नहीं महाशय ! मेरा निवेदन यहीं सुन लिया जाए।

जयगोपाल के चेहरे पर एक रंग आता और एक जाता था। कुन्दन कहने लगी श्रीमन् ! यह लड़का मेरा भाई है मैं बाबू मधुसूदन की लड़की हूं जिनका २ वर्ष हुए स्वर्गवास होगया है, यह बाबू साहिब जो आपके आगे बैठे हैं मेरे पति हैं, मेरे पिता का जब देहांत हुआ तो उन्होंने इन बाबू साहिब को इस बेसमझ बच्चे का संरक्षक नियत किया और अपनी आय में से रुपये में ≈) निर्वाहार्थ अपने स्वीकारपत्र (वसीयतनामा) में लिख गए परन्तु इन बाबू साहिब की अब नियत बदली हुई है यह मेरे अबोध भाई की समस्त जायदाद अपने और अपने लड़कों के नाम करते जाते हैं, मैं इनकी पत्नी होने से कुछ बोल नहीं सकती, इसका परिणाम यह होगा कि श्रीमानों के राज्य में एक अनाथ पर अन्याय का वज्रपात हो जायगा। यह कहकर कुंदन चुप हो गई। जयगोपाल ने क्रोधान्ध होकर कई वार बोलने का साहस किया परन्तु साहिब के तवर देखकर चुप रह गए। आखिर साहिब ने इनसे पूछा "यह सब सत्य है?" जयगोपाल बोले "महोदयजी ! मैं क्या निवेदन करूं ?" बाबू मधुसूदनजी कुछ ऋण छोड़ गए थे सो कुछ भूमि गिरवी रखकर वह ऋण चुका दिया गया साहिब—अच्छा आज कुल कागज़ात हमारे सम्मुख रक्खो। जयगोपाल—बहुत अच्छा श्रीमन् !, साहिब ने तब कुन्दन से कहा अच्छा अब तुम जाओ हम इस विषय में पूर्ण प्रयत्न करेंगे। तुम्हारे भाई की सम्पत्ति कोई नहीं ले सकता, तुम्हारे पवित्रभाव तथा धैर्य्य ने हमको बहुत प्रसन्न किया है।

कुन्दन ने झुककर नमस्ते किया और नूनी को गोद से उतार कर साहिब के सामने खड़ा करदिया, नूनी रोने लगा परंतु साहिब ने उसे चुमकारा और एक टेनिस का गेंद देकर राजी किया। जब कुन्दन चलने लगी तो साहिब ने पूछा "इस लड़के का साथ लेजाने में क्या कोई भय है ?"

कुन्दन—श्रीमन् ! अब मैं उसे श्रीमानों को सौंप चुकी हूं मेरे साथ वह अब नहीं रह सकता।

साहिब—और तुम कहां जाओगी ?

कुन्दन-मैं अपने पतीके साथ जाऊंगी !

कुन्दन ने नूनी को गलेसे लगाकर प्यार किया और अश्रुपूरित आंखों से बिदा हुई।

एक सप्ताह में इलाका (कोर्ट आफ़ वार्ड्स) राज्य संरक्षा में आगया और नूनी को पढ़ाने के लिये एक अध्यापक नियत कर दिया गया, जयगोपाल आसाम चले गए किन्तु कुन्दन को इसके पश्चात् फिर किसी ने न देखा। वह जिस दिन साहिब के पास से लौटी उसी दिन उसे विशूचिका होगई परन्तु ग्रामनिवासी अब भी इसे नहीं मानते और स्पष्टवक्ता तारा अब भी कहती है कि कुन्दन को विशूचिका नहीं हुई थी।

(प्रदीप)

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने मास जून १९११ में सहायता प्रदान की ॥

४॥|≈) केदारनाथजी वर्म्मा मकसी रानीगंज मथुरा
१) हकीम परसरामजी मुस्तफ़ाबाद जि० अम्बाला
४) भगवानदासजी वैश्य बेलामल कटरा बरियान देहली
५) पं० किशनलालजी जैन बिनौली जि० मेरठ
१०) बा० विहारीलालजी रीडर डिप्टीकलेक्टर कैनल डिपार्टमेण्ट मुज़फ्फ़रगढ़
२७॥-) कैनल डिपार्टमेन्ट मुज़फ्फ़रगढ़
॥) द्वारा सुपरिण्टेण्डेण्ट द० अ० अजमेर
-)॥ मुरलीधरजी भजनीक द्वारा
५) पंडिता दधिमथी टीचर कड़ेल पो० राजगढ़ जि० अजमेर
१) बा० जवाहिरलालजी

मार्फ़त बा० रघुवीरसिंहजी बनारस सिटी के

१) नाम न मालूम
६) बद्रीप्रसादजी लोको सुपरिण्टेण्डेण्ट आफ़िस गोरखपुर मा० चंदा
९) बीबी सम्बो पुत्री बा० कन्हैयालालजी भतीजी बा० मदनमोहनजी अजमेर दान ४) गोशाला ५)
२) बा० उमरावसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कांसल बीकानेर स्टेट जयपुर
|≈) बीरबलजी के आये मनीआर्डर से
६) मिट्ठनलालजी वल्द श्यामलालजी वैश्य परगना कुनाला तहसील मानगेर ज़िला मेरठ डा० खा० बरोठ
२) रामलालजी क्लर्क मल्हारगंज इन्दौर
४) बद्रीदासजी झाडू बाज़ार मेरठ
१) गंगारामजी उबाना मार्फ़त महादेव मोलूरामजी नसीराबाद
२) पं० लक्ष्मण राजारामजी अतरया वकील बरधा सी. पी. द्वारा बा० केशवदेवजी
२) पं० रामजीलालजी भार्गव मार्फ़त डा० रामचन्द्रजी अजमेर
२) बा० रूड़मलजी मार्फ़त डी. एच. ब्रादर्स अजमेर
६) बा० जीवनलालजी मार्फ़त बा० छोटेलालजी घासीरामजी लोहिया चावड़ी बाज़ार देहली
२) ला० रामधन जमुनाधरजी अकोला बराड़
≈) ला० हरस्वरूपजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर
१) बा० गौरीशंकरजी बी० ए० बैरिस्टर एटला अजमेर

२) शशीरामजी सब डिवीजनल आफ़ीसर किछा जि० नैनीताल

१॥।≈) रामनरायणजी दीक्षित मार्फ़त कालीचरणजी शर्म्मा मन्त्री आ० स० जयपुर

५) ज्वालादेवीजी मौजा धगदेव तहसील गुजरखां जि० रावलपिंडी

२५) भगवानदास छुट्टमललजी मार्फ़त रूपलालजी बीकानेर

४) पं० शीतलप्रसादजी रिटायर्ड डिप्टीकलेक्टर मुज़फ्फ़रनगर द्वारा पं० शिवनरायणजी अजमेर

९) ला० खुशीरामजी कमाऊं की देवरी अमृतसर

३) सोनी निर्भयराम नरसिंहदासजी ठिकाना बेगमपुरा चोकीशेरी सूरत

१) शालिगरामजी धोबीबाड़ा अलवर

२) जगदीशसहायजी माथुर भरतपुर मा० चंदा

५) बैजनाथजी जोधपुर

१॥।≈) हनुमानसिंहजी मन्त्री आ० स० सिकन्दराबाद (दक्षिण)

२) जगन्नाथजी प्रयागपुर

१४) उत्तमचन्दजी सन्दूक फरोश मुलतान दान १०) दवाखाना २) गोशाला २)

४) रामप्रतापजी द्वारा महाराजसिंहजी आफ़िस कानूगो समरदल कोटा

।) नत्थीलालजी गयामलजी पसारी कोसी जिला मथुरा

।) किशनलालजी ,, ,,

≈) छोटेलाल गोकुलजी ,, ,,

≈) कन्हैयालालजी ,, ,,

≈) गिराजजी ,, ,,

≈) रामचन्द्रजी ,, ,,

≈) जोहरीलालजी हलवाई ,, ,,

≈) नरायणदासजी ,, ,,

≈) धरनीधरजी वैद्य ,, ,,

-) केसरीप्रसादजी ,, ,,

-) रामदासजी जगनाजी ,, ,,

≈) तुलसीरामजी ,, ,,

-) किशोरीजी ,, ,,

-) बुधामलजी ,, ,,

-) लेखराजजी ,, ,,

-) छज्जूमलजी ,, ,,

-) लक्ष्मीनारायणजी ,, ,,

-) गोकुलचन्दजी ,, ,,

-) पूरनमलजी ,, ,,

-) थानामलजी ,, ,,

-) सेदूजी ,, ,,

-) मुरलीधरजी ,, ,,

-) बालकिशनजी ,, ,,

≈) हीरामलजी ,, ,,

४) बिहारीलालजी रीडर डिप्टीकलेक्टर महकमा नहर मुज़फ्फ़रगढ़ मा० चंदा

२००) श्रीमान् ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी साहब बागसूरी चिरस्थायी कोष में

८) डा० भोलानाथजी जयपुर द्वारा मा० गवाचरणसिंहजी अजमेर

।) नन्नालालजी वर्म्मा मार्फत आर्य्यसमाज धार (सी. आई.)

-) बा० नरायणसिंहजी मा० बा० बिहारीलालजी डाकीकूआ अजमेर

७) मुंशीरामजी नोहर रियासत बीकानेर

५) कुंवर सुघरसिंहजी जमीदार गांव मंझला डाकखाना इन्दरगढ़ ज़ि० फर्रुखाबाद

२) पं० कृपारामजी शर्म्मा कोतवाल ग्वालियर

२॥।=) दलीपसिंहजी आर्य्यसमाज अतरौली

४) बा० मदनलालजी मार्फत आर्य्यसमाज अजमेर

।=) डा० वंशीधरजी गारनी मा० आ० स० अजमेर

१) पं० रामचन्द्रजी शर्म्मा डाकीकूआ अजमेर

१) छज्जूमलजी रोहाना गुड़गांवा

१=)॥ मदनलालजी मा० आ० स० अजमेर

२५) उत्तमचन्दजी सन्दूकफरोश मुलतान

५) भगवानसिंहजी गढ़ी कासमपुर ज़ि० बिजनौर.

१) ठाकुर भगवानसिंहजी मार्फत बा० रघुवीरसिंहजी अजमेर

स्थानिक मासिक चन्दा जून १९११ का प्राप्त ॥

२) गुलाबरायजी वर्म्मा पोस्ट आफिस अजमेर

॥) बा० हीरालालजी ,,

१) मि० शोरावजी दादाभाई वकील ,,

१) रा० ब० बा० मूलचन्दजी पें० मास्टर ,,

॥) बा० मदनगोपालजी ,,

।) मैसर्स उस्मान एण्ड सन्स ,,

-) सेठ उस्मानजी

=) लक्ष्मीनरायणजी ,,

।) बालकरामजी ,,

=) छीतरमलजी ,,

=) अंगनलालजी ,,

॥) मि० धनपतप्रसादजी ,,

१) मुं० देवीदयालजी भार्गव ,,

१) बा० जवाहिरलालजी जेलर ,,

-) ला० अंगनलालजी हलवाई ,,

२) बा० मिट्ठनलालजी वकील ,,

२) बा० विशम्भरनाथजी वकील ,,

॥।) बा० रघुवीरसिंहजी लोकोस्टोर ,,

।=) बा० नवलकिशोरजी ,, ,,

।) घनश्यामदासजी ,, ,,

-) बा० हरदेवलालजी ,, ,,

॥) मिस्तरी दुल्ले ,, ,,

।=) पं० रामसहायजी ,, ,,

=) मुन्नालाल भोपालजी ,, ,,

८) कन्हैयालालजी लोकोस्टोर अजमेर
।=) प्यारेलालजी ब्रैंचस्कूल ,,
८) अंगनलालजी हलवाई ,,
१) बा० बनवारीलालजी बुकिङ्ग क्लर्क ,,
1) ला० चैनसुखजी मुनीम ,,
।) मुं० लाडलीलालजी मुख्तार ,,
।) बा० रामसिंहजी लाखनकोटड़ी ,,
=) धर्म्मपत्नी बिलासरायजी ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने मास जुलाई १९११ में सहायता दी ॥

४।।।=) लाला नत्थूसिंहजी सुपरवाईजर कानूगो सहारनपुर

५) बा० हरिश्चन्द्रजी मैनेजर धर्म्मरक्षिणी जाटसभा मुज़फ्फ़रनगर

१०।।।८) बा० बद्रीप्रसादजी मन्त्री आर्य्यसमाज रोपड़ जि० अम्बाला

१) पं० शालिगरामजी शर्मा मार्फ़त बा० छज्जूसिंहजी अजमेर

५) बा० छज्जूसिंहजी लोको सुपरिंटेण्डेण्ड दफ्तर अजमेर

१) ला० बख्तावरसिंहजी गुप्त ग्राम बेदला उदयपुर (मेवाड़)

१) ठाकुर रतनसिंहजी गांव बेगूं उदयपुर (मेवाड़)

१) ला० विजयसिंहजी ओसवाल दूकान गोकुलचन्द छीतरमलजी शाहपुरा

१) ला० द्वारकाप्रसादजी केसन्स आफ़िस उदयपुर

१) बा० केदारनाथजी पटवारी केसन्स आफ़िस बीकानेर जयपुर

२) बा० चिरंजीलालजी टाइपराइटर अजमेर

१०) बा० नरायणदासजी सबरजिस्ट्रार चन्दोसी जि० मुरादाबाद

१०) चौ० दलीपसिंहजी व चौधरी खुशहलसिंहजी गांव बटरा जि० मुज़फ्फ़रनगर

५) डूंगरमलजी भनोई ज़िला मुरादाबाद

५) कदासिंहजी

२) बा० जयनरायणजी रामपुर

५) बा० दौलतरामजी ख़ज़ानची आ० स० फलावा जि० मेरठ

४) मथुरा हाउस न० ५९ आली जीजी भवान जोधपुर

१) बा० मातादीन गुप्त हकीम मार्फ़त बं० शीधरजी असिस्टेण्ट क्लर्क कासगंज

१५) रावतजी शिवनाथसिंहजी आमेट (उदयपुर)

२) बा० चुन्नीलालजी टिकटकलेक्टर सखेरा भोदरपुर

५) बा० जगदीशसहायजी माथुर मजिस्ट्रेट प्रतापगढ़ (मालवा) मा० चंदा

१) बा० गौरीशङ्करजी बी. ए. बैरिस्टर एटला अजमेर

१) म० धूलसिंहजी राजपूत मार्फत मास्टर राधेलालजी मेओकालेज अजमेर
१) ला० प्यारेलालजी लक्ष्मीलालजी बजाज डा० खा० जलाली जि० मेरठ
१) बा० करतारचंदजी मालगोदाम चन्दौसी
५) बा० नरायणसिंहजी कोठारी राठोड़ हेडमास्टर इन्दौर
५) म० मुखराजसिंहजी जिला सहारनपुर
१।।।≈) म० नोबतरामजी वर्म्मा उपमन्त्री आ० स० फैजाबाद
२) बा० भगवानसिंहजी मार्फत बा० लछमनप्रसादजी वकील गांव धण्डा मेरठ
२५) बा० रामदयालजी बाबूलालजी मा० केशोपसादजी असिस्टेण्ट सर्जन हाथरस
२) बा० महावीरपसादजी असिस्टैण्ट सर्जन नासिक
५) म० बबूलाल मुरारीलालजी चन्दौसी
१२) राय सेठ चान्दमलजी बैंकर अजमेर १ दिवस का भोजनव्यय
१) मा० दयाशङ्करजी मार्फत महाराजकुमार साहब नीमराना अलवर हाउस मेओकालेज अजमेर
५) बा० सूरजसहायजी एटा
४) रामदयालजी द्वारा राधाकिशनजी मंत्री आर्य स० पुनाहाना

४६।।) श्री० स्वामी आत्मारामजी द्वारा फूलचन्दजी जज्ज अजमेर
३।।) म० दुर्गाप्रसादजी खजानची आर्य्यसमाज सहारनपुर
४) ला० ब्रजभूषणलालजी पूनाहाना जि० गुड़गांवां
२) म० तुलसीरामसिंहजी कोड़वागंज ब्रांच आफिस अलीगढ़
१।।।≈) चौधरी नत्थूसिंहजी मस्जिद मोठ पहाड़गंज देहली
२) बा० जमुनादासजी जसपुर जिला नैनीताल
२) ला० भगवानदासजी पटवारी द्वारा भागुवाला डा० खा० नागल जिला बिजनौर
३५) डाक्टर हीरालालजी रेल्वे स्टेशन उज्जैन (मालवा)
३।≠) खन्नूलालजी सौदागर किङ्ग मारकेट मालेरोड़ कानपुर
२) ला० लालजीमलजी सरवन जिला बुलन्दशहर
५) बा० जगन्नाथजी डी. टी. एस. आफिस आबूरोड़
१०) ला० फूलचन्दजी बैंकर नीमच
२।।) द्वारा नत्थीलालजी पसारी कोसी जि० मथुरा

३) नवलसिंह सुखदेवजी मोदी गिरधारी-लालजी की हवेली सोजत

१) ला० दुर्गाप्रसादजी चाह बाग रसिया-बाड़ी देहरादून

४) बा० हरनरायणजी जमीन्दार मौजा शेरपुर डा० खा० झाझर जिला देहरादून

१०) महीपतिजी इस्लामकोट (सिन्ध)

२४॥≡) द्वारा महाशय रामानन्दजी उपदेशक द० अ० स्थान धौलपुर

१) सेक्रेटरी आर्य्यसमाज जंजीबार द्वारा मैनेजर आर्य्यप्रकाश बोम्बे

स्थानिक चन्दा जुलाई १९११ में प्राप्त ॥

२) पं० वंशीधरजी शर्म्मा एम. ए. वकील अजमेर

४) राय सेठ चान्दमलजी बैंकर ,,

१) बा० जवाहरलालजी जेलर ,,

२) बा० नाथूलालजी सु० कमिश्नर दफ्तर ,,

१) बा० शिवचरणदासजी ,,

॥) बा० मदनगोपालजी ,,

१) मिस्तरी घीसूलालजी ,,

१) डा० ओ० एम खांडवाला ,,

।) सेठ उस्मान एण्ड सन्स ,,

-) सेठ उस्मानजी ,,

=) बालकरामजी ,,

१) बा० गुलाबरायजी अजमेर

१) मा० छोगालालजी ,,

।) फूलचन्दजी सुनार ,,

१) बा० मिट्ठनलालजी वकील ,,

२) पं० जी० आर० खांडेकरजी ,,

॥) धनप्रसादजी वकील ,,

॥) मुं० लाडलीलालजी मुख्तार ,,

।=) गोर्धन मुन्नालालजी ,,

=) ला० कजोड़ीमलजी ,,

-) बा० छीतरमलजी ,,

।) बा० रामसिंहजी ,,

३) बा० विहारीलालजी गार्ड ,,

।) चैनसुखजी मुनीम ,,

२) मुं० फूलचन्दजी जज्ज ,,

=) पं० लक्ष्मीनारायणजी ,,

२) मि० विशम्भरनाथजी वकील ,,

१) बा० बनवारीलालजी ,,

१) बा० मूलचन्दजी गार्ड ,,

।) मा० विभूतीभूषणजी ,,

।) बा० डालचन्दजी ,,

=) फूलचन्दजी सुनार ,,

=) मंगनलालजी हलवाई ,,

=) बाबूलालजी ,,

=) मास्टर प्यारेलालजी ब्रांचस्कूल ,,

।) बा० रणजीतसिंहजी ,,

=) बा० नवलसिंहजी ,,

-) बा० कन्हैयालालजी ,,

≡) बा० हरदेवलालजी ,,

=) बा० रामसहायजी अजमेर
।=) मिस्तरी दूले ,,
१) मुं० देवीदयालजी भार्गव ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने पं० सुन्दरदत्तजी उपदेशक द० अ० द्वारा सहायता दी ॥

२) ला० छेदालालजी हलवाई सोजतरोड
१) उत्तमराम लल्लूरामजी शर्म्मा चोपदार निवासी पालनपुर सोजतरोड
१) मोदी गिरधारीलालजी ,,
१) गुप्तदान द्वारा मयारामजी रामदयालजी,,
१) सेठ प्रभुदयाल रामकरणजी ,,
।) पं० हरिवल्लभजी शर्म्मा ,,
१) बा० रलारामजी साहब सब ओवरसियर सरदार समन्दडायाली ,,
॥) बा० मनोहरीलालजी ,,
२।) आर्य्यसमाज सोजत सिटी ,,
१) डाक्टर महता गोविन्दलालजी ,,
१) बा० गोरधनदासजी स्टेशनमास्टर ,,
।) बा० सूर्य्यनरायणजी टाइमकीपर ,,
।) बा० लाडलीप्रसादजी ,,
।) ,, ब्रजवासीलालजी ,,
-) ,, भाईलालजी ,,
।) बा० छब्बालालजी ,,
।) बा० भवानीप्रसादजी ,,
१) गुप्तदान ,,
=) बा० रामचरणजी ,,
॥-) ला० छोटेलालजी हलवाई ,,
२) बा० उमरावसिंहजी साहब स्टेशन रानी
२) सेठ अमृतलालजी त्रिभुवनदासजी ,,
२) सेठ श्रीकृष्णजी तुलसीरामजी साहब ,,
२) ,, फूलचन्दजी रतनलालजी ,,
२) पं० जयलालजी दीनदयालजी ,,
२) सेठ गुलाबचन्दजी बभूतचन्दजी ,,
२) सा० फूसांचन्द्रभानजी साहब ,,
२) सेठ रखबदास सरदारमलजी ,,
१) सेठ शेखमलजी साकलचन्दजी ,,
१) मूता बख्तावरजी कानमलजी ,,
॥) सेठ किशनदासजी साहब ,,
१) सेठ वेनीचन्दजी भग्गूभाईजी ,,
१) ला० आनन्दीलालजी साहब दरोगा सायर कस्टम ,,
॥) सेठ जवाहरलालजी लादूरामजी ,,
२) डाक्टर टुइयांलालजी साहब आबूरोड
१) बा० गोपीनाथजी कमसरियट ,,
१) बा० ओ३म्प्रकाशजी साहब इंजीनियर आफ़िस आबूरोड
॥) बा० इब्राहीमजी कमसरियट ,,
॥) पं० केशवरामजी सैटलमेण्ट आफ़िस ,,
॥) बा० श्रीराम गोविन्दजी ,,
१) बा० जगन्नाथजी डी० टी० एस० आफ़िस ,,
॥) मुं० रामचन्द्रजी मास्टर ,,
॥) बा० मथुराप्रसादजी साहब ई० आ० ,,
॥) बा० विश्वनाथजी साहब ,,

।।) बा० नरायणसिंहजी साहब सुपरिन्टे-ण्डेण्ट सैटलमेण्ट आफ़िस आबूरोड
१) सेठ हुरमजी दोरावजी सावाइन मरचेण्ट ,,
१) बा० शेरसिंहजी सेटलमेण्ट आफ़िस ,,
१) बा० बिहारीलालजी ,,
।।) मीरूलालजी डि० आफ़िस ,,
१) केशवलालजी इंजीनियर आफिस ,,
१) चौबेजी रामचन्द्रजी शर्म्मा असिस्टैण्ट चीफ डी. टी. एस. आफ़िस ,,
।) मास्टर किशोरसिंहजी ,,
॥) पं० काशीनाथ कश्मप सैटलमेण्ट आफ़िस ,,
।) बा० रामरिछपालजी सा. इ. आ. ,,
।) बा० रामकिशनजी स० आ० ,,
।) मि० इनायतहुसैनजी ,,
=) मि० फजलदीन महाशय ,,
=)॥ मि० मोहम्मदहुसैनजी जहांगीरखां इवदारहुसैन ,,
॥) बा० बैजनाथप्रसादजी स० आ० ,,
।) बा० विश्वनाथजी इ० आ० ,,
।) बा० महादेवजी इ० आ० ,,
१) बा० रामस्वरूपजी हेडक्लर्क इंजीनियर आफ़िस आबूरोड
॥) बा० गौरीशंकरजी इ० आ० ,,
।) बा० श्रीधर विश्वनाथजी ,,
।) बा० ज्योतीप्रसादजी इ० आ० ,,
॥) बा० रामलालजी ठेकेदार ,,
१) बा० मनोहरनाथजी (कश्मीरी) इंजीनियरिङ्ग आफ़िस आबूरोड
।) बा० शिवसहायजी इ० आ० ,,
१) बा० हरनरायणजी साहब पैंशनर हेडक्लर्क इंजीनियर आफ़िस (मा० चन्दा) ,,
७) गुप्तदान समस्त पंच महाजनों के द्वारा ,,
॥) बा० हिम्मतसिंहजी सब इन्स्पेक्टर सायर ,,
॥) बा० ठोडूरामजी इ. आफ़िस ,,
१) बा० अजुध्याप्रसादजी स० आ० ,,
२) मि० जमालबक्स ठेकेदार ,,
॥) मोहनसिंहजी मजिस्टेट ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने महाशय शमानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा सहायता दी ॥

-) बा० रामनाथजी मक्खनपुर
१) ला० रामफलजी ,,
॥) महाशय रामदयालजी ,,
॥) महाशय मुन्नीलालजी ,,
।) गिरधारीजी अहीर ,,
।) ला० हरविलासजी ,,
।) बा० बैजनाथजी ,,
=) ला० दमरूमलजी
=) ,, बद्रीप्रसादजी ,,
।) पं० दानशाह रामचन्द्र जी ,,
।) पं० देवीचरण हेड मुदर्रिस ,,
=) ला० राधाकृष्णजी मन्त्री आ० स० ,,

।) महाशय कुन्दनलालजी मक्खनपुर
=) मुंशी अयोध्याप्रसादजी ,,
।) ला० चन्दनलालजी ,,
=) मुंशी श्रीरामजी ,,
=) प्रभुदयाल गुप्त ,,
२) बोहरे ब्रजलालजी ,,
।) बैनीराम मौज़ा सेवढ़ा ,,
१) बा० दयानन्दजी नाज़िर ,,
॥) पं० सुखलालजी मुदर्रिस शिकोहाबाद
=) ला० उदयराजजी ,,
।) महाशय शिवलालजी ,,
।) महाशय बाबूरामजी ,,
।) बाबूराम छेदालालजी ,,
=) मंगलसेनजी शिकोहाबाद
१) ठाकुर रिसालसिंहजी उरमरा
१) मुरलीमनोहर रामस्वरूपजी शिकोहाबाद
॥) बा० गुरुशरणदासजी ,,
।) गोपीराम रामनारायणजी ,,
।) बा० रामसहायजी कानूगो ,,
।) बा० रामप्रसादजी नायब कानूगो ,,
॥) कन्हैयालाल रामस्वरूपजी ,,
५) ला० रामकृष्णजी बोहरे ,,
४) बा० जगदीश्वरसहायजी ,,
।) ठाकुर हुलासरायजी करहरा
॥) पं० रघुनन्दनप्रसादजी शिकोहाबाद
=) पं० जगन्नाथजप्रसादजी ,,
२) ठाकुर कर्णसिंहजी कानूगो ,,
१) बा० कुंवरबिहारीलालजी पेशकार ,,
२) ला० बद्रीप्रसादजी मुहर्रिर जसराना

१) डाक्टर जानकीप्रसादजी जसराना
॥) बा० रघुवीरप्रसादजी खजाञ्ची ,,
२) ठा० हुक्मसिंहजी ,,
१) बा० गुरुप्रसादजी मास्टर ,,
३।) ठा० महिपालसिंहजी भदान ,,
१) पं० लालारामजी शर्म्मा ,,
११) साहु ज्वालाप्रसादजी जसवन्तनगर
५) ला० दुर्गाप्रसादजी रईस ,,
१) मुन्नालाल रामदयालजी ,,
२) बद्रीप्रसादजी ज्वालाप्रसादजी ,,
=) ला० श्रीकृष्णजी ,,
२) बा विशनदासजी सब ओवरसियर ,,
१६।) चन्दा पबलिक मार्फत बा० जोतिप्रसादजी मंत्री आ० स० जसवन्तनगर
॥) ला० ज्वालाप्रसादजी जसवन्तनगर
॥) महाशय पुत्तीलालजी ,,
१) महाशय सुलतानीरामजी ,,
१) पं० राजारामजी ठेकेदार ,,
१) ला० गंगासहायजी ,,
१) धर्म्मपत्नी ला० मंदारीलालजी ,,
२) ला० अजोध्याप्रसादजी ,,
।) महाशय शालिगरामजी ,,
महाशय ज्योतिस्वरूपजी मंत्री आ० स० वस्त्र ,,
१) गुलदान मा० मंत्री आ० स० ,,

फहरिस्त चन्दा जो हरदोई से अनाथालय की सहायतार्थ प्राप्त हुआ ॥

१०)	मिस्टर जेंकिंस साहब बहादुर डिप्टी कमिश्नर	हरदोई
१)	मुं० लाड़िलीप्रसाद प्लीडर	,,
१)	बा० रामचन्द्र क्लर्क	,,
१)	म० लक्ष्मीनारायण	पिहानी
१)	मुं० दीवानबहादुर	हरदोई
१)	मुं० सूर्यप्रसाद क्लर्क	,,
।)	मुं० दुर्गाप्रसाद	,,
≈)	पं० लालताप्रसाद	,,
१)	बा० लालताप्रसाद उपमंत्री आर्य्य समाज	,,
१)	मुं० सीताराम	पिहानी
॥)	सेठ यमुनाप्रसाद	हरदोई
।)	पं० शिवरत्नलाल मैनेजर	,,
।)	मुं० पुत्तूलाल	,,
।)	पं० शङ्करलाल	,,
।)	मुं० दयाशङ्कर	,,
॥)	पं० रामसहाय	,,
॥)	मुं० बच्चूलाल	,,
॥)	मुं० रामनारायण	,,
॥)	मुं० चतुरविहारीलाल	,,
॥)	मुं० कन्हैयालाल	,,
१)	पं० मदनमोहन	,,
।≈)	मुं० शिवनारायण	,,
४)	बा० बृजकिशोर प्लीडर	,,
१०)	गुप्तदान	हरदोई
२)	बा० महाराजनारायण	,,
२)	माताप्रसाद प्लीडर	,,
१)	बा० श्रीकृष्णचन्द्र प्लीडर	,,
५)	बाबू शिवसहाय वकील	,,
१)	बा० प्रतापचन्द्र प्लीडर	,,
२)	बा० रघुवीर सहाय	,,
१)	पं० रामचरण	,,
२)	बा० मन्नीलाल वकील	,,
१)	बा० रामनारायण	,,
।)	मुं० बख्तबहादुर	,,
–)	बा० देवीदयाल	,,
१)	ला० चेतराम	,,
≈)	बा० बिश्वनाथसिंह	,,
१)	बा० बख्तबहादुर	,,
२)	पं० आशानन्द	,,
।)	पं० गंगाशंकर	,,
१)	बा० गंगाप्रसाद	,,
॥)	मुं० भिखारीलाल	,,
॥)	पं० उदितनारायण	,,
।)	बा० अवधबिहारी	,,
।)	पं० देवीसहाय	,,
।)	पं० शिवराम	,,
।)	गुप्तदान	,,
।)	कल्लू ठठेरा	,,
१)	परभू ठेकेदार	,,
२)	उजागरसिंह वकील	,,
११)	गुप्तदान	,,

९) बा० लालबहादुरजी तह० दार हरदोई
५) मुं० शिवदयालजी ,,
१) बा० गुरुप्रसादजी ,,
१) मुं० ब्रजबहादुरजी ,,
१) ला० भगवानदीनजी ,,
१) पं० रामसेवकजी ,,
१) धर्मपत्नी रामसहायजी ,,
।) माता ब्रजबिहारीलालजी ,,
४) बा० रामप्रसादजी सबजज्ज ,,
२) बा० मथुराप्रसादजी मुंसिफ ,,
१) बा० हुलासरायजी क्लर्क ,,
१) बा० रघुवरदयालजी क्लर्क ,,
=) मुं० जादौप्रसादजी ,,
२) बा० दुर्गादयालजी ,,
१) बा० लखमीसहायजी ,,
१) बा० शिवनारायणसिंहजी ,,
॥) मुं० रामनारायणजी ,,
।) मुं० मुन्नालालजी अहलमद ,,
।) मुं० अवधबिहारीलालजी ,,
=) मुं० कालीचरणजी ,,
=) पं० कालीचरणजी ,,
॥=) बा० प्रतापनारायणजी ,,
१) मा० माधौदासजी ,,
२) सैयद दीदारअलीजी ,,
१) मौलवी तजम्मुलहुसेन साहब ,,
१) मुं० ज्वालाप्रसादजी ,,
१) मुं० रोहनलालजी ,,
१) मुं० गुरुप्रतापजी ,,
॥) मौलवी हशमतअलीजी हरदोई
॥) मुं० वाजिदअलीजी ,,
१) पं० कुंजबिहारीलालजी ,,
१) मुं० मुरलीधरजी ,,
॥।) चन्दा फुटकर

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने मास अगस्त १९११ में सहायता दी ॥

५) राय केशरीमलजी साहब हाकिम मांडलगढ़ (मेवाड़)

२००)॥। मैनेजर कृष्णामिल लिमिटेड ब्यावर (कपड़ा)

१) मा० दिलीपसिंहजी इस्लामनगर डा० खा० खास ज़िला बदायू

१०) म० काशीरामजी ग्वालदम जि० अल्मोड़ा

१) म० भोलानाथजी आसलपुर ठकावली जि० बदायूं

३) लालताप्रसादजी एण्ड सन्स बंकेश झांसी

१) पं ब्रजबिहारीलालजी मार्फत मास्टर राधामोहनजी डी० ए० वी० हाईस्कूल अजमेर

५) बा० रामबिलासजी मूंदड़ा नायब हाकिम भानुजा वाया पो० आ० सादड़ी (मेवाड़)

६) बा० मोहनलालजी कोल्डवेखान ज़ि० फ़ीरोज़पुर

८) ला० घासीरामजी द्वारा बा० महाराजसिंहजी आफिस कानूगो मांगरोल कोटा
५) बा० भगवन्तसहायजी सब असिस्टेन्ट सर्जन शफ़ाख़ाना सूरतगढ़ रियासत बीकानेर
२) ला० गणेशीलालजी गुप्त चन्दौसी
४) ला० जगन्नाथ वासुदेवजी द्वारा ला० गणेशीलालजी चन्दौसी
२३।) द्वारा पं० रामानन्दजी उपदेशक द० अ०
१) ला० द्वारकाप्रसाद गयाप्रसादजी बजाज पिनाहट ज़ि० आगरा
।) ला० अंगनलालजी हलवाई अजमेर
=) मा० विजयराजजी कायस्थमहल्ला,,
–) ला० हरस्वरूपजी कायस्थ ,, ,,
२) डाक्टर मदनलालजी सब असिस्टेण्ट सर्जन नागोर
१०) मोतीलालजी नाई की माता द्वारा ब्रह्मदत्तजी सोढ़ा अजमेर
२) ला० झंडूलालजी मवाना ज़ि० मेरठ
५) म० चन्दूसिंहजी गांव भटरी डाकख़ाना जानसठ ज़ि० मुज़फ़्फ़रनगर
५) बा० जगदीशसहायजी माथुर ज्युडिशियल अफ़सर प्रतापगढ़ (मालवा) मा० चन्दा
५) स्वामी देवानन्दजी महाराज मार्फ़त मुंशीलालजी मुदर्रिस मढ़ी हरसरू
१) ला० दीपचन्दजी कुरमी दाहेव मूसानगर कानपुर
७) ला० बालकृष्णजी मार्फ़त ला० तुलसीरामजी दरकोठी महल्ला बैरम ज़िला कानपुर
१) पं० मातादीनजी मिश्र अहलमद मजिस्ट्रेट ब्यावर
५) डाक्टर मुकन्दसिंहजी बिजनौर
=) तेजा मोची अजमेर
–) म० अंगनलालजी हलवाई ,,
–) ला० हरस्वरूपजी ,,
१) ला० ब्रजलालजी द्वारा पं चन्दूलालजी वकील गुड़गांव
१८) बा० चन्दूलालजी वकील गुड़गांव मा० चन्दा
२) बा० हुलासरायजी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड क्लर्क हरदोई
४।) ला० रूपचन्दजी नेत्रवैद्य सोजत
१) ला० सुखदेवजी वैद्य सोजत
१) पं० सुखदेवजी आर्य्यसमाज पिनकी
९।॥=) गुप्तदान
२४॥।=) पं० रामानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा इटावा से
१२) श्रीमती रनावतजी साहबा शिवगढ़ जिला रतलाम मा० चन्दा
१) बा० जानकीप्रसादजी रामप्रसादजी पसारी चन्दौसी ज़ि० मुरादाबाद
।) ला० नत्थीलालजी पंसारी कोसी ज़ि० मथुरा

१) म० किशनलाल राधावल्लभजी कोसी ज़िला मथुरा
=) छोटेलाल गोकुलचन्दजी ,, ,,
=) हीरालालजी छज्जूमलजी कोसी ज़िला मथुरा
=) हीरालालजी कन्हैयालालजी ,, ,,
-) दिलसुखराय बिहारीलालजी ,, ,,
-) चन्दामल उग्रसैन बजाज ,, ,,
=) ला० नारायणप्रसादजी ,, ,,
-) धनामल बखरियामलजी ,, ,,
-) केसरीप्रसादजी बृजलालजी ,, ,,
-) रामदासजी जगन्नाथजी ,, ,,
-) ज्यासीरामजी नन्थीलालजी ,, ,,
-) छोटेलालजी लक्ष्मीनारायणजी ,, ,,
=) म० गिरराजजी मुनीम ,, ,,
=) म० रामचन्द्रजी ,, ,,
-) म० किशोरीलालजी मुनीम ,, ,,
-) ला० बुद्धामलजी ,, ,,
-) प्यारेलालजी रामचन्द्रजी ,, ,,
=) ला० जोहरीमलजी हलवाई ,, ,,
-) घीसामलजी गोकुलमलजी ,, ,,
-) मक्खनलालजी छज्जूमलजी ,, ,,
-) जवाहरमलजी गंगाधरजी हलवाई ,,
-) मुरलीधरजी ब्राह्मण ,, ,,
-) ला० बालकिशनदासजी ,, ,,
-) ला० जगन्नाथजी ,, ,,
=) दुर्गाप्रसाद शिवदयालजी ,, ,,

१) ला० दुर्गाप्रसादजी कटरा राय बख्तावरसिंहजी अमरोहा
२) श्रद्धारामजी जाट साकिन कसबा बनत तहसील कैराना ज़िला मुजफ्फ़रनगर
१०) कन्हैयालाल रामगोपालजी मालिक दुकान नयागंज कानपुर
३५) द्वारा पं० सुन्दरदत्तजी उपदेशक द० अ० के आबू से आये
२) नाथूलालजी सुपरवाइजिर ज़ि० करनाल
२) ला० द्वारकाप्रसादजी अत्तार खज़ाञ्ची आर्य्यसमाज शहाजहांपुर
२) बद्रीदत्तजी गांव डंडालाकोंड देहरादून
२३) द्वारा पं० रामानन्दजी उपदेशक द० अ० इटावा से
५) बा० दीवानसिंहजी ज्युडीशियल मोहर्रिर जानसठ ज़ि० मुजफ्फ़रनगर
२०) बा० रणवीरसिंहजी कश्मीरी दरवाज़ा देहली
२०) द्वारा पं० भवानीप्रसादजी उपदेशक द० अ०
२५) राजा गोविन्दप्रसादजी द्वारा गयाप्रसादजी मंत्री आ० स० हैदराबाद (दक्षिण)
११) पं० रामचन्द्रजी स्कूलमास्टर बड़गन्यावास
-) ला० मंगनलालजी हलवाई अजमेर
१) म० जवानसिंहजी सर्थीन डाकखाना पीपाड़ राज मारवाड़

।) डाक्टर शिवदासजी द्वारा सु० द० अ०

१००) द्वारा पं० गंगासहायजी शर्म्मा उपदेशक द० अ० के देहली से

२) म० रामेश्वरप्रसादजी मा० नानकप्रसादजी सेक्रेटरी आ० स० बाराबंकी

३४) द्वारा पं० सुन्दरदत्तजी उपदेशक दयानन्द अ० पाली से

२०) द्वारा पं० भवानीप्रसादजी उपदेशक द० अ० चूरू से

५) पं० रामस्वरूपजी मैनेजर कोपरेटिव स्टोर सिरसा

५०) द्वारा पं० शमानन्दजी उपदेशक दयानन्द अ० के जसवन्तनगर से

६५६।||=)||| श्रीमती स्वर्गीया सहोदराबाई की मिलकियत का सर्कार से प्राप्त हुआ फैसला करनेपर

५) बा० चिरंजीलालजी सब इन्स्पेक्टर पुलिस हाथरस

१) मि० टहलराम गंगारामजी डेराइस्माइलखां (पंजाब)

६) बा० बिहारीलालजी ओवरसियर नीमच

३) बा० अयोध्याप्रसादजी सिवनी

६) मोतीलालजी नड़ियाद

११०) राजा इन्द्रजीत साहब चारकमान हैदराबाद (दक्षिण) पो० अफ़जल गंज

६) म० लालावरसिंहजी देहली मा० पीपल्सबैंक अजमेर

५) म० नामराजसिंहजी शामली ज़ि० मुजफ्फ़रनगर

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने मास अगस्त ११ में चन्दा देकर सहायता की ॥

२) बा० पुरुषोत्तमदासजी अजमेर
।) सेठ उस्मान एण्ड सन्स ,,
-) सेठ उस्मानजी ,,
=) गोरधनदास मुन्नालालजी ,,
=) बालकरामजी ,,
।) बा० फतहचन्दजी ,,
=) बा० तनसुखरामजी ,,
-) बा० छीतरमलजी म्यूनीसिपल द० ,,
=) ला० अंगनलालजी हलवाई ,,
=) मुंशी रामसिंहजी ,,
||) बा० मदनगोपालजी ,,
१) बा० शिवचरणदासजी ,,
-) धर्म्मपत्नी विलासरायजी ,,
=) बा० चिरंजीलालजी ,,
१) मुंशी देवीदयालजी भार्गव ,,
१) बा० मिट्ठनलालजी भार्गव ,,
१) रा० ब० पं० जी० आर० खांडेकरजी ,,
१) बा० जवाहरलालजी जेलर ,,
।) ला० चैनसुखजी मुनीम ,,
=) मा० प्यारेलालजी ब्रैंचस्कूल ,,
१) पं० वंशीधरजी शर्म्मा वकील ,,
।) म० क्षेत्रपालजी ,,
२) बा० विशम्भरनाथजी वकील ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने पं० गंगासहायजी उपदेशक द० अ० द्वारा दान देकर सहायता की ॥

१) बा० मुन्नालालजी छीपीवाड़ा देहली
५) ला० बनारसीदासजी द्वारा कुंजबिहारीलालजी मन्त्री वि०स०स० देहली
ला० राजारामजी बजाज द्वारा पं० विशम्भरनाथजी असिस्टेण्ट हॉस्पिटल देहली वस्त्र टुकड़े ५
२) ला० चन्दूलालजी स्वर्गवासी की पत्नी देहली
=) बा० सीताराजी कार्डिङ्ग मास्टर जमना मिल्स देहली
२) मुं० शेरसिंहजी सब्जीमंडी देहली
१) चौ० पैमा सब्जीमंडी ,,
१) चौ० रामप्रसादजी ,, ,,
२) चौ० बुधसिंहजी ,, ,,
१) चौबे पन्नासिंहजी ,, ,,
१) चौ० भोलासिंहजी ,, ,,
१) चौ० काशीरामजी ,, ,,
१) चौ० गुलाबसिंहजी ,, ,,
१) ठा० छज्जूसिंहजी ,, ,,
१) चौबे टेकसिंहजी ,, ,,
५) बा० मधुसूदनलालजी मैनेजिङ्ग डाईरेक्टर जमनामिल देहली
१) बा० प्रयागनरायणजी मंत्री जमनामिल देहली
१) लाला राजाराम कल्लूमलजी गोवर्धनदास क्लर्क जमनामिल देहली
१) बा० सीतारामजी कार्डिङ्ग मास्टर ,,
५) मिस्टर अशल मेनेजर जमनामिल ,,
॥) बा० केदारनाथजी खजाञ्ची ,, ,,
=) बा० भवानीप्रसादजी क्लर्क ,,
२) बा० जानकीप्रसादजी ,,
५) मिस्टर एच. लाइन्स इञ्जीनियर ,,
॥) चौबे कन्हैयालालजी सब्जीमंडी ,,
।) चौबे बुद्धनजी ,, ,,
१) चौबे हीरासिंहजी ,, ,,
१) ला० श्यामलालजी ,, ,,
॥।) चौबे पूर्णसिंहजी ,, ,,
१) चौबे सूरजसिंहजी ,, ,,
२) चौबे भगवानदासजी जमीन्दार ,, ,,
२) बा० सदाशिव रोडिङ्ग मास्टर हनुमान महादेवमिल देहली
१) पं० हरद्वारीलालजी स्टेशनमास्टर पिलख देहली
२५) ला० शेरसिंहजी रईस कश्मीरी दर्वाज़ा देहली
४) रामचन्द्र गोपीचन्द द्वारा मुद्रामलजी देहली
१) बी० राधारानीजी द्वारा बा० चतुरबिहारीनरायणजी बाज़ार सीताराम शीदी कासम देहली
५) बा० बदलूसिंहजी सब ओवरसियर देहली

१) ला० शम्भूदयालजी सदर बाज़ार देहली
१) ला० मोहनलालजी बजाज ,,
१) बा० रामचन्द्रजी मंत्री आ० स० सदर बाज़ार देहली
१) बा० रामचन्द्र राव पलटन नं० १ ग्वालियरस्टेट दरबार कैम्प देहली
१) पं० श्यामबहादुर त्रिपाठी इन्सपेक्टर टेलीफोन सैण्ट्रल टेलीग्राफ़ ऑफ़िस दरबार वर्क देहली
१) बा० चुन्नीलालजी नहर शहादतखां देहली
१) पंडित गोविन्दशंकर शर्म्मा ,,
१) पंडित कृपाशंकर शर्म्मा ,,
४) ला० मुरलीधर शंकरदासजी कसेरे बाज़ार चावड़ी देहली
॥) पं० कुंजलालजी आचार्य्य देहली
१) पं० शम्भूदयालजी भार्गव ,,
लहंगा १ ओढणी १ आलवान १ वासकट १ धोती १ कोट १ ,
बा० जयप्रसादजी बाज़ार सीताराम देहली ३ लहंगा २ ओढणी १ बंडी १ अंगिया १ वास्कट १
१) बा० चन्दूलालजी हेडक्लर्क बी० एन० आई० फ्लोअरमिल देहली
।) बा० श्रीरामजी क्लर्क डी०एन०आई०,,
।) बा० सुनपतरायजी स्टेशन किशनगंज
।) बा० मदनगोपालजी बुकिङ्गक्लर्क देहली
।) बा० नाथूरामजी असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर देहली
॥) बा० ब्रजलालजी स्टेशनमास्टर ,,
२) बा० चिम्मनलालजी गुड्स क्लर्क सब्जीमंडी ,,
१) बा० आत्मासिंहजी स्टेशनमास्टर ,,
१) ला० चन्दूलाल गंगाप्रसादजी रंगमहल,,
॥) बा० खुनखुनलालजी असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर देहली
।) बा० राजगोपालजी रिसीविङ्ग गुड्स-क्लर्क स्टेशन देहली
१) पं० भवानीशङ्करजी असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर ब्रूअरी केबिन देहली
१) बा० श्यामबिहारीलालजी असिस्टेन्ट स्टेशनमास्टर देहली
।) पं० चिरंजीलालजी केबिन सिगनेलर मैन देहली
१५) ऑनरेबल रायबहादुर ला० सुलतानसिंहजी रईस कश्मीरी दर्वाज़ा देहली
२) रायबहादुर विशम्भरनाथजी नाईवाड़ा देहली
१) राय विश्वम्भरनाथजी इंजीनियर के गृह पर देहली
१) बा० नवलकिशोरजी वकील हवेली हैदरअली देहली
॥=) महाशय रामलालजी रेलवेस्टेशन ,,

समालोचना ॥

देशोपकारक—अमृतधारा के निर्मारक पं० ठाकुरदत्तजी शर्म्मा ने देवनागरी जाननेवाले महाशयों के लाभार्थ हिन्दी देशोपकारक प्रकाशित करना आरम्भ किया है । आपके लेखों ने आयुर्वेदिक चिकित्सा की ओर सर्वसाधारण को आकर्षित किया है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं । आपकी ओषधियां किस दर्जे लाभकर हैं इसके लिये हमारा अपना अनुभव कुछ नहीं किन्तु पत्र को तरतीब और उपयोगी बनाने में आप अवश्य परिश्रम करते हैं ।

विशेष रोगों पर विविध नुसखे लिखने से साधारण लोगों को अच्छा लाभ पहुंच सकता है । उक्त पत्र इस आवश्यकता को पूरा करने का प्रयत्न करता है । विशेष रोगों के विषय म भेजे हुए प्रश्नों के उत्तर भी लाभकर हैं । आशा है पाठक मंगाकर लाभ उठावेंगे और सम्पादक महाशय को भी अधिक उत्साहित करेंगे ।

हर महीने की १ और १५ को लाहौर से प्रकाशित होता है वार्षिकमूल्य २॥) है ।

विवाहसमाचार— उर्दू भाषा का अर्द्धमासिकपत्र लाहौर नगर से ही वैद्य रामचन्द्रजी हर महीने की १ और १६ को प्रकाशित करते हैं इसका उद्देश्य योग्य वर और वधु तलाश कर विवाह कराना है । १६ सेप्टेम्बर के पत्र में आपके द्वारा विवाह का प्रयत्न करनेवालों की संख्या ४६४ तक पहुंच चुकी है । और गत ४ वर्षों में ५६ महाशयों को गृहस्थी बना चुके हैं, ऐसे प्रार्थियों को दफ्तर विवाह समाचार लाहौर से नियत फार्म मंगाकर निश्चित फीस भेज उम्मीदवार होजाना होता है । पत्र को अन्य उपयोगी लेखों तथा समाचारों से भी रोचक बनाया जाता है अतएव पाठक यदि २॥) वार्षिक पर पत्र मंगाकर देखेंगे तो संतुष्ट ही होंगे ।

आर्य्यगज़ट—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, बिलोचिस्थान का साप्ताहिक उर्दू पत्र है । इसकी पालिसी सदा से ही मध्यवर्त्ती रही है और जबसे उसका सम्पादन भार ला० दीवानचन्दजी एम० ए० के सुपुर्द हुआ है तबसे तो पत्र में नवीन जीवन का सञ्चार होगया है । हरएक विषय में आपकी सम्मति निष्पक्ष और शान्तिदायक होती है । आर्य्यसामाजिक विषयों पर विचार करते हुए आप बुद्धिमत्ता का प्रमाण देते हैं तथा जातीय आक्षेपों से यथासाध्य बचने की चेष्टा करते हैं । ३० भादों के पत्र मे मान्यवर ला० लाजपतिरायजी का

"आर्य्यसमाज और हिंदीभाषा" का दूसरा लेख बहुत उत्तम प्रयत्न है । आर्य्य तथा अन्य जनों को मंगाकर अवलोकन करने की हम सुफ़ारिश करते हैं वार्षिकमूल्य २॥) कुछ अधिक नहीं ।

हमारे माननीय भाई महाशय सत्यदेवजी कार्य्यालय गुरुकुल सिकन्दराबाद से निम्नलिखित लघु पुस्तकें (ट्रेक्ट) कुछ देर हुई हमें भेजी थीं हमें अफ़सोस है कि उनकी समालोचना में देर हुई । पुस्तकों का विषय उनके नाम से ही प्रकट है, रचयिता महाशय उसे निभाने में कहांतक कृतकार्य्य हुए होंगे यह जानने के लिये महाशय सत्यदेवजी की विद्या, लेखनशक्ति और विशेषतः यावनीमत से विज्ञतापूर्ण प्रमाण है । मुसाफ़िर आगरा में आप के लेखों को पढ़ने वाले आप से भलीभान्ति परिचित हैं ।

(१) "वहशते हिन्द" भाग १ जिसमें पशुहिंसा और विशेषकर गोवध का समाधान युक्ति और प्रमाणों द्वारा किया है। कुरानशरीफ़ और हदीसों के प्रमाणों से सिद्ध किया है कि गोहिंसा अयुक्त अनुचित और अप्रमाणिक है इत्यादि मूल्य ।) मात्र।

(२) इख्तलाफ़ात अक़ायदे इस्लाम" विषय प्रकट ही है मूल्य नहीं लिखा ।

(३) "इख्तलाफ़ाते कुरान" विषय प्रकट है मूल्य)॥

(४) "एतराज़ाते कुरान" मूल्य नहीं लिखा ।

जो महाशय मंगाना चाहें ऊपर लिखित पते से मंगालें ।

स्थानिक समाचार ॥

आर्य्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियमानुसार होते हैं, प्रति रविवार को प्रातःकाल ७ बजे से ९॥ बजे तक भजन, ईश्वरप्रार्थना के अनन्तर श्री पं० शिवशंकरजी काव्यतीर्थ के उपदेश अत्युत्तम होते रहते हैं । उपस्थिति भी अच्छी होती है ।

वितर्कणीसभा—आर्य्यसमाज की ओर से एक वितर्कणीसभा (डिबेटिंग क्लब) गत ४ सप्ताह से जारी किया गया है, जिसके मन्त्री लाला किशनलालजी लोढा है गत दो सप्ताह से "मृतक श्राद्ध" विषय पर तर्कवितर्क होता रहा है । आर्य्य सिद्धान्तों पर शङ्कासमाधान करने का वहां अच्छा अवकाश मिलता है समय बुद्धवार को ७ बजे सायंकाल का है और स्थान आर्य्यपुत्रीपाठशाला मदारदर्वाज़ा है ।

द० बोर्डिंग हाउस—में आजकल ५५ के लगभग बोर्डर हैं। मास्टर लक्ष्मीनारायणजी अधिष्ठाता हैं। ७) मासिक भोजनव्यय लिया जाता है, जिसमें भोजन, मकान, नाई, धोबी, रोशनी आदि सम्मिलित हैं। स्कूलफ़ीस, वस्त्रादि में साधारणतया १०) रु० व्यय होजाते हैं जो महाशय यूनीवर्सिटी शिक्षा के साथ २ धर्म्मशिक्षा के भी अभिलाषी हैं उन्हें अपनी सन्तान को अवश्य यहां भेजना चाहिये।

रेवाड़ी—भाद्रपद शुक्ला १२ बुद्धवार ठाकुरजी के स्नान की सवारी बड़ी भीड़भाड़ के साथ निकलकर आनासागर तक पहुंची। इस वर्ष पालनों के आगे २ विश्वासी युवक हिन्दुओं का दृश्य नवीन था। "हाथी घोड़ा पालकी। जय कन्हैयालाल की" ध्वनी से आकाशमण्डल गंज उठा था। कई मनुष्यों की ऐसी चर्चा को अधिक रोचक पाया गया कि "क्या अच्छा होता जो इस कूद फांद और हाथी, घोड़े, पालकी के स्थान में योगीश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के गुणवर्णन ही किये जाते जिससे वक्ता और श्रोता दोनों नेक में रहते।

सत्यामृतवर्षिणीसभा अजमेर—का उत्सव भी गत मास में हुआ। श्री पं० गणेशदत्तजी शास्त्री की वक्तृता में विशेष परिवर्त्तन पाया गया, आपने हिन्दू पबलिक को अपील किया कि आर्य्यसमाजियों से एकता का वर्त्ताव रक्खें क्योंकि उनमें और हम में अधिक भेद नहीं है उदाहरण के लिये वह ईश्वर को निराकार मानते हैं और हम निराकार और साकार दोनों इत्यादि, हां पं० रलाराम नामी कोई अन्य उपदेशक पंजाब से पधारे थे। यद्यपि उनके व्याख्यानों के श्रवण का सौभाग्य हमें प्राप्त नहीं हुआ किन्तु जहांतक सुनने में आया है आपने आर्य्यसमाज और उसके संस्थापक महर्षि श्रीस्वामी दयानन्दसरस्वती की काफ़ी समालोचना की है। कई युवक आर्य्यपुरुषों को हमने उनके व्याख्यानों के कारण अधिक जोश में पाया किन्तु श्री पं० वंशीधरजी प्रधान आर्य समाज की सहनशीलता तथा दूरदर्शिता ने उन सब को शान्त रक्खा। हमें आशा है कि "अमृतवर्षिणी के अधिकारी" "यथा नाम तथा गुण" का ध्यान रक्खेंगे।

विविधवार्त्ता ॥

बृहत् दान—राजराजेश्वर श्री० पञ्चम जार्ज महोदय के राज्य तिलकोत्सव के आनन्द में श्रीमान् महाराजा साहिब ग्वालियर ने आठ सहस्र पौंड (सवा लाख रुपये के लगभग) पुण्य कार्य्यों

के लिये श्रीमानों के भेट किया, जिसको श्रीमानों ने विविध पुण्य स्थापनाओं को विभक्त कर दिया । अभी बहुत दिन व्यतीत नहीं हुए उक्त महाराजा साहिब ने श्रीयुत नव्वाब साहिब रामपुर द्वारा एक लाख रुपया अलीगढ़ कालेज को दान दिया था । देखें श्रीमानों का ध्यान पुरातन विद्या प्रसारक अन्यान्य गुरुकुलों, ऋषिकुलों तथा दीनरक्षक अनाथालयों की ओर कबतक आकर्षित होता है ।

कमी हुई—इस बार की मनुष्यगणना में युक्त प्रदेश की मनुष्य संख्या ४ करोड़ ८० लाख १२ हज़ार ५७७ पांचसौ सतहत्तर रही, जो पिछली संख्या से ४ लाख ८१ हज़ार ३ सौ २ मनुष्य कम हैं उक्त प्रान्त में पुरुषों की संख्या बढ़ी और स्त्रियों की घटी है । इनमें १ लाख ३१ हज़ार ६ सौ ३८ आर्य्यसमाजी हैं ।

हिन्दूयूनीवर्सिटी (विश्वविद्यालय)—श्रीमान् माननीय पं० मदनमोहनजी मालवीय ने आख़िर हिन्दूविश्वविद्यालय के लिये बीड़ा उठाही लिया और भिक्षुक बनकर घर घर भिक्षा आरम्भ करदी । आप यह जानकर अत्यन्त हर्षित होंगे कि आपका स्वागत प्रत्येक स्थान पर बड़े समारोह और उत्साह के साथ किया गया है । भिक्षा में भी आप किसी दूसरे क़ौमी भिखारी से पीछे नहीं रहे । कानपुर, लखनऊ, अयुध्या, कलकत्ता इत्यादि स्थानों से आपको पुष्कल सहायता प्राप्त हुई है । परमात्मा ऐसा भिखारी बनने की प्रतिष्ठा अपने गिने चुने सुपूतों के ही भाग्य में रखते हैं ।

क्या अच्छा होता यदि मालवीयजी श्रीमती बसन्तीदेवी से २ टूक फैसला कर लेते जिससे हिन्दू विश्वविद्यालय के हितैषियों को अपने कर्तव्यपर किञ्चित् संशय न रह जाता ।

देश का भूषण ये ही हैं—बहाव के साथ बहजाना कुछ बहादुरी का काम नहीं है । विशेष पुरुषों को सर्वसाधारण से अलग करके दिखानेवाली यदि कोई बातें हैं तो वह यही हैं कि वह प्रायः वर्त्तमान बहती हुई तीव्र और बक्रधारा को पारकर उसके ठीक प्रतिकूल चलने का प्रयत्न करते हैं । ऐसे ही महान् आत्मा, विशालहृदय मनुष्य संसार के अभिमान का कारण होते हैं । सुधार का सेहरा उन्हीं के सर सुहाता है । ऐसे समय में जबकि यावनी समुदाय पूरे बल के साथ हिन्दुओं के मूलोच्छेद पर सन्नद्ध है और कोई भी उचित और और अनुचित हथियार वर्त्तने में आगा पीछा नहीं देखता पटना (बिहार) प्रान्तीय माननीय मि० हसन इम्मम बैरिस्टर

का ५,०००) रु० हिन्दू विश्वविद्यालय के लिये अर्पण करना बतला रहा है कि उनके अन्दर कैसा उदार हृदय उपस्थित है। आपने इतना ही रुपया मुस्लिम यूनीवर्सिटी को दिया है।

क्या अच्छा होता यदि उक्त बैरिस्टर महोदय के विचार के अन्य १०-२० मुसलमान उपस्थित होते।

चीन में भयानक जलविप्लव॥

अत्यन्त खेद का विषय है कि चीन में यङ्गटीसी नदी में भयानक बढ़ाव आने के कारण १ लक्ष मनुष्य मरगये। चढ़ाव लगातार और अतिवृष्टि के कारण आया था। शङ्घही और हांगकांग के बीच का इलाका बिलकुल नष्ट होगया। हांगकांग में इतना पानी चढ़ आया कि इसके पूर्व कभी नहीं देखा गया था पर चारदीवारी अति दृढ़ होने के कारण नगर बच गया। आईचंग प्रान्त पानी से भरा हुआ था। चांगठय्या प्रान्त में सहस्रों बीघा खेती बिनष्ट होगई। चिलंगठय्या के नगर की चारदीवार टूट जाने से अत्यन्त कष्ट हुआ। इस जल विप्लव से इलाके यांगटिसी में दुर्भिक्ष के चिन्ह दृष्टि पड़ने लगे हैं। स्थानिक अधिकारियों ने दुःखग्रस्त जनों के सुख के लिये सहायकारी तथा पुण्यकारी कार्य्य आरम्भ किया है।

परमात्मा की महिमा अपार है एक ओर काठियावाड़, पंजाब आदि कई देशों में अनावृष्टि के कारण हाहाकार मचा हुआ है और दूसरी ओर अतिवृष्टि लाखों के वारे न्यारे कर रही है।

हवाई उड़ान—गत ७ जुलाई को एम० लोरीडान १०७५८ फीट ऊंचाई तक उड़ा था, उस समय तक वही सब से ऊंचा उड़नेवाला समझा जाता था किन्तु एम. गेरोस फ्रांसीसी ने सेंट सेलो के स्थान पर उड़कर उसे भी पीछे छोड़दिया और अब सब से ऊंचे उड़नेवालों में पहिला नम्बर एम गेरोस का है।

विशेष उत्सव—वाल्टरकृत राजपूतहितकारिणीसभा का २४ वां वार्षिक अधिवेशन ३ नवम्बर शुक्रवार को अजमेर में होगा। जिसमें सभापति का स्थान श्रीमान् माननीय मि० ई० डी० कालविन सी० एस० आई० एजेंट टूदी गवर्नर जनरल राजपूताना तथा प्रधान सभा ग्रहण करेंगे। मंत्री महोदय प्रतिनिधियों को २७ अक्टूबर से निमन्त्रित करते हैं॥

मङ्गलग्रह का दूत और हिन्दुस्तानी—पायनियर प्रयागी से यह जानकर कि मङ्गल ग्रह से १ दूत जिसका कद २० फिट ऊंचा है एफ्रिका के मेक्सि-

को नगर में उतरा है समाचारपत्रों के लिये एक खेल होगया है बतलाया जाता है कि उसकी भाषा संस्कृत से बहुत लगाव खाती है, वह खाता कुछ नहीं प्रत्युत सूंघकर ही वस्तु का सार ग्रहण करलेता और असार छोड़ देता है, उसके पास एक लालटेन है जिसके द्वारा वह अपने निवासस्थान मङ्गल ग्रह को अपने दैनिक समाचार भेजता और वहां से मंगाता है। पानियर कहता है कि एमेरिका के प्रसिद्ध विद्युत विद्या सम्पन्न मि॰ एडीसन साहिब के अतिरिक्त कोई अन्य मनुष्य उसके उतरने के समय ठहर न सका, विद्युतसम्बन्धी अनेक कौतुक उसने दिखलाए हैं इत्यादि। समाचारपत्रों से इस समाचार को पाकर बलद शहर के परमश्रद्धालु और विश्वासी एक रईस साहिब ने पानियर से उसके विशेष समाचार दर्याफ्त किये ताकि एफ्रिका जाकर उस अद्भुत मनुष्य के दर्शन कर कृतार्थ हों। पानियर का उत्तर सुनिये- "हिन्दुस्तान में भी अद्भुत मनुष्य हैं जो बिलकुल ऊटपटांग बातों पर भी विश्वास ले आते हैं और कैसी ही व्यर्थ बात क्यों न हो यहां उस पर विश्वास लानेवाले मनुष्य मिल ही जाते हैं' पानियर ने परमविश्वासी रईस साहिब को अन्त में सम्मति दी है कि वह अवश्य एफ्रिका जावें और हिन्दुस्थान की सम्मत्यनुसार उन्हें अवश्य ही पधारना चाहिये क्योंकि माना कि वह मङ्गल से आया दूत न देख सकेंगे किन्तु एफ्रिका वालों को तो मङ्गल के निकटवर्ती मनुष्य के दर्शन हो सकेंगे।

खेद है कि जो हिन्दुस्थान कभी भूमण्डल का शिक्षा स्थान समझा जाता था आज उसीके निवासी विदेशियों के हाथ का खिलौना बने हुए हैं।

हिन्दू घट रहे हैं—हिन्दुस्थान कितने दिनों से कदाचित् म्युनीसिपेलटी के हिसाब के आधार पर विशेष कर अमृतसर की हिन्दू संख्या की कमी का भयानक दृश्य प्रकाशित कर रहा है जो विचारशील हिन्दू समुदाय के लिये अत्यन्त दुःखद सिद्ध होता है। इसी मास की ६-७-८ सेप्टेम्बर को ३ दिवस में २३ हिन्दू उत्पन्न हुए और १६ मरे जब कि इन्हीं दिनों में ३४ मुसलमान उत्पन्न हुए और २० मरे अर्थात् यदि हिन्दु ४ बढ़े तो मुसलमान १४ बढ़ गए और यह भी केवल इत्तफ़ाकी बात थी कि इन दिनों में ४ हिन्दू बढ़ गए नहीं तो प्रायः उत्पत्ति कम और मृत्यु अधिक ही होती है। हिन्दू समुदाय के अगुवों को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिये।

Register No. J. 91.

* ओ३म् *

भाग १ — अङ्क

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर का
मासिकपत्र.

अनाथरक्षक ॥

जिसको--
अनाथालय सभा ने प० जयदेवजी
शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा
पं० श्रीहरिश्चन्द्र त्रिवेदी मैनेजर वैदिक-यन्त्रालय,
अजमेर से छपाया.
और
पं० जयदेव शर्म्मा प्रकाशक ने अजमेर से प्रकाशित किया।

आश्विन १९६८ वि० — अक्टूबर ११ ई०

तातः को जननी च का हितरता के वाथवा बान्धवा ।
किं वासो भुवनेऽत्र किं, किमशनं, किं वारि, वातश्च कः ॥
जानीमो न दयानिधे! सुरपते त्वन्नाम जानीमहे ।
हाहा नाथ! अनाथरक्षक! सदा नः पाहि पाहि प्रभो!!!

गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकबार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकबार देनेवाले महाशयों की सेवामें ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा।

वार्षिक मूल्य १)

ओ३म् ॥

अनाथरक्षक ॥

आश्विन संवत् १९६८ वि० ॥

अक्टूबर सन् १९११ ई० ॥

गज़ल ॥

दया दीनों पै करने से दुखों से छूट जाओगे, जहां में कीर्त्ति होगी नाम दीनानाथ पाओगे ॥ १ ॥

अहा ! कैसी है दरदीली दशा इन दीन दुखियों की । इसे भी देखकर क्या तुम दया दिल में न लाओगे ? ॥ २ ॥

अरी अम्मा ! अरी अम्मा ! पुकारें रात दिन रो रो । पटकते सिर विचारों को कहो कबतक रुलाओगे ? ॥ ३ ॥

निरे अनजान बच्चे हैं नहीं कुछ बोध है इनको । उठा चुमकार कर कब प्यार से छाती लगाओगे ? ॥ ४ ॥

हजारों होचुके भूखे मुसल्माँ और ईसाईं । इन्हें भी त्याग कर अब क्या विधर्म्मी ही बनाओगे ? ॥ ५ ॥

पिता के प्यार के प्यारे दुलारे मात के सारे । किसी दिन ये भी थे ये ख्याल क्या तुम दिल में लाओगे ! ॥ ६ ॥

विनय स्वीकार कीजे चंद्र की अय भ्रात तन मन से । सुखारी तुम भी रहोगे इन के जो संकट मिटाओगे ॥ ७ ॥

—०—

गर्म कपड़े—शरत्काल पूरे बल के साथ वर्त्त रहा है । आप अपने और अपने प्रिय परिवार के लिये यथासम्भव शीत से बचाव के लिये पूर्ण प्रबन्ध कर चुके होंगे । क्या आप कृपा करके एक बार सोचेंगे कि देश के दीन अनाथों के शीत निवारणार्थ आपने क्या किया और क्या आपका कुछ कर्तव्य इस विषय में था या नहीं ? ।

परमात्मा करे इसका उत्तर आप का अन्तःकरण सन्तोषजनक दे और आप कर्तव्यपालन से प्रफुल्लवदन होसकें ।

पुष्कल सहायता—गतांक में लिखा गया था कि श्री० राजा इन्द्रजीतजी ने हैदराबाद दक्षिण से ११०) रु०

भेजकर ५) रु० मासिक से शेष १०) रु० भेजने का व्रत किया है ताकि २००) रु० से अनाथालय के नियमानुसार १ दिन का भोजन प्रति वर्ष उनके नाम से समस्तआश्रमी बालक बालिकाओं को करादिया जाया करे। हमने उक्त राजासाहिब की सेवामें निवेदन किया था कि यह नियम एकबार २००) रु० दान देनेवालों के लिये नियत है किन्तु आपका रुपया उदरत खाते (धरोड़) जमा करादिया गया है, जब शेष ६०) रु० पहुंच जायंगे आपकी इच्छानुसार तिथि नियत करके रुपया स्थिरनिधि में जमा करादिया जावेगा।

आप प्रसन्न होंगे यह जानकर कि राजासाहिब ने उत्तर पाते ही शेष ६०) रु० तत्काल भेजकर दीपमालिका के दिन भोजन कराने की आज्ञा प्रदान की और ५) रु० मासिक फिर भी बराबर भेजते रहने की प्रतिज्ञा की है। आपने लिखा है "दूसरे तीसरे महीने इन रुपयों से भोजन करादिया करें"। अर्थात् आप की उदारता ने १ दिन ही नहीं पूरे ६ दिन के भोजनभार से कमेटी को मुक्त करादिया है। परमात्मा उक्त महोदय की धन दौलत के साथ दान और धार्मिक नेष्ठा को भी दिनों दिन उन्नत करें।

---

(२) श्रीमान् मूलचंद रावजी साहब कारभारी देवास उन चुपचाप देशसेवक महाशयों में से हैं जो यथासाध्य तन, मन, धन से दीन, दरिद्रों के दुःख निवारण की चेष्टा में लगे रहते हैं और जिनके पास आडम्बर रचकर प्रसिद्धि प्राप्ति के लिये समय ही नहीं रहता। आपने एक विशेष स्वीकारपत्र (वसीयत नामे) द्वारा भार्गव कमर्शल बेंक जबलपुर के अपने ३ भाग (प्रति भाग २५०) रु० का है) ७५०) के श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर को अर्पण करदिये हैं जिनकी वार्षिक आय कम से कम ३७॥) रु० है। आपके भाव देश के दीनजनों की ओर कैसे उच्च हैं इनका अनुमान आपके प्रेषित पत्र से भलीभांति होसकेगा। अतएव हम उसे नीचे प्रकाशित करदेते हैं:—

कारभारीजी का पत्र ॥

मान्यवर श्रीयुत सेक्रेटरी साहिब कमेटी दयानन्द अनाथालय, अजमेर! नमस्ते,

१—आपकी सेवामें इसके साथ वसीयतनामे की नक़ल भेजता हूं जिसके ज़रिये से मैंने भार्गव कर्मशल बेंक जबलपुर के तीन शेयरों का हक्क़ आपके नाम पर तबदील करदिया है।

२—अनाथालय मज़कूर के मैनेजर के नाम में अनाथालय मज़कूर के ट्रस्टीज़ या कमेटी के मेम्बर शामिल हैं।

३--शेयरों की क़ीमत फ़ी शेयर २५०) के हिसाब से ७५०) रु० होते हैं जिसका डिवीडेंट कमसे कम ५) रु० सैकड़ा और ज्यादासे ज्यादा ७) रु० सैकड़ा मिलता है. सिर्फ़ ५) रु० सैकड़ा सालाना से ३ शेयरों की आमदनी ३७॥) रु० होती है, मुनाफ़े का कुछ हिस्सा भी रिज़र्व रखलिया जाता है जिसपर शेयर होल-डरों का हक़ रहता है ।

४—तारीख़ ७ नवम्बर सन् १९१० ई० को असली वसीयतनामा (स्वीकार-पत्र) बैंक मज़कूर के मैनेजर के पास भेजदिया गया है, आप इसकी निसबत बैंक मज़कूर के मैनेजर से लिखा पढ़ी करके निश्चय कर लेवेंगे ।

५—अनाथालय मज़कूर की कमेटी हरसाल कार्तिक शुक्ला द्वितीया को "जो मेरी जन्म गांठ का दिन है" शेयरों के डिवीडेंट से अनाथों को एक वक्त़ यदि गुंजायश हो तो दोनों वक्त़ खीर पूरी खिलाने का प्रबंध करेगी ।

६—नियत तिथि को अनाथपुत्रियां अपने अनाथ बांधवों का न्योता करेंगी और उनको भोजन कराकर भाई द्विज का त्यौहार मनावेंगी ।

७—कमेटी इस वसीयतनामे के मुवाफ़िक़ तामील के वास्ते लिखित नियम जारी करके यह देखने की मेहरवानी करेगी कि नियमानुसार कार्य्यवाही हुई या नहीं ।

८—मेरी समझ में अनाथों की वर्तमान संख्या के मान से उनके एक वक्त़ के खीर पूरी के खर्चे के वास्ते ३७॥) रु० काफ़ी होंगे, परन्तु आइन्दा शायद अनाथों की संख्या इतनी बढ़जावे कि उनके एक वक्त़ खीर पूरी खिलाने के खर्चे को डिविडेंट की आमदनी काफ़ी न हो तो कमेटी मज़कूर अगर अनाथों के प्रतिदिन के मामूली भोजनखर्चे में यह रक़म शामिल करने की मेहरबानी करेगी तो अनाथों को उस दिन खीर, पूरी का भोजन मिलना असम्भव न होगा ।

९—वसीयतनामे के अनुसार इस न्योते का नाम "कादमभोज" और फंड का नाम "कादमफंड" रक्खा जावे ऐसी मेरी इच्छा है ।

१०—५ नवम्बर सन् १९१० को मेरी अवस्था ६० वर्ष की होचुकी, अगर मेरी आइन्दा ज़िन्दगी के साथ मेरी नौकरी की वर्त्तमान दशा मनोवांछित रही तो मैं अनाथालय की और भी अधिक सेवा करने की इच्छा रखता हूं ।

११—अपनी ज़िन्दगी में भी उक्त डिवीडेंट का रुपया हरसाल दिवाली से पहिले उपरोक्त भोज के वास्ते आपके पास पहुंचा करेगा ।

१२—वसीयतनामा और इस चिट्ठी का मतलब अगर आप लाभकारी समझें तो उसको अखबारों में छपवाने से मुझे कोई उज्र न होगा।

१३—वसीयत नामे की आखिरी कलम में यह लिखा है कि "अपनी ज़िन्दगी में मुझको वसीयतनामे में फेरफार करने का अधिकार है" उस कलम का यह अभिप्राय है कि अनाथालय मज़कूर का प्रबंध अगर संन्तोषजनक न हो या अनाथालय टूट जावे या एक स्थान से दूसरे स्थान को तबदील किया जावे या दूसरे अनाथालय में शामिल कियाजावे या रकम मज़कूर में और रकम शामिल करने की इच्छा हो तो मुझ को अपनी ज़िन्दगी में वसीयतनामा में फेरफार करने का अधिकार है।

१४—आपसे और अनाथालय मज़कूर की कमेटी के सभासदों से मेरी अन्तिम विनती यही है कि आप लोग मेरे इस अति दीन दान से अनाथों को वांञ्छित लाभ पहुंचाकर सदा के लिये मुझ को अपने परोपकार का ऋणि बनावेंगे।

१५—बेंक मज़कूर के मैनेजर के पास वसीयतनामा पहुंचाने की पावती इसके साथ भेजता हूं। इति ॥

देवास पाति ?

आपका कृपाभिलाषी—
मूलचंद राव कादम
खासगी कारभारी.

भाषानुवाद स्वीकारपत्र.

जो मूलचन्द राव कादम ने तुकोरजी राव कवघर देवास में ता० ६ नवम्बर १९१० ई० को किया।

मैं नीचे हस्ताक्षर करने वाला मूलचन्द राव कादम इस स्वीकारपत्र द्वारा भार्गव कर्मशलबेंक लिमिटेड के मैनेजर साहिब को अधिकार देता हूं कि वह मेरे तीनों हिस्स नम्बरी ७०८,७१३ और ७१४ को मेरी मृत्यु के पश्चात् **श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर के नाम तबदील करदेवें।**

उपरोक्त तीनों भागों के वार्षिकलाभ से अधिकारियान श्रीमद्दयानन्द अनाथालय को दीपमालिका से आगे द्वितीया को (जो मेरी जन्मातिथि है) अनाथालयस्थ अनाथ बालक बालिकाओं को खीर, पूरी का भोजन कराना चाहिये।

उक्त तीनों भागों के बेचने, परिवर्तन करने या गिरवी रखने का अनाथालय या किसी अन्य जन को कोई अधिकार न होगा।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय के मैनेजर साहिब दीपमालिका से कुछ दिवस पूर्व इस वार्षिक लाभ को भार्गव कर्मशलबेंक लिमिटेड से अनाथों को भोजन कराने के लिये निकाल लेंगे।

उक्त तीनों भागों के रुपये का नाम "कादम फण्ड" और भोज का नाम "**कादम भोज**" होना चाहिये। मेरे उत्तराधिकारियों, सहोदरभाइयों और किसी मेरे सम्बन्धी को तीनों भागों पर कोई अधिकार प्राप्त न होगा।

मेरी ज़िन्दगी में यह स्वीकारपत्र चाहे जिस समय बदला जा सकता है

देवास. मूलचन्द राव
९--११-१० खासगी कारभारी.

साक्षी ॥

नारायणप्रसाद
सरदार पण्डित
बड़ा दीवान देवास स्टेट
रा० रा० देडकर
सरदार सेनापति बड़ा
देवास स्टेट C. I.

अनाथालय समाचार ॥

अनाथालय की ओर से पं० गंगासहायजी प० शमानन्दजी तथा पं० सुंदरदत्तजी अनाथों की सहायतार्थ भ्रमण करते रहे हैं उक्त तीनों महाशय जहां कहीं पहुंचें सज्जन महाशय उनके काम में सहायता करेंगे ऐसी आशा है।

दानी महाशय तथा उपदेशकगण ध्यान रक्खें कि दान देते दिलाते समय यह देख लिया जाया करे कि जो वस्त्रादि वे देरहे हैं वह काम में आने की योग्यता भी रखते हैं या नहीं, प्रायः ऐसी जीर्ण और रद्दी वस्तुएं यहां भेजदी जाती हैं जिनका रेल किराया देकर रद्दी का ढेर बढ़ाने के सिवाय अन्य कोई उपयोगी नहीं हो सकता।

कन्याओं के अधिष्ठातृत्व पदपर आजकल श्रीमती सीताबाईजी हैदराबाद दक्षिण की एक देवी नियत हैं, आशा की जाती है कि आपकी उपस्थिति कन्याओं के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। आप कुछ समय निज़ाम अनाथालय हैदराबाद में भी कार्य्य कर चुकी हैं।

बालकों के लिये रात्रिन्दिवस साथ रहकर कार्य्य कराने वाले ? ऐसे योग्य पुरुष की आवश्यकता है जो सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर अवस्था के तृतीयभाग में प्रविष्ट होचुके हों और शेष जीवन धर्म्मकार्य्य में व्यतीत करने के अभिलाषी हों, हां ! जिनके हृदय में मातृ, पितृविहीन बालकों के लिये प्रेम हो, जिन्होंने निज सन्तान के पालन, पोषण की ऊंच, नीच देखी और भोगी हों। ऐसे महाशयों की आवश्यकतानुसार निजव्ययार्थ धनादि से भी सहायता की जाएगी। पत्रव्यवहार मन्त्री द० अनाथालय, अजमेर से करें।

एकबार फिर निवेदन किया जाता है

कि विवाहार्थी महाशयों के साक्षी अधिक सावधानी से काम लिया करें, अनाथालय के अधिकारी आपके विश्वास पर वर, वधु को जन्मभर के लिये विवाह जैसे अटूट सूत्र में बांध देते हैं, ऐसी अवस्थामें आपकी ओर से विश्वासघात होना महान् अनर्थ की बात है। आप विशाल हृदय से प्रत्येक प्रार्थी की साक्षी दे सकते हैं परन्तु ऐसे समय में आपके हृदय के अन्दर प्रार्थी के सम्बन्ध से हमारे विश्वास का स्थान ऊंचा होना चाहिये।

मैं अवाक् रहगया जब एक कन्याने सजल नेत्रों से उलाहना दिया कि "पिता जी! आप हमें सदैव यह शिक्षा देते रहे हो कि अपशब्द न मुख से बोलो, न कान से सुनो और न ही उनका स्मरण करो, किन्तु जिनके साथ आपने हमारा सम्बंध किया है वह पिता, पुत्र, भाई, भाई और माता पुत्र इत्यादि एक दूसरे से गालीगलोज के सिवाय बोलना ही नहीं जानते, यह अपने कार्य्य में सत्यता का व्यवहार नहीं रखते। आप बताएं ऐसी अवस्था में हम आपकी शिक्षा का पालन किस प्रकार से कर सकें"।

पाठक आप हैरान होंगे यह जानकर कि इन महाशयों के साक्षी एक आर्य्यसमाज के उपप्रधान विश्वस्थ महाशय थे, बात केवल यह थी कि वह प्रार्थी के बहनोई थे। पूरे एक सप्ताह मुझे उनके पास रहकर प्रार्थी और साक्षी तथा कन्याओं को यथोचित् शिक्षा और सन्तोष देना पड़ा था।

नीमचनिवासी श्रीफूलचंदजी बेंकर की असमय मृत्यु के लिये अनाथरक्षक की गत संख्या में शोक प्रकाशित होचुका है उसी सम्बन्ध में आर्य्यकवि श्री सेठ मांगीलालजी "कविकिङ्कर" ने नीमच से कविता भेजी है जो नीचे प्रकाशित कीजाती है।

दोहा ॥

वंशशिरोमणि बुद्धवर, फूलचंद गुणधाम।
जगदीश्वर की करगए, नीक भक्ति निष्काम ॥

सारछन्द ॥

आर्य्य फूलचंद में विशेष वेदप्रेम था।
बुद्धि, नीति, ज्ञान था महेशमें सुप्रेम था ॥
धर्म कर्म प्रीति थी, अशेष दीनप्रेम था।
देश हेतु प्रेम था, विशेष जाति प्रेम था ॥
न्याय, योग, सांख्यमें, अपार प्रेम प्रेम था।
काव्य गीत नृत्य में, विचारयुक्त प्रेम था ॥
भक्ति, मुक्ति, ग्रन्थमें, सुसार प्रेम प्रेम था।
फूलचंद प्रेम था, सुप्रेम फूलचंद था ॥

उपदेशमाला ॥

(जुलाई १९११ अंक ८-९ पृष्ठ २४ से आगे)

अनवस्थित कार्यस्य,
न जने न वने सुखम्।
जनो दहति संसर्गाद्,
वनं सङ्गविवर्जितम् ॥

समय चूक कारज करे,
नहिं जन वन सुख लेश ।
नगर दहे संसर्ग से,
वन असङ्ग से क्लेश ॥

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो,
मीमांसा न्यायविस्तरः ।
धर्मशास्त्रं पुराणञ्च,
त्रयीदं सर्वमुच्यते ॥

निगम चार षट अङ्ग पुनि,
मीमांसादिक जान ।
कहे जायं त्रयि नाम से,
ये सब सहित पुरान ॥

अकृत्यं नैव कर्त्तव्यं,
प्राणत्यागे प्युपस्थिते ।
नच कृत्यं परित्याज्य-,
मेष धर्मः सनातनः ॥

प्राण जायँ तो जायँ पर,
करे न खोटो कर्म ।
नहि त्यागे सत्कर्म को,
यही सनातनधर्म ॥

अत्याचारमनाचार,
मति निंदा ख्याति स्तुतिः ॥
अति शौचमशौचं वा,
त्रिविधं मूर्खलक्षणम् ॥

अत्याचरण, अनाचरण,
अति-निन्दा, गुण-गान ।
अति का शौच, अशौच, नर,
तीन चिन्ह अज्ञान ॥

आरोप्यते शिला शैले,
यत्नेन महता यथा ।
निपात्यते क्षणेनाध-,
स्तथात्मा गुण दोषयोः ॥

धरी जाय शिल शैल पर,
कीन्हे यत्न अतीव ।
सहज धरणि में वह गिरे,
यों—गुण, अवगुण, जीव ॥

आषोडशादाद्वाविंशा,
चतुर्विंशाच्च वत्सरात् ।
ब्रह्म क्षत्र विशां काल,
औपनायिनकः परः ॥

ब्राह्मण वत्सर सोलहवें,
क्षत्री सब बाईस ।
वैश्यवर्ष चौबीसलों,
लें अवश्य उपवीत ॥

इच्छति शती सहस्रं,
सहस्री लक्षमीहते ।
लक्षाधिपस्तथा राज्यं,
राज्यस्थः स्वर्गमीहते ॥

जो-दश,बीस,पचास भये,
शत,होइ हजार तो लाख मँगैगी ।
कोटि अरब्ब, खरब्ब-असंख्य,
धरापति होन की चाह जगैगी ॥
स्वर्ग पताल को राज करे,
तृष्णा अधिकी अति आग लगैगी ।
" सुन्दर " एक सन्तोष बिना,
शठ ! तेरी तो भूख कभी न भगैगी ॥

इन्द्रियाण्येव तत्सर्वं,
यत्स्वर्ग नरकावुभौ ।
निगृहीत विसृष्टावि,
स्वर्गाय नरकाय च ॥

स्वर्ग नर्क हैं इन्द्रियां,
इन्द्रिय सब कुछ जान ।
वश कीन्हें से स्वर्ग है,
अवश किये से हान ॥

इदञ्च त्वां सर्व-परं ब्रवीमि,
पुण्यं-पदं तात!महाविशिष्टम् ।
न जातु कामान्न भयान्नलोभाद्,
धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः ॥

ऊंचे दरजे की कहूं,
परम नीक यह बात ।
जीवन, काम, भयादि वश,
तजो धर्म नहिं तात ! ॥

इदमेव हि पाण्डित्यं,
चातुर्य्यमिदमेव हि ।
इदमेव सुबुद्धित्वं
आयादल्पतरो व्ययः ॥

निश्चय चतुराई यही,
बुद्धिमत्ता यहि और ।
निश्चय यह बुद्धित्व है,
खर्च आय से थोर ॥

ईर्ष्या घृणीत्वसन्तुष्टः,
क्रोधनो नित्य शंकितः ।
परभाग्योपजीवी च,
षडेते दुःखभागिनः ॥

घृणा डाह संतोषयुत,
क्रोधी, अति भयभीत ।
अरु जीवें परभाग्य से,
वे नर दुःख के मीत ॥

उत्तमस्यापि वर्णस्य,
नीचोऽपि गृहमागतः ।
पूजनीयो यथायोग्यं,
सर्वदेवमयोऽतिथिः ॥

आवे उत्तम वर्ण घर,
नीच वर्ण यदि कोय ।
यथायोग्य आदर करे,
अतिथि देव समजोय ॥

उत्कृष्ट मध्यम,
निकृष्ट जनेषु मैत्री ।
यादृक् छिन्नासु,
सिकतासु जलेषु रेखा ॥
वैरम्पुनदत्त्वधम,
मध्यम सज्जनानां ।
यादृक् छिन्नाषु,
सिकतासु जलेषु रेखा ॥ ६ ॥

बिनसत बार न लाग ही,
ओछे जन की प्रीत ।
अंबर डंबर सांझ के,
अरु बालु की भीत ॥

जल, बालू, शिल रेख सम,
नीच, मध्य, भल प्यार ।
शिल, बालू, जल रेखसम,
नीच, मध्य, भल रार ॥

(क्रमशः)

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय की संक्षिप्त सोलहवीं वार्षिक रिपोर्ट ॥

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय संवत् १९५२ वि०

तदनुसार सन् १८९५ ई० में स्थापित हुआ अधिकारियों के नाम पूर्व वृत्तान्त में लिखे जाचुके हैं अतएव यहां नहीं दिये गये अनाथों की न्यूनाधिकता अवश्य विचारणीय है और उसका ब्यौरा निम्नानुसार हैः—

	बालक	बालिकाएं	योग
३१ दिसम्बर १९०९ ई० को शेष	८०	२७	१०७
१९१० ई० में प्रविष्ट हुए	३०	१५	४५
योग	११०	४२	१५२
१९१० ई० में कम हुए	३५	१२	४७
३१ दिसम्बर सन् १९१० को शेष	७५	३०	१०५

कम हुए अनाथों का ब्यौरा ॥

	भागे.	मरे.	वारिसों को लौटाए.	विवाह.	पृथक्.	योग.
बालक	३	२	१२	+	१८	३५
बालिकाएं	+	७	२	३	+	१२

ऐसी अवस्था में जबकि बच्चे विशेष रुकावट में नहीं रक्खे जाते, हर जगह उनका आना जाना रहता है यदि २ बेसमझ बालक भग गये तो कुछ बहुत आक्षेप के योग्य नहीं, १२ बालकों को उनके संरक्षकों के सुपुर्द करने से आपकी प्रसन्नता होगी कि श्रीमद्दयानन्द अनाथालय कोई बंदीगृह नहीं प्रत्युत भूले भटके असहाय बालकों के लिये रक्षास्थान है । प्रायः सन्तानवियोग से विकल माता पिताओं के हृदय यहां पहुंच कर शीतल होजाते हैं । यदि अनाथालय न होता वही बच्चे या अनाचारी मकारों के हाथ पड़ या धर्म्म कर्म्म भ्रष्ट हो कुल मर्य्यादा भंग कर पतित जीवन व्यतीत करें । इन दोनों अवस्थाओं में कितना अन्तर है !, २ कन्याओं को यथास्थान उनके वारिसों को पहुंचा देने के यह अर्थ हैं कि अनाथालय ने २ गृहस्थों को पतित होने से बचा लिया ।

उपदेशक ॥

अनाथालय की आय साधारणतयः मासिक चंदा तथा दानपर निर्भर है और यह दोनों मार्ग तभी विस्तृत हो सकते हैं जब कि अनाथालय के उद्देश्य सम्पत्तिवान जनों के कर्णगोचर होसकें इसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति के लिये उपदेशकों की नियुक्ति हुई, पं० गंगासहायजी ने पूरेवर्ष, पं० रामानन्दजी ने ६ मास और महाशय जीवनदासजी ने अनुभवार्थ कुछ समय कार्य्य किया।

उपदेशकों के द्वारा २८३६|||≡)||| आय और ११२८||=) व्यय हुआ अर्थात् सैकड़े पीछे ३९||) व्यय हुआ।

शिक्षा ॥

३१ दिसम्बर १९१० ई० तक अनाथालय की पृथक् पाठशाला में दो अध्यापक और ५ कक्षाएं थीं उस समय में भी ४ बालक D. A. V. हाईस्कूल में अंग्रेजी शिक्षा पाते थे और ४ बालक विशेषरीत्या संस्कृत अध्ययन करते थे (२४ कन्याएं निज पाठशाला में पढ़ती थीं) शिक्षासम्बंध में ४१६|||) व्यय हुए।

भोजन ॥

साधारण भोजन दिया जातारहा जिसमें ४५०५||-)| व्यय हुआ अर्थात् प्रति अनाथ ३||-)| व्यय हुआ।

चिकित्सा ॥

सेप्टेम्बर १९१० के अन्त तक पं० भैंरूलालजी ही काम करते रहे. उनके पृथक् होने पर डाक्टर खांडवाला एल० एम० एस० महाशय ने अवैतनिक कार्य्य आरम्भ कर दिया है. आप दैनिक निरीक्षण करते और औषध देते हैं जिसके लिये सभा आपकी अति कृतज्ञ है। विशेष अवस्था में बालक विक्टोरिया हास्पिटल में भेजे जाते हैं इस विषय में सभा निम्नलिखित महाशयों की विशेष कृतज्ञ है। डा० नन्दलालजी, पं० रामदयालजी वैद्य और वैद्यराज कल्याणसिंहजी।

कारखाना ॥

पूर्ववत् कोई विस्तृत कारखाना अब नहीं हैं सब लड़के पढ़ाई में लगे रहते हैं दरी, मोज़े और क़ालीन का काम सीखने से भविष्य में विशेष लाभ नहीं दीखा क्योंकि अनाथालय से पृथक् होने पर धनाभाव के कारण वे कोई कारख़ाना स्थापित नहीं कर सकते और दूसरों के आधीन ही रहना पड़ता है इस वास्ते इस समय खाती और दरजी के काम का ही प्रबंध होरहा है।

गोशाला ॥

छोटे बच्चों और रोगियों के लिये दूध की आवश्यकता रहती है इसलिये एक गोशाला भी उपस्थित है जिसमें सब गायें दान में आई हुई हैं दूध वाली गायें यहां रहती हैं और शेष सब पटैल भारमलजी नम्बरदार छातड़ी की संरक्षा में छातड़ी रहती हैं, सभा उक्त महाशय की कृतज्ञ है, गत वर्ष के अन्त में ३३ गायें थीं, इस वर्ष में ४ अधिक हुईं ।

अनाथरक्षक ॥

जहां उपदेशकों द्वारा अनाथरक्षा के उद्देश्य सर्व साधारण तक पहुंचाने आवश्यक हैं वहां पठित समुदाय को भी सूचना देनी आवश्यक ही है, केवल इसी अभिप्राय के लिये अनाथरक्षक का जन्म हुआ है, इसके ग्राहक चारसौ के लगभग हैं लेकिन १०) दान देनेवालों को १ वर्ष १००) के दानियों को ५ वर्ष और जिस परचे में जिसका दान छपे वह परचा सभी महाशयों को विनामूल्य भेजा जाता है, इसी लिये परचा ८५० के लगभग निकलता है इसमें ६७३।-)॥व्यय और १८२।≡)। आय हुई अर्थात् ४९०॥।=)। की कमी रही

आयव्यय ॥

इस वर्ष की समस्त आय ११०९७=)। और व्यय ९६०२॥।≡)१० हुआ २८५५=)४ की अचल सम्पत्ति इस वर्ष खरीदी गई ठाकुर साहब कूड़ने ६ सहस्र रुपया दिया, स्थिर आय इस प्रकार है

८५०) व्याज
५००) किराया मकानों का
१३५०) योग

अनाथालय की आय स्थिर होसके इसलिये सभा ने निश्चय किया है कि जो महानुभाव एकबार २००) रु० दान दें उनके नाम पर उनकी इच्छानुसार नियततिथि पर उसके व्याज या आय से समस्त बच्चों को भोजन करा दिया जाय करे, रुपया स्थिर कोष में रहे केवल व्याज या आयमात्र काम में लाया जावे और दानी महाशय का नाम भोजन की तिथि सहित पत्थर पर खुदवा कर उचित स्थान पर लगवा दिया जावे, अभीतक निम्नलिखित महाशय इसमें अग्रगण्य हुए हैं:—

२००) बा० प्रभुदयालजी भार्गव एम० ए० एल० एल० बी० मन्त्री—
२००) बा० रामजीवनजी भार्गव भूत पूर्व दीवान शाहपुरा राज्य
१५०) बा० शंकरदासजी वकील चीफकोर्ट शाहपुर पंजाब ५०) शेष

ला० दिलबागरायजी रईस जालन्धर ने १०४) दान दिया है । इन समस्त महाशयों को धन्यवाद दिया जाता है । महाशय गिरधारीलालजी ठेकेदार वर्मा, सरदार भगतसिंहजी बहादुर धौलपुर और पं० रामकंवारजी तहसीलदार चाटसू को भी धन्यवाद दिया जाता है जो इस अनाथालय को बराबर सहायता करते रहते हैं अन्तिम प्रार्थना आप महाशयों से यही है कि आवश्यकीय कार्य्यों के निमित्त पूर्ण सहायता किया करें ।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर के अनाथों की न्यूनाधिकता का ब्यौरा बाबत सन् १९१० ई०

किसके द्वारा		सन् १९०९ की अन्त की उपस्थिति		नवीन प्रविष्ट		योग		कम हुए												सन् १९१० के अन्त में उपस्थित		विशेष सूचना.
								भाग गये		मर गये		वारिसों को दिये गये		पृथक् किये		विवाह हुआ		योग				
		लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	लड़के	लड़की	
डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट	अजमेर	१	७	५	२	६	९	०	०	०	०	३	२	०	०	०	१	३	३	३	६	
,, ,,	ब्यावर	०	१	०	०	०	१	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	
,, ,,	आगरा	०	१	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	
गरीबखाना	अजमेर	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
,,	ब्यावर	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
पोलिटिकल एजेंट	टोंक	७	१	०	०	७	१	०	०	०	०	०	०	३	०	०	०	३	०	४	१	
	बूंदी	३	०	०	०	३	०	०	०	०	०	०	०	२	०	०	०	२	०	१	०	
	शाहपुरा	१	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	१	०	०	०	
प्रतापगढ़		२	०	०	०	२	०	०	०	०	०	२	०	०	०	०	०	२	०	०	०	
मुम्बई		२	४	०	२	२	६	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	१	२	५	
विविध		६४	१३	२५	११	८८	२२	३	०	२	५	७	०	१२	०	०	२	२४	७	६४	१५	
योग.		८०	१७	३०	१५	११०	४०	३	०	२	७	१२	०	१८	०	०	३	३५	१२	७५	३०	

वार्षिक आय-व्यय श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर सन् १९१० ई० ॥

व्यौरा.	आय.			व्यौरा.	व्यय.		
	रुपया	आ.	पा.		रुपया	आ.	पा.
दान (जनरलफंड)	६४४०	३	३	भोजन	३७२५	७	०
दान (स्थिरफंड)	५५०	०	०	शिक्षा	४१६	१२	०
गवर्नमेण्ट यू. पी.	२४	०	०	वेतन कर्म्मचारी	९३०	१२	३
पोलीटिकल एजेन्ट हाड़ोती	५८४	१५	३	स्वास्थ्य और हवन	१३३	१५	३
मासिकचंदा स्थानिक	२७४	३	०	औषधालय	४१	८	९
,, बाहरका	३५३	३	३	धुलाई	५०	६	३
मकान किराया	७८६	७	०	वस्त्र	७८३	२	३
अनाथरक्षक	१८२	७	३	नये मकानात गोशाला	५९६	१३	७
औषधालय	१३	४	०	गोशाला	४१८	१५	०
गोशाला	७६	०	०	पोस्टेज स्टेशनरी	७७	६	३
सूद	११७८	५	९	फुटकर	२३२	२	६
अबलाउद्धारकसभा	१	०	०	पानी	२५	१२	६
प्रियभाषिणीसभा	७	०	०	अनाथरक्षक	६७३	५	६
मिश्रित	१२२	३	०	पृथक् हुये अनाथों की अमानत के दिये	१००	८	९
मथुराप्रसादफंड	८३	०	०	उपदेशक	११२८	१०	०
डिपोजिट अनाथों का वेतनादि	३८०	१४	९	छपाई	८६	११	०
योग	११०५७	२	३	ग्राउण्डरेण्ट	५८	०	४
डिपोजिट ठा. उदयसिंहजी	६०००	०	०	रोशनी	१०९	५	६
,, मैनेजर फेक्टरी	९३२	१	९	नई जमीन ख़रीदी	१८५०	०	०
क्रेडिट बा० प्रभुदयालजी वकील	५००	०	०	मकानात मुं० अमनसिंह	४११	४	९
				मरम्मत मकानात	१४१	४	३
				डिपोज़िट	४६५	१४	६
				योग	१२४५८	२	२
				कारख़ाना	३३	२	६
				उदयसिंह अनाथालय सफरख़र्च	९८	३	९
योग	१८४८९	४	०	योग	१२५८९	८	९
पिछला शेष	२१८०८	१३	१०½	शेष रहे	२७७०८	९	४½
सर्व योग	४०२९८	१	१०½	सर्व योग	४०२९८	१	१०½

(S. d.) घोखामल
अवैतनिक आडीटर.

(S. d.) प्रभुदयाल
एम. ए. एल. एल. बी. वकील
अवैतनिक मन्त्री.

शेष धन का व्यौरा ॥

व्यौरा.	धन.
स्थिरनिधि अलाइन्स बैङ्क में	२०६९०)
,, मारवाड़ बैङ्क हिसार में	११२३॥-)६
,, पीपल्स बैङ्क अजमेर में	१०००)
सन् १९०६ इस्वी के गवर्नर दयानन्दअनाथालय अजमेर	१०५०)
बा० पद्मचन्दजी	२०४।।।≡)९
बा० रामानन्दजी	६००)
वर्त्तमान गवर्नर दयानन्दअनाथालय अजमेर	५००)
प्रधान आर्य्यसमाज ब्यावर	२००)
पं० गङ्गासहायजी उपदेशक दयानन्द अनाथालय	५०)
अनाथरक्षक	३६।।।≡)६
चल्लूखाता पीपल्स बैंक	१०१॥≡)१
,, अलाइन्स बैंक	१०४=)८
सेविङ्ग बैंक पीपल्स बैंक	१८३)२
पं० रामानन्दजी उपदेशक दया० अनाथालय	२५)
मुरलीधर भजनीक	५)
आर्य्यप्रतिनिधिसभा राजस्थान अजमेर	८।≡)६
घनश्याम भूतपूर्व चपरासी	-)६
मन्त्री दयानन्द अनाथालय	२७३।।।≡)१०½
भार्गव बैंक आगरा	५५१॥-)८
योग	२७७०८॥-)५½

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर के लाइफ़ मेम्बरों की सूची, सन् १६१० ई० ॥

१—एच. एच. दी. महाराना साहब बहादुर उदयपुर
२—एच. एच. दी. महाराजा साहब बहादुर गायकवाड़ बड़ोदा
३—एच. एच. दी. महाराजा साहब बहादुर माइसोर
४—एच. एच दी. महाराजा साहब रीवां
५—श्रीमान् राजाधिराज शाहपुरा
६—एच. एच. दी. नव्वाब साहब बहादुर पालनपुर
७—एच. एच. दी. महाराजा साहब खैरागढ़ सी. पी.
८—राजकुमार श्री० सरदारसिंहजी बहादुर शाहपुरा
९—रायबहादुर पण्डित सुखदेवप्रसादजी साहब सी. आई. ई. जोधपुर
१०—सेठ घनश्यामदासजी नम्बर २२ ताराचन्ददत्त स्ट्रीट कलकत्ता
११—सेठ हीराचदजी सचेती अजमेर
१२—बाबू मंगलसेन साहब नैनीताल
१३—सेठ लादूरामजी ठेकेदार केसरगंज अजमेर
१४—सेठ परशुरामजी ब्यावर एण्ड बेरी
१५—राय सेठ चान्दमलजी ढढ्ढा बीकानेर
१६—ठाकुर भूरसिंहजी साहब मलसीसर जयपुर
१७—रायबहादुर सेठ विशनजी खेमजी मुम्बई
१८—सेठ रणछोड़दास भुवानजी प्रोप्राइटर फ्लोअरमिल्स डंकनरोड मुम्बई
१९—सेठ देवकरण नारायणदासजी साहब मुम्बई
२०—सेठ बीरजी टीकमजी जेतावाला ,,
२१—सेठ जवेरचन्द गुमानचन्दजी साहब ,,
२२—सेठ प्राणजीवनदासजी गिरधरलालजी ,,
२३—रायबहादुर सेठ सौभागमलजी ढढ्ढा अजमेर
२४—रायबहादुर सेठ उम्मेदमलजी प्रोप्राइटर गाढ़मल गुमानमल बोम्बे
२५—मेसर्स बालचन्द अगरचन्दजी मुम्बई
२६—सेठ लच्छीराम आनन्दीलालजी मुम्बई

२७—सेठ मेघराज गंगाबक्शजी मुम्बई

२८—सेठ जसरासमलजी मुम्बई

२९—सेठ अल्लारक्खा भाईथानजी बोम्बे

३०—सेठ हीरजी खेतसीजी मुम्बई

३१—सेठ दामोदरजी लखमसीजी खेमजी मुम्बई

३२—लालाराम बाघाजी पी० डबल्यू० आई० आगरा कन्टूनमेन्ट

३३—रावबहादुर ए० पी० अमरसिंहजी आफ़ पलायता पो० आ० अनता

३४—सेठ लिखमीचन्दजी देहरादून

३५—बा० शम्भूनाथजी सिग्नेलर ई. आई. आर. देहली

३६—मिस्टर टी. सी. खांडवाला असिस्टेण्ट सर्जन सरगोधा

३७—बा० इन्द्रभानजी सबडिवीजनल आफ़ीसर आगरा

३८—राव गोपालसिंहजी साहब खरवा ज़िला अजमेर

३९—पण्डित केशोराव साहब वकील हाईकोर्ट हैदराबाद (दक्षिण)

४०—श्रीमान् राजा रायरायान ,,

४१—राजा इन्द्रकरणजी साहब ,,

४२—सेठ पुरुषोत्तम विश्राम मावजी महालक्ष्मी मुम्बई

४३—बा० रामानन्दजी प्रोप्राइटर फ्लोअरमिल्स नसीराबाद

४४—मिस्टर जेष्ठालालजी वर्म्मा ४२३ मुम्बादेवी बोम्बे

४५—कुंवरजी नौरोजी आबकारी कण्ट्रैक्टर अजमेर

४६—श्रीमान् सर्दार बहादुर भक्तसिंहजी धौलपुर

४७—सेठ मेहरजी बहरामजी चीफ़ स्टोरकीपर्स ओफ़िस बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे मुम्बई

४८—प्रोफ़ेसर सीयारामजी एम० ए० गुरुकुल कांगड़ी पो० आ० शामपुर

४९—श्रीमती धर्म्मपत्नी सर्दार बहादुर भक्तसिंहजी धौलपुर

५०—बा० गिरधारीलालजी कण्ट्रैक्टर अमृतसरनिवासी पो० आ० शिब्वो (वर्म्मा)

५१—लाला रोड़ामल शिवदयालजी साहूकारान मार्फ़त मनसाराम रामजीदासजी आटेवाले चुंगी के पास दाना बाज़ार लुधियाना

५२—लाला केशवचन्द्रजी अमृतसर (पंजाब)

विविध ॥

सम्राट् और सम्राज्ञी का शुभागमन ।

यह पहिला अवसर है कि भारतवर्ष के राजराजेश्वर राज्यपत्नी सहित भारतवर्ष में पधारकर अपनी ३० करोड़ राज्यभक्त प्रजा को दर्शन दे कृतार्थ करेंगे । श्रीमती पूजनीया विक्टोरिया महाराणी तथा राजराजेश्वर श्रीएडवर्ड सप्तम के राज्यकाल में भारतवासियों की यह अभिलाषा मनकी मनही में रही अत्यन्त हर्ष की बात है कि श्रीमानों ने कृपा दृष्टि कर इन्हें दर्शन दे कृतकार्य होने का अवसर दिया ।

मुम्बई नगर में श्रीमानों की अगवानी का सराहनीय प्रबंध होरहा है जिससे तत्रस्थ जनों की राज्यभक्ति और उनके आन्तरिक उत्साह का पता लगता है । मुम्बई से देहली तक एक विशेष लाइन श्रीमानों के गमनार्थ निर्माण कीगई है जो शीघ्र से शीघ्र श्रीमानों की स्पेशल ट्रेन को मुम्बईसे देहली पहुंचाने में सहायक हो । ७/११ को श्रीमानों की स्पेशल देहली पहुंचेगी । ७ दिसम्बर १९११ को नगरभ्रमण (प्रोसेशन) १२ दिसम्बर को राज्याभिषेक तथा १३ को शाही मेला होगा ।

लाखों मनुष्य कैम्प की तय्यारी में लगा हुआ है अपनी ओर से इस अभिषेक की सज धज को उत्तमोत्तम बनाने का पूरा प्रयत्न किया जारहा है और आशा है कि यह अवसर अवश्य अद्वितीय सिद्ध होगा । परमात्मा श्रीमानों के राज्यकालको राज्यवंश तथा भारतवासियों के लिये शुभकर और सन्तोषप्रद बनावें, यही हमारी प्रार्थना है ॥

हिन्दू यूनीवर्स्टी—का डिपोटेशन पंजाब में भ्रमण कररहा है । अमृतसर, लाहौर और रावलपिंडी आदि स्थानों से अच्छी सहायता मिल रही है ।

पांच लाख का दान—श्रीमान् महाराजा साहिब बहादुर दर्भंगा ने पांच लाख रुपया हिन्दू यूनीवर्स्टी को दान देकर उसके डिपोटेशन की सरपरस्ती का भी वचन दिया है, यह सबसे बड़ी रक़म है जो आजतक हिन्दू या मुस्लिम यूनीवर्स्टी को किसी ने दान दी है और यह रक़म और भी बढ़जाती है जब महाराजा साहिब और अधिक सहायता की आशा साथ ही दिलादेते हैं । परमात्मा यूनीवर्स्टी को देश और धर्म्म के लिये लाभकर सिद्ध करें ।

एक देवी की प्रशंसनीय वीरता ।

मनुष्य वध और दो सौ पारितोषिक—

स्त्रियों के हृदय में अतुल वीरता, साहस

और त्याग भरा हुआ है यदि उसका सदुपयोग किया कराया जावे । इसी के आधार पर भारतीय युवतियों ने वह २ आश्चर्य्यमयी घटनाएं उपस्थित की हैं जिनको देख और सुनकर रोमांच हो आते हैं । अभी का ज़िक्र है कि जगदीश सवाना (सुलतानपुर) की एक युवती अकेली किसी ग्राम को जा रही थी, जब वह एक नाले पर पहुंची "जहां प्राय: डाकू लोग रहा करते हैं और किसी भी पथिक को बिना लूटे नहीं जाने देते" उसे एक डाकू ने आघेरा जिसके हाथ में नंगी तलवार थी, डाकू ने धमकाकर कहा "कान दबाकर सब जेवर उतार दे नहीं तो यह तलवार है और तेरा सर"

स्त्री भी बिलकुल भीरु न थी किन्तु प्राणभय से उसने सब जेवर उतार कर रख दिये कान की बालियों के लिये आज्ञादी "यह भी उतारदे नहीं कान काट लूंगा" बेचारी ने चुपचाप उतारकर हवाले करदीं ।

वज्रहृदय डाकू को इस पर भी सन्तोष न हुआ और उसने दुःखित स्त्री को यह आज्ञा दी कि "अपने कपड़े भी उतार दे" इस आज्ञा को पाते ही उसने इस अप्रतिष्ठा की अपेक्षा प्राण देने को अच्छा जाना, चाहती थी कि कालीस्वरूप होकर उसका मान मर्दन करे कि बुद्धि ने साथ दिया और नम्रतापूर्वक सर झुका कर प्रार्थना की कि कृपाकर केवल अपना कुरता उतार कर मुझे दे दे जिसे पहिन कर मैं घर पहुंच जाऊं और सब कपड़े तुझे दे दूं ।

डाकू को उस पर करुणा आई और ज्यूं ही उसने तलवार रक्खी और कुरता उठाकर सर नीचा किया वीर स्त्री ने तलवार उठाकर एक ही हाथ में काम तमाम कर दिया ।

देवी निश्चितभावसे अपना सब जेवर और कटा हुआ सर उठाकर पुलिस चौकी पर पहुंची और सब हाल थानेदार को सुना दिया । थानेदार ने नियमानुसार उसका चालान किया परन्तु न्यायालय से न केवल उसे छोड़ ही दिया गया प्रत्युत दो-सौ रुपये पारितोषिक भी दिया गया । धन्य !

इन्हें अबला किसने बनाया ?

शाहपुर के एक हिन्दू ने अपनी अढ़ाई वर्ष की कन्या का विवाह एक ४ वर्ष के बालक के साथ कर दिया है, बताइये दोनों बालक क्या बनेंगे ? जबतक पति पत्नी भाव इनमें पैदा होंगे गृहस्थभोग की शक्ति ही इनसे कूच कर गई होगी, यदि पीरों फ़कीरों की सहायता से कोई सन्तान हो भी गई तो दुर्बलेन्द्रिय और रोगी होगी । माता, पिता और सन्तान डरपोक, भीरू और शक्तिशून्य रहेंगे । निःसन्देह देश से तेज, शौर्य्य और बुद्धि के नाशक वह

माता, पिता हैं जो दूध पीते बालकों को गठबंधन कर गृहस्थी बनाते हैं।

ऐसा देश जो दिन जीता रहे बहुत है, विनाश को प्राप्त हो तो आश्चर्य ही क्या है ? ।

नामावली उन दानी महाशयों की जिन्होंने पं० गंगासहायजी उपदेशक द० अ० द्वारा दान देकर सहयता दी॥

।) पं० अम्बाप्रसादजी रंगमहल नहर शहादतखां देहली एक लुटिया

१) बा० श्यामसुन्दरलालजी देवीप्रसादजी कृष्णामिल्स देहली

।) बा० रामनाथजी रंगमहल ,,

।) ला० रघूमलजी गोटेवाले "

१) ला० रामनाथजी ,, ,,

१) ला० पन्नालाल काशीनाथजी ,,

२) ला० हरलालसिंहजी ,,

१) ला० शंकरलालजी परचूनिया ,,

१) पं० चन्दूलालजी ,,

१) बा० सांवलदासजी ,,

२) ला० चन्दूलालजी चौवलवाले ,,

२) दीवान गेंदामलजी ,,

।।।) ला० चन्दूलालजी द्वारा मिश्रित ,,

२५) ला० रामगोपालजी कन्हैयालालजी चांदनी चौक ,,

२) ला० रामनरायणजी कूचां घासीराम ,,

२) ला० बनवारीलालजी बाज़ार सीताराम लालदरवाज़ा देहली

=) ला० महरचन्दजी ,,

२) ला० जगन्नाथजी धर्मपुरा पहाड़वाली बड़ी गली ,,

१) ला० मंगलसेनजी मोहल्ला चूड़ियों वाला ,,

१) ला० वंशीधरजी ठेकेदार ,,

१) बा० गिरधारीलालजी मुकन्दपुर (जालन्धर)

१) बा० जोतीप्रसादजी छीपीवाड़ा ,,

१) पं० बालकरामजी वैद्यराज छीपीवाड़ा ,,

१) ला० विहारीलालजी सौदागर द्वारा ला० चन्दूलालजी ,,

१) चौ० शंकरदासजी द्वारा चन्दूलालजी ,,

१) ला० मनोहरलालजी ,,

१) ला० शंकरदासजी के मित्र रघुनाथसिंहजी वोकोवरी ,,

१०) ला० अम्बाप्रसादजी रईस ,,

१।) ला० जोतीप्रसादजी नहरशहादतखां,,

१) पं० विशम्भरनाथजी ,,

४) ला० लक्ष्मीनारायण जगदीशरायजी छीपीवाड़ा द्वारा एकत्रित ,,

१) पं० रामचन्द्रजी द्वारा पं० गोविन्दशंकरजी ,,

१) पं० प्यारेलालजी नहर शहादतखां ,,

१) डा० गोपाललालजी वर्मन ,,

७॥=) फेरूरामजी असिस्टेन्ट स्टेशन

मास्टर सराय रोहेला देहली
॥) ला० बुधमलजी स्वर्णकार सब्ज़ीमंडी,,
५) ला० सुन्दरलालजी गोटेवाला बाज़ार फतेहपुरी ,,
८) ला० राजनरायणजी द्वारा ला० विष्णुनरायणजी दरीबा ,,
२) चौ० मम्मनसिंहजी सब्ज़ीमंडी ,,
५) ला० जंगलीमलजी बज़ाज ,,
५) सेठ लक्ष्मणदासजी कूचां घासीराम ,,
४) बा० चतुरविहारीनारायणजी मन्त्री आ० स० चावड़ी द्वारा दक्षिणा में,,
२) बा० चतुरविहारीनारायणजी मन्त्री आ० स० चावड़ी द्वारा ,,
पं० गोविन्दशंकरजी नहरशहादतखां ३२ पुस्तकें ३ टोपी ,,

देहली ॥

॥) बा० प्रभूलालजी डी. टी. एस. आफ़िस
॥) बा० सुलतानसिंहजी ,, ,,
।) बा० रामदयालजी सर्कार ,, ,,
।) बा० जयनारायणजी ,, ,,
।) बा० भगवतीसहायजी ,, ,,
।) बा० मथुराप्रसादजी ,, ,,
।) बा० पंजाबसिंहजी ,, ,,
।) बा० दर्जीन्द्रोसिंहजी ,, ,,
।) बा० वासुदेवप्रसादजी ,, ,,
।) बा० भारतभूषणजी ,, ,,
।) ,, दुर्गाप्रसादजी ,, ,,
।) ,, काशीप्रसादजी ,, ,,
=) पं० ज्वालाप्रसादजी दफ्तरी डी. टी. एस. आफ़िस
=) मुं० गंगारामजी ,, ,,
।) बा० भवानीसहायजी ,, ,,
।) बा० हरिदेवाजी ,, ,,
।) बा० फूलसिंहजी ,, ,,
।) बा० रामनारायनजी असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर ,,
१) महाशय रामदासजी ,, रिवाड़ी
॥) रामजीसिंहजी डी० टी० एस० आफ़िस,,
५) ला० कृष्णलालजी मंत्री आ० स० खुरजा
२) रामलालजी कोठीवाले ,,
२) हरप्रसादजी उपमंत्री आ० स० ,,
२) रामसहायमलजी ,, ,,
२) ला० मेवारामजी कोषाध्यक्ष ,, ,,

खुरजा ॥

१) बा० कृष्णलालजी साप
२) ला० बद्रीप्रसादजी हलवाई
१) ला० मुन्नीलालजी सर्राफ
१) ला० छेदालालजी उपमंत्री आ० स०
१) ठा० गुलाबसिंहजी वर्म्मा रईस नगला खुशालसिंह
॥) ला० किशोरीलालजी पुस्तकाध्यक्ष
॥) ला० श्यामलालजी बजाज
॥) डाक्टर खेमकरणजी विकट
१) ला० चिरंजीलालजी मेम्बर आ० स० छिबाई
१) पं० सोहनलालजी शर्म्मा ब्राह्मणपुरी छिबाई (बुलन्दशहर)

१८॥=)। मा० शिवप्रसादजी मन्त्री द्वारा एकत्रित किया खुर्जा

अलीगढ़

४) बा० रघुबरदयालजी कोषाध्यक्ष डी० ए० वी० पाठशाला द्वारा
२) रामप्रसादजी अध्यापक पाठशाला डेरीफार्म ॥
५।=) बा० भगवानदासजी
२) बा० झुन्नीलालजी
१) बीबी महादेवीजी
२) बीबी चन्द्रवतीजी
१) बा० मुकटबिहारीलालजी सबपोस्टमास्टर
१) बा० देवकीनन्दनजी
१) बा० विभूतीप्रसादजी चपरासी जजी अलीगढ
२) ला० शंकरलाल किशनलालजी छावनी
॥) प्यारेलालजी आगरा
॥) चक्खनलालजी रामलालजी कानपुर
॥) प्यारेलाल शंकरलालजी ,,
।) जयदेवीजी ,,
१) चिम्मन चौधरी ,,
१) फूलचंदजी ,,
१) बीबी दुर्गाकुंवरी ,,
२) ला० पन्नालाल कृष्णकुमारजी ,,
॥) बा० किशोरीलालजी ,,
१) डाक्टर मक्खनलालजी ,,
॥) ला० प्यारेलालजी कलवार ,,
॥) ला० गणेशीलालजी ,,
=) मुंशी ईश्वरस्वरूपजी कम्पाउण्डर ,,
।) पं० नाथूरामजी कानपुर
=) ला० भोलासिंहजी ,,
=) ला० रामलालजी ,,
॥) पं० कल्याणदासजी ,,
।) ला० गोपालदेवजी ,,
१) पं० देवीसहायजी ,,
१) रामशरणदासजी भार्गव ,,
॥) पं० प्रभुदयालजी कल्याणगंज अलीगढ़
=) ला० जुगलकिशोरजी ,, ,,
=) ला० झम्मनसिंहजी तोतारामजी ,,
॥) अजुध्याप्रसादजी खुशालीरामजी ,,
॥) छज्जूसिंहजी ,,
॥) प्रसादीलाल बाबूलालजी ,,
२) सर्दार केसरसिंहजी मैनेजर भारत नेशनलबैंक ,,
१) माधोप्रसादजी जिलेदार नहर ,,
१) होशियारसिंहजी मंत्री वैश्यक्लब ,,
१) जुगलकिशोरजी ,,
१) पूरनमलजी ,,
१) बा० हीरालालजी भार्गव वकील ,,
॥) बा० रामशरणदासजी भार्गव मास्टर ,,
२) विश्वम्भरनाथजी भार्गव ,,
१) विश्वम्भरनाथजी की भगिनी ,,
१) दामोदरदासजी भार्गव मा० चंदा ,,
१) डा० देवीसहायजी भार्गव ,,
५) बा० घनश्यामदासजी ,,
।) बा० रघुवरदयालजी पैंशनर ,,
५) गोरी गुपालदासजी साहू ,,

१) हाफ़िज़ दलाल अलीगढ़
॥) बा० बृजनरायणजी ,,
१) ला० वेदरामजी ,,
२) मुं० किशोरीलालजी अग्रवाल ,,
१) ला० कुन्दनलालजी ,,
१) बा० छदम्मीलालजी अत्तार जुलाली वाले ,,
१) मोहनलालजी ,,
२) ला० छदम्मीलालजी गोरधनदासजी ,,
१) शंकरलालजी तम्बोली आढ़ती दरीबायान ,,
२) मिलाल मक्खमलालजी ,,
१) नरायणदासजी प्रधान आ० स० ,,
१) ला० कन्हैय्यालालजी ,,
१) ला० बुधसेन जगन्नाथजी चावलवाले ,,
।) ला० वासुदेवजी मैदावाले ,,
१) ला० ताराचन्दजी ,,
।) ला० रामचन्द्रजी कसेरे ,,
१) पं० कल्याणदत्तजी ,,
१) ला० दामोदरदास कुन्दनलालजी ,,
=) ला० रामनरायणजी ,,
=) सन्नीलालजी गोटेवाले ,,
।) पन्नालालजी ,,
१) नरायणदास श्यामलालजी ,,
॥) अम्बाशरणजी ,,
१) भोलानाथजी मुनीम ,,
॥) सीतारामजी वैश्य रामपुर
१) बुधसेनजी आर्य्य ,,
॥) दौलाराम छदम्मीलालजी [illegible]

१) इन्द्रमन तुलसीरामजी रामपुर
॥) ला० किशनलालजी मुनीम ,,
१) ला० भोलासिंहजी ,,
१) ला० बैनीराम भीमसेनजी ,,
१) मंगलसेनजी दुकान इन्द्रमन तुलसीरामजी ,,
५) बा० शेरसिंहजी ,,
१) दीवानसिंहजी जमीन्दार ,,
१॥=) बा० गोपालदासजी द्वारा फुटकर ,,
।) ला० प्रभुदयालजी स्वर्णकार ,,
२) ला० प्रभुदयालजी आढ़ती ,,
१) गोरी कल्याणदासजी ,,
१) बा० गंगाप्रसादजी द्वारा ठा० हीरालालजी वैदिकआश्रम अलीगढ़
१) ला० ख्यालीरामजी ,,
१) ला० लीलाधर द्वारकादासजी ,,
।) घूरे मीयां ,,
१) प्रसादीलाल सागरमलजी ,,
॥) भिकवा कहार ,,

नामावली उन दाताओं की जिन्होंने महाशय रामानन्दजी उपदेशक द० अ० द्वारा सहायता दी ॥

५) आर्य्यसमाज शाहजहांपुर
।) महाशय ब्रजकिशोरजी ,,
१) महाशय लालमणिजी ,,
२) ला० कन्हैयालालजी ,,
१) धर्म्मपत्नी बा० जगन्नाथ मन्त्री आ० स० ,,